छत्तीसगढ़ विधान सभा

की

अशोधित कार्यवाही

(अधिकृत विवरण)

पंचम विधान सभा

षोडश सत्र

शनिवार, दिनांक 04 मार्च, 2023

(फाल्गुन 13, शक सम्वत् 1944)

[अंक 04]

Web copy

छत्तीसगढ़ विधान सभा

शनिवार, दिनांक 04 मार्च, 2023

(फाल्गुन-13, शक सम्वत् 1944)

विधान सभा पूर्वाह्न 11.00 बजे समवेत् हुई।

(अध्यक्ष महोदय (डॉ. चरणदास महंत) पीठासीन हुए)

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, दो दिन बाद आपकी शानदार एंट्री हुई। अभिभाषण पर चर्चा शुरू होनी है, आप आ गए हैं, अभिभाषण देने वाला नहीं है, मंत्रिमंडल गायब है।

अध्यक्ष महोदय :- चलिए।

मुख्यमंत्री (श्री भूपेश बघेल) :- अध्यक्ष महोदय आए हैं।

श्री अजय चंद्राकर :- कितनी गंभीरता है, अब यह अपनी उपलब्धियों के तौर पर प्रचारित कर रहे हैं। उपलब्धि सुनने वाले हैं या बताने वाले हैं।

श्री चंदन कश्यप :- मुख्यमंत्री जी हैं तो यहां सब हैं।

श्री भूपेश बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आप परसों भी आए थे, कल भी आए थे, अब इनके दिमाग में पता नहीं क्या-क्या घूमते रहता है, दिखता भी नहीं है। अध्यक्ष महोदय, 6 फीट के व्यक्ति है, अध्यक्ष महोदय हमारे सुदर्शन हैं और प्रश्नकाल पहले भी आए थे, उसके बाद जब मैं भाषण दिया तब भी आए थे, कल भी आपका आगमन हुआ था।

श्री अजय चंद्राकर :- अच्छा भैया ठीक है। मैं आपसे सहमत हूं लेकिन वह भाषण देने वाले को पहले बुलवाईये। लेकिन मुस्कुराहट नहीं दिख रही है, कुछ न कुछ गड़बड़ है।

श्री भूपेश बघेल :- भाई, मुस्कुराहट अभी भी दिख रहा है।

अध्यक्ष महोदय :- मुस्कुरा तो मैं भी रहा है। (हंसी)

नेता प्रतिपक्ष (श्री नारायण चंदेल) :- मुख्यमंत्री जी, आज थोड़ा नये कलेवर में आए हैं। (हंसी)

श्री भूपेश बघेल :- हां, तेवर में तो नहीं हैं। (हंसी)

श्री अजय चंद्राकर :- थोड़ा और समय काटिए। आपका भाषण देने वाला नहीं है।

गृहमंत्री (श्री ताम्रध्वज साहू) :- अभी नंबर आपकी तरफ का होगा ना। कल वह भाषण दे चुके हैं।

श्री अजय चंद्राकर :- उनका भाषण चल रहा है। निरंतरता में है।

अध्यक्ष महोदय :- माननीय मोहन मरकाम जी का भाषण चल रहा था, निरंतरता में थे, उन्हें क्षेत्र में आवश्यक काम से जाना पड़ा। मेरे से छुट्टी लेकर गये हैं। इसलिए मैं माननीय बृजमोहन अग्रवाल

जी को बुलाना चाहूंगा। (हंसी) (मेजों की थपथपाहट) अगर बृजमोहन अग्रवाल जी नहीं हैं तो उनके स्थान पर अजय चंद्राकर जी बोल सकते हैं।

माननीय राज्यपाल महोदय के अभिभाषण पर प्रस्तुत कृतज्ञता ज्ञापन प्रस्ताव पर चर्चा (क्रमश:)

"माननीय राज्यपाल महोदय ने जो अभिभाषण दिया उसके लिए छत्तीसगढ़ विधान सभा के इस सत्र में समवेत् सदस्यगण अत्यंत कृतज्ञ हैं।"

वाणिज्य कर (आबकारी) मंत्री (श्री कवासी लखमा) :- हो गया ना। हमारा आदेश आप लोगों को इतना लगता है। बृजमोहन जी नहीं आए हैं तो आपको बोलने का मौका दे रहे हैं।

श्री अजय चंद्राकर (कुरूद) :- दादी ऐसा है, अपने में तो बोल पाते नहीं, अब दूसरे के भाषण में कॉय-कॉय मत किया करो।

माननीय अध्यक्ष महोदय, वास्तव में यह दु:खद स्थिति है कि माननीय मंत्रिगण नहीं हैं, चलिए माननीय सदस्य ने आपसे अनुमति ली हो। माननीय मंत्रिगण, मुख्यमंत्री जी समय में आ गए, मैं मुख्यमंत्री जी की प्रशंसा कर देता हूं लेकिन यह गंभीरता बहुत ही दु:खद है। थोड़ा बहुत दु:खद नहीं है, बहुत ही दु:खद है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं माननीय मुख्यमंत्री जी बधाई देते हुए अपनी बात की शुरूआत करता हूं। माननीय मुख्यमंत्री जी, आप बहुत सुदर्शन लग रहे हैं।

श्री भूपेश बघेल :- वाह।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, सुदर्शन ऐसे लग रहे हैं, 13 हजार टन की ए.सी. में हवा खाएं और 56 भोग तीन दिन तक लिए हैं तो उसमें तो कोई भी आदमी सुदर्शन हो जाएगा और गरीबों की चिंता हुई। पूरे भारत में जितने प्रकार के डिश हैं उसका आनंद लिए हैं। माननीय अध्यक्ष महोदय, अब आगे बढ़ते हैं, मैं माननीय मुख्यमंत्री जी को फिर बधाई देता हूं, यह वाटरलू की लड़ाई में नेपोलियन बोनापार्ट 1815 में हारे तो ब्रिटेन के सेनापति जब जीते, नेल्सन जो विजेता थे, जब उन्होंने ब्रिटेन में स्वागत किया, जब विजेताओं की तरह उनका स्वागत हुआ, माननीय मुख्यमंत्री जी बिल्कुल वैसे ही लग रहे थे। कैसे, एक नेत्री के पीछे जीप में खड़े थे और 20 टन डच गुलाब बिखरा हुआ था, ऐसा लग रहा था कि मुख्यमंत्री जी का स्वागत बिल्कुल उस विजेता की तरह हो रहा था।

अध्यक्ष महोदय :- आप सवेरे-सवेरे अभिभाषण की जगह अधिवेशन पर चर्चा कर रहे हैं। (हंसी)

श्री अजय चंद्राकर :- नहीं-नहीं, अभिभाषण पर बोल रहा हूं। आप तो ध्यानाकर्षण, स्थगन ले नहीं रहे हैं। 20 टन डच गुलाब, माने छत्तीसगढ़ के लोगों ने आज तक नहीं देखा है। वह अभिभूत है। साहब, कई लोग दीवाने पागल हो गए हैं।

श्री कवासी लखमा :- अध्यक्ष जी, इन लोग छत्तीसगढ़ को भूल गये थे। मुख्यमंत्री जी आएं तो आदिवासी छुट्टी दी, राखी की छुट्टी दी। छुट्टी देने वाले पहले मुख्यमंत्री हैं। उसमें भी पीछे थोड़ी हैं। आप लोग तो छत्तीसगढ़ का गाना गूंजता है उसको भी नहीं बजा पाए। 15 साल में छत्तीसगढ़ का (व्यवधान) नहीं बजा पाए।

अध्यक्ष महोदय :- चलिए ना, इस बात को छोड़िए। आप अभिभाषण पर आ जाईए।

श्री अजय चंद्राकर :- अध्यक्ष महोदय, जर्मन की दिवाल जब टूटी, तो उसके टुकड़े के लिए होड़ मच गयी थी कि हम इसको रखेंगे । कांग्रेस के लोगों में होड़ मच गई कि किसी को इतनी पंखुड़ी मिली, किसी को उतनी पंखुड़ी मिली, कोई उसको लेकर सिसक रहा है, कोई रो रहा है, कोई गा रहा है और कोई दीवानों की तरह झूम रहा है। जैसे उसको गुलाब की पंखुड़ी जीवन की सबसे बड़ी चीज मिल गई हो। मतलब वह बर्लिन की दीवार के ऐतिहासिक महत्व से दो दिल मिले, उससे भी ज्यादा महत्व की बात हो गई।

श्री कवासी लखमा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, वह हमारे आदिवासियों को बहुत पसंद आया।

श्री अजय चंद्राकर :- बाप रे।

श्री कवासी लखमा :- ऐसा कभी नहीं हुआ है। (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय :- चलिये छोड़िये।

डॉ. रश्मि आशिष सिंह :- अधिवेशन सफल हुआ।

श्री अजय चंद्राकर :- आपका संरक्षण मिल गया।

अध्यक्ष महोदय :- आपने अधिवेशन की तारीफ की, उसके लिए आपको धन्यवाद।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, महाभारत के युद्ध के बाद पांडव लोग घमण्ड में आ गये तो श्री कृष्ण भगवान ने...।

अध्यक्ष महोदय :- मंत्री जी, उनको बोलने दीजिए।

श्री अजय चंद्राकर :- श्री कृष्ण भगवान ने बरबरी को बुलाया और कहा कि बरबरी जी आप यह बताइये कि आपने महाभारत के युद्ध में क्या देखा? क्योंकि बरबरी ने पूरा महाभारत देखा था तो बरबरी बोले कि भगवन् सारे लोग तो ऐसे डण्डा हिला रहे थे और केवल आपका ही सुदर्शन चक्र घूम रहा था। ये जितने कांग्रेसी बैठे हैं और जितने कांग्रेसी बाहर में बैठे हैं हमने जनता से पूछा कि आप लोगों ने कांग्रेस के अधिवेशन में क्या देखा तो जनता ने हमें बताया कि हमने दो लोगों को देखा। एक, हमने माननीय मुख्यमंत्री जी को देखा। सन् 1955 से 1959 तक यू.एन. ढेबर भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष थे। उनकी आत्मा घुस गई थी। जनता ने एक कांग्रेसी में ढेबर को देखा। जनता को कांग्रेस के अधिवेशन में केवल 2 ही लोग दिखे और कोई तीसरा नहीं दिखा।

अध्यक्ष महोदय :- चंद्राकर जी, आप कांग्रेस के अधिवेशन का इतना विस्तृत और अच्छा विवरण कर रहे हैं, क्या आप इधर आना चाहते हैं? (हंसी) (मेजों की थपथपाहट)

श्री यू.डी. मिंज :- स्वागत है।

श्री अजय चंद्राकर :- हमने सिर्फ मुख्यमंत्री जी को देखा और ढेबर को देखा। उन लोगों ने ऐसा बताया कि उनके अंदर यू.एन. ढेबर की आत्मा घुस गई थी और मैंने यह बोल दिया कि मुख्यमंत्री जी निष्पाप हैं और सुदर्शन हैं। अब मैं यह जानना चाहता हूं कि 20 टन डच गुलाब का पेमेन्ट कांग्रेस पार्टी ने तो नहीं किया होगा ? अब जिसने भी उसको मंगवाया होगा तो ई.डी. जाएगी तो यह धरना देंगे। अब यह सार्वजनिक होना चाहिए कि वह डच गुलाब कहां से आया था?

डॉ. रश्मि आशिष सिंह :- मतलब आप यह मानते हो कि ऐसे सब में यकीन नहीं करते।

श्री अजय चंद्राकर :- तेहा ओती जाके [xx]कर, तोला इहा समझ में नहीं आये।

डॉ. रश्मि आशिष सिंह :- मैं [xx]करे बर तोर से सीखत हवव। (हंसी)

श्री अजय चंद्राकर :- अब आएंगे, ई.डी. में बात करेंगे। (व्यवधान)

श्री कवासी लखमा :- आप एक महिला को ऐसे बोलते हैं क्या आपको यह शोभा देता है ?

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, अभी यह माटी पूजन दिवस मनाएंगे। माननीय अध्यक्ष महोदय, अब मैं तो पांचवे नंबर का वक्ता था, मैं तो ऐसे ही शुरू कर रहा हूं। अक्ती के दिन यह माटी पूजन दिवस मनाएंगे। अभी आप कक्ष में जाएंगे तो इनके माटी पूजन दिवस में फोन कर लीजिएगा। यदि एक किसान स्वाइल को टेस्ट करने के लिए दे तो उसकी रिपोर्ट कितने दिन में आती है और उसकी रिपोर्ट में क्या कार्रवाई होती है ? उसकी जगह में 25 फरवरी को जो 20 क्विंटल जो गुलाब बिछा था, उसको व्यक्ति पूजन दिवस के रूप में मनाना चाहिए। इस माटी पूजन दिवस से किसानों को कोई फायदा नहीं हो रहा है। माननीय मुख्यमंत्री जी, अब मैं आपको बता दूं कि यह सरकार मानसिक रूप से दिवालिया हो चुकी है, दृष्टिकोण विहीन हो चुकी है और इसकी सोच नहीं है। यह जो आप नवाचार आयोग बनाये हैं, जब मैं उस कंडिका में आऊंगा तो उस नवाचार की बात करूंगा, उसका उदाहरण सुराजी गांव योजना है । माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं अपना भाषण रोक देता हूं। यह दो मंत्री बैठे हैं, माननीय मंत्रिगण। सुराजी गांव योजना क्या है ? आज तक विधान सभा में उसके कोई दृष्टिकोण और दस्तावेज नहीं रखे गये। वह कौन से विभाग को संचालित करता है ? हमने उसके प्रतिवेदन में उसको नहीं पढ़ा है। सुराजी गांव का कॉन्सेप्ट क्या है, उसका मतलब क्या है, उसकी फंडिंग क्या है और कौन-सा विभाग उसमें क्या काम करता है ?

श्री कवासी लखमा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हम सुराजी ग्राम बनाये हैं। वहां एक भी...। (व्यवधान)

श्री अजय चंद्राकर :- आप यह बता दीजिए कि जहां ऑनलाइन सट्टा होता है क्या वह सुराजी गांव है ? जहां अवैध शराब बिकता है वह सुराजी गांव है ? जहां मर्डर होते हैं वह सुराजी गांव है ? आप कोई न कोई ऐसा मापदण्ड तो बतायें। प्रेमसाय जी, मैं अपना भाषण रोककर बैठ जाता हूं। आप मुझे सुराजी गांव का मतलब समझा दें। 5 साल से आ रहा है, 5 साल से। कौन विभाग करता है, क्या बजट है और क्या काम होता है, बता दें ? गृहमंत्री जी बैठे हैं, उनको यही अधिकृत किया गया है कि आप अवैध शराब बिकवाओ, वह सुराजी गांव है । मुख्यमंत्री जी ने पहले ही साल नरवा, गरूआ, घुरूआ, बारी के बारे में कहा कि इसको बताना है साथियों । ऐसा जेस्चर-पोस्चर था, जैसे सब पलटकर रख देंगे । जैसे बोधघाट के लिए था कि मैं इस चैलेंज को स्वीकार करता हूं । अभी हम बोधघाट के बारे में कहेंगे । नरवा, गरूआ, घुरूआ, बारी मुख्यमंत्री जी की फ्लेगशिप योजना है, नरवा, गरूआ, घुरूआ, बारी के लिए कौन से विभाग में कितना बजट है ? उसकी क्या भौतिक उपलब्धि है, जीवन में क्या परिवर्तन आया ? कोई भी संस्था केपीएमजी, प्राईज वाटर हाऊस कूपर से ऊपर नहीं है । नहीं तो नेता प्रतिपक्ष और एक मंत्री बहुत योग्य हैं, अपराध में लगाम नहीं लगा पा रहे हैं । पहले दिन के स्थगन को देखकर उनके हाथ-पैर फूल गए थे । यह बता दें कि उसमें क्या होता है, छत्तीसगढ़ में अरबों-खरबों रूपए के भ्रष्टाचार करने के बाद क्या लाभ हुआ, सामाजिक जीवन में क्या परिवर्तन आये, कौन से रोका-छेका से छत्तीसगढ़ में चराई रूक गई ? कलेक्टर को दो दिन डंडा पकड़ा दिए, वह रोका-छोका हो गया ? घुरूवा कहां है, चलिए वह देखेंगे, आप जगह का नाम बताईए । [XX] करने के लिए खड़े होते हैं, वे लोग एक घुरूवा दिखा दें । घुरूवा में कहां पर वर्मी कम्पोस्ट बनना शुरू हुआ है और कौन सा किसान खातु बनाता है ?

श्री कवासी लखमा :- अध्यक्ष महोदय, नरवा, गरूआ, घुरूआ, बारी में आदिवासियों को, गरीबों को पैसा मिल रहा है तो इनके पेट में दर्द हो रहा है । यह छत्तीसगढ़ के विरोधी हैं । छत्तीसगढ़ के लोगों को काम नहीं देना है, छत्तीसगढ़ के लोगों का गोबर खरीदी नहीं करना है ।

श्री अजय चन्द्राकर :- कितनी बार खड़े होंगे ? अभी तक पांच बार खड़े हो चुके हैं । अभी देखिएगा । जब प्रश्न के दिन जवाब देने के लिए उनका नम्बर आएगा तो मुंह छिपाकर भागेंगे ।

श्री कवासी लखमा :- नहीं भागेंगे, यहीं रहेंगे ।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हिन्दुस्तान में यह पहली सरकार है, जिसमें मुख्यमंत्री के फ्लेगशिप योजना का कोई असेसमेंट नहीं है, कोई बजट नहीं है और दूसरा बजट लगाया है, सारे अधिकारी सुन रहे हैं । 9 महीने बाद इसकी जांच करवाएंगे, जो अपराधी होगा, जो भ्रष्टाचार किया होगा, उसको जेल भेजेंगे। आज आप मेरे इस बात को नोट कर लीजिए ।

डॉ. (श्रीमती) रश्मि आशिष सिंह :- आप तो अभी से अधिकारियों को धमका रहे हैं ।

श्री अजय चन्द्राकर :- तैं सरस्वती शिशु मंदिर में जाके [xx]कर । इहां अब नहीं सीख सकस, तैं ओति जाके मारपीट कर ।

अध्यक्ष महोदय, अब वर्मी कम्पोस्ट उपलब्ध करवाया जा रहा है । माननीय मुख्यमंत्री जी किसान हैं । बरसात में जबरदस्ती तीन बोरी पकड़ा दी गई । गोबर खाद बरसात में डालते हैं क्या, आप बताईए । मुख्यमंत्री जी, आप किसान हैं, बार-बार अपने आपको किसान-किसान बोलते हैं न । बारिश में गोबर खाद डालते हैं क्या, बताईएगा । जबरदस्ती 900 रूपये में पकड़ाया गया । जब आप विपणन की व्यवस्था नहीं करते तो किसानों को जबरदस्ती क्यों पकड़ा रहे हो ? सवाल ही पैदा नहीं होता।

संसदीय सचिव, स्कूल शिक्षा मंत्री से सम्बद्ध (श्री द्वारिकाधीश यादव) :- अध्यक्ष जी, एक तरफ आप बोल रहे हैं कि वर्मी कम्पोस्ट नहीं बना है, कहां नहीं बना है, यह दिखाईए । दूसरी तरफ कह रहे हैं कि सारे सोसायटियों में जबरदस्ती पकड़ा दिया गया । तो दोनों बातें कैसे सही होगी ?

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, जितनी केन्द्रीय योजनाएं हैं, मनरेगा है, इस नरवा, गरूआ, घुरूआ, बारी में उसका अभिशरण किया गया । आज की तारीख तक आपने एक लाख क्विंटल गोबर खरीदा है । 28 लाख क्विंटल वर्मी कम्पोस्ट को 10 रूपए किलो के भाव से गुणा कर लीजिए, वह पैसा कहां है, किसके पास है, उसका क्या उपयोग हुआ है ? 2 रूपए किलो का गोबर 10 रूपए किलो में बिक रहा है । उसकी क्वालिटी का कोई मापदण्ड नहीं है, कितने दिन तक वह काम करता है ? सोसायटी बेचेगी, सोसायटी उस दिन तक बेच रही है, जब उसके पोषक तत्व खतम हो गए । मिट्टी को 10 रूपए किलो में बेच रहे हैं । इस सरकार में इतनी जादूगरी है । अब इन्होंने 85 लाख टन गोबर की गणना की है, उसमें से 15 लाख टन गोबर कहां गया ? कितना गोबर, कितनी मिट्टी है, उसका कोई हिसाब नहीं है । फिर आप इसको नोट कर लीजिए, हम 17 दिसम्बर के बाद इसकी जांच करवाएंगे और जिसने भ्रष्टाचार किया होगा तो लोग जेल जाएंगे । उधर के लोग भी सुन रहे हैं ।

श्री कवासी लखमा :- आपकी सरकार आने की गारंटी है ?

श्री अजय चन्द्राकर :- लखमा जी 6वीं बार खड़े हुए हैं । माननीय अध्यक्ष महोदय, भूपेश बघेल जी यहां पर बैठते थे और कहते थे कि 37 लाख किसान हैं । आप इतने किसान का धान खरीदी रहे हैं तो बाकी किसान कहां गये ? कल आर्थिक सर्वेक्षण प्रस्तुत हुआ है, मैंने अभी पढ़ा नहीं है। मैंने पिछले साल के आर्थिक सर्वेक्षण के एक-एक पेज को पढ़ा है। 41 लाख किसान हैं और आप 23 लाख 50 हजार किसानों से धान खरीदे हैं। अब आप यह बताईये, अब आपकी बारी है कि 11 लाख किसान कहां गये ?

माननीय अध्यक्ष महोदय, दूसरी बात, रकबा बढ़ाने की बात होती है। छत्तीसगढ़ में इसके अध्ययन करने की जरूरत है। आप रायपुर के 50 किलोमीटर एरिये को घूम लीजिये, उसके सराउण्डिग में कितना खेती का रकबा है ? आप मुख्यमंत्री जी पाटन क्षेत्र के सराउण्डिग एरिये में घूम लीजिये, कितना रकबा डायवर्टेड हो गया है। मैं एक छोटे से शहर में रहता हूं उसके 10 किलोमीटर के आजू-बाजू में कितना खेती का रकबा है ? जितने शहरी क्षेत्र हैं, 10 किलोमीटर एरिये को देखिये। माननीय अध्यक्ष महोदय, आप अपने शहर को देख लीजिये। छत्तीसगढ़ में रकबा घटा है। धान पुराने रकबे के हिसाब से

पैदा हो रहा है, कोई गिरदावरी नहीं हुई है। आप एक किसान से इन्टरव्यू ले लीजिये कि रकबा घटा तो गिरदावरी हुई तो आपके खेत को नापा गया क्या ? ताम्रध्वज साहू जी का फोन आया है कहकर रकबा बढ़ा। इसमें 4-5 लाख पट्टे का उल्लेख है। मैं आगे बोलता हूं। लेकिन छत्तीसगढ़ में एक भी रकबा नहीं बढ़ा है। धान खरीदी में कोई नियंत्रण नहीं है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, हम पहली बार रागी, कोदो, कुटकी के समर्थन मूल्य घोषित किए हैं। आप ऑनलाईन कृषि आयोग की वेबसाइट को देख लीजिये, केन्द्र सरकार ने उनका समर्थन मूल्य घोषित किया है और मैं इस पर आपको बधाई दे देता हूं। आप मिलेट मिशन या परम्परागत फसलों को बढ़ावा देते हैं तो आप बधाई ले लीजिये।

माननीय अध्यक्ष महोदय, खाद्यान एवं उद्यानिकी फसलों की लागत पर राहत देने हेतु कृषकों आदान राशि दी गई है। मैं उद्यानिकी फसल लगाता हूं। आप कुरूद जायेंगे तो सड़क में ही मेरा जाम का फसल दिख जायेगा। मैं सीताफल लगाता हूं, मैं कल आपको अपने खेत के अंजीर खिला दूंगा। मुझे आज 4 साल में एक भी राशि आदान राशि नहीं मिली है। मैं व्यक्तिगत तौर पर बोल रहा हूं। उद्यानिकी फसलों में किन-किन फसलों को देंगे, कितने एकड़ पर देंगे और कितनी राशि देंगे, यह मैं उद्यानिकी अधिकारी को पूछ चुका हूं कि मुझे क्यों आदान राशि नहीं मिलता है, वह जमीन मेरे लड़के और पत्नि के नाम से है। वह आज तक नहीं बता पाये। राशि कब देंगे पूछता हूं तो नहीं बताते हैं। धान खरीदी का रिकार्ड है, उद्यानिकी फसलों के बारे में अता-पता नहीं है। नगरी का दुबराज दुनिया में प्रसिद्ध था, पेण्ड्रा जो आपका संसदीय क्षेत्र है, उस तरफ मरवाही-पेण्ड्रा के सुगंधित चावल भारी प्रसद्धि है। प्रेमसाय जी, आप सुगंधित धान खरीदते हैं क्या ? कितना खरीदे हैं, किस भाव में खरीदते हैं, बता दीजिये ? यदि आप खरीदते हैं तो चलिये बताईये ?

मुख्यमंत्री (श्री भूपेश बघेल) :- आज अजय चन्द्राकर जी, अच्छा बोल रहे हैं और बहक नहीं रहे हैं। आवाज भी संयमित है, मैं उसकी प्रशंसा करता हूं।

श्री अजय चन्द्राकर :- भईया, मिलेट मिशन में तो मैं तो आपकी प्रशंसा किया हूं।

श्री भूपेश बघेल :- भईया, मैं आपकी प्रशंसा कर रहा हूं तो तकलीफ क्यों हो रही है।

श्री अजय चन्द्राकर :- जी-जी, धन्यवाद।

श्री भूपेश बघेल :- भईया, मेरी बात तो पूरी होने दे, यार।

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी :- यह बहुत अच्छा है जो एक दूसरे की प्रशंसा कर रहे हैं। बहुत बढ़िया मेचिंग है।

श्री भूपेश बघेल :- अजय जी, आपकी अनुमति से खड़ा हूं, आप थोड़ा बैठ जाईये, थोड़ा सा सुस्ता (आराम) लें। अध्यक्ष जी, अजय जी उद्यानिकी के बारे में बोले, मिलेट के बारे में बोले, बहुत अच्छी बात बोल रहे हैं और अच्छे विषय में बोल रहे हैं। मिलेट में सिर्फ रागी फसल पर भारत सरकार ने समर्थन

मूल्य घोषित किया है, कोदो, कुटकी पर अभी भी समर्थन मूल्य घोषित नहीं किया है। मैं प्रधानमंत्री जी से मिला तब भी निवेदन किया था कि कोदो, कुटकी का समर्थन मूल्य घोषित करें। हमने छत्तीसगढ़ मे किया है।

जहां तक उद्यानिकी की बात है, आप आवेदन तो करिये, पंजीयन तो कराईये, आपको पैसा क्यों नहीं मिलेगा? आप आवेदन करेंगे नहीं, पंजीयन करायेंगे नहीं तो पैसा कैसे मिलेगा ? आगे बढ़िये।

श्री अजय चन्द्राकर :- तोला मिलत हे कि नहीं ? तो जाम लग गय हे, ऐला बता न। हमर मन के कतका धान बिके हे, येला जारी करे रहेस।

श्री भूपेश बघेल :- मतलब इनकी निगाह मेरे खेत तक रहती है। (हंसी) रमन सिंह की निगाह मेरी खेत पर तो रहा, मकान में भी रहा, अब ये भी पहुंच रहे हैं। अजय जी, वह रास्ता ठीक नहीं है।

श्री शिवरतन शर्मा :- इनकी निगाह आपके खेत को नापने की नहीं है। आपको शासन की योजना का लाभ मिला या नहीं मिला, इस पर है।

श्री अजय चन्द्राकर :- अध्यक्ष महोदय, हम लोगों का धान कितना बिका है, इतना दिये और इतना लाभ लिये, अब उसमें आ जाता हूँ कि हम लोग बोनस का कितना लाभ लिये । माननीय अध्यक्ष महोदय, इनके आर्थिक सर्वेक्षण में लिखा है, 90 परशेंट किसान लघु और लघु सीमांत कृषक हैं । असली बोनस का लाभ रविन्द्र चौबे जी को मिल रहा है, असली बोनस का लाभ भूपेश बघेल जी को मिल रहा है, बोनस का लाभ मैडम बैठी है, उनको मिल रहा है । इनकी भाषा में कंगलू,मंगलू, सुकालु, दुकालु, पांच एकड़-दो एकड़-एक एकड़ वालों को नहीं मिल रहा है । पांच परशेंट बड़े जोत वाले हैं, उनको बोनस का असली लाभ है, यह आप भ्रम में रहिये और यह आपका भ्रम आपको मुबारक हो । अध्यक्ष महोदय, अनुसंधान के लिये उद्यानिकी विश्वविद्यालय बना रहे हैं, चलो ना अध्यक्ष महोदय, उतरकर चलते हैं पाटन में आपको बोर दिख जायेगा, कहां पर बन रहा है देखेंगे, चार साल हो गया है, पारित हुये । यहीं से चल रहा है बोलते हैं । आपने उद्यानिकी विश्वविद्यालय खोला है, कौन सा सब्जेक्ट चल रहा है, कितने सब्जेक्ट हैं, कितने का सेट अप मंजूर है, कितनी भर्ती हुई है, कौन कुलपति है, कौन रजिस्ट्रार है, सब बता दीजिएगा आप ।

श्री कवासी लखमा :- बाहर-बाहर से लाते हो, तुमको मालूम होगा ।

श्री अजय चन्द्राकर :- अध्यक्ष महोदय, कृषि मंत्री जी नहीं है, यह नील क्रांति के बारे में लिखे हैं, पांच लाख, इन्कानबे हजार मिट्रिक टन मछली । मैं एक विडियो बनाया था, मछुआरा नीति में बहस हो जाये, कृषि मंत्री जी आप कब बहस करेंगे, बताईये ? मछुआरों का हक मार दिया गया । हम जब थे, कोई भी जल क्षेत्र हो, मछुआरों को पहले मिलेगा । समिति को मिलेगा, मछुआरों को मिलेगा, नहीं होगा तो मत्स्य कृषक को, किसान को मिलेगा । संसार का कोई भी व्यक्ति उस ऑक्शन में भाग ले सकता है । अब वह पेटी कान्ट्रेक्टर हो गया, बड़े बात है तो रायल्टी शासन को 40 परशेंट देनी पड़ेगी, जो पहले

फ्री थी । कंगाल सरकार है, जहां से पैसा मिल जाये, गरीब मछुआरों से भी ये पैसा लेंगे । यह छत्तीसगढ़ के हितों की बात करते हैं, हम अंतिम बिन्दु पर आदमी को यह कर रहे हैं, वह कर रहे हैं, नारा लगाते हैं । मैं थोड़ा आपके बारे में नहीं बोल रहा हूँ, यह कृषि मंत्री जी नहीं है । यह सरकार का माईन्ड सेट अप, देखिये कृषि विभाग कहां काम कर रही है, बेमेतरा, साजा, धमधा, पाटन उप मंडियों में प्लाजा बनाई जायेगी । हमारी मंडी प्रदेश की सबसे बड़ी मंडी है, हम छत्तीसगढ़ में धान का रेट खोलते हैं, हम लिखकर दें तो 6 महीने में स्वीकृत कर दें तो बहुत है । हम कुछ मांगेंगे, मिल जाये तो बहुत है । माननीय कृषि मंत्री जी, माईन्ड सेट अप में हम आपको समझते थे कि व्यापक दृष्टिकोण होगा, ये बेमेतरा, साजा, पाटन और धमधा, बस मान गये । हमारा भ्रम मत तोड़िये भई । प्रदेश के ही नेता रहिये ।

श्री शिवरतन शर्मा :- इन मंडियों में बिकने के लिये आता है क्या, यह भी बता दीजिए । जिन मंडियों में आप उन्नयन कर रहे हो, वहां कुछ आता है क्या । छत्तीसगढ़ की सबसे बड़ी मंडी....।

श्री रविन्द्र चौबे :- भाटापारा मंडी भी चलता है तो मेरे साजा और बेमेतरा के उत्पाद से चलता है । आपका भाटापारा भी अगर चलता है ना, साजा का गुलाबी चना ही वहां जाता है ।

श्री शिवरतन शर्मा :- हां, आता है ना, मैं स्वीकार करता हूँ । आपके यहां नहीं बिकता है, इसलिये मेरे यहां आता है । आठ बार ।

श्री धरमलाल कौशिक :- क्या है, अभी केवल मंडी में बता रहे हैं, साजा, बेमेतरा, पाटन.....।

श्री अजय चन्द्राकर :- धमधा ।

श्री धरमलाल कौशिक :-अभी आप सड़क में आयेंगे ना, तो भी इतना ही बतायेंगे । ज्यादा आपको नहीं मिलेगा ।

श्री अजय चन्द्राकर :- 9 बार होगे । दूरगामी है, आयेंगे सड़क में । अब लघु वनोपज संघ 130 परशेंट हर्बल ब्राण्ड में मेरा एक प्रश्न है साहब, आयेगा किसी न किसी दिन आपको मालूम होगा । आज तक किस चीज में वह ब्राण्ड किये हैं, कोन पैकेजिंग किया, कहां वितरण होता है, कितना वितरण हुआ, समितियों को लाभ हुआ कि सोसायटियों को लाभ हुआ, इस सरकार ने प्रतिवेदन से लेकर किसी में नही बताया है, मेरा प्रश्न भी है । यदि बहस में आ जाये तो उस प्रश्न के दिन आप रहियेगा । 130 हर्बल ब्राण्ड कौन कौन से हैं भाई, कहां प्रस्संकरण होता है, कहां बिकता है, कौन से काऊंटर हैं, कितने हैं, अब 4 हजार बोरा आप दे रहे हैं, 61-62 जितने भी लघु वनोपज हैं, आप 4 हजार एक को दे रहे हैं । अध्यक्ष महोदय, बाकी कितनी खरीदी हुई है, 61 में यह पीठ थपथपाते हैं, इनकी हिम्मत है तो उनके रिकार्ड को टेबल करना चाहिये । पूरे कितनी मात्रा में खरीदते हैं, माननीय मुख्यमंत्री जी अभिभाषण में खड़े होंगे उससे पहले उसको टेबल करें कि हमने इतनी मात्रा में खरीदी है। संग्राहकों के बीमा का, संग्राहकों के बोनस का क्या हुआ ? इसके बारे में सरकार मौन है। जो बाकी योजनाएं हैं, उनके बच्चों की

छात्रवृत्ति है और बाकी चीजें चरण-पादुका चलती थी, उसके बारे मे सरकार मौन है। हरित आवरण के लिये 1 लाख 55 हजार पौधे ...। मैं तो यह बोलता हूं कि भाजपा के 15 साल को भी शामिल कर लीजिये। जितने पौधे रोपे गये हैं, उसकी सोशल ऑडिट होनी चाहिए। मैं भाजपा को भी बोल रहा हूं। पूरा छत्तीसगढ़ 43 या 44 प्रतिशत वनाच्छादित है, वह पूरा 100 प्रतिशत हो जाता।

श्री रविन्द्र चौबे :- अजय जी, आप वह रतनजोत नामक कोई चीज जाये थे।

श्री अजय चंद्राकर :- उसकी भी जांच करवा लीजिये।

श्री रविन्द्र चौबे :- अध्यक्ष महोदय, अंबिकापुर क्षेत्र का जो टोटल रकबा, टोटल एरिया है, आपने उससे ज्यादा पौधे लगाये थे।

श्री अजय चंद्राकर :- आपको किसने मना किया है। मैंने अभी बोला है कि 17 दिसम्बर के बाद मैं दो चीजों की जांच करवाऊंगा। आप समझ रहे हो। पूरे छत्तीसगढ़ में 100 प्रतिशत, छत्तीसगढ़ में वृक्षारोपण करवाने का आंकड़ा, किसी पार्टी से सिर्फ इस योजना की सोशल ऑडिट जरूरी है। । मेरा आरोप है कि जंगल विभाग, जंगल काटने का काम कर रहा है, जंगल लगाने का काम नहीं कर रहा है।

श्री यू.डी. मिंज :- उसको आज क्यों बोल रहे हैं ? 15 साल पहले क्यों नहीं बोले ?

श्री अजय चंद्राकर :- अध्यक्ष महोदय, जंगल विभाग, लकड़ी चोरी करवाने का काम करती है। ग्रामीणों को अनलॉफुल एक्ट में फंसाने का काम करती है। यह बोलते हैं न कि मुकदमा वापय लिये हैं। आज तक आदिवासियों के ऊपर अनलॉफुल एक्ट लग रहे हैं। यह वृक्ष सम्पदा इनके कागज में है। मैं माननीय मुख्यमंत्री जी को बोलूंगा कि आप भाषण में इस आंकड़े को बताएं कि किस वर्ष वृक्ष संपदा में इतने किसानों को इतना पैसा दिया गया। इतने किसानों ने इस योजना का लाभ उठाया। कुछ नहीं है, कुछ भी लिख दिये हैं।

माननीय अध्यक्ष महोदय, कैम्पा मद की बात करना चाहता हूं। अब जंगल में मोर नाचा किसने देखा। कौन टीएस बना रहा है, कौन कर रहा है। वह तो अंदर जायेंगे कहने से पटाका फोड़ देते हैं कि उधर नक्सली है, मत जाओ। आप जंगल विभाग में कैम्पा मद की जांच करने जाओगे तो वह आगे से जा के पटाका फोड़ देंगे कि वहां मत जाओ वहां नक्सली है। जंगल में मोर नाचा किसने देखा। कैम्पा मद का नरवा, गरूवा, घुरूवा बारी जो है, वह मुख्यमंत्री जी की सरकार की पॉकेट मनी है। आप मैदानी क्षेत्र के है, हम लोग 5 साल में एक भी नरवा, गरूवा, घुरूवा, बारी नहीं देखे हैं। मेरी constituency में एक गौठान के उद्घाटन में गये तो वहां उस गांव का नरवा मैंने बंधवाया था। इनके अधिकारी लोग उसको लीप-पोत दिये। उस गांव के नाम को भी याद दिला देता हूं, वह हंचलपुर था। यह सरकार के जो बड़े बड़े आयोजन होते हैं उसकी पॉकेट मनी है, जो 20 टन गुलाब आते हैं, जो 56 भोग बनते हैं, यह उसका काम देता हैं। व्यक्तिगत सामुदायिक अधिकार वितरण में तेजी आयी, 5 लाख से अधिक। माननीय चौबे जी, आप उसमें 20 साल का डाटा बता रहे हो या 4 साल का बता रहे हो। आप फिर शर्त लग जाईये। राजनीति में ऐसी

बात नहीं करता लेकिन यदि आपने 5 साल में बांटा है तो प्रतिवर्ष नाम सहित आंकड़ा रख दीजिये। हमारे समय में 4.5 लाख बंट चुका था। अब यदि आपने 5 लाख 15 हजार बांटे होंगे तो संख्या 10 लाख होगी, समथिंग 9 लाख की। आप 9 लाख समथिंग का डाटा रखिये। हम तब मान जायेंगे कि आपने 5 लाख से ऊपर बांटा है। हमने लोहाण्डीगुडा में जमीन वापस की। आपने किसको जमीन वापस की और अधिग्रहण किसने किया था ? सरकार की जमीन थी, डी.आई.सी. के पास जमीन थी, अभी भी जमीन डी.आई.सी के पास है।

श्री राजमन वेंजाम (चित्रकोट) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, जब लोहाण्डीगुडा की जमीन वापसी हुई। वहां के किसान लोग धान तक नहीं बेचते थे। इनकी सरकार ने वहां के किसानों को जमीन से वंचित रखा था और उनको हमारी सरकार ने जमीन वापस कर दी है तो इनको दर्द क्यों हो रहा है ? आप लोगों ने लोहाण्डीगुडा के किसानों की जमीन को अधिग्रहित करके टाटा के पास रखी थी, वह अपनी जमीन का धान भी नहीं बेच पाते थे।

श्री शिवरतन शर्मा :- वह जमीन किसानों के पजेसन में थी। किसानों से वह जमीन ली नही गई थी।

श्री राजमन वेंजाम :- आप किसानों की जमीन नहीं ले रहे थे लेकिन उनके पास पट्टा तो नहीं था हमारी सरकार ने उनको पट्टा दिया।

श्री अजय चंद्राकर :- अध्यक्ष महोदय, कांग्रेस के एक बड़े नेता का चुनाव प्रचार-प्रसार के समय का वीडियो वायरल है। आप फसल काटेंगे आप नयी फसल लेंगे। ऐसी गला बैठे आवाज में बोलते हैं। वहां पर तुरंत प्रसंस्करण केंद्र होगा। अरे बाप रे। (हंसी) अभी तक चार साल में कहां पहुंचे हैं ?

श्री रविन्द्र चौबे :- भाइयों और बहनों।

श्री कवासी लखमा :- भाइयों और बहनों 15 लाख मिलेगा। वह कहां है ?

श्री अजय चंद्राकर :- 11 बार।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- महोदय जी, 15 लाख रूपये कहां हैं ?

श्री कवासी लखमा :- गैस सिलेण्डर का रेट क्या हुआ? भाईयों और बहनों, 9 सालों में गैस सिलेण्डर का रेट 1250 रूपये हो गया। कांग्रेस सरकार में गैस का रेट 400 रूपये था। 65 सालों तक कांग्रेस की सरकार थी।

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- माननीय अध्यक्ष महोदय, 15 लाख रूपये कहां गया? सस्ता दिन कहां गया? हमारे अच्छे दिन कहां गये?

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, सिर्फ भूमि चयन की गई है। आप 4 महीने में एक्ट लगा लें। इनके द्वारा 112 की भूमि चयन की गई। क्या आपने जनता को बेवकूफ समझ रखा

है ? छत्तीसगढ़ की जनता शुतुरमुर्ग है। इनके कारनामों को नहीं देख रही है। इनके शब्दों को नहीं समझ रही है।

श्री कवासी लखमा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, क्या हिन्दुस्तान की 2 करोड़ जनता बेवकूफ है ?

श्री अजय चन्द्राकर :- 12 करोड़ है। मैं उस पर आ रहा हूँ।

अध्यक्ष महोदय :- माननीय मंत्री जी, थोड़ा ज्यादा हो रहा है। उनको अपना भाषण खत्म करने दीजिए। मेरे ख्याल से और कार्यक्रम है।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, इन्होंने रिपा शुरू की। रिपा में क्या गतिविधियां लगेंगी। उसमें कितनी लागत होगी ? उसका कौन प्रोजेक्ट रिपोर्ट बनाएगा ? उसमें कितने लोग हैं ? उस ऋण में स्टेट गारण्टी देगी या नहीं ? कि जो लोग गौठन में लगायेंगे, उसका अता-पता नहीं है। मैंने उनसे पूछा कि भाई, आप क्या करेंगे ? तो वह बोले कि हम आपको जमीन दे देंगे। आप धनकुट्टी भी लगायेंगे तो 2 लाख रूपये का खर्च लगेगा। तो कम से कम मैं तो भूपेश बघेल जी की सरकार से अपेक्षा रखता था कि यदि आप रिपा बना रहे होते, यदि हम पहल ग्रामीण के नाम से स्वीकार करते हैं तो इतनी चीजें लगेंगी, उसमें स्टेट गारण्टी होगी, इतने ब्याज की छूट मिलेगी। कुटीर उद्योग या रिपा के लिए कोई नीति बनती।

डॉ. रश्मि आशिष सिंह :- आजीविका आनन क्यों बना है ? उसमें क्या होने वाला है ?

श्री अजय चन्द्राकर :- में तोला बोलव ना कि उहां जाके [XX] कर।

डॉ. रश्मि आशिष सिंह :- इहां बइठ के तोर से सिखत हौं।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, कुछ अता-पता नहीं है। हम जमीन देंगे। अब रिपा में आप सक्ती के कौन से क्षेत्र में चलेंगे, कौन से गौठन में एकाध ठोक धनकुट्टी लगा है।

संसदीय सचिव (खाद्य मंत्री से संबद्ध)श्री कुंवर सिंह निषाद :- अजय भईया, आप मेरे क्षेत्र में खपराभाट चलिये। वहां गोबर से पेंट बन रहा है। मैं आपको दिखाऊंगा।

श्री अजय चन्द्राकर :- अइसे हे यार। तोर भाषा में तोर सरकार हा गम्मत करत हे। गम्मत।

श्री कुंवर सिंह निषाद :- अजय भईया, तुमन ला ओतको नइ आवत रिहिस हे। हमर छत्तीसगढ़ के संस्कृति ला पूरा हिन्दुस्तान में देखावत हन ।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, अभी आगे 5.00 बजे तक सुनबे।

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- भईया, यहां गम्मत नहीं चल रहा है। व्यवस्था को सुचारू रूप से चलाने का प्रयास हो रहा है।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, तो इस प्रदेश में रिपा, इनके प्रसंस्करण केन्द्र का यह हाल है ? इनकी सरकार को साढ़े चाल साल हो गये हैं। हम फिर कभी जनघोषणा पत्र की बात कर लेंगे। देवगुड़ी, आदिवासियों के संरक्षण के लिए काम कर रहे हो, आपने लोहाण्डीगुड़ा की जमीन को

लौटाया है तो साहब, कमिश्नर का बयान है। मैं जांच करूंगा, बस्तर कमिश्नर की । यहां वह भाभी जी हैं सुकमा, बीजापुर, दंतेवाड़ा में आदिवासी लड़कियों से शादी करके बाहरी लोग जमीन खरीद रहे हैं। डेमोग्राफी, धर्मान्तरण सभी कर रहे हैं, यह अलग है। उसकी आजीविका जा रही है, यह अलग है। यदि आपमें हिम्मत है आपने कहा कि हमने जमीन लौटा दी, ऐसा कर दिया, हमने वैसा कर दिया। माननीय भूपेश बघेल जी से तो अपेक्षा रहती है कि वह बोलें कि इस तरह के षड़यंत्र जो आदिवासियों के साथ हो रहे हैं, उसको मैं रोकूंगा। मैं रोकूंगा नहीं, आप उसे संरक्षण दे रहे है। मैंने क्या बताया था, यू.एन. ढेबर। राष्ट्रीय कांग्रेस के 5 बार के अध्यक्ष हैं। छत्तीसगढ़ में उसकी आत्मा घुस गई है। अब यह उत्कर्ष योजना, क्षेत्र योजना, बाल सुरक्षा योजना यह तो जनसंपर्क वाले वह खुद नहीं जानते। एक बार मैंने कहा कि आपने 5 लाख नौकरी के आंकड़े जारी कर दिये हैं साहब, हमें नीचे से आया, हमने उसको छाप दिया, ऐसा बोलते हैं। मैं अपनी कसम बोल रहा हूँ वह ऐसी बोले। (हंसी) तो आप यह देखिए कि एक पैरा के लिए अच्छा है। यह इतनी सारी योजनाएं हैं। उसके बाद आदिवासी दिवस पर अंतर्राष्ट्रीय नृत्य करवाया। इन्होंने प्रदेश में रामायाण करवाएं। एक एजेंसी को 9 करोड़ रूपये दिये हैं। अभी एक किस्त का भुगतान और होगा। वह कांग्रेस के एक नेता की एजेंसी है। वह छत्तीसगढ़ में रामायण करवायेगी। हम लोग रामायण पढ़ने वाले नहीं हैं। दिल्ली की एजेंसी रामायण मेला में वह रामायण पढ़ने वालों को लायी थी। एक एजेंसी को 9 करोड़ रूपये दिये हैं।

अध्यक्ष महोदय :- आपको बोलते हुए 32 मनिट हो गये हैं।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं जल्दी-जल्दी पढ़ देता हूं। इसमें वैसे है कुछ नहीं।

अध्यक्ष महोदय :- मैं आपको याद दिला रहा हूं। चूंकि आपने कटौती प्रस्ताव में 301 संशोधन दिये हैं।

श्री अजय चन्द्राकर :- साहब, आप बहुत विद्वान हैं। ग्रामीण विकास मंत्री हैं। आप पेसा कानून बनाने वाले छठवा राज्य हैं। आप एक प्रस्ताव लाईये, पेसा पर बहस करते हैं। किस दिन करेंगे? आपने ग्राम सभा को क्या अधिकार दिया है? पर्यवेक्षण के अधिकार को छोड़कर उसमें क्या विशिष्ट है? कुछ नहीं है। आप एक-एक बिन्दु पर बहस कीजिए। यदि वहां पेसा कानून लागू होगा। मुख्यमंत्री जी एक सभा में बोलने गये थे। 05 मिनट में पंडाल खाली हो गया था। पिछड़े समुदाय के लोगों ने कहा कि हमारी क्या भूमिका होगी? क्या भूमिका होगी सुनकर मुख्यमंत्री जी आजू-बाजू देखने लगे, वह उठकर चल दिये। पेसा क्षेत्रों में आप उनकी भूमिका कैसे सुरक्षित करते हैं। उसमें एक लाईन नहीं है। मैं तो बोलता हूं कि पूरा सदन भाग ले। जब आप पेसा में श्रेय ले रहे हो तो पेसा में खुली बहस करो न। सुराजी गांव टाईप मत करो जहां जुआं, सट्टा होगा। सुराजी गांव है, करके अवैध दारू बिकवायेंगे।

माननीय अध्यक्ष महोदय, यह राजीव मितान क्लब भी रिपीट हो गया है। अब राजीव मितान क्लब के बारे में बता दूं, कल छत्तीसगढ़िया खेल के बारे में प्रश्न आया था। उनको 32 करोड़ रुपये दिये हैं। राष्ट्रीय खेल में 1 लाख 88 हजार रुपये दिये हैं। अभी मैं कल पत्रकारों को सर्कुलर दिया, वह खेल के लिए अलग पैसा जारी हुआ है। बजट में अभी इस चौथे अनुपूरक में 21 करोड़ रुपये और जारी हो गया है। तो यह खेलो इंडिया में खेला होबे। बंगाल की भाषा में खेला होबे। ये खेला हो गये है। राजीव मितान क्लब, खेलो इंडिया, महिला लोगों को प्रशिक्षण शिविर और छत्तीसगढ़ ओलंपिक में कितने पैसा खर्च हो गये, उसका हिसाब लगाओगे तो जेब खर्चा क्या उतने में कांग्रेस का एक और अधिवेशन हो जायेगा। माननीय अध्यक्ष महोदय, ये खेलो इंडिया, पारंपरिक खेल भी हो गया। उसमें खेलते-खेलते तीन लोग शहीद हो गये। शिवरतन शर्मा जी के प्रश्न में खेल मंत्री जी का उत्तर है कि कौन खेल का आयोजन करवाये, हमको नहीं मालूम और खेलो इंडिया, छत्तीसगढ़िया ओलंपिक हो गया। पित्तुल के नियम क्या हैं? हमने कल मांग की, हमारा आशय यह था कि छत्तीसगढ़ के खेलों के लिए ओलंपिक संघ मान्यता नहीं देता है तो आप छत्तीसगढ़ी ओलंपिक संघ बना दीजिए। नियम बना दीजिए, आयोजन के प्रारूप बना दीजिए। नौकरी में मान्यता दीजिए तो वह कैरियर होगा। पहली बार दर्जा दिये तो आज महिला आई.पी.एल. शुरू हो रहा है। जेंडर डिफरेंस हो गया। क्रिकेटर दोनों को समान तनख्वाह दी जायेगी। राजनीति के लिए पहल करना और ईमानदारी से खेल को संरक्षण देना, दोनों अलग-अलग बात है। छत्तीसगढ़ की भावना को भूपेश बघेल जी ने खेल बना दिया है, फुटबाल की तरह उछाल रहे हैं। सांकर लेना संस्कृति है। खेलो इंडिया में पित्तुल कैसे खेला जाता है, चयन कैसे होता है, उसके लिए नियम बनायें न। ओपन प्रतियोगितायें होंगी, स्कूली प्रतियोगितायें होंगी, खेल संघों की यूनियन की प्रतियोगितायें होंगी, कुछ तो बतायें। एक दिन खेला दिये, हो गया।

माननीय अध्यक्ष महोदय, मुख्यमंत्री ग्राम सड़क एवं विकास योजना में 4876 किलोमीटर लंबी 1 हजार 709 सड़कों का निर्माण पूरा हो चुका है। मुख्यमंत्री ग्राम गौरवपथ योजना के अंतर्गत 2155 किलोमीटर सड़कों का निर्माण पूर्ण किया गया है। अब जो लागत है, आप टी.एस. बता देना। यह बजट आयोजन मैं 4 साल का पढ़ देता हूं। यह जितना बजट आयोजन है, 214 किलोमीटर सड़क बनी है, उसकी लागत राशि 214 करोड़ रुपये 04 साल में है। यह 4 हजार किलोमीटर सड़क कैसे बनायेंगे? यह मुख्यमंत्री गौरव पथ का है। मेरे को बतायें कि 214 करोड़ में 214 किलोमीटर सड़क कैसे बनी है? इसकी टी.एस. कितनी है, आप बताईये। आपने 2019, 2020, 2021 में मुख्यमंत्री सड़क योजना के लिए टोटल में 394 करोड़ रुपये रखा है। 04 साल में सड़क की लंबाई कितनी बता दी है? आप पढ़ दीजिए, आपने चीफ इंजीनियर को बुलाईये। टी.एस. कितना होता है, 04 साल में राशि का आयोजन कितना है ? आपको अधिकारियों एक सेकंड में यहीं खड़े होकर निलंबित करना चाहिए। यह असत्य लिखवाने के बजाय, जो बजट आयोजन है उसको देख लीजिए, टी.एस. देख लीजिए और यह लंबाई को पढ़ लीजिए।

माननीय अध्यक्ष महोदय, विमानन सेवाओं को जोड़ने के लिए बिलासपुर के हवाई अड्डे का कितना काम हुआ है? एक मात्र जो घोषणा हुई है, बाकी पूरे आम आदमी। माननीय मोदी जी ने कहा है कि जो चप्पल पहनने वाले हैं, वह भी उड़ सकें, ऐसा काम हम करेंगे। देश में हवाई अड्डे हों, उसके लायक बने। लेकिन आपने बिलासपुर के लिए जो पैसा दिया है, अभी चाहे तो पी.डब्ल्यू.डी. मंत्री जी यह बता दें कि उसकी चालू माली हालत क्या है? वह तो अभी बैठे हैं।

डॉ. (श्रीमती) रश्मि आशिष सिंह :- सेना से जमीन वापिस नहीं मिली है।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, जल जीवन मिशन, सितंबर, 2023 तक पूरा करना है। एम.ओ.यू. दिल्ली सरकार के साथ है। महागुरू जी बोल रहे थे कि पूर्ण मतलब कम्प्लीट। इतनी अंग्रेजी तो मुझे आती है, लेकिन उनके इतना तो अंगेजी नहीं आती। मैं महागुरू नहीं हूं, मैं शिष्य हूं। आपका शिष्य हूं। मैं स्वीकार करता हूं कि मैं चौबे जी का भी शिष्य हूं, भूपेश बघेल का भी शिष्य हूं। मेरे को सीखने में कभी कोई बुराई नहीं लगती। मैंने तीन गांव राचाडीह, भोथीडीह, मोहंदी का नाम लिया था कि इन गोवों का भौतिक सत्यापन करायेंगे क्या? लक्ष्मी देवी जी बैठी हैं, उन गांवों को मैं उनसे ज्यादा जानता हूं। एक गांव में पानी हो, एक बूंद किसी को मालूम रहा हो तो आप जो सजा निर्धारित करें, अभी उसको मैं मान लूंगा। आप जो सजा निर्धारित करें। एक जगह, पूरा का मतलब क्या होता है?

लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी मंत्री (श्री गुरू रूद्र कुमार) :- आपके मांग के अनुरूप मैंने विधायक जी की उपस्थिति में जांच का आदेश दिया था, उसको भी बोलिये न।

श्री अजय चंद्राकर :- अब आप अपना नाम दे दीजिये। यदि उत्तर देंगे तो मेरा खंडन करने के लिए मुख्यमंत्री जी को लिख कर दिलवा दीजिये। दूसरी बात बता दूं कि अलग-अलग आयटम के जितने सप्लायर्स हैं। एक हजार करोड़ का सप्लायर था, उसको कैंसल किए हैं। पहले सेंट्रल टेंडर होगा। कांग्रेस वाले रोने पहुंच गये, हमारा क्या होगा जहाँपनाह? जिल-ए-सुभानी माननीय मुख्यमंत्री जी को कहा कि आलम-बरदार, हमारा क्या होगा? तो उन्होंने कहा कि टेण्डर जिला स्तर पर, सब कोई भाग लो। कांग्रेस के लोग, ठेकेदार हो गये। कौन आपत्ति लिया, मुख्यमंत्री जी के पास कौन गया था, उसको मैं नाम सहित बता दूंगा। अब वह पानी पीने की योजना बन गई, लेकिन जनता को पिलाने की योजना नहीं है। पिछले सत्र में बोले कि एस.ओ.आर. के कारण हमने 1700 करोड़ रूपये का टेण्डर किया है। वह कैंसल किए हैं, सप्लाई को कैंसल कर दिए हैं। मंत्री जी बैठे हैं, मैं उसके सामने बोल रहा हूं कि दो साल के कार्यों की जांच कराई जाए। उन्होंने खुद लिखकर दिया है। समाचार पत्रों में यह आया है। जब जांच के लिए लिखते हैं तो क्या वे अपने विभाग के अधिकारियों के ऊपर या अपने कार्यकाल के कामों के ऊपर खुद स्वीकार करते हैं कि भ्रष्टाचार हुआ है? दूसरी बात, कितना प्रतिशत काम पुरा हुआ है? किसी में 22 प्रतिशत बताते हैं, किसी में 37 प्रतिशत बताते हैं। माननीय अध्यक्ष महोदय, भारत सरकार performance base में उसमें और पैसा देती है। छत्तीसगढ़ इस योजना में performance base में कहते हैं, अभी तो जो काम कर

रहे हैं, पंप लगा कर अंदर में खींच रहे हैं । जनता को पानी नहीं पिला रहे हैं, अभी पानी खुद पी रहे हैं। यह जल जीवन मिशन का हाल है। अच्छा, अब आते हैं, थोराइड, वोराइड को यह कभी ठीक नहीं कर सकते।

अध्यक्ष महोदय :- चलिये, अब हो गया।

श्री अजय चंद्राकर :- साहब, थोड़ा सा ।

अध्यक्ष महोदय :- इन लोगों के लिए छोड़ दीजिये।

श्री अजय चंद्राकर :- अच्छा, मैं थोड़ा सा बोल देता हूं। मेरी सरकार ने युवाओं को रोजगार देने के लिए हरसंभव उपाय किया, जिसके कारण बेरोजगारी दर न्यूनतम है। सरकार ने 4 प्रतिशत का विज्ञापन पेपर में दिया है। मैं आपको एक जानकारी बता देता हूं। अधिकारी दीर्घा में एक सज्जन भी बैठे हैं। यह मेरे उत्तर में भी आया है। सेंटर फॉर मॉनिटरिंग इंडिया इकोनॉमिक्स प्राईवेट लिमिटेड, मुंबई का कहना है कि छत्तीसगढ़ में 0.4 प्रतिशत बेरोजगारी है। मैंने उस कंपनी के सी.ई.ओ. महेश व्यास जी को फोन किया। मैंने कहा कि आपने तो महालनोबिस जी को फेल कर दिया है। महालनोबीस जी भारतीय स्टेटिक्स के जन्मदाता हैं। मैंने कहा कि आपने किस आधार पर इस आंकड़े को निकाला है। मैं इसमें बहस करना चाहता हूं। मैंने 9 अक्टूबर, 2022 को उनसे बात की थी। मैंने लिखकर रखा है। सी.एम.आई.ई.। वे मुझे बोले कि मैं तो पूरे को नहीं देखता हूं तो जो छत्तीसगढ़ रीजन को देखते हैं, उसको भेजता हूं। आप मानेंगे नहीं, वह मेरे पास आज तक नहीं आया है और इनके अधिकारी उस प्राईवेट लिमिटेड का उत्तर में उल्लेख करते हैं और यदि उनकी दी गई जानकारी को स्वीकार किए हैं तो इसमें लिखना चाहिए 0.4 प्रतिशत बेराजगारी है। तो फिर आप बेरोजगारी भत्ता क्यों दे रहे हैं? यदि आप 0.4 प्रतिशत को बेरोजगारी दर मानते हैं तो एक-एक आदमी के पास पांच-पांच, छः-छः काम हैं। माननीय संसदीय कार्य मंत्री जी, 0.4 प्रतिशत में एक आदमी के पास कितना काम हुआ? कहां है बेरोजगारी? आप क्यों बेरोजगारी भत्ता दे रहे हैं? पांच साल में कितनी भर्ती हुई? इसी सत्र में यह प्रश्न है तो उत्तर आया है कि जानकारी एकत्र की जा रही है । यानी हम लोगों को तो ऐसा समझ लिये हैं कि जैसे हम लोग कुछ नहीं जानते, पूरा ज्ञान माननीय मुख्यमंत्री जी और उनके जो खास सिपेहसलार बैठे हैं उन्हीं के पास है । वो व्यास जी को मैं आपके सामने फोन लगा दूंगा, महालनोबिस की औलाद को । माननीय अध्यक्ष महोदय, 30 लाख नवाचार के लिये सब तो रिपिटेड है । वाहन के लिये 30 लाख रूपये में से 20 लाख रूपये तो अब नवाचार क्या होगा ? सट्टा तो हो ही रहा है, अवैध शराब बिक रही है, जमीन में कब्जा हो रहा है, अपराध बढ़ रहे हैं, अभी जो कार जली है उसमें 4 लोग गायब हैं लेकिन आपको तो कोई फर्क पड़ना नहीं है । रोम जल रहा था कि रोम जलाया गया, इतिहासकारों में किसमें विवाद है ? लेकिन आपके लिये न जलाया गया है । आप मजा ले सकें इसलिये छत्तीसगढ़ को आपके लिये जलाया गया है । अभी जो कार में आग लगी है उसमें 4 लोग गायब हैं । कोई फर्क नहीं पड़ता । एक की जीभ को

दाग दिया गया है, कोई फर्क नहीं पड़ता । नये-नये अपराध, अभ्यारण्य छत्तीसगढ़ । दुनिया में जितने तरह के अपराधी हैं । सायबर ठगी, फिरौती, कट्टा, अवैध नशा, गोली जितने प्रकार के हैं वह सब छत्तीसगढ़ में हैं और गृहमंत्री जी का यही स्टार्टअप है, यह स्टार्टअप है, यह नवाचार है तो 30 लाख रूपये भी खर्च करने की कया जरूरत है ? क्या केवल वाहन में चढ़कर धान बेचेंगे ? 20 लाख रूपये के वाहन में 4 महीने में नवाचार क्या होगा ? माननीय अध्यक्ष महोदय, नागरिक सेवाओं को ऑनलाईन पहुंचाने...।

अध्यक्ष महोदय :- समाप्त करें ।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं एक मिनट में अपनी बात समाप्त कर रहा हूं । मैं केवल एक-दो लाईन बोल देता हूं । यह चौथी बार आया है कि 22 लाख उपभोक्ताओं को, चूंकि अभी तक वंचित हैं इसलिये बिजली बिल हॉफ है, अभिभाषण में यह चौथी बार आया है कि यह छूट हो रही है, छूट हो रही है करके।

आबकारी मंत्री (श्री कवासी लखमा) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, ये बढ़िया तो बोल रहे हैं लेकिन ये थोड़ा परेशान कर रहे हैं । आप उनको थोड़ा देखिये ।

अध्यक्ष महोदय :- वे खत्म कर रहे हैं ।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, शिक्षा के क्षेत्र में आपने आत्मानंद स्कूल खोले । जितने भी स्कूल खोले लेकिन एक बिल्डिंग नहीं बनी । पुराने बिल्डिंग में कौन-कौन से मद का कितना रेनोवशन हुआ ? यदि मुख्यमंत्री जी के पास नैतिकता है, पी.डब्ल्यू.डी. मंत्री करवाये होंगे, आर.ई.एस. करवाई होगी, स्कूल-शिक्षा मंत्री कौन सी एजेंसी का कल नाम ले रहे थे ? शैलेश पाण्डेय जी या वे, कोई भी कि एजेंसी क्यों नहीं बनी ? ये हाथी छाप नाम ले रहे थे तो माननीय अध्यक्ष महोदय जी आप यह देखिये कि क्या आप उसकी जांच करवायेंगे ? वह रेनोवेशन घोटाला है । आपने संविदा में भर्ती की है । नया सेटअप स्वीकृत हुआ है कि नहीं हुआ है ? कौन भर्ती करेंगे, कलेक्टर के ऊपर दे दिया गया है । क्या उसके मापदंड होंगे ? क्या नहीं होंगे ? आप उत्कृष्टता की बात करते हैं तो उत्कृष्टता शिक्षा में हर क्षेत्र में होनी चाहिए, नाम छापने के लिये नहीं होनी चाहिए । इनको मालूम है कि मैंने भी लाईब्रेरी खोली थी आत्मानंद जी के नाम से कि पढ़ने-पढ़वाने की आदत पड़े। मैं उत्कृष्टता के लिये लोगों का समर्थन करता हूं लेकिन मैंने बोला न कि सांकड़ बनवाना संस्कृति नहीं है । पुन्नी नहाना संस्कृति नहीं है । संस्कृति की परिभाषा संस्कृति विभाग के डिमांग मांग में बात करेंगे लेकिन यह नारा लगाने का विषय हो गया कि हमने यह खोला । कहां के शिक्षक हैं भई ? कौन-कौन से शिक्षक हैं ? किसकी ट्रेनिंग हुई ? कोई बी.एड. है, कौन एम.एड. है ? यदि हिंदुस्तान में किसी ने बी.एड. पढ़ा है तो आप उस एक भी शिक्षक से पूछ लीजिये कि अब तक कितने शिक्षा कमीशन बनाये गये ? यदि आत्मानंद विद्यालय के शिक्षक इसका एक उत्तर दे देंगे तो आप मुझे जो सजा दें, मैं उसको मान जाउंगा ।

अध्यक्ष महोदय :- आपका हाथ कांपने लगा है, अब छोड़ दीजिए । (हंसी)

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं दो विषय को और ले लेता हूं ।

श्री कुलदीप जुनेजा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, उनका हाथ बहुत कांप रहा है। आप उनका थोड़ा सा डॉक्टरी परीक्षण करवा लीजिये क्योंकि उनका हाथ बहुत ज्यादा कांप रहा है ।

अध्यक्ष महोदय :- आप बैठिए ।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय अध्चक्ष महोदय, जनघोषणा पत्र में कहीं पर नहीं लिखा था कि हम नीलाम करेंगे तब चिटफंड के पैसे को वापस करेंगे । यह हर अभिभाषण में आता है । मैंने बोला न कि दिमाग से खोखला हो गये हैं । यह विजनलेस सरकार है । मैं भाषण लिखा दूंगा ।

संसदीय कार्यमंत्री (श्री रविन्द्र चौबे) :- चिटफंड का उद्घाटन तो आप लोगों ने ही किया ।

श्री अजय चंद्राकर :- हो गया तो आप लोग कार्यवाही करिये न । आप गिनाईये मत, कार्यवाही करिये ।

श्री कवासी लखमा :- जनता के पैसे को क्यों लुटवा दिये ?

श्री अजय चंद्राकर :- चौदहवीं बार तो यह लिखा था कि हम चिटफंड के पैसे को वापस करेंगे । न नौ मन तेल होगी, न राधा नाचेगी । अब आखिरी बात को करके मैं बाकी पन्ने को नहीं पढ़ता, मैं आपको दो लाईन बताउंगा । रामवन पर्यटन क्षेत्र । मुख्यमंत्री जी स्वयं संस्कृति के भू-रक्षक हैं। एक बयान पढ़ा। चम्पेश्वर महादेव भी राम वन गमन पथ में शामिल होगा। मेरे कुरूद को भी शामिल कर दीजिए, पाटन को भी शामिल कर दीजिए। चाहे राम भगवान गये हो या न गये हों। हमारी माइथोलॉजी में उल्लेख हो या मत हो। आप मुख्यमंत्री हैं। आप सब कर सकते हैं।

श्री धनेन्द्र साहू :- आप तो कुरूद गये ही नहीं हैं तो कैसे शामिल होगा? चम्पेश्वर गये तो शामिल हुआ। (हंसी)

श्री अजय चन्द्राकर :- भाटो, आप बता दो।

श्री कवासी लखमा :- आप राम पथ के लिए आप बोलते हैं, कुरूद के लिए नहीं बोलेंगे क्या?

श्री अजय चन्द्राकर :- ऐसा है कि मैं कुछ बोल दूंगा तो फिर। ये बोल रहा था न तो आदिवासी जातिवाद में आ जाते हो।

अध्यक्ष महोदय :- चलिए, छोडिए।

श्री अजय चन्द्राकर :- कल बोल रहा था न जातिवाद में।

श्री कवासी लखमा :- आपने बोला।

श्री अजय चन्द्राकर :- बृहस्पत सिंह आपको नहीं टोके। माननीय अध्यक्ष महोदय, फिर राम वन गमन पथ में चंदखुरी शामिल है। किसी की लिखी हरि ठाकुर की, लाला जगदलपुरी की, रवीन्द्र नाथ मिश्रा की, किसी की तो आप एकाध बता दें निगम साहब जी कि चंदखुरी में राम भगवान गये थे। मैं

आपको चंदखुरी की विशेषता बता देता हूं। सुषेण वैद्य चंदखुरी के थे। रावण पूरी दुनिया की प्रतिभाओं को ले जाता था। ये माना जाता है कि धनतेरस के दिन चंदखुरी के एक-एक पत्ते में जड़ी-बुटी की ताकत आ जाती है। उसको वे उठाकर ले गये। उनको बताया गया कि राम आपके भांजे हैं। तब वह ईलाज के लिए तैयार हुआ। राम भगवान वहां वनवास के दौरान कभी वहां नहीं गये हैं। तब मुख्यमंत्री स्वयं भू-संस्कृति के रक्षक हैं। जो कर लें। जहां पर मूर्ति लगा लें। इसीलिए मैंने इन्हें खुदाई का लाइसेंस दिया था। मैंने पाटन में अपने समय में आपको खुदाई का लाइसेंस दिया था। वहां भी राम भगवान का अवशेष निकाल दीजिए। वहां मूर्ति बनवा लीजिए। संस्कृति और विरासत के साथ आप जितनी छेड़छाड़ कर रहे हैं न, आपको बता दूं, जब आप सांकड़ मरवा रहे हो तो आप जाकर हिन्दी साहित्य अकादमी को देख लीजिए। उसकी क्या हालत है? छत्तीसगढ़ के लेखक, छत्तीसगढ़ के लोगों को जो गरीब लेखक हैं, उनके पास प्रकाशन के लिए पैसा नहीं है। छत्तीसगढ़ी, गोंडी, हल्बी, सरगुजिया, जशपुरी में लिख रहे हैं न, आपने ग्रंथ अकादमी में ऐसा मोटा वाला ताला आपने लगाया है, बना तो नहीं सके, जो बना था उसे नष्ट करने में आपकी संस्कृति झलकी।

अध्यक्ष महोदय :- धन्यवाद।

श्री अजय चन्द्राकर :- एक आखिरी पन्ना पढ़ रहा हूं।

अध्यक्ष महोदय :- उसे से बहुत देर से हो गया।

श्री अजय चन्द्राकर :- चूंकि मैंने हिन्दी ग्रंथ अकादमी कही।

अध्यक्ष महोदय :- 50 मिनट हो गया।

श्री अजय चन्द्राकर :- हिन्दी ग्रंथ अकादमी कही तो एक कविता के साथ समाप्त करता हूं।

अध्यक्ष महोदय :- चलिए।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, दो दिन तक स्थगन तो लिये नहीं। इन्होंने व्यवस्था दी और कहा कि बजट सत्र में स्थगन नहीं आते और बहुत से मौके आते हैं।

अध्यक्ष महोदय :- अंते-तंते मत जाना।

श्री अजय चन्द्राकर :- इसीलिए कहता हूं कि आपके ज्ञान की महिमा, आपके व्यक्तित्व, चरित्र की महिमा को सादर प्रणाम। आपका जो संसदीय ज्ञान है, उसकी जितनी प्रशंसा की जाये, वह कम है।

ये सरकार हत्यारी है। अब जब सरकारी संरक्षण में नक्सल आतंक फैलाते हैं, जब चुन-चुन कर हमारे नेता मौत के घाट उतारे जाते हैं, जब प्रजातंत्र में आवाजों को गोली से दबाया जाता है, सच के लिए लड़ने वालों पर झूठा मुकदमा चलाया जाता है, जिसे लूट-खसौट रहे तुम, वह मेरी छत्तीसगढ़ी महातारी है, नारायणपुर कोई दुर्घटना नहीं, ये हत्या सभी सरकारी है। (मेजों की थपथपाहट) (माननीय सदस्य श्री अजय चन्द्राकर के उंगली से अंगूठी निकलकर गिरने पर) अंगूठी फेंका गे कदे करा।

अध्यक्ष महोदय :- ओही करा माढ़े हे। ओकरा हावे। घबरा मत।

श्री अजय चन्द्राकर :- अब आखिरी लाइन आपको समर्पित है। ये कागज रख दीजिए।

अध्यक्ष महोदय :- हैलो, हैलो, ननकीराम कंवर जी के सामने रखा है, देख लीजिए।

श्री कुलदीप जुनेजा :- उनका हाथ कांप रहा है।

श्री अजय चन्द्राकर :- हव, देख तो भाटो, गिरे हे का।

अध्यक्ष महोदय :- हावय न गा। माढ़े हे। मैं आपकी अंगूठी का भी ख्याल रखता हूं। आपके अंगूठे का भी ख्याल रखता हूं। (हंसी)

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आखिरी बात आपको समर्पित करते हुए। धन्यवाद उसके लिए। मैंने नारायणपुर की घटना के बारे में कहा कि ये ये सभी हत्या सरकारी है। झीरमघाटी, एन.आई.ए. जांच, एन.आई.ए. माननीय चिदम्बरम साहब ने बनायी है, प्रशांत मिश्रा आयोग, आपका कमीशन, सी.बी.आई. जांच, आपके पास सबूत, वो जिंदा सबूत, ठीक है राजनीति करनी है, जांच करानी है, मैं भाभी जी के साथ हूं, उमेश होता तो मैं उनके साथ होता, मैंने सदन में सी.बी.आई. जांच की घोषणा की थी ।

श्री कवासी लखमा :- क्यों नहीं किये?

श्री अजय चन्द्राकर :- कभी भी जो भी कारण हों, भूपेश बघेल जी के आने के बाद साढ़े 4 साल तक तो कुछ नहीं हुआ। मुख्यमंत्री जी शहीद शब्द का उपयोग करते हैं। शहीद की परिभाषा तय नहीं की। हमारे 4 नेता मारे गए, उत्तर क्या आता है, एन.आई.ए. जांच की मांग कर लो। आप सरकारी नौकरी दे रहे हैं, मुआवजा दे रहे हैं, झीरम के मामले का जो भी इस्तेमाल कर रहे हैं । हमारे नेता मारे गए तो कुछ नहीं, तुम्हारा ख़ून, ख़ून और हमारा ख़ून पानी । तुम्हारा दुख, दुख और हमारा दुख, कहानी । यह मुख्यमंत्री जी की संवेदना है । ये सदन के नेता हैं । मारे गए लोग पहले नागरिक थे, बाद में किसी पार्टी के कार्यकर्ता थे, क्या किया ? और जिस दिन राजनांदगांव में पुलिस के जवान मारे जा रहे थे उस दिन आप थिरक रहे थे, उस दिन आप 13 हज़ार टन के ए.सी. में बैठे थे । उस दिन आप छप्पन भोग का आनंद ले रहे थे । आप उसके दूसरे दिन 30 टन गुलाब में नेल्सन की भांति स्वागत् करवा रहे थे और यू.एन.ढेबर, केवल दो लोग हैं, माननीय मुख्यमंत्री जी आपको और यू.एन.ढेबर की आत्मा को बधाई देते हुए मैं अपनी बात समाप्त करता हूं, जय हिंद, जय छत्तीसगढ़ ।

अध्यक्ष महोदय :- श्री शैलेश पाण्डे जी ।

श्री विक्रम मण्डावी (बीजापुर) :- अध्यक्ष महोदय, मैं अपनी बात रखना चाहता हूं ।

अध्यक्ष महोदय :- एक मिनट बेटा, एक मिनट । आपका नाम पुकारा जाएगा तक कहना ना ।

श्री विक्रम मण्डावी :- सर, मैं एक जरूरी बात कहना चाहता हूं ।

अध्यक्ष महोदय :- कितने मिनट में कह लोगे । क्या बात है ?

श्री विक्रम मण्डावी :- महोदय, मैं बीजापुर जिले से आता हूं । बीजापुर जिले में केन्द्रीय जांच एजेंसियों, गुप्तचर एजेंसियों द्वारा भाजपा के कार्यकर्ता के तौर पर, वहां कांग्रेस के कार्यकर्ताओं को डराने का काम किया जा रहा है (शेम शेम की आवाज़) । मैं इस बात का लगातार अनुरोध किया, उसके बाद भी वहां स्थिति में कोई सुधार नहीं हो रहा है । मैंने अपनी बात शासन तक पहुंचाया है । वहां आई.बी. के अधिकारियों द्वारा लगातार कांग्रेस के कार्यकर्ताओं को काम न करने के लिए डराया जा रहा है । वहां कांग्रेस के कार्यकर्ता और आम जन-मानस में डर है । इसको लेकर मैंने शासन के समक्ष भी अपनी बात रखा है । केन्द्रीय एजेंसियों द्वारा वहां हमारे कार्यकर्ताओं को और आम जन को डराया जा रहा है । फ़ोन करके उन्हें कांग्रेस के पक्ष में काम नहीं करने के लिए कहा जा रहा है । भाजपा के ख़िलाफ़ नहीं बोलने, नहीं लिखने के लिए कहा जा रहा है । इससे वहां के हमारे कार्यकर्ता डरे हुए हैं, भयभीत हैं । मैं आपके माध्यम से इस बात को रखना चाहता हूं, जिसकी गहराई से जांच की जाए कि आख़िर ऐसा क्यों हो रहा है ? क्यों इस तरह से पूरे देश में और ख़ासकर बस्तर के बीजापुर जैसे संवेदनशील ज़िले में आई.बी. के, केन्द्रीय गुप्तचर एजेंसी के द्वारा ऐसा किया जा रहा है ? यह बहुत बड़ी बात है । मैं आपके माध्यम से कहना चाहता हूं किस इसकी जांच कराएं और वास्तविकता का पता लगाएं कि आखिर क्यों आई. बी. के अधिकारियों द्वारा, कर्मचारियों के द्वारा इस तरीके की हरकत करके कांग्रेस के कार्यकर्ताओं को डराया जा रहा है । मैं जांच की मांग करता हूं और उन्हें कड़ी से कड़ी सज़ा दें ।

समय :

11.54 बजे **(उपाध्यक्ष महोदय (श्री संतराम नेताम) पीठासीन हुए)**

उपाध्यक्ष महोदय, :- ठीक है । श्री शैलेश पाण्डे जी ।

श्री शैलेश पाण्डे (बिलासपुर) :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आज हमारे सम्मानित साथी श्री अजय चन्द्राकर जी का बहुत ही अच्छा भाषण था । उत्तेजना भरा भाषण था । इस पूरे भाषण में उनके हाथ कांपते रहे, इस बीच उन्होंने कपडे भी उतारे और उनकी अंगूठी गिर गई । मुझे चिंता इस बात की है कि कहीं उनका स्वास्थ्य ख़राब तो नहीं हो गया ।

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- अंगूठी ने साथ नहीं दिया ।

श्री शैलेश पाण्डे :- उन्होंने बड़ी-बड़ी बातें की ।

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी :- पाण्डे जी, अजय जी ने जो बातें की हैं, उसके तत्व ज्ञान के अंदर जाओ ।

श्री शैलेश पाण्डे :- मैं वहीं जा रहा हूं ।

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी :- आप तो पैंट के अंदर घुस रहे हो ।

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- शैलेश जी, आप तो नहीं कांप रहे हैं ना अभी ।

श्री शैलेश पाण्डे :- उपाध्यक्ष महोदय, उन्होंने धर्मान्तरण को लेकर, बस्तर को लेकर, नक्सली घटनाओं को लेकर जो आरोप लगाए । उसका जवाब हमारे साथ श्री विक्रम मण्डावी जी ने अपनी बात में दिया ।

श्री केशव प्रसाद चंद्रा :- लेकिन पाण्डे जी, आपके आरोप से बड़ा आरोप नहीं है। आपने जो आरोप लगाया कि पुलिस वाले पैसा ले रहे हैं, उससे बड़ा आरोप नहीं है।

श्री शैलेश पाण्डे :- मैं बताना चाहता हूं कि अजय चन्द्राकर जी को जवाब देना चाहता हूं कि कच्चे मकान जिनके जले थे फसाद में, कच्चे मकान जिनके जले थे फसाद में, अफ़सोस उनका नाम ही थ बलवाइयों में । यह स्थिति है । पूरा बस्तर जानता है कि किस प्रकार से बस्तर में दंगे हुए, फसाद हुए, क्या-क्या किया गया। माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आज चंद्राकर जी ने अधिवेशन की बात रखी, उन्होंने हमारे नेता के बारे में बड़ी-बड़ी बातें की। हमारे देश में एक ऐसी नेता है जिसने देश की बेटियों का सम्मान बढ़ाया है। बेटी हूं, लड़की हूं, लड़ सकती हूं। यह उन्होंने नारा दिया। पूरे देश में अंगारों में चलते हुए, उन्होंने देश की सेवा की। यह कांग्रेस का इतिहास ही है कि देश की बेटियां ही देश की अंगारों में चलती हैं।

समय :

12:00 बजे

नेता प्रतिपक्ष (श्री नारायण चंदेल) :- शैलेश जी, वह तो छन्नी साहू जी ने बताया था। नारी का कितना सम्मान होता है।

श्री शैलेश पाण्डे :- यह सम्मान कितना है, यह पता चलता है कि यहां पर कितनी बेटियां बैठी हुई है और वहां पर कितनी बेटियां बैठी हुई है। किसके साथ ज्यादा बेटियां है। (मेजों की थपथपाहट)

श्री केशव प्रसाद चंद्रा :- फिर वैसे में तो हम लोग हैं, हमारे दल में 50 प्रतिशत की संख्या है।

श्री शैलेश पाण्डे :- महाराज आप हाथी में बैठिए, आप कहां परेशान होने में लगे हो। (हंसी) आदरणीय उपाध्यक्ष महोदय, अजय चंद्राकर जी ने अधिवेशन की बात की।

श्री शिवरतन शर्मा :- शैलेश जी, जिनको सुनाने के लिए खड़े हुए हो, वह तो चले गए। अब बोलकर क्या करोगे ?

श्री शैलेश पाण्डे :- हम सदन में बोल रहे हैं। वह सुन रहे हैं।

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- हम वाह-वाह करेंगे, आप बोलिए।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- आपका भाषण दोनों नहीं सुन रहे हैं। आपके गुरू भी नहीं सुन रहे हैं।

श्री शैलेश पाण्डे :- वह सुन रहे हैं, सब जगह हैं।

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- हर जगह कैमरा लगा है, भई।

श्री शैलेश पाण्डे :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, श्री अजय जी ने अधिवेशन की बात की। जब भी कांग्रेस पार्टी या कांग्रेस की सरकार अच्छा काम करती है तब भारतीय जनता पार्टी के हमारे जो सम्माननीय अडाणी जी के जो मित्र यहां बैठे हुए हैं, इनको बहुत तकलीफ होती है। इनको यह लगता है, यह अच्छा काम कैसे कर रहे हैं, यह अच्छा काम क्यों कर रहे हैं, उस पर पूरी राजनीति करते हैं। मैं इनको बताना चाहता हूं कि कलकत्ता के अधिवेशन में, नागपुर के अधिवेशन में, मैं ऐसे व्यक्ति का नाम लूंगा जिनको आप बहुत अच्छे से जानते हैं, स्वर्गीय केशव बलिराम हेडगेवार जी। यह दो कांग्रेस के अधिवेशन में शामिल हुए थे।

श्री अजय चंद्राकर :- हां, हम उनसे बिल्कुल सहमत हैं। उसमें क्या है। उसमें आक्षेपजनक बात क्या है।

श्री शैलेश पाण्डे :- सुनिए ना। उल्लेख कर रहे हैं।

श्री अजय चंद्राकर :- सुभाष चंद्र बोस भी कांग्रेसी थे, जयप्रकाश नारायण कांग्रेसी थे, राम मनोहर लोहिया कांग्रेसी थे, नरेन्द्र देव कांग्रेसी थे। कांग्रेस के इतिहास में चर्चा कर लीजिए। पाण्डे जी, आप एक मिनट सुनिए।

श्री शैलेश पाण्डे :- आपने अधिवेशन की बात की, आपको अधिवेशन से समस्या थी। आप मुझे बोलने दीजिए।

श्री अजय चंद्राकर :- एक मिनट सुनिए तो।

श्री शैलेश पाण्डे :- हां सुन रहा हूं।

श्री अजय चंद्राकर :- जब कांग्रेस गठन हुई ना तो उसके उद्देश्य में स्वतंत्रता नहीं, डोमिनियम स्टेट चाहिए करके लिखा है, आप इतिहास पढ़ लीजिए।

श्री शिवरतन शर्मा :- पाण्डे जी, जो नारा लगाते हो ना, पहले लड़े थे गोरे से, गोरा ही तो आपका स्थापना करने वाला था।

श्री शैलेश पाण्डे :- आदरणीय उपाध्यक्ष महोदय, हमारी पार्टी जब-जब अच्छा काम करती है, तब आपको समस्या है। मैं आपको यह बताना चाहता हूं कि आदरणीय चंद्राकर जी अधिवेशन की बात करते हैं, हमको अच्छा लगता है, आप अधिवेशन की ज्ञान की बात करते हैं हमको अच्छा लगता है, आप अधिवेशन की नीतियों की बात करते हैं, हमको अच्छा लगता है, लेकिन आपने अधिवेशन की बात नहीं की, उनकी नीतियों की बात नहीं की, आपने अपना दिमाग कहां लगाया, आपने अपना दिमाग फूलों में लगाया, आपने अपना दिमाग कहां लगाया, वह तथाकथित नाम लेकर लगाया। यह आपकी सोच है।

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- जो दो तीन दिन का अधिवेशन हुआ, आप तो अडाणी से उपर ही नहीं गये।

श्री शैलेश पाण्डे :- पूरे देश में चर्चा का विषय है। हमारे अडाणी मित्रों ने क्या किया है, यह देश नहीं, पूरा देश देख रहा है। हमको बोलने की जरूरत नहीं है। आदरणीय उपाध्यक्ष महोदय...।

श्री अजय चंद्राकर :- महाराज, अदाणी की सप्लाई करते हो या परिवहन करते हो।

श्री शैलेश पाण्डे :- आदरणीय उपाध्यक्ष महोदय, सबसे पहली बात, माननीय राज्यपाल महोदय ने जो अभिभाषण दिया, मैं उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हूं। इतने वरिष्ठ व्यक्ति हैं और उन्होंने अपने वक्तव्य में जो बात कही है कि हमारी सरकार किसान, खेती, ग्रामीण विकास के जुड़े हुए क्षेत्रों में समन्वित और सर्वांगीण विकास कर रही है। उन्होंने अगर सबसे पहले किसी बात का उल्लेख किया तो इस बात का उल्लेख किया कि खेती, किसानी, ग्रामीण व्यवस्था की बात की। आदरणीय उपाध्यक्ष महोदय, यदि हम इस देश की बात करते हैं तो यदि इस देश में कोई सबसे बड़ा व्यवसाय था तो वह व्यवसाय खेती का व्यवसाय था। हमारे देश में खेती करने वाले को उत्तम माना जाता था, व्यवसाय करने वाले को मध्यम माना जाता था और नौकरी करने वाले को निम्न माना जाता था। यह इस देश में एक कथानक सा था। जिस देश में खेती-किसानी की जाती थी, जिस देश में खेती-किसानी को बढ़ावा दिया जाता था, आपने उन किसानों की क्या स्थिति की?

श्री अजय चंद्राकर :- दादी, अब आप एकाध बार खड़े होइये। आप मेरे भाषण में 17 बार खड़े हुए थे। खड़े होइये।

श्री शैलेश पाण्डे :- चंद्राकर जी, आपका भी पांचवा हो गया है। आदरणीय उपाध्यक्ष महोदय, आपको याद होगा कि जब स्वर्गीय इंदिरा गांधी जी प्रधानमंत्री थी और उसके पहले सन् 1962 में हमारे देश पर आक्रमण हुआ था और युद्ध हुआ था, उससे हमारे देश को बहुत क्षति पहुंची थी। उस वक्त हमारा देश अनाज के क्षेत्र में यू.के. पर निर्भर रहता था। उस वक्त हमारे देश में उतना अनाज उत्पन्न नहीं होता था। क्यों ? क्योंकि अंग्रेजों ने और उसके पहले मुगलों ने हमारे देश में 400 सालों तक 200-200 सालों तक शासन किया, उन 400 सालों में उन्होंने हमारी कृषि व्यवस्था को जो क्षित पहुंचायी थी, उस क्षति के कारण हमारे देश का किसान पनप नहीं पा रहा था। हमें विदेशों से सहारा लेना पड़ता था। उस समय इस देश में यदि किसी ने काम किया तो स्वर्गीय इंदिरा गांधी जी ने इस देश की व्यवस्था, कृषि व्यवस्था में सुधार किया और वह "हरित क्रांति" लाई। "हरित क्रांति" लाकर उन्होंने हमारे किसानों को सशक्त किया। लाल बहादुर शास्त्री जी ने "जय जवान-जय किसान" का नारा दिया। उन्होंने भी किसानों के लिए काम किया। उन्होंने भी किसानों को आत्मनिर्भर बनाया। उन्होंने केवल किसानों को ही नहीं बल्कि इस देश को भी आत्मनिर्भर बनाया।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, हमने क्या किया ? यदि आज हम काम कर रहे हैं, आज हम इस देश की वास्तविक व्यवस्था में काम कर रहे हैं, खेती-किसानी पर ध्यान दे रहे हैं और यदि महामहिम राज्यपाल महोदय अपनी सरकार की तारीफ कर रहे हैं तो हमारे सम्माननीय अडाणी जी के मित्र इसका

विरोध क्यों कर रहे हैं ? इसको विरोध क्यों हो रहा है ? इस सदन में उस दिन महामहिम राज्यपाल महोदय का अपमान किया गया। कितनी बार राज्यपाल महोदय को टोका गया और कितनी बार उनको भला-बुरा कहा गया। क्या यह हमारी संस्कृति है, क्या यह हमारी परंपरा है ? आप जानते हैं कि आज हमारी सरकार, आदरणीय भूपेश बघेल जी की सरकार जिस प्रकार से काम कर रही है। आपके समय में कितने किसानों को लाभ होता था? क्या आपने इस क्षेत्र में काम किया ? क्या आपने छत्तीसगढ़ को बढ़ाया ? लेकिन आपकी सरकार से कितने लोग संतुष्ट थे ? आपकी सरकार से कितनी लोग लाभान्वित हुए ? आपकी सरकार में कितने किसान रजिस्टर्ड थे ? कितने किसानों को उनका समर्थन मूल्य मिलता था ? कितने किसानों को आप बोनस देते थे ? पूरा छत्तीसगढ़ जानता है कि आपने कभी भी किसानों का भला नहीं किया। आपके 15 साल के कुशासन में किसान सिर्फ आत्महत्या करते रहे, आत्महत्या करते रहे, आत्महत्या करते रहे। वर्ष 2018 के चुनाव के समय किसानों ने आपको अपना धान नहीं बेचा क्योंकि उनको यह पता था कि उनकी धान का समर्थन मूल्य हमारी कांग्रेस की सरकार ज्यादा देगी।

आदरणीय उपाध्यक्ष महोदय, महामहिम राज्यपाल महोदय ने अपने भाषण में इस बात का उल्लेख किया है, इस बात को बताया है और इस बात की तारीफ की है कि आज 23 लाख, 50 हजार किसानों का पंजीयन हुआ है। आपके कार्यकाल में कितने किसान पंजीकृत थे ? आपके कार्यकाल में मात्र 12 लाख के आसपास किसान पंजीकृत हुआ करते थे। मैं आपको वर्ष 2018 की बात बता रहा हूं, यह कोई बहुत पुरानी बात नहीं है। यह सिर्फ 4 साल पुरानी बात है। इन 4 वर्षों में ऐसा क्या हुआ, इन 4 वर्षों में इस सरकार ने ऐसा क्या किया, इन 4 वर्षों में छत्तीसगढ़ में ऐसा क्या हुआ कि 23 लाख, 50 हजार किसानों ने अपना पंजीयन कराया। यानी कि 23 लाख, 50 हजार किसानों ने अपना विश्वास भूपेश बघेल जी की सरकार को दिया। (मेजों की थपथपाहट) हमारी सरकार ने भी किसानों का पूरा सम्मान किया और उनका एक-एक दाना खरीदा। एक करोड़, 60 लाख मीट्रिक टन धान खरीदी हुई है। यह ऐतिहासिक धान खरीदी है। आज तक छत्तीसगढ़ के इतिहास में इतनी धान खरीदी कभी नहीं की गई है। (मेजों की थपथपाहट) यह मजाक नहीं है । ये आंकड़े बता रहे हैं, ये किसानों के पंजीयन का आंकड़ा बता रहा है, यह धान खरीदी का आंकड़ा बात रहा है कि छत्तीसगढ़ में किस प्रकार से काम किया जा रहा है और अगर यह परम्परा है तो यह कांग्रेस की ही परिपाटी रही है, जिसने देश को मजबूत किया है चाहे वह आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में हो, चाहे वह हमारे किसानों की बात करनी हो ।

आदरणीय उपाध्यक्ष महोदय, आप गौ माता की जय करते हैं, गौ माता की पूजा करने की बात करते हैं । आप केवल बातें ही करते हैं, आप उसका वास्तविक सम्मान नहीं करते हैं । आप उसी गाय को गोधन मानते हैं, जो गाय दूध देती है, वही इनके लिए धन है, लेकिन गाय वास्तविक गोधन है । आज हमारी सरकार है, हमने गोधन योजना चालू की है, उसकी तारीफ माननीय राज्यपाल महोदय ने की । गोधन योजना क्या है ? गोधन योजना वह है, जो हम आज गाय का गोबर खरीदकर उसको

सम्मान दे रहे हैं । आप यह क्यों नहीं कर पाये ? आप गाय की बात करते हो, आप धर्म की बात करते हो । आपने गोबर क्यों नहीं खरीदा, आपने गो मूत्र का सम्मान क्यों नहीं किया ? आपने इसलिए सम्मान नहीं किया क्योंकि आप गोबर और गो मूत्र को गोधन नहीं मानते हो, केवल गाय के दूध को ही गोधन मानते हो । आप गाय को बेचते भी हो, आपके कार्यकाल में गाय मारी भी गई।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- आपके यहां गाय ही नहीं है, दूध दूसरों से लेते हो।

श्री प्रकाश शक्राजीत नायक :- हर जगह गाय है, कांग्रेस सरकार गाय का सम्मान करती है ।

श्री शैलेश पाण्डेय :- आप हमारे घर आईए, हम आपको गाय भी दिखाएंगे ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- आपके घर में भैंस है, गाय नहीं ।

श्री शैलेश पाण्डेय :- गाय है ।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- दूसरे की गाय को लेजाकर बता दोगे ।

श्री शैलेश पाण्डेय :- आदरणीय उपाध्यक्ष महोदय, आप बड़ी-बड़ी बातें करते हैं कि हम ये करेंगे, हम वह करेंगे । आपने पूरे देश में एक अजीब सा माहौल बना दिया। आज आप केन्द्र में सत्ता में है, आज आप देश को कह रहे हैं कि दिन को रात कहो तो रात कहा जा रहा है । आप कह रहे हैं कि रात को दिन कहो तो दिन कहा जा रहा है । यह पूरा देश देख रहा है, हम भी जान रहे हैं । जैसा चलाना है, चलाईए, कोई दिक्कत नहीं है । मुगलों ने भी 200 साल शासन किया, अंग्रेजों ने भी 200 साल शासन किया, आपका भी शासन इस देश की जनता देख रही है । हमारा भारत सहनशील लोगों का देश है । आदरणीय उपाध्यक्ष महोदय, मुगलों ने 200 साल शासन किया तो हम पाकिस्तानी नहीं हो गए, अंग्रेजों ने 200 साल शासन किया तो हम अंग्रेज नहीं हो गए । आप भी शासन करके देख लीजिए, आप देश के लिए क्या करेंगे, आपको इस देश की जनता बताएगी । आप आज देश में किस प्रकार से भावनात्मक रूप से लोगों को बांटने का काम कर रहे हैं ।

आदरणीय उपाध्यक्ष महोदय, माननीय राज्यपाल महोदय ने अपने अभिभाषण में स्वामी आत्मानंद स्कूल का जिक्र किया है । शिक्षा के स्तर को बढ़ावा दिया जा रहा है, उसका जिक्र किया है । आपके शासनकाल में आप ऐसा क्यों नहीं कर पाये, आपने भी 15 साल सरकार चलाई है, आपको पूरा 15 वर्ष का मौका दिया गया । आप यह क्यों नहीं सोच रहे थे कि जब हमारे प्रदेश का ग्रास इंरोलमेंट रेश्यों नहीं बढ़ रहा था, तब आपने क्यों नहीं सोचा ? आपको अधिकारी सलाह देते थे, पर उनकी सलाह क्यों नहीं मानते थे ? आपने छत्तीसगढ़ के बच्चों के भविष्य के बारे में क्यों नहीं सोचा ? आप इंग्लिश मीडियम स्कूल क्यों नहीं खोल पाये ? आप स्वामी आत्मानंद योजना जैसी योजना क्यों लागू नहीं कर पाये ? आपके कार्यकाल में आपने मॉडल स्कूल खोले, अरबों रूपए खर्च किए गए, न जाने कितनी जमीनें दी गई, पर आप चला नहीं पाये, आप फेल हो गए । जब आप फेल हो गए तो उसके बाद आपने उसको आफ लोड कर दिया, टेण्डर कर दिया । आपने दूसरी संस्था को दे दिया, उसके बाद भी आप फेल हो

गए । आप छत्तीसगढ़ में शिक्षा के क्षेत्र में कोई भी गुणवत्तायुक्त काम नहीं कर पाये । आपको 15 साल मौका मिला था, लेकिन आपने इन 15 सालों में ऐसा कोई काम नहीं किया । माननीय भूपेश बघेल जी की सरकार ने शिक्षा के क्षेत्र में काम करके दिखाया । हमारे शिक्षा मंत्री, कृषि मंत्री बैठे हुए हैं, इन्होंने जोर लगाया कि हमें छत्तीसगढ़ को आगे बढ़ाना है, हमें छत्तीसगढ़ को केरल, कर्नाटक, आंध्रप्रदेश, महाराष्ट्र से भी आगे ले जाना चाहते हैं, हम ऐसा क्यों नहीं सोचते थे। प्रदेश एक दिन में नहीं बदल जायेगा, एक दिन में सफलता नहीं मिल जायेगी। लेकिन प्रयास करते रहेंगे तो एक दिन जरूर सफलता मिल जायेगी।

सदन को सूचना

उपाध्यक्ष महोदय :- आज भोजन अवकाश नहीं होगा। मैं समझता हूं, सभा सहमत है। भोजन की व्यवस्था माननीय डॉ. प्रेमसाय सिंह टेकाम स्कूल शिक्षा मंत्री की ओर से माननीय सदस्यों के लिए लॉबी स्थित कक्ष में एवं पत्रकारों के लिए प्रथम तल पर की गई है। कृपया सुविधा अनुसार भोजन ग्रहण करे।

सदन द्वारा सहमति प्रदान की गई।

माननीय राज्यपाल के अभिभाषण पर कृतज्ञता पस्ताव पर चर्चा (क्रमशः)

श्री शैलेश पाण्डे :- आदरणीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं स्कूलों की बात कर रहा था। आज छत्तीसगढ़ में गरीब आदमी का बच्चा, छत्तीसगढ़ की वह महिला, जिसका पति नहीं है, वह मां जिसका कोई सहारा नहीं है, वे बच्चें जिनका कोई सहारा नहीं है, आपने उन बच्चों की पढ़ाई के बारे में क्या सोचा ? एक महिला जिसका पति नहीं है, उसके बच्चे को अंग्रेजी मीडियम स्कूल में पढ़ने का अधिकार नहीं है क्या ? क्या उसका बच्चा अच्छे स्कूल में ना पढ़े ? आपने क्यों नहीं किया ? गरीब आदमी का बच्चा स्कूल में पढ़ने क्यों नहीं जाये, आपने इस बात को क्यों नहीं सोचा ? यदि वह बच्चा गुणवत्तायुक्त अंग्रेजी मीडियम स्कूल में पढ़ना चाहता है, तो आपकी 15 वर्षों की सरकार ने क्या किया ? आप इस बात का जवाब दीजिये। आपसे छत्तीसगढ़ की जनता पूछ रही है।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, हमारी सरकार ने शिक्षा की गुणवत्ता को आगे बढ़ाने के लिए एक अच्छा काम किया है। उन्होंने स्वामी आत्मानंद अंग्रेजी मीडियम स्कूल खोला है। माननीय मुख्यमंत्री जी ने पूरे प्रदेश में शिक्षा की गुणवत्ता को लेकर, विशेष रूप से उन गरीब तबकों के लिए, बेसहारा लोगों के लिए एक अवसर दिया है। आज हमारे छत्तीसगढ़ में ऐसे हजारों लोग हैं, जिनके पास पैसा नहीं है, निर्धन हैं, वे अच्छा-अच्छा ड्रेस पहनकर अच्छे-अच्छे स्कूल में पढ़ने जाते हैं और यह काम करने के लिए

साहस चाहिए। आपके पास साहस नहीं था। क्यों ? क्योंकि आपको डर था कि आप यह काम नहीं कर पायेंगे। लेकिन हमने करके दिखाया है, हमारी सरकार ने करके दिखाया है। आज छत्तीसगढ़ में स्वामी आत्मानंद स्कूलों की जिस प्रकार से लोकप्रियता है, वह साहस के कारण है। यही सच्चा वादा था, जो छत्तीसगढ़ की जनता ने 68 सीटों पर जीताकर कांग्रेस की सरकार को बैठाया है। यह उसका परिणाम है कि आज हम प्रदेश के हर वर्ग के लिए काम कर रहे हैं और शिक्षा के क्षेत्र में भी काम कर रहे हैं। आपके शिक्षामंत्री तो गजब ही थे, वे बस्तर से ही आते थे। उन्होंने तो बड़े-बड़े काण्ड किये थे। मुझे ज्यादा नहीं बोलना चाहिए, व्यक्तिगत हो जायेगा।

आदरणीय उपाध्यक्ष महोदय, आप बजट की बात करते हैं। बजट बढ़ाया जा रहा है, ये किया जा रहा है, बजट का ये हो रहा है, भ्रष्टाचार किया जा रहा है। आप 15 साल तक सरकार चलाते रहे, आपने कभी सुशासन नहीं किया। आपने कभी नहीं सोचा कि छत्तीसगढ़ की वह जनता जिनको दूर-दूर तक तहसील कार्यालय ,कलेक्टर कार्यालय, एस.डी.एम. कार्यालय में जाना पड़ता है, आपने उसके बारे में नहीं सोचा? आप प्रशासनिक इकाईयों को नीचे तक क्यों लेकर नहीं गये ? अगर आपकी सरकार जनता के करीब रहती तो आप यह करते। लेकिन आपकी सरकार जनता के करीब नहीं रहती थी, आपकी सरकार बढ़िया सेटअप में काम करने वाली सरकार थी। चंद पूंजीपतियों को बढ़ावा देने वाली सरकार थी। आम जनता की सरकार नहीं थी। यदि आम जनता की सरकार है तो माननीय भूपेश बघेल जी की सरकार है। आज उन्होंने लगभग 83-84 तहसीलें खोली हैं। 83 तहसीलें खोलना कोई आसान काम नहीं है। उन 83 तहसीलों के लिए पूरा सेटअप मंजूर करना, वहां पैसा देना, वहां का रखरखाव करना, इन सबके लिए बड़ी अधोसरंचना और धन की जरूरत पड़ती है। यदि हम उसमें राशि लगा रहे हैं तो हम जनता के बीच जाना चाहते हैं। हम जनता की तकलीफें, समस्याएं दूर करना चाहते हैं। उनका रोज-रोज पैसा खर्च होता था। यहां आदरणीय नेता प्रतिपक्ष जी बैठे नहीं हैं। मैं उनसे पूछना चाहता हूं कि आपकी 15 साल सरकार रही, आप वहां मेडिकल कालेज क्यों नहीं खुलवा पाये ? आप अशासकीय संकल्प कांग्रेस की सरकार में क्यों लेकर आये ? आपकी तो 15 साल सरकार थी, उस समय अशासकीय संकल्प लाते और मेडिकल कॉलेज खोल देते, लेकिन आप नहीं कर पाये। क्योंकि आपके सरकार में आपकी चलती नहीं थी । आपने हमारी सरकार में भरोसा किया, कल इस बात को पारित किया, सर्वसम्मति से पास हुआ । यह विश्वास की बात है ।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- आप तो वापस रहने की बात कर रहे थे । आपको कहां विश्वास रहेगा ? आप विश्वास खो चुके हैं ।

श्री शैलेष पाण्डेय :- हमने वापस लेने की बात नहीं की है । यह विश्वास की बात है । हमने इस बात को कहा कि जिस बात की घोषणा हो चुकी है, उस बात को क्यों किया जा रहा है ?

श्री शिवरतन शर्मा :- अच्छा आपने जो थाने में रेट लिस्ट लगाने की मांग की थी, वह पूरी हुई कि नहीं हुई, यह बताओ ? रेट लिस्ट लगी कि नहीं लगी है, यह बताओ ? रेट लिस्ट लगी कि नहीं लगी है, आपकी मांग बिलासपुर एस.पी. ने पूरी की है कि नहीं की है, यह तो आप बताओ ?

उपाध्यक्ष महोदय :- आप इधर ध्यान नहीं दीजिए, आप इधर बात कीजिए । उधर आपका टाईम बरबाद होगा ।

श्री शैलेष पाण्डेय :- जो इनके कार्यकाल के 15 वर्षों का कुशासन था, भ्रष्ट्राचार का जो था, जिसका उदाहरण और जिसका प्रमाण हमारे 15 वर्षों के मुख्यमंत्री जी हैं, उन्होंने रायगढ़ के अधिवेशन में खुद दिया था । एक साल कमीशन नहीं लेंगे तो 30 साल तक सरकार रहेगी, यह आपने गंदी आदत डाली । आप सब को गंदी आदत डालकर गये हैं । उसका परिणाम है कि लोगों को परेशान होना पड़ता है । उसके लिये बात है । आदरणीय उपाध्यक्ष महोदय, हमारे खाद्य मंत्री जी बहुत सीधे-सादे थे, मुंगेली से आते हैं, इनकी कोई सुनता ही नहीं था, इतने सीधे आदमी थे। इतने संत आदमी की इनके सरकार में नहीं चलती थी । उनको तो छोड़िये, इनको बिलासपुर आने के लिये बैन कर दिया गया था । वह तो बिलासपुर आने के लिये मुंगेली में है, यहां तो बिलासपुर के नेता प्रतिपक्ष बैठे हुये हैं, इनको भी बिलासपुर आने के लिये मनाही कर दी गई थी कि मेरे क्षेत्र में नहीं आना । कोई नहीं जाता था, सब घबराते थे । ऐसा टेरर था ।

श्री केशव चन्द्रा :- वह डर तो आप खत्म कर दिये ?

श्री शैलेष पाण्डेय :- आज सबकी सुनवाई हो रही है । आज मोहले जी की भी सुनवाई हो रही है, हमारे कौशिक जी की भी सुनवाई हो रही है, हमारे नेता प्रतिपक्ष जी की भी सुनवाई हो रही है ।

श्री शिवरतन शर्मा :- वही डर खत्म हो गया करके सरे आम छत्तीसगढ़ भवन में कॉलर पकड़ी जा रही है, वही डर खत्म हो गया इसीलिए सार्वजनिक मंच में विधायक को बैठने नहीं दिया जा रहा है, वही डर खत्म हो गया इसीलिए प्रोटोकाल का पालन करके विधायक का नाम नहीं छापा जा रहा है । उतना डर रहना चाहिये ।

श्री शैलेष पाण्डेय :- उपाध्यक्ष महोदय-

मुट्ठी में कुछ सपने लेकर, भरकर जेबों में आशायें
दिल में है अरमान यही, कुछ कर जायें, कुछ कर जायें,
सूरज सा तेज नहीं मुझमे, दीपक सा जलता देखोगे
अपनी हद रौशन करने से, तुम मुझको कब तक रोकोगे

समझ गये, जवाब था यह आपका । आदरणीय उपाध्यक्ष महोदय, आपको बताना चाहता हूँ कि आज पूरे प्रदेश में जिस प्रकार से हमारी सरकार काम कर रही है । माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मेडिकल के क्षेत्र में बात करते हैं, मेडिकल के क्षेत्र में छत्तीसगढ़ की क्या स्थिति थी, दो-ढ़ाई साल कोरोना का

बीता, हम सबने बिताया, हम सबने संघर्ष किया, यह नहीं कहते हैं कि एक ही तरफ संघर्ष रहा है । सबके लिये संघर्ष था, सबके लिये चुनौती थी, देश क्या प्रदेश क्या, एक ही बात थी, लेकिन आपको बताना चाहता हूँ, जब हमारे प्रदेश में कोरोना आया, हमारे प्रदेश की स्थिति क्या हुआ करती थी । आदरणीय उपाध्यक्ष महोदय, कोरोना के काल में प्रदेश में वेंटिलेटर नहीं थे, कोरोना काल में प्रदेश में आक्सीजन के बैड नहीं हुआ करते थे ।

श्री शिवरतन शर्मा :- आपके टीम में आज एक ही है ।

श्री शैलेष पाण्डेय :- उपाध्यक्ष महोदय, आज वह सारी चुनौतियां हमारे सामने थी । आपको पता है कि कोरोनाकाल में हम लोगों ने काम किया, किस प्रकार से हम लोगों ने जनता की सेवा की है । आज छत्तीसगढ़ में स्वास्थ्य की सेवायें किस प्रकार से घूम रही थी, किस प्रकार से काम हो रहा था, आपने जो योजना लागू की थी, उसमें कुछ निजी अस्पतालों का फायदा किया जा रहा था, बाकी प्रदेश की जनता को इसका लाभ नहीं मिल पा रहा था, बड़ी-बड़ी बातें थी । आदरणीय उपाध्यक्ष महोदय, हमारी सरकार ने आज खूबचंद बघेल योजना, मुख्यमंत्री विशेष सहायता योजना, जिसमें 5 लाख और 20 लाख दोनों प्रकार की राशियां दी जाती है । माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं आज कोई भी चीजें माननीय मुख्यमंत्री जी के पास भेजता हूँ, वह बहुत जल्दी स्वीकृत कर दिया जाता है।

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- आप झूठ तो नहीं बोल रहे हैं, एकचम सच?

श्री शैलेश पाण्डे :- आप बिलासपुर आईये। हम आपको बताते हैं कि मुख्यमंत्री विशेष सहायता योजना का कितने लोगों को लाभ मिलता है।

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- आपने कहा कि जो सबकुछ भेजता हूं तो वह स्वीकृत करते हैं। आपने और क्या–क्या भेजा है ?

श्री शैलेश पाण्डे :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, विशेष सहायता योजना से 4 वर्षों में 63 करोड़ रूपये की सहायता दी गयी। आपने यह काम क्यों नहीं किया ? आप किसके लिये काम करते थे ? आप स्वास्थ्य की सेवाओं से क्या समझते थे ? आपने नीचे के लेवल में क्या काम किया ? आपने स्वास्थ्य के क्षेत्र में अधोसंरचना बढ़ाने के लिये क्या काम किया ? आपने स्वास्थ्य के क्षेत्र में मानव संसाधन बढ़ाने के लिये क्या काम किया ? आपने छात्रों के भविष्य के लिये क्या काम किया ? आपने कितने मेडिकल कॉलेज प्रारंभ किये, आपने क्या काम किया ? आप छत्तीसगढ़ को केवल 3 मेडिकल कॉलेज तक सीमित कर पाये। आप चौथा, पांचवा और छटवां भी प्रारंभ नहीं कर पाये। हमने चौथा, पांचवा और छटवां भी प्रारंभ किया। साथ ही हमने सात, आठ, नौ और दस, चार मेडिकल कॉलेज और खोले। आज हमारे पास 10 मेडिकल कॉलेज है। पहले हमारे पास 300-350 सीटें हुआ करती थी, आज हमारे पास कम से कम 1400 से 1600 सीटें हैं। आज हम डॉक्टर बना रहे हैं, आज छत्तीसगढ़ का बच्चा, छत्तीसगढ़ का आदिवासी बच्चा डॉक्टर बन रहा है।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय संसदीय कार्यमंत्री जी, आप यह समझ लीजिये कि आपके पहले वक्ता बोल रहे हैं। आप बहुत विद्वान है, बहुत ज्ञाता है। आप धन्यवाद ज्ञापन में थोड़ा सा विधायकों और मंत्रियों की उपस्थिति तो देख लीजिये कि आप कितने गंभीर है। उसके बाद आप लोगों से गंभीर चर्चा की मांग कीजियेगा। आप थोड़ा-सा देख तो लीजिये। आपके सरकार की इतनी दयनीय स्थिति है। आपके मंत्रियों की उपस्थिति देख लीजिये।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अजय जी, आज हमारे मिश्री भैया इसलिये चिंतित है क्योंकि उनके तीन साथियों में आज केवल एक ही उपस्थित है।

श्री अजय चंद्राकर :- संसदीय कार्यमंत्री जी, कुछ तो बोलिये। इतनी दयनीय स्थिति है, आप चर्चा क्यों करवा रहे हैं। आप दे दीजिये थैंक्यू। जब आपके मंत्री जी नहीं सुनना चाहते हैं तो आप थैंक्यू दे दीजिये। वह बेचारे अच्छा बोल रहे हैं (श्री शैलेश पाण्डे की तरफ इशारा करते हुए)।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- अजय जी, आपके 14 में से 9 सदस्य गायब है।

श्री ननकीराम कंवर :- हमारा एक ही काफी है।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- देख यह अकेला बैठे हे ।

श्री अजय चंद्राकर :- एक विधायक, एक संसदीय सचिव, एक मंत्री उपस्थित नहीं है। केवल चार ही लोग हैं। विधायक कितने है और संसदीय सचिव कितने है ?

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- उपाध्यक्ष महोदय, सब कहीं न कहीं से सुन रहे हैं।

श्री अजय चंद्राकर :- कितने लोग उपस्थित है?

श्रीमती अनिला भेंडिया :- बहुत है। इतने काफी है।

श्री अजय चंद्राकर :- कितने है ? क्या राज्यपाल के अभिभाषण में ऐसी उपस्थिति होती है ? क्यों माननीय संसदीय कार्यमंत्री जी ?

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- माननीय चंद्राकर जी, एक सरदार जी सब पर भारी।

श्री अजय चंद्राकर :- उपाध्यक्ष महोदय, आपके इससे ज्यादा विधायक लॉबी में है, उधर है। यह आपका प्रशिक्षण है।

श्री धरमलाल कौशिक :- डहरिया जी, फिर इशारा मत करिये। वह दोनों के घर से सामने नंगाड़ा बजवा देंगे।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- नहीं, उस दिन सरदार बोला था इसीलिए हुआ था। आज सरदार जी बोल रहा हूं।

श्री धरमलाल कौशिक :- तुम्हारे भी और इनके भी घर के सामने।

श्री शैलेश पाण्डे :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आज प्रदेश में 10 मेडिकल कॉलेज हो चुके हैं। आज छत्तीसगढ़ का आदिवासी बच्चा, छत्तीसगढ़ का अनुसूचित जाति का बच्चा, छत्तीसगढ़ का गरीब

बच्चा डॉक्टर बन सकता है। यह व्यवस्था किसने की ? आपने हमारे छत्तीसगढ़ के गरीब बच्चों के लिये, हमारे आदिवासी बच्चों के लिये क्या किया ? आप स्वास्थ्य के क्षेत्र में कितना आगे बढ़े ? माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मेरी बात यही पर खत्म नहीं होती है। हम स्वास्थ्य के क्षेत्र में लोगों के घर तक गये। हमने हाट बाजार क्लिनिक योजना चालू की, जिससे 84 लाख लोगों को लाभ मिला। जिसमें हम लोगों ने शहरी स्लम योजना के अंतर्गत मुख्यमंत्री दाई-दीदी क्लिनिक को खोला। हम लोग केवल सी.एस.सी., पी.एस.सी. तक ही नहीं गये, हमारी सरकार गरीब बस्तियों तक गई, स्लम एरिये में गई। हमने वहां जाकर उपचार किया, हमने उनको स्वास्थ्य की सहायता दी। हमने स्वास्थ्य की सहायता वहां तक पहुंचाई। । इस छत्तीसगढ़ की जनता के लिये, छत्तीसगढ़ के गरीब लोगों के लिये, छततीसगढ़ में जिनको जरूरत है उनके लिये यह हमार कमिटमेंट था। यह सरकार होती है। जो लोग हम तक नहीं पहुंच पाये, हम उन लोगों तक पहुंचे। सरकार ने हेल्थ के सेक्टर में, एजुकेशन के सेक्टर में जो काम किया है वह काम आज तक छत्तीसगढ़ के इतिहास में कभी नहीं हुआ। कृषि के क्षेत्र में जो काम किया गया है, वह तो देश में कहीं नहीं हुआ है। आपको अच्छा चित्र नहीं दिखता है क्योंकि आप देखना नहीं चाहते है।

उपाध्यक्ष महोदय :- पाण्डे जी, आप और कितना मिनट लेंगे ?

श्री शैलेश पाण्डे :- सर, जितना आप देंगे उतना लूंगा।

उपाध्यक्ष महोदय :- चलिये।

श्री शैलेश पाण्डे :- आदरणीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपको बताना चाहता हूं कि हमारे माननीय मुख्यमंत्री जी द्वारा सबसे बड़ी चीज यह हुई कि आज हम 12 हजार मेगावॉट बिजली उत्पन्न करते हैं। माननीय मंत्री जी हमारी जो खपत है वह केवल 4.5 हजार मेगावॉट है। यदि हम केवल 4.5 हजार मेगावॉट खपत करते हैं तो आपने 15 वर्ष तक सरकार चलाई। आप बिजली नि:शुक्ल क्यों नहीं कर पाये? हम गरीबों को बिजली मुफ्त में क्यों नहीं दे पाये ? आपकी सरकार में आपने क्यों नहीं दिया ? आप बिजली का यूस लेते रहे। आप छत्तीसगढ़ की जनता से टैक्स लेते रहे, लेकिन आपने उनके लिए बिजली मुफ्त नहीं की। आप बिजली मुफ्त कर सकते थे। हमारी सरकार ने पूरे प्रदेश में आधा बिजली बिल माफ किया। हमारी सरकार को 4 साल हो गये हैं। हमने हाफ बिजली बिल योजना लागू की और लगभग 22 लाख घरेलू उपभोक्ताओं को 3 हजार 236 करोड़ रूपये का लाभ दिया। आज हमारे पास कोई चीज है तो हम जनता में बांट नहीं सकते। हम उसे जनता में क्यों बांट नहीं पाये ? यह हमारी नाकामी थी, लेकिन हमने तो उनी चीजों को जनता में बांटा। हमको पता है कि हमारे प्रदेश में बिजली उत्पन्न होती है हम उपभोक्ताओं में मुफ्त बिजली दे सकते हैं, लेकिन इनने 15 वर्षों में मुफ्त बिजली नहीं दी। यह हमारी सरकार ने दी।यह हमारी सरकार की उपलब्धि है। मैं आपको बताना चाहता हूँ कि आज जिस प्रकार से छत्तीसगढ़ सरकार, हमारी सरकार और माननीय भूपेश बघेल जी की सरकार काम कर रही है वह सरकार अंतिम व्यक्ति तक देखभाल कर रही है, उनके स्वास्थ्य की सेवाओं,शिक्षा और कृषि पर

ध्यान दे रही है और रोजगार के अवसर भी पैदा कर रही है। माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं अंत में यही कहना चाहता हूँ कि माननीय राज्यपाल महोदय ने जो हमारी सरकार के बारे में कहा है, जो हमारे इन 4 सालों के कार्यकाल के बारे में कहा है, मैं उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ। जिस प्रकार से माननीय मुख्यमंत्री जी के कुशल नेतृत्व में छत्तीसगढ़ आगे बढ़ रहा है, इसके लिए उनको बहुत-बहुत बधाई और धन्यवाद् देता हूँ।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आपने मुझे बोलने का अवसर दिया, इसके लिए आपको बहुत-बहुत धन्यवाद् करता हूँ।

श्री शिवरतन शर्मा (भाटापारा) :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, माननीय भूपेश बघेल जी की सरकार में पहला माननीय राज्यपाल महोदय जी का अभिभाषण 7 जनवरी, 2019 को हुआ था। 7 जनवरी, 2019 को जो अभिभाषण में प्रमुख बिन्दु था, उसमें यह था कि हम जनघोषणा पत्र 2018 को आत्मसात करते हैं। इनने जो जनघोषणा पत्र जारी किया। वह जनघोषणा पत्र जारी करते हुए, इनने लिखा था कि यह जनघोषणा पत्र झीरम के शहीदों को समर्पित है। मैं झीरम की घटना से ही अपनी बात शुरू करूंगा। उस समय जनघोषणा पत्र बना। जनघोषणा पत्र में एक विशेष बात का उल्लेख था कि सभी संगठन जिन्होंने जनघोषणा पत्र के लिए समय दिया, उन्हें हमारा आभार। अब जिनने जनघोषणा पत्र बनाने के लिए समय दिया, उनके प्रति आभार व्यक्त किया। उसमें 23 ऐसे संगठन हैं जो लगातार हड़ताल कर रहे हैं, आपके जनघोषणा पत्र की बातों को पूरा न करने के लिए परेशान हैं। एल.बी. शिक्षक संघ, असंगठित मजदूर, नर्स और चिकित्सा कर्मचारी एसोसियेशन, महिला स्वसहायता समूह, शिक्षाकर्मी संघ, डॉक्टर संघ, सरपंच और सचिव संघ, आंगनबाड़ी के कार्यकर्त्ता, सहायिका, बी.एस.सी. कोचिंग के छात्र, शिक्षित बेरोजगार संघ के लोग, सफाई कर्मचारी संघ, तृतीय और चतुर्थ कर्मचारी संघ, रोजगार सहायक संघ, नगरीय निकाय संघ, मितानिन संघ, प्राईवेट स्कूल एसोशियेशन, जिला निर्माण संघर्ष समिति, जनपद संघ, अनियमित कर्मचारी संघ, पटवारी संघ, सर्व आदिवासी समाज, सब इंस्पेक्टर भर्ती परीक्षार्थी संघ, आंगन बाड़ी संघ, मनरेगा श्रमिक संघ परेशान हैं...।

श्री कुलदीप जुनेजा :- माननीय शिवरतन शर्मा जी, आप थोड़ी परेशान हैं ?

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आपने जितने लोगों को जनघोषणा पत्र तैयार करने के लिए धन्यवाद् ज्ञापित किया। आप यह सारे लोग परेशान हैं और सारे लोग आन्दोलनरत हैं। अब मैं झीरम घाटी की घटना का जिक्र करता हूँ। आपने जनघोषणा पत्र झीरम घाटी के शहीदों को समर्पित किया । अभी हम परसों बस्तर की घटनाओं पर स्थगन ले करके आये थे जिसमें भारतीय जनता पार्टी के 04 कार्यकर्ताओं की टॉरगेटेड कीलिंग करके हत्या की गई। आप झीरम घाटी के शहीदों को शहीद मानते हैं। जो भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ता मारे गये, जो लगातार 04 साल से जवान शहीद

हो रहे हैं, क्या वह शहीद के श्रेणी में नहीं आते? क्या उनके हत्यारों के खिलाफ कार्यवाई नहीं होनी चाहिए।

संसदीय सचिव, आदिम जाति विकास मंत्री से संबंद्ध (श्री द्वारिकाधीश यादव) :- आदरणीय शिवरतन भैया आपके 15 साल के शासनकाल में जितने लोग बस्तर में मारे गये, उसमें से आप लोगों ने कितने लोगों को शहीद का दर्जा दिये हैं? आपके 15 साल के कार्यकाल में भी नक्सली वारदात में लोग मारे गये हैं।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, जब जगदलपुर की बात आती है तो प्रदेश के डी.जी.पी. एन.आई.ए. के डॉयरेक्टर को पत्र लिखते हैं कि इन हत्याओं की जांच करा लें। जब झीरम घाटी की घटना की जांच एन.आई.ए. करती है तो प्रदेश सरकार उसके लिए एस.आई.टी. गठित करती है। माननीय मुख्यमंत्री जी सदन में 10 बार बोल चुके हैं कि झीरम की घटना के सबूत मेरे जेब मे हैं। यह ऑन रिकार्ड विधान सभा में है। जब हम बोलते थे कि अगर आपकी जेब में सबूत है तो प्रस्तुत क्यों नहीं करते? तो वह बोले कि अगर मैं सबूत प्रस्तुत कर दूंगा तो उनको सुरक्षा कौन देगा? साढे 4 साल से आप मुख्यमंत्री हो, आप सुरक्षा देने में सक्षम हो। अब जब सबूत पेश करने की बात की जाती है तो कहते हैं कि हमने एस.आई.टी. गठित की है। एस.आई.टी. के खिलाफ धरमलाल कौशिक जी कोर्ट में गये हैं, वह वापस ले लें। क्यों भाई? जब जगदलपुर के भाजपा कार्यकर्ताओं की हत्या की जांच एन.आई.ए. से करने की आप सिफारिश कर करते हो तो झीरम की घटना के सबूत आप एन.आई.ए. के सामने क्यों प्रस्तुत नहीं कर रहे हैं? आप इसलिए तो प्रस्तुत नहीं कर रहे हो कि आपके मंत्रिमंडल का साथी उसमें involve है। आप इसलिए तो प्रस्तुत नहीं कर रहे हो कि आपको अपने लोगों को बचाना है इसलिए सबूत को छिपा रहे हैं। प्रदेश की जनता के साथ प्रदेश के मुखिया धोखा दे रहे हैं। मैं तो सीधा-सीधा सदन में आरोप लगाता हूं कि बार-बार यह कहना कि मेरे पास सबूत है और उस सबूत को जांच एजेंसी के सामने प्रस्तुत नहीं करना, एक अपराध है और इस अपराध के लिए मुख्यमंत्री के खिलाफ कार्यवाही होनी चाहिए।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, धर्मांतरण की बात होती है, चश्मदीद गवाह तो आपके मंत्रिमंडल मे है। जब धर्मांतरण की बात होती है तो कहते हैं कि आपके राज में कितने चर्च बने? 2019 के पहले अभिभाषण में आपने इस बात का विशेष जिक्र किया है कि जब पूरे देश में सामाजिक वातावरण बिगड़ा हो तो छत्तीसगढ़ में धार्मिक और सामाजिक सद्भाव बना हुआ है। जब 2019 में सामाजिक सद्भाव, धार्मिक सद्भाव बना हुआ था तो 2022-23 में छत्तीसगढ़ का सामाजिक सद्भाव, धार्मिक सद्भाव क्यों बिगड़ रहा है? आप कभी इसमें विचार करते हो। सुकमा का एस.पी. थानेदारों को पत्र लिखता है कि जिले में धर्मांतरण की घटनायें बढ़ रही हैं और यह संवेदनशील मुद्दा है। इसके चलते सुकमा, बस्तर अशांत हो सकता है। कवर्धा में भगवे झंडे को फेंका जाता है, खूंदा जाता है, थूका जाता है। अपराधी के खिलाफ

कार्यवाई नहीं होती। जो भगवे झंडे के पक्ष में खड़े होते हैं उनके खिलाफ कार्यवाई होती है। कवर्धा में कल क्या हुआ? फिर एक धर्म विशेष, समाज विशेष का झंडा जलाया गया। इसके कारण स्थिति क्या बनी? लाठीचार्ज हुआ, पुलिस के लोग घायल हुए। एस.पी. घायल हुए, एडिश्नल एस.पी. का हाथ टूट गया। नारायणपुर की आखिर क्या घटना हुई? धर्मांतरित करने वालों की एक बैठक गांव तेंदलूर में होती है और वह इस बात के लिए चिंता करते हैं कि जो लोग धर्मांतरित हुए थे, वह वापिस कैसे आ रहे हैं। 31 तारीख को ग्राम गोरा में आदिवासी समाज की बैठक चल रही है और वहां जाकर 300 लोग हमला करते हैं। पुलिस पहुंचती है, घायलों को अस्पताल पहुंचाती है, घायलों को अस्पताल पहुंचाती है और जो लोग हमला करते हैं, उनके खिलाफ में किसी प्रकार की कोई एफ.आई.आर. दर्ज नहीं होती। जब आदिवासी समाज नारायणपुर में बैठत करता है। नारायणपुर में बैठक चल रही है, वहां भारतीय जनता पार्टी के जिला अध्यक्ष को वहां का टी.आई. अपनी मोटर सायकल में बैठाकर ले जाता है। चलिये उत्तेजित लोगों को समझाने के लिए आप प्रयास कीजिये और जब वहां समाज उत्तेजित होता है तो सबसे पहले किसके ऊपर कार्रवाई होती है, जिसको टी.आई. समझाने के लिए अपनी मोटर सायकल में बैठाकर ले गया है। उसके खिलाफ सब प्रकार की धाराएं लगा दी जाती है और उसको दो महीने से जेल में डाल दिया गया है। जिन लोगों ने हमला किया, उनमें सिर्फ 2 लोगों के खिलाफ कार्रवाई हुई। उनमें 300 लोग हमलावर थे। नारायणपुर के आदिवासियों के खिलाफ में 27 लोगों के खिलाफ नामजद अपराध, 100 अन्य लोग शामिल हैं, 37 लोग जेल में है। यह आदिवासियों की हितों की बात करने वाली सरकार है। यह सरकार धर्मांतरण को सहयोग कर रही है।

उपाध्यक्ष महोदय :- महाराज, एक मिनट।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय उपाध्यक्ष जी, कांग्रेस वाले धमतरी में चक्काजाम किए हैं तो एस.पी. और पुलिस वाले उनसे माफी मांगने गये थे। हमारे रहते हुए आपको चक्काजाम करना पड़ा, उसके लिए वे माफी मांगने गये थे। पूरे समाचार पत्रों में आया था।

उपाध्यक्ष महोदय :- चलिये, शर्मा साहब।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय उपाध्यक्ष जी, सुप्रीम कोर्ट का कथन है कि धर्मांतरण एक गंभीर मुद्दा है। आरोप-प्रत्यारोप लगाने से समस्या का निदान नहीं होगा। मैं तो आपके माध्यम से आग्रह करता हूं कि यदि दम है तो माननीय मुख्यमंत्री जी पूरे घटनाक्रम की जांच करायें। कितने लोग धर्मांतरित हुए, कब चर्च बना, धर्मांतरण कराने में कौन लोग शामिल हैं, उनको पैसा कहां से आ रहा है? माननीय पं. रविशंकर शुक्ल जी सी.पी. एण्ड बरार के पहले मुख्यमंत्री रहे और जब वे पहली बार जशपुर के दौरे में गये तो उनको काला झण्डा दिखाया गया। जब उन्होंने सारे घटनाक्रमों की जांच की तो उनको पता चला कि इसके पीछे मिशनरीज के लोग शामिल हैं और उन्होंने नियोगी कमीशन बनाया। धर्मांतरण रोकने के लिए यदि सबसे पहले किसी ने प्रयास किया तो आदरणीय रविशंकर शुक्ल जी ने किया। वह

भी कांग्रेस की सरकार थी और आज माननीय संसदीय कार्य मंत्री तो जगत गुरू शंकराचार्य जी के शिष्य हैं। जगत गुरू तो ..।

श्री रामकुमार यादव :- आप आशाराम के शिष्य हौ का जी? (हंसी)

श्री शिवरतन शर्मा :- जगत गुरू के शिष्य हैं। आपके रहते हुए हो रहा है, आप इस पर कभी विचार करते हैं या आप भीष्म पितामह बन गये कि सब चीजों में मैं आंख बंद करके चलूंगा। जो हो रहा है, सब ठीक हो रहा है।

माननीय उपाध्यक्ष जी, बस्तर जल रहा है, आप भी बस्तर से आते हैं और बस्तर चल रहा है तो इस आग को पूरे छत्तीसगढ़ में फैलने में समय नहीं लगेगा और उसका दुष्परिणाम पूरे छत्तीसगढ़ को भोगना पड़ेगा। मुझे कहते हुए दु:ख हो रहा है कि सिर्फ राजनीतिक लाभ के लिए, सिर्फ वोट बैंक की राजनीति के लिए धर्मांतरण की घटनाओं को यह सरकार समर्थन देने में लगी हुई है, ऐसे लोगों को बचाने में लगी हुई है। सामाजिक सद्भाव, धार्मिक सद्भाव बिगड़ रहा है, पर इस सरकार को कोई लेना-देना नहीं है। कानून व्यवस्था की बात करते हैं। आज माननीय बृहस्पत सिंह जी नहीं हैं। सत्तारूढ़ पार्टी का विधायक अपने विधान सभा में धरने में बैठता है और सिर्फ धरने में नहीं बैठता है, बल्कि वहां के एस.पी. और थानेदार के खिलाफ पोस्टर लगवाता है। यह दंगाई है, दंगाओं को समर्थन करने वाले लोग हैं। सरकार क्या कर रही है? यदि गलत करने वाले लोग हैं तो एस.पी. और टी.ए. के खिलाफ कार्रवाई करो। यदि एस.पी. और टी.आई. गलत नहीं है तो आप विधायक को बंद करो? जो इस प्रकार के सद्भाव को बिगाड़ रहा है। दोनों में कोई न कोई तो गलत है।

श्री अजय चंद्राकर :- नहीं तो फिर ताली बजाओ। (हंसी)

श्री शिवरतन शर्मा :- क्या कर रहे हैं ? संसदीय कार्यमंत्री जी आपको गलत को गलत कहने का साहस तो होना चाहिए । मैं संसदीय कार्यमंत्री जी के विभाग की बात करता हूं ।

नगरीय प्रशासन मंत्री (डॉ. शिवकुमार डहरिया) :- आपने धर्मांतरण में आधे घंटे बोला है । पूरे प्रदेश में एक भी धर्मांतरण हुआ है तो आपके पास उसका उदाहरण है ? जबरदस्ती का धर्मांतरण । आधे घंटे तक सदन का समय खराब कर रहे हो ।

श्री शिवरतन शर्मा :- आपके पल्ले कुछ नहीं पड़ेगा । माननीय उपाध्यक्ष महोदय, यह सरकार बढ़ा चढ़ाकर प्रचारित करती है कि हम धान खरीद रहे हैं, हम धान खरीद रहे हैं ।

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी :- अच्छा तें धर्मांतरण के उदाहरण जानना चाहत हस कि का करना चाहत हस ओला बताबे । मैं तोला उही ला दिखाए बर ले जाहूं । अपने अनुसूचित जाति के कितने लोग धर्मांतरित हो गये हैं । चर्च खुल गये हैं ।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं व्यक्तिगत विषय को नहीं बोलना चाहता था । अब आप बोल रहे हैं तो मैं बोल देता हूं । यह सरकार जो है न यह समिति और एस.आई.टी.

गठित करने में एक्सपर्ट सरकार है । इन्होंने जितनी समितियां गठित की हैं, जितनी एस.आई.टी. गठित की हैं, आप यह बता दीजिये कि क्या साढ़े चार साल में उसका एक भी परिणाम आया ? शराबबंदी के लिये समिति बनी, माननीय सत्तू भैया अभी नहीं हैं । माननीय संसदीय कार्यमंत्री जी शराबबंदी समिति का क्या हुआ ?

श्री प्रकाश शक्राजीत नायक :- वह समिति तो आप लोगों ने भी बनायी थी ।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, कर्मचारियों के नियमितीकरण के लिये समिति बनी । आप थोड़ा यह बता दीजिये कि उस समिति का क्या हुआ ? कर्मचारियों के वेतनविसंगति को दूर करने के लिये समिति बनी । उस समिति का क्या हुआ ? आपके ही विभाग में हाईब्रिड बीज घोटोले की जोच के लिये समिति बनी है, उसका क्या हुआ ? कर्ज माफी के लिये भी कोई समिति बनी थी, उसका क्या हुआ ? झीरम घाटी के लिये एस.आई.टी. का गठन हुआ । नॉन घोटाले के लिये एस.आई.टी. का गठन हुआ ।

श्री रामकुमार यादव :- आप मन 15 साल मा एक रूपया भी किसान के कर्जा माफ करे हओ का ? लाख, दू लाख ला तो छोड़ दो ।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, एक्सप्रेस वे के लिये एस.आई.टी. का गठन हुआ । क्या कार्यवाही की गयी, किसमें रिपोर्ट आयी ? साढ़े 4 साल का पीरियड हो गया । डहरिया जी, अब मैं व्यक्तिगत बात करता हूं, आप अन्यथा नहीं लेंगे । आपके परिवार में हत्या की घटना घटित हुई थी । आपने व्यक्तिगत रूप से एक व्यक्तिविशेष पर आरोप लगाया था कि साढ़े 4 साल में क्या हुआ उसका रिजल्ट आप बता दीजिये, आप मंत्री हैं । खाली समिति बनाना, एस.आई.टी. गठित करना, एक भी परिणाम नहीं आया । केवल बातों को लिंगरआन करना, इसके लिये यह सरकार काम करती है । धान खरीदी, 2800 रूपये कीमत देंगे। वर्ष 2018 में तो आपने 2500 रूपये की घोषणा की थी, धान का समर्थन मूल्य कितना था ? वर्ष 2018 में केंद्र सरकार के धान का समर्थन मूल्य 1750 रूपये था । आज धान का समर्थन मूल्य 2040 रूपये है । 300 रूपये की वृद्धि तो सेंट्रल गवर्नमेंट ने की है । आप सेंट्रल पुल के लिये जो चावल जमा करते हैं उसका पूरा 2040 रूपये तो सेंट्रल गवर्नमेंट आपको दे रही है और सेंट्रल गवर्नमेंट केवल धान खरीदी का पैसा नहीं दे रही है उसमें खरीदी का पूरा खर्चा भी दे रही है ।

श्री रामकुमार यादव :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, ए मन के कइसनहा हे । सावर के चोरी अऊ सूजी के धान, इ वाला मन हे । सावर मा चोरी करके सूजी के धान लेने वाला हे ।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आपने अपनी बचत के लिये मंडी टैक्स में भी वृद्धि कर दी है, आपको उसमें 500 से 600 करोड़ रूपये ज्यादा मिल रहे हैं ।

संसदीय कार्यमंत्री (श्री रविन्द्र चौबे) :- अभी मिला नहीं है ।

श्री शिवरतन शर्मा :- आपने दिया है तो मिलेगा । आपने जो उसमें घोषित किया है । जब 1750 रूपये का 2040 रूपये सेंट्रल गवर्नमेंट ने कर दिया तो आपको तो इस साल किसान को धान का समर्थन मूल्य 2840 रूपये देना चाहिए था । आप किसान के ऊपर एहसान नहीं कर रहे हैं । आप छत्तीसगढ़ के किसान को धोखा दे रहे हैं । जो पैसा सेंट्रल गवर्नमेंट ने बढ़ाया उसको आप अपने खाते में क्यों ले रहे हैं? इस साल आपको 2840 रूपये देना था और आप 2800 रूपये की घोषणा कब कर रहे हैं ? आपको मालूम है कि इस साल फिर से 50-100 रूपये बढ़ेगा लेकिन आप किसानों को भी धोखा देने में लगे हुए हैं । किसानों को धोखा कैसे देते हैं ? अगर यह 600 रूपये प्रति क्विंटल दे भी रहे हैं तो एक हाथ से देगा और दूसरे हाथ से वापस लेने का भी काम कर रहे हैं । एकड़ में 900 रूपये का गोबर खाद लेना पड़ेगा। अब गोबर खाद के नाम पर गोबर को पीसकर मिट्टी मिलाकर दिया जा रहा है । गिरदावली के नाम पर रकबा काटा जा रहा है । क्या इस प्रकार किसान धान की खेती कर सकता है ? 2 साल से किसानों को बारदाने का पैसा नहीं मिला है और 4 साल का अगर आप हिसाब लगायेंगे तो वर्ष 2020-21 में आपने किसानों को 2500 की कीमत नहीं दी है । वर्ष 2019-20 में आपने किसानों को 2415 रूपये दिया है। वर्ष 2020-21 में आपने किसानों को 2485 रूपये दिया है। आप वहां भी डंडी मार गये। आप लोगों को सिर्फ धोखा देंगे। किसान की सरकार, किसान की सरकार की बात करते हैं। माननीय अजय चन्द्राकर जी ने फूड पार्क की बहुत बात कही है। यहां तो माननीय राहुल गांधी जी का भाषण हुआ ही था। उत्तरप्रदेश के चुनाव में भाषण दे आये कि छत्तीसगढ़ में हमारी सरकार ने हर ब्लॉक में फूड पार्क बना दिया है। एकाध जगह हमें भी दिखाने ले चलिए कि कहां बना है?

श्री रविन्द्र चौबे :- समय निकालो।

श्री शिवरतन शर्मा :- हम आज तैयार हैं। आप समय निकालने के लिए बोल रहे हैं। हम आज चलने को तैयार हैं।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- सत्र के बाद चलिए।

श्री ननकी राम कंवर :- अभी चलिए।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय उपाध्यक्ष जी, सिंचाई की क्षमता दोगुनी करेंगे। संसदीय कार्य मंत्री जी आपका विभाग है। राज्यपाल के अभिभाषण में आपने कहा है कि सिंचाई की क्षमता 38 परसेंट कुछ प्वाइंट हो गई है। 34 परसेंट से ऊपर तो हमारी सरकार के पीरियड में सिंचाई का रकबा बढ़ गया था।

श्री अजय चन्द्राकर :- कौन सी योजना में एक इंच बढ़ाये हैं।

श्री शिवरतन शर्मा :- 5 साल में बोधघाट परियोजना को पूरा करेंगे। यहीं डॉ. रमन सिंह जी ने चुनौती दी थी। माननीय मुख्यमंत्री जी और आपने खड़े होकर चुनौती स्वीकार की थी। क्या हुआ बोधघाट परियोजना का?

संसदीय सचिव, स्कूल शिक्षा मंत्री से संबद्ध (श्री द्वारिकाधीश यादव) :- भैय्या, डी.पी.आर. बनाने के लिए चुनौती थी, न कि बांधी को पूरा करने की। आप पूर्णत: निर्माण की बात बोल रहे हैं। डी.पी.आर. की बात हुई थी।

श्री शिवरतन शर्मा :- क्या हुआ बोधघाट परियोजना का? कितना काम आगे बढ़ा? सिंचाई का रकबा डबल करने वाले थे। कितना सिंचाई का रकबा आप बढ़ा सके? सिंचाई का रकबा बढ़ाने की बात करते-करते।

श्री रामकुमार यादव :- 15 साल में तुमन बनाए हो कंपनी ला पानी देबर। किसान मन न नहीं मिले। चलो जावव देखव महानदी में।

श्री शिवरतन शर्मा :- सिंचाई का रकबा बढ़ाने वाली सरकार आज 58 हजार किसान ऐसे हैं, जिन्होंने स्थाई कनेक्शन का पैसा जमा कर दिया है। (शेम-शेम की आवाज) अब किसानों को पंप का कनेक्शन नहीं मिल रहा है और पंप का कनेक्शन क्यों नहीं मिल रहा है? क्योंकि सरकार को जो 1 लाख रूपये प्रति पंप के हिसाब से सब्सिडी देना है, उस सब्सिडी के लिए बजट प्रावधान नहीं है। पिछले साल 20 हजार का लक्ष्य निर्धारित किया गया और पिछले साल के 20 हजार के लक्ष्य में ये मार्च का महीना चल रहा है 11 हजार 60 पंप तो 20 हजार के लक्ष्य में इस साल पूरा करना बाकी है। माननीय उपाध्यक्ष जी, यह मैं नहीं बोल रहा हूं। यह विधान सभा के उत्तर में परसों जवाब मिला है और माननीय मंत्री जी ने स्वीकार किया है कि 20 हजार 550 का लक्ष्य रखा गया था, उसके विरूद्ध में 9 हजार 490 किसानों को पंप कनेक्शन दिया है और 11 हजार 60 किसान इस वर्ष के देना शेष है। इसके अतिरिक्त 39 हजार 582 किसान और ऐसे हैं, जिनका पैसा पट चुका है। किसानों के हित में काम करने की बात कर रहे हो। किसानों को पंप के लिए पैसा पटाये 2 साल, ढाई साल, 3 साल हो गया । आप कनेक्शन नहीं दे पा रहे हैं। माननीय उपाध्यक्ष जी, घोषणा-पत्र गंगा जल उठाकर, झीरमघाटी के शहीदों को समर्पित करते हुए जनघोषणा पत्र जारी किये, उन शहीदों का तो सम्मान कर लेते, जिनको आपने जनघोषणा पत्र समर्पित किया था।

श्री रामकुमार यादव :- वो गांव-गांव में 15-15 लाख ला पूछथे। ओला कइसे करबो बता देवौ तो। केन्द्र गवर्नमेंट में तुमन कहे रहव 15-15 लाख रूपये, तेला कइसे करबो।

श्री शिवरतन शर्मा :- मैं जनघोषणा पत्र में चुनौती देता हूं। माननीय मंत्री जी एक भी काम पूरा नहीं कर पाये हो। एक भी। कहीं भी आप डिवाइड कर लीजिए। शराबबंदी का आश्वासन था न। इसी सदन में मेरा अशासकीय संकल्प था और जब मैं अशासकीय संकल्प पर बोलने खड़ा हुआ तो माननीय मुख्यमंत्री जी खड़े हो गये और बोले कि हमने गंगा जल उठाकर कसम नहीं खाई थी। हमने तो कसम खाई थी कि किसान का 2500 रूपये धान खरीदी की, किसान के कर्ज माफी की। जब मैंने कहा कि जनघोषणा पत्र के लिए खाये थे या नहीं खाये थे तो बोले कि जनघोषणा पत्र के लिए हमारी शपथ थी।

तो जनघोषणा पत्र में शराबबंदी है या नहीं? इसी सदन में मतदान हुआ और इसी सदन में शराबबंदी के खिलाफ वोट देने वाले आप लोग हैं।

श्री अजय चन्द्राकर :- पंडित जी, घोषणा पत्र में कोई शराब पीकर शराबबंदी को लिख दिया होगा। (हंसी)

श्री शिवरतन शर्मा :- इसी सदन में मतदान हुआ। इसी सदन में बहस हुई और शराबबंदी के खिलाफ वोट किसने दिया? माननीय रविन्द्र चौबे जी ने। माननीय शिवकुमार डहरिया जी ने। माननीय भूपेश बघेल जी ने। माननीय प्रेमसाय सिंह टेकाम जी ने। ये सारे लोग जो गंगा जल उठाकर शराबबंदी की शपथ लेकर आये थे, इन्होंने शराबबंदी के खिलाफ वोट दिया, यह विधान सभा में ऑन रिकार्ड है ।

माननीय उपाध्यक्ष जी, इन्होंने संविदा कर्मचारियों, अनियमित कर्मचारियों, दैनिक वेतन भोगी, मितानिन, आंगनबाड़ी कार्यकर्ता, सफाई कर्मचारी, रसोइयों के नियमितिकरण का वायदा किया था । आज सारे लोग आंदोलनरत् हैं । आपने एक की भी मांग पूरी की क्या ? और इससे बड़ी शर्मनाक घटना क्या हो सकती है कि 140 दिन से अनुकंपा नियुक्ति की मांग को लेकर विधवा महिलाएं धरने पर बैठी हैं। उन्होंने 3 दिन पहले अपना सिर मुंडवा लिया ।

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- आप लोगों के कार्यकाल में भी तो थे वे लोग ।

श्री शिवरतन शर्मा :- इससे बड़ी शर्मनाक घटना हो सकती है क्या ? आप बोल रहे हो हमारा पाप है । आप लोग तो हमारा पाप धोने के लिए उधर आए हो ना। वायदा करके आए हो ना, जन घोषणा पत्र में लिखा तो आपने ही है ना । साढ़े चार साल हो गए, कब करोगे ?

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- 40 हजार करोड़ का कर्जा भी छूट रहे हैं ।

श्री रामकुमार यादव :- खा-पीकर भाग गए, बिल हमन ला दे बर लागत हे।

श्री शिवरतन शर्मा :- ग़रीब की आह से कोई नहीं बचा है और ग़रीबों की आह आपको लग रही है ।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- ये आप अच्छी तरह समझ सकते हैं, आज 15 सीट में सिमट गए हैं ।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय उपाध्यक्ष जी, घोषणा पत्र में कहा गया कि हम सबको आवास देंगे । ग्रामीण क्षेत्र में 5 सदस्यीय परिवार है उसको बाड़ी और मकान दोनों देंगे । साढ़े चार साल हो गए, ग्रामीण क्षेत्र में एक भी प्रधानमंत्री आवास स्वीकृत हुआ क्या ? यह तो अपने घोषणा पत्र में कह रहे थे कि हम अपने बूते पर देंगे । अपने बूते पर किसी को बाड़ी मिली क्या ? इनके बूते पर किसी को मकान मिला क्या ?

श्री रामकुमार यादव :- तुमन तो इंदिरा आवास ला प्रधानमंत्री आवास करवा दे हौ ।

श्री शिवरतन शर्मा :- इसमें 60 प्रतिशत राशि केन्द्र की सरकार देती है । उस केन्द्र की सरकार के पैसे का सदुपयोग भी आप नहीं कर पाए । आपका निकम्मापन तो इतना है कि पूरे छत्तीसगढ़ को 12 हजार करोड़ का नुकसान हुआ ।

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- पैसे की कटौती नहीं करना था ना, क्यों कटौती की ?

उपाध्यक्ष महोदय :- आप सभी का नाम है, कृपया टोका टाकी न करें ।

श्री शिवरतन शर्मा :- छत्तीसगढ़ के 16 लाख परिवार आवास से वंचित हो गए । डेढ़ लाख मकान चार साल से अधूरे पड़े हैं । वे अधूरे क्यों पड़े हैं, क्योंकि राज्य सरकार अपने हिस्से की 40 प्रतिशत राशि जारी नहीं करती । सबको मकान देने का वायदा करके सेंट्रल की स्कीम को भी चालू नहीं कर पा रहे हो । उपाध्यक्ष जी, अजय जी ने चिटफंड कंपनियों की चर्चा की । अभिभाषण में स्वीकार किया गया है कि इन्होंने चिटफंड कंपनियों का 32 करोड़ रूपए वापस किया है । उसका विज्ञापन कितने का छपा है ? 99 करोड़ का विज्ञापन छपा है । जितनी वापस की, उससे तीन गुनी राशि का विज्ञापन छपा कि हम चिटफंड कंपनी का पैसा वापस कर रहे हैं ।

श्री रविन्द्र चौबे :- इस राशि में वह राशि भी शामिल है क्या, जो आप लोग कंपनियों का उद्घाटन करने गए थे । पुराना वाला भी जोड़ रहे हो क्या, जिसमें आप लोगों की फोटो, तस्वीरें थीं ?

श्री शिवरतन शर्मा :- अच्छा, एक बात बार-बार आती है कि आप लोग उद्घाटन करने गए थे । अरे भइया, साढ़े चार साल से आपकी सरकार है, अगर हम लोग उद्घाटन करने गए थे और हमने ग़लत किया है तो हम लोगों के खिलाफ़ कार्रवाई करो ना, एफ.आई.आर. करो ना, जेल भेजो ना, किसने रोका है आपको ?

श्रीमती संगीता सिन्हा :- हम राम राज्य के लोग हैं ।

श्री शिवरतन शर्मा :- आप कार्रवाई करो ना ।

श्री ननकीराम कंवर :- अरे करो ना, भेजो किसको किसको जेल भेज रह हो ?

श्री शिवरतन शर्मा :- उपाध्यक्ष महोदय, चिटफंड कंपनी के नाम पर पूरे प्रदेश की जनता को धोखा दे रहे हैं । अकेले सहारा में छत्तीसगढ़ का 5 हजार करोड़ रूपए डूबे हुए हैं । इस विधान सभा में प्रश्न आया तो माननीय गृहमंत्री जी जवाब देते हैं कि हमारे पास उसके खिलाफ़ कार्रवाई करने का अधिकार नहीं है । छत्तीसगढ़ की जनता का 5 हजार करोड़ रूपए डूब जाए और गृहमंत्री जवाब दें कि हमारे पास कार्रवाई करने का अधिकार नहीं है ।

समय :

1:00 बजे

माननीय उपाध्यक्ष जी, इससे शर्मनाक बात और हो सकती है। जल जीवन मिशन की चर्चा लगातार हो रही है। इसी सदन में 72 लाख परिवारों को 30 सितंबर 2023 तक नल का कनेक्शन देने

की बात हुई। आपने अब तक कितना नल कनेक्शन दिया है ? राज्यपाल के अभिभाषण में आप ग्रामीण क्षेत्र में नल कनेक्शन देने में स्वीकार कर रहे हो कि 18 लाख नल कनेक्शन दिया। पूरे प्रदेश में 22 लाख नल कनेक्शन लगा है, क्या 30 सितंबर तक पूरा हो जाएगा ? क्या टारगेट के 50 प्रतिशत तक में सरकार पहुंच जाएगी ? जल जीवन मिशन परिवार को पानी देने का मिशन नहीं रह गया है। इनके कमाई का मिशन बन गया है। एक भ्रष्टाचार का माध्यम बन गया है। इस भ्रष्टाचार में यह सारे लोग संलिप्त थे, सारे लोग। सबकी हिस्सेदारी है।

माननीय उपाध्यक्ष जी, नरवा, गरवा, घुरूवा, बाड़ी की बात हुई। गौठान की बात बड़े जोरदार बोलते हैं। इस सदन में मैंने माननीय मुख्यमंत्री जी से दो बार निवेदन किया है कि आप अगर 8 हजार से ज्यादा गौठान बना चुके हो तो एक बार लॉट निकाल लीजिए और लॉट निकालकर दस गौठान को आप दिखा दो, गौठान के नाम पर अरबों रूपयों की बर्बादी हुई। पैसा, सिर्फ भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ा है। आप कहीं भी गौठान में चले जाईए, कहीं पर गाय नहीं मिलेगी। आपका तो उस विभाग की, उस एजेंसी की नोडल है। आप 8 हजार गौठानों का लॉट निकालिए ना। दस पांच गौठान हम लोगों को दिखा दीजिए, कौन सा सफल गौठान है। आपके विधान सभा का लॉट निकालकर गौठान दिखा दीजिए।

संसदीय कार्य मंत्री (श्री रविन्द्र चौबे) :- चलिए।

श्री शिवरतन शर्मा :- आज यह बोल रहे हैं, चलिए। मुख्यमंत्री जी ने कहा था कि बिल्कुल आपको लेकर चलेंगे, दो साल पता नहीं चला। माननीय उपाध्यक्ष जी, गौठान के नाम पर सिर्फ और सिर्फ बर्बादी हो रही है। कहीं कोई पैसा नहीं, कहीं कोई कुछ नहीं। जन घोषणा पत्र में बड़ा जोरदार उल्लेख था, पत्रकारों के लिए, वकीलों के लिए, डॉक्टरों के लिए विशेष सुरक्षा कानून बनाया जाएगा। शायद प्रारूप बना है, प्रक्रियाधीन है।

श्री अजय चंद्राकर :- प्रारूप कमेटी बनी है।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय, कमेटी का रिजल्ट कब आएगा ? 2023 के बाद आएगा । रोज डॉक्टरों को मारा जा रहा है। वकीलों के साथ मारपीट हो रही है। पत्रकारों को प्रताड़ित करने में यह सरकार स्वयं लगी हुई है और उसके लिए आप तो विशेष कानून बनाने वाले थे क्या ? भारत में छत्तीसगढ़ में सबसे कम बेरोजगारी की दर है। पहले जब हम प्रश्न करते थे कि छत्तीसगढ़ में पंजीकृत बेरोजगार कितने हैं तो उत्तर आता था, इतने पंजीकृत बेरोजगार हैं और दो सत्र से चेंज हो गया है। दो सत्र से चेंज क्या हुआ है ? जिन्होंने रोजगार के लिए पंजीयन कराया है, बेरोजगार शब्द हटा दिया गया। अभी मेरा परसों ही प्रश्न था, माननीय उमेश पटेल जी का उत्तर है। 18 लाख कुछ लोग पंजीकृत हैं और चार साल में 33,333 लोगों को शासकीय सेवा में समायोजित किया गया। साढ़े 18 लाख पंजीयन हैं और 33,333 लोग समायोजित हुए तो 0.4 प्रतिशत आपका कैसे बैरोजगारी दर आ गया ? जरा बता दीजिए।

उपाध्यक्ष महोदय :- शर्मा जी, आधे घंटे से ज्यादा समय हो गया। आप और कितना समय लेंगे। लगभग-लगभग आपकी पूरी बात आ गयी है।

श्री शिवरतन शर्मा :- उपाध्यक्ष महोदय, बस पांच मिनट में अपनी बात समाप्त कर रहा हूं। माननीय संसदीय कार्य मंत्री जी, यह बेरोजगारी का दर कैसे आ गया, जरा मुझे बता देंगे ? इसी सदन में मेरा और धरमलाल कौशिक जी का प्रश्न था, हमने प्रश्न किया कि आपने चार साल में कितने शासकीय लोगों को नौकरी दी तो माननीय मुख्यमंत्री जी का जवाब था कि 20,292 लोगों को नौकरी दी। बड़े-बड़े फ्लैक्श लगे थे, हमने छत्तीसगढ़ में पांच लाख लोगों को रोजगार दिया। बिलासपुर में माननीय मुख्मंत्री जी का भाषण हुआ था जिसमें 2 लाख 40 हजार लोगों को शासकीय नौकरी देने की बात की गयी थी और विधान सभा में उत्तर आता है कि 20,292 लोगों को नौकरी दी गयी। छत्तीसगढ़ के लोगों को धोखा देने का काम कर रहे हैं।

श्री अजय चंदाकर :- एक मिनट, जनमन पत्रिका में 4 लाख 96 हजार छपा था कि इतने लोगों को रोजगार दिया।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, फरवरी, 2020 के अभिभाषण में आपने कहा था कि हम 15 हजार स्थाई शिक्षकों की नियुक्ति करेंगे और उनमें से 7 हजार शिक्षक आदिवासी क्षेत्रों में रहेंगे। आप अभिभाषण की कॉपी देख लें। यदि आप कहेंगे तो मैं आपको अभिभाषण की कॉपी उपलब्ध करा देता हूं। आप यह बताइये कि कितने शिक्षकों की भर्ती हुई और कितने को नियुक्ति पत्र दिया गया ?

श्री अजय चंद्राकर :- अभी चल रहा है।

श्री शिवरतन शर्मा :- वर्ष 2018 में पुलिस भर्ती की परीक्षा हुई थी।

श्री अजय चंद्राकर :- सुनिये न, एक सेकण्ड।

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- आप आरक्षण बिल में साइन करवा दीजिए, सब हो जाएगा।

श्री धरमलाल कौशिक :- वह प्रक्रियाधीन है।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय चौबे जी, 5 साल से 14 हजार 485 शिक्षकों की भर्ती चल रही है। यह सबसे संतोषी मंत्री हैं। बेचारे ट्रांसफर करके अपना जेब खर्चा चला रहे हैं और उसमें से भी आधा ट्रांसफर कैन्सिल हो जाता है। (शेम-शेम की आवाज) एक ही स्थान में दो-दो लोग पहुंच जाते हैं।

श्री धरमलाल कौशिक :- अजय चंद्राकर जी, अब ऐसा है कि दस्तखत होए नहीं।

श्री अजय चंद्राकर :- आप थोड़ा रौद्र रूप दिखाइये। क्या आप ट्रांसफर भर करेंगे ?

श्री शिवरतन शर्मा :- नहीं-नहीं, यह उसमें भी रौद्र रूप नहीं दिखाते हैं।

श्री धरमलाल कौशिक :- यह भर्ती भी नहीं करते हैं।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय संसदीय कार्य मंत्री जी, अभी ट्रांसफर की बात चल रही है तो मैं आपको ट्रांसफर उद्योग की बात बता देता हूं। कल मेरा एक प्रश्न था, जिसमें माननीय मंत्री जी का लिखित उत्तर आया है। मैंने प्रश्न किया था कि शिक्षक के रिक्त पद होने के बाद कितने ट्रांसफर हुए तो इन्होंने उत्तर दिया है कि केवल 1 ब्लॉक में ऐसे स्कूल हैं जहां से 66 शिक्षकों का स्वैच्छिक रूप से स्थानांतरण हो गया और वहां शिक्षक के पद रिक्त हो गये।

श्री अजय चंद्राकर :- उसमें लिखा है कि उसी में काम चल रहा है।

श्री शिवरतन शर्मा :- उसमें रेट इस प्रकार था कि यदि सहायक शिक्षक है तो 2 लाख रूपये, व्याख्याता है तो 4 लाख रूपये और यदि प्रिंसीपल है तो 5 लाख रूपये। 66 शिक्षकों का ट्रांसफर हो गया। डेढ़ सौ लोग इनके आदमियों को पैसा देकर उनके पीछे घूम रहे हैं, जिनका पैसा देने के बाद भी ट्रांसफर नहीं हुआ।

श्री अजय चंद्राकर :- यह सत्य है।

श्री शिवरतन शर्मा :- डेढ़ सौ लोग और मंत्री जी के खास लोग। यदि आप कहेंगे और इसकी जांच कराएं तो मैं एफीडेबिट के साथ इसकी शिकायत करवा सकता हूं।

श्री रविन्द्र चौबे :- वह वर्ष 2018 के पहले का होगा।

श्री शिवरतन शर्मा :- नहीं, अभी का है। यह वर्ष 2022 का है।

श्री ननकीराम कंवर :- कोयला चोरी भी यही कराते हैं। आपको मालूम नहीं है।

श्री शिवरतन शर्मा :- खाली पैसा था और स्कूल में शिक्षक है या नहीं नहीं है इससे इनको कोई मतलब नहीं है। जिसने पैसा दिया उसका ट्रांसफर कर दो।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- यह वर्ष 2018 के पहले का प्रकरण है हम इसकी जांच कराएंगे। आप चिंता मत करिये।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, वर्ष 2018 में पुलिस भर्ती की कार्रवाई शुरू हुई, वह आज तक अपूर्ण है। परसों मेरा प्रश्न था कि व्यापम और लोक सेवा आयोग में पिछले 4 सालों में कितनी भर्ती की गई ? तो उसमें माननीय मुख्यमंत्री जी का जवाब था कि जानकारी एकत्रित की जा रही है। 2 विभाग के लिए जानकारी एकत्रित की जा रही है। क्या उसको लिखकर मंगाया नहीं जा सकता था ? आपने घोषणा पत्र में तो 1 लाख लोगों को नौकरी देने की बात की थी। सब इंस्पेक्टर भर्ती परीक्षा के 950 पद पर अब तक भर्ती नहीं हुई है। 21 हजार से अधिक भर्ती के मामले अदालत में अटके हुए हैं। वन सेवा परीक्षा, पटवारी परीक्षा, डाटा एन्ट्री ऑपरेटरों की भर्ती, सहायक विकास अधिकारी के 250 पदों की भर्ती, हॉस्टल वार्डन के 40 पद, लेबर इंस्पेक्टर तथा रेवेन्यू इंस्पेक्टर के पद खाली पड़े हैं। आपके विभाग में कितने अनियमित रह गये हैं? कितने सब इंजीनियर रह गये ? सारे पद खाली पड़े हैं और आप राज्यपाल महोदय के अभिभाषण में तो खूब गिना दिये कि हमने यह कर दिया, हमने वह कर दिया। यदि

आप अपने साढ़े 4 साल की उपलब्धि को अलग करते, माननीय अजय चंद्राकर जी भी कुछ आंकड़े बता रहे थे।

श्री रविन्द्र चौबे :- जैसे ही प्रधानमंत्री जी का 9 साल में 2 करोड़ लोगों को रोजगार देने का आदेश आएगा, हम सबकी भर्ती कर लेंगे। (मेजों की थपथपाहट)

श्री अजय चंद्राकर :- के.टी.एस. तुलसी को दे दीजिए न। माननीय के.टी.एस. तुलसी साहब इसको अपने भाषण में उठाएंगे। लेकिन आपसे एक आग्रह है कि माननीय टेकाम साहब को केबिनेट से निरंतर ट्रांसफर के अधिकार दिये जाए। रोज करे और रोज कैन्सिल हो। आप सीनियर मिनिस्टर हैं, यह कर दीजिए।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय संसदीय कार्यमंत्री जी बोल रहे हैं कि जैसे ही 2 करोड़ लोगों की नौकरी का अधिकार आएगा।

डॉ. प्रेमसाय सिंह टेकाम :- यह आपके समय में होता रहा होगा। उसकी जांच कर रहे हैं।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- यह आपके पक्ष की बात कर रहे हैं।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, जब 2 करोड़ लोगों को नौकरी दी जाएगी तब आप नौकरी देने की व्यवस्था करेंगे। के.टी.एस. तुलसी, रंजिता रंजन, राजवी शुक्ला। संसदीय कार्य मंत्री जी, मैं आपको इंगित कर रहा हूं।

डॉ. प्रेमसाय सिंह टेकाम :- शर्मा जी, शर्मा जी।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, यह गलत बात है इसको विलोपित किया जाए। इस तरह से बीच-बीच में डिस्टर्ब कर रहे हैं। यह क्या है ? पहले अजय चंद्राकर जी ताली बजा रहे थे, ननकीराम जी ताली बजाते हैं, यह ताली बजाना ठीक नहीं है।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, राज्यसभा में आपके 3 लोग हैं क्या उन्होंने एक भी विषय को वहां पर रखा ? छत्तीसगढ़िया की बात कर रहे हैं। खुद छत्तीसगढ़िया की बात करते हैं।

डॉ. प्रेमसाय सिंह टेकाम :- माननीय अध्यक्ष महोदय, जो लोग यहां पर नहीं हैं उनका इसमें नाम नहीं आता है।

श्री शिवरतन शर्मा :- आप उनके द्वारा रखा हुआ एक भी विषय बता दीजिए।

श्री अजय चंद्राकर :- तीनों छत्तीसगढ़िया हैं।

श्री शिवरतन शर्मा :- आप छत्तीसगढ़िया हित की बात करते हो । छत्तीसगढ़ की क्या स्थिति है ? अधोसंरचना के क्षेत्र में काम करेंगे । माननीय शिव डहरिया जी, आपका विभाग बहुत जोरदार चल रहा है । सेंशन लेटर जाएगा, पर राशि तभी जाएगी, जब [xx][1] एडवांश आ जाएगा तब ।

[1] [xx] अध्यक्षीय पीठ के आदेशानुसार निकाला गया.

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- तुम्हारे समय में होता था, तुम्हारे समय में यही होता था ।

श्री शिवरतन शर्मा :- जब तक [xx][2] राशि नहीं आएगी, तब तक राशि जारी नहीं होगी और 5 करोड़ रूपए में 2 करोड़ रूपए जारी हो गई तो फिर 3 करोड़ के लिए देना पड़ेगा । सिर्फ [xx] ।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- तुम्हारे मुख्यमंत्री रमन सिंह जी ने खुद कहा था कि एक साल [xx] बंद कर दो ।

श्री शिवरतन शर्मा :- इसमें नगरीय निकाय का हाल बेहाल है । यह मैं नहीं बोलता, जब व्यक्तिगत रूप से बैठते हैं तो कांग्रेस के वरिष्ठ मंत्री, कांग्रेस के अध्यक्ष और मेयर इस बात को कहते हैं कि आपकी सरकार में तो एक निश्चित राशि मिल जाती थी, इस समय तो [xx] नहीं दिया जाएगा, तब तक राशि जारी नहीं होगी ।

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- आपके पास कोई प्रमाण है क्या ?

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- आदरणीय उपाध्यक्ष महोदय, इसको विलोपित किया जाये, ये आरोप कैसे लगा सकते हैं ?

श्री शिवरतन शर्मा :- मैंने विभाग के ऊपर आरोप लगाया हे ।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- यह गलत बात है ।

श्री शिवरतन शर्मा :- मैंने विभाग के ऊपर आरोप लगाया है । आप विलोपित नहीं कर सकते हो ।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- आप इस तरह से किसी के ऊपर आरोप नहीं लगा सकते ।

श्री शिवरतन शर्मा :- खाली [xx] का खेल हो रहा है ।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- यह गलत बात है ।

श्री शिवरतन शर्मा :- खाली [xx] का खेल चल रहा है ।

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- आप कोई प्रमाण दीजिए न ।

उपाध्यक्ष महोदय :- विलोपित कर दें ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- आदरणीय उपाध्यक्ष महोदय, संसदीय प्रणाली में व्यक्तिगत आरोप लगाने के लिए हमें सूचना देने की जरूरत है । अगर हमने विभाग के ऊपर आरोप लगाया है तो उसके लिए विलोपित नहीं होगा । उन्होंने व्यक्ति पर आरोप नहीं लगाया है, विभाग पर आरोप लगाया है ।

श्री राजमन वेंजाम :- आदरणीय उपाध्यक्ष महोदय, इनके शासनकाल में बस्तर में 2-2 लाख रूपए लेकर 400 प्यून की भर्ती की गई थी । हमारे सरकार बस्तर में 21 सौ लोगों की भर्ती की है, जो जंगल में रहते हैं, उन आदिवासी बच्चों की भर्ती की है । आज वे लोग नक्सलाईट से लोहा ले रहे हैं ।

---

[2] [xx] अध्यक्षीय पीठ के आदेशानुसार निकाला गया.

उपाध्यक्ष महोदय :- उनकी आपत्ति है ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- उनकी आपत्ति में विलोपित नहीं होगा । उन्होंने व्यक्तिगत आरोप नहीं लगाया है ।

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- इन्होंने जो 15 साल किया है, उसी को ये लोग बता रहे हैं।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- उपाध्यक्ष जी, अगर हम कहते कि [xx][3] ले रहे हैं तो हमें कोई दस्तावेज देना पड़ता ।

उपाध्यक्ष महोदय :- ठीक है ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- हम कह रहे हैं तो साढ़े तीन परसेंट कमीशन के बिना नहीं हो सकता ।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- आदरणीय उपाध्यक्ष महोदय, यह तो और आपत्तिजनक बात है । [xx] ऐसा मैं बोल सकता हूं क्या ?

श्री शिवरतन शर्मा :- उपाध्यक्ष जी, मैंने विभाग के ऊपर आरोप लगाया है, जो रिवाज चल रहा है ।

उपाध्यक्ष महोदय :- मैं दिखवा लूंगा, जरूरी होगा तो विलोपित भी करवा दूंगा।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- उपाध्यक्ष महोदय, [xx] ऐसा मैं बोल सकता हूं क्या? बताईए ।

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- ये लोग 15 साल के अनुभव को बता रहे हैं, जैसा इन लोगों ने किया है ।

उपाध्यक्ष महोदय :- परीक्षण करवा लेंगे, उसको दिखवा लेंगे और होगा तो विलोपित करवा देंगे ।

श्री अजय चन्द्राकर :- चौबे जी, आप आरोपित को मत बचाईए, आपके ऊपर कोई आरोप नहीं है । हमने आपके विभाग में आरोप लगाया क्या ?

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- आप इस तरह से गलत नहीं बोल सकते ।

उपाध्यक्ष महोदय :- मैं दिखवा लूंगा और अगर विलोपित कराने लायक होगा तो विलोपित करवा दूंगा ।

श्री धरम लाल कौशिक :- अजय जी बोल रहे हैं कि हम आपके विभाग के ऊपर आरोप लगाएं क्या ? जैसे ही हम आरोप लगाते हैं, आप तत्काल सस्पेंड करते हैं । कम से कम चौबे जी इतना साहस तो दिखाते हैं, बाकी लोग कूदते रहते हैं। काहे तो कूदते रहना, काहे तो बचाना । तत्काल सस्पेंड करना चाहिए ।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- इसीलिए तो आपको सस्पेंड करके इधर बिठा दिया गया है ।

उपाध्यक्ष महोदय :- मैं उसको दिखवा लूंगा ।

---

[3] [xx] अध्यक्षीय पीठ के आदेशानुसार निकाला गया.

श्री शिवरतन शर्मा :- आदरणीय उपाध्यक्ष महोदय, पेंशन साढ़े तीन सौ से बढ़ाकर एक हजार रूपए करेंगे ।

श्री अजय चन्द्राकर :- चौबे जी, मैं तोला स्थानीय शासन विभाग के दू झन साहब के नाम बताहूं, तैं मोर से अकेल्ला में मिलबे ।

श्री शिवरतन शर्मा :- उपाध्यक्ष जी, पेंशन बढ़ाने की बात तो दूर रही, हमारे यहां की विधवा, परित्यकता को डॉ. रमन सिंह की अवधि में पीपीएल से छूट दी गई थी, वह भी आपने समाप्त कर दिया । छत्तीसगढ़ की 8 प्रतिशत जनता आजकल पेंशनधारी है, जिनको सामाजिक सुरक्षा पेंशन किसी न किसी रूप में मिलती है और उसके बाद आप उनको धोखा दे रहे हैं कि महिला स्व सहायता समूहों का कर्ज माफ करेंगे । कर्ज माफ करना तो दूर की बात रही, जो रेडी टू ईट का संचालन करते थे, वह भी उनसे छीन लिया गया । 16 हजार महिलाएं बेरोजगार हो गईं और आपने काम किसको दिया ?

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- पहले के रेडी टू ईट को जानवरों को खिलाते थे, अभी उसकी क्वालिटी एकदम अच्छी हो गई है ।

श्री शिवरतन शर्मा :- आपने काम किसको दिया ? वह कौन पोट्टी चड्डा है, कहां का है, भगवान जाने । चौबे जी, आपका ही खास है, बोलते हैं । उत्तराखण्ड, उत्तरप्रदेश कहीं का शराब ठेकेदार था, उसकी कम्पनी को काम दिए हो ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, यह पोट्टी चड्डा कौन है, जिसको रेडी टू ईट का काम दिये हो, वह कौन है ?

संसदीय कार्यमंत्री (श्री रविन्द्र चौबे) :- कोई चड्डी वाले हमारे खास नहीं हो सकते ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- यह सदन जानना चाहता है कि यह पोट्टी चड्डा कौन है ।

श्री शिवरतन शर्मा :- चारों तरफ लूट मची हुई है और जब ई.डी. कार्रवाई करती है तो इनको लगता है कि सेन्ट्रल एजेंसियां हमको परेशान कर रही हैं । अरे भैया, हर चीज में पईसा खाओगे तो सेन्ट्रल एजेंसी जांच करने नहीं आएगी क्या ? कोयला चोरी करोगे तो सेन्ट्रल एजेंसी जांच नहीं करेगी ? 15 रूपए क्विंटल कस्टम मिलिंग में पैसा लोगे तो क्या उसकी जांच नहीं होगी ? मैं आपको बता देता हूं कि अभी पैसा कलेक्शन हो रहा है। सचेत रहना, जिस दिन पैसा आयेगा, उस दिन सब बंद रहोगे। नोट कर लो, सब बंद रहोगे।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :-नहीं-नहीं, सब मंत्री, सब विधायक समझ लें कि 20 रूपया प्रति क्विंटल धान की मिलिंग में कलेक्शन होना शुरू हो गया है। आप लोगों का हिस्सा मिलेगा या नहीं मिलेगा, इसको देख लेना।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय उपाध्यक्ष जी, हालत यह है, मैं नाम नहीं लूंगा।

श्री अजय चन्द्राकर :- जो एकत्र करने जायेगा, वह नाम सबको पता लग जायेगा।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- 31 मिल के ठेकेदार तो आप ही हो। पूरे प्रदेश के राईस मिल के ठेकेदार तो [XX][4] हैं। उनको सब चीज की जानकारी है।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय डहरिया जी, एक सत्य है कि [XX] इन्होंने गलत कहा। जो अधिकारी लोग लेते हैं, मैं उनका नाम चौबे जी को बता दूंगा, आप कार्रवाई मत करना।

श्री शिवरतन शर्मा :- कोन-कोन काला दे हे, मैं हा खड़ा कर देहूं मंत्री जी के सामने बोलिस हे।

श्री अजय चन्द्राकर :- नहीं, चौबे जी को बतायेंगे।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- आज [XX] का निर्णय आय हे, याद हे कि नइ हे ?

श्री अजय चन्द्राकर :- [XX]

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- अमन सिंह के सुप्रीम कोर्ट में निर्णय होय हे।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आपकी स्थिति क्या है। मैं उनका नाम नहीं लूंगा, वह सदन का सदस्य है। हम लोग खाना खा रहे थे तो वह मजाक में बोलता है कि का बतायेन भईया, हमर एक सज्जन जेल में चल दे हे, जेन महीना मिलत रहिस हे ओ महीना मिलना बंद हो गय हे, डीजल के तकलीफ हो गय हे। 10 लाख, 7 लाख, 5 लाख रूपया महीना तीन केटेगरी में बांटकर वह पैसा कहां जाता था ? पैसा कौन लेता था और वह पैसा कहां से आता था ? यह विधायक की पीड़ा बता रहा हूं, जिसने मेरे सामने व्यक्त किया।

श्री अजय चन्द्राकर :- पेंशन का कितना है ?

श्री शिवरतन शर्मा :- अब, लखमा जी का तो ऐसा है कि हम लोग बोलते थे कि तुमको छाछ मिल रहा है। वहां जाने के बाद पता चला कि सुकमा में लूट मची हुई है।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आप लोगों ने पुलिस वालों को भी धोखा दे दिया। साप्ताहिक छुट्टी देने की बात थी, मेरा एक प्रश्न था, वह निरस्त होकर आ गया। आप लोगों ने कितने लोगों को साप्ताहिक छुट्टी दी। उनका कितना पेंशन-भत्ताबढ़ाया ? महिला सेल गठित करने की बात थी, कितनी सेल गठित हुई ? माननीय उपाध्यक्ष महोदय, इन्होंने जो कहा, उस में इन्होंने एक भी काम नहीं किया है। मैं अब आपके कुछ उदाहरण बताता हूं, माननीय से जो अलग-अलग 5 अभिभाषण दिलवाये हैं, उस अभिभाषण में आकड़ें अलग-अलग आये। सन् 2022 के अभिभाषण में उल्लेख था कि आदिवासी अंचलों में हमने 600 ए.टी.एम. चालू करवा दिए और सन् 2023 में घटकर 456 हो गये।

उपाध्यक्ष महोदय :- शर्मा जी, 46 मिनट हो गए हैं, अब आप भाषण समाप्त करिये।

श्री शिवरतन शर्मा :- दो मिनट। बी.पी.एल. लोगों को (व्यवधान)

श्री रामकुमार यादव :- आदिवासी समाज ला जर्सी गाय देबो कहे रहा (व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय :- शर्मा जी, अब हो गया। श्री प्रकाश शक्राजीत नायक जी।

---

[4] [XX] आसंदी के आदेशानुसार विलोपित।

श्री शिवरतन शर्मा :- सन् 2022 में एक हजार परिवहन केन्द्र खोले और सन् 2023 में घटकर 368 हो गये। अभिभाषण में मातृत्व मृत्यु दर 379 से 137 होना बताया गया है। 159 तो 4 साल पहले हो चुका था।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, जमीन के उपजाऊ पन फसलों की गुणवत्ता हेतु माटी पूजन दिवस मनायेंगे।

उपाध्यक्ष महोदय :- अब लगभग-लगभग सब आ गया है।

श्री शिवरतन शर्मा :- छत्तीसगढ़ की संस्कृति में अक्ति का अपना एक विशेष महत्व है। छत्तीसगढ़ का किसान अक्ति के दिन से अपने खरीफ फसल की तैयारी शुरू करता है। अब बनाओगे तो मनाने जाओगे क्या ? मैं किसान हूं, मैं अक्ति के दिन से अपने यहां धान बुआई की शुरूआत करता हूं। अरे, नौटंकी ? माटी पूजन दिवस मनायेंगे। बिना ब्याज के ऋण, बिना ब्याज के ऋण देने का काम तो डॉ. रमन सिंह के कार्यकाल में शुरू हो गया था। आप कुछ किए हो तो बताओ ? इस सरकार ने साढ़े चार साल में सिर्फ यह काम किया- संवैधानिक संस्थाओं को समाप्त करना। माननीय राज्यपाल से अभिभाषण में ऐसी बात पढ़ा दिया गया, जो उनसे नहीं पढ़वाना चाहिए था।

डॉ. प्रेमसाय सिंह टेकाम :- संवैधानिक संस्थाओं को समाप्त करने का काम केन्द्र सरकार कर रही है।

खेल एवं युवा मंत्री (श्री उमेश पटेल) :- संवैधानिक संस्थाओं को पूरी तरह से समाप्त करने का काम केन्द्र सरकार करती है, [XX][5] करते हैं। आप सुन लीजिये, अडानी के केस में, सुन लीजिये।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय राज्यपाल के अभिभाषण पढ़वा रहे हो और माननीय राज्यपाल के अभिभाषण के लिए हाईकोर्ट जाते हो। उनके अधिकारों को चुनौती देते हो। शर्म करो।

श्री उमेश पटेल :- शिवरतन जी, सुन लीजिये। अडानी के केस में सेल कम्पनी बनी है। ई.डी. का आयडियल केस है। ई.डी. के मुंह में दही जमा है, दही जमा हुआ है।

उपाध्यक्ष महोदय :- चलिये, एक घंटा हो गया है। डॉ. प्रकाश शक्राजीत नायक।

डॉ (श्रीमती) रश्मि आशिष सिंह :- उनके मुंह में भी दही जमा हुआ है।

डॉ. (श्रीमती) लक्ष्मी ध्रुव :- बहुत ज्यादा भेदभाव। (व्यवधान)

श्री उमेश पटेल :- संविधान को तोड़ा जाता है, किस तरह से कुचला जाता है, यह नरेन्द्र मोदी जी बताते हैं। आप डेटाल में मुंह धोईये।

श्री शिवरतन शर्मा :- अडाणी को समर्थन देने वाले सामने बैठे हैं। कुछ बोल नहीं सकते, आप क्यों कुछ नहीं बोलते ?

---

[5]]XX] अध्यक्षीय पीठ के आदेशानुसार निकाला गया ।

उपाध्यक्ष महोदय :- चलिये, अब एक घण्टा हो गया । प्रकाश नायक जी । (व्यवधान)

श्री उमेश पटेल :- संविधान को तोड़ा जाता है, किस तरह से कुचला जाता है, यह नरेन्द्र मोदी जी बताते हैं। आप डेटॉल में मुंह धोईये । (व्यवधान)

श्री शिवरतन शर्मा :- अडानी को समर्थन देने वाले...(व्यवधान)

श्री धरमलाल कौशिक :- उसका दिल्ली में भी सब हुआ है । अडानी ने विधान सभा में कितना पैसा दिया है, खर्चा किया है ..(व्यवधान) यह क्या अडानी के बारे में बात करेंगे, जो अडानी के पैसे से...(व्यवधान)

श्री उमेश पटेल :- आपको संवैधानिक संस्था के बारे में बोलने का अधिकार ही नहीं है । व्यवधान

श्री धरमलाल कौशिक :- अडानी के पैसे से चुनकर सरकार में आये हो ।

श्री उमेश पटेल :- अडानी की ...(व्यवधान) हिम्मत नहीं है ...(व्यवधान) दही...दही... (व्यवधान)

डॉ.(श्रीमती) लक्ष्मी ध्रुव :- लूट के भागे हो, उनका भी अता-पता नहीं है ।

श्री उमेश पटेल :- आपके जो रिश्ते हैं ना, ये संसद में पता चल गया है, जिस तरह से आप एक्सपंच करा रहे हो ना लोगों के भाषणों को, बिना प्रमाण बोले, आप जिस तरह से यहां आरोप लगा रहे हैं, वह सारे रिकार्ड हो रहे हैं । आप अंतर देखिये, भारतीय जनता पार्टी की केन्द्र सरकार और कांग्रेस पार्टी की राज्य सरकार में अंतर, यहां विपक्ष को बोलने का मौका है । (मेजों की थपथपाहट) आप बोलने नहीं देते, आप माईक बंद कर देते हैं ।

श्री अजय चन्द्राकर :- उमेश जी, एक मिनट ।

श्री शिवरतन शर्मा :- इसीलिए विदेश में जाकर देश की आलोचना कर रहे हैं ।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय उमेश जी, अडानी के खदान के लिये छत्तीसगढ़ सरकार कितने गांवों को उजाड़ रही है, आप बताईये ।

श्री उमेश पटेल :- सेल कंपनी किसने बनाया, हिंडनबर्ग का रिपोर्ट क्या कहता है, सेल कंपनी में किसका नाम है, सेल कंपनी और मनी लांड्रिंग किसकी हुई, ई.डी. का आईडियल केस है, ई.डी. को जांच करना चाहिये । व्यवधान

डॉ. रश्मि आशीष सिंह :- देश में कौन बैठे थे ...(व्यवधान) विदेश में.....(व्यवधान) टी.वी. में दिखाया गया है, कौन तीन लोग ...(व्यवधान) एस.बी.आई. का ।

उपाध्यक्ष महोदय :- मंत्री जी, अजय चन्द्राकर जी, आप सभी लोगों से आग्रह है कि सीधे मेरे तरफ से बात करेंगे । अगर आप आपस में बात करेंगे तो ठीक नहीं होगा ।

श्री अजय चन्द्राकर :- सुप्रीम कोर्ट की निगरानी में उसकी जांच हो रही है। व्यवधान

श्री शिवरतन शर्मा :- महामहिम राज्यपाल के अभिभाषण में कहा गया कि 400 करोड़ रूपये की आय हुई । अब यह गौ मुत्र और गौ धन....।

उपाध्यक्ष महोदय :- एक घण्टा हो गया साहब, एक घण्टा से ज्यादा हो गया ।

श्री शिवरतन शर्मा :- एक मिनट में खत्म कर रहा हूँ । गोबर कितने किसानों से खरीदा है, कितने किसानों ने बेचा है और गौ मुत्र कितने किसानों ने बेचा है, उपाध्यक्ष जी, आपने मुझे समय दिया है । 400 करोड़ रूपये की आप इंकम बता रहे हैं, मैं आपसे पूछता हूँ कि आप संख्या तो बता दो । कितने किसानों ने गोबर बेचा और कितने किसानों ने गौ मुत्र बेचा । जैसे चारा घोटाला हुआ था ना, वैसे यहां गोबर और गौ मुत्र का घोटाला हुआ है । माननीय उपाध्यक्ष जी, वर्मी कम्पोस्ड के नाम पर किसानों को मिट्टी बांटी जा रही है । वर्मी कम्पोस्ड के नाम पर नाटक हो रहा है ।

श्री द्वारिकाधीश यादव :- घोटाले का आप लिखित शिकायत क्यों नहीं किये हैं भईया । अगर घोटाला हुआ है तो शिकायत होनी चाहिये ।

उपाध्यक्ष महोदय:- चलिये, समाप्त करिये । आप बैठ जाईये । प्रकाश नायक जी, शिवरतन शर्मा जी आप समाप्त करें ।

श्री शिवरतन शर्मा :- प्रदेश की सबसे बड़ी पंचायत है, इसमें बोल रहे है, इससे बड़ी बात क्या होगी । यह सरकार घोटालों की सरकार है, मैं राज्यपाल महोदय के अभिभाषण का विरोध करता हूँ । उपाध्यक्ष जी, आपने समय दिया, बहुत-बहुत धन्यवाद ।

उपाध्यक्ष महोदय :- शर्मा जी, अब समाप्त करें, एक घण्टे से ज्यादा हो गया और भी है । थैंक्यू, आप बोलियेगा ।

श्री प्रकाश शक्राजीत नायक (रायगढ़) :- उपाध्यक्ष महोदय, छत्तीसगढ़ को धान का कटोरा कहा जाता है । यहां का मुख्य फसल धान है, यहां अधिकाधिक लोग किसान है । हमारी सरकार ने चुनाव के पहले किसानों के लिये वादा किया था कि हम किसानों के धान की कीमत 2500 देंगे । माननीय उपाध्यक्ष महोदय, हमारी सरकार से पहले 15 साल तक इस प्रदेश में भारतीय जनता पार्टी की सरकार थी, इन्होंने गांव, गरीब, किसान, मजदूर को ठगने का काम किया है, इन्होंने किसानों को वादा किया था कि हम किसानों को धान की कीमत 2100 रूपये देंगे और 300 रूपये बोनस देंगे, लेकिन 15 साल बीत गये, किसानों को धान की कीमत न 2100 रूपये मिला और न ही 300 बोनस मिला । इन्होंने आदिवासियों के साथ वादा किया था कि हम आपको जर्सी गाय देंगे, आदिवासी बेचारे गेरूआ रखकर थक गये, उनको गाय नहीं मिला । इन्होंने लघु एवं सीमांत किसानों को वादा किया था, आपका कर्जा माफ करेंगे, 15 साल बीत गये, उनका कर्जा माफ नहीं हुआ । इन्होंने किसानों से एक-एक दाना धान खरीदने का वादा किया था, लेकिन 15 साल बीत गये, किसान परेशान रहे और हलाकान रहे हैं । उपाध्यक्ष महोदय, किसान लगातार आत्महत्या करते रहे हैं, किसानों की हालत दयनीय रही है, किसानों के परिवार की हालत खराब रही है, किसान परेशान रहे हैं । हमारी सरकार बनी..।

श्री नारायण चंदेल :- चौबे जी, क्या राज्यपाल के अभिभाषण में यह 15 साल वाला शब्द है? आप अभिभाषण पर चर्चा कराईये न।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- अभी पीछे वाले बोल रहे थे.. । (व्यवधान)

एक माननीय सदस्य :- आपके में भी नहीं था। आप लोगों ने भी कम्प्लेन की थी।

श्री नारायण चंदेल :- अभी जितना उन्होंने बोला है। क्या अभिभाषण में कुछ था ?

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- अभिभाषण में किसान है।

श्री प्रकाश शक्राजीत नायक :- उपाध्यक्ष महोदय, मैं किसान हूं और किसानों ने जो 15 सालों में झेला है।

श्री रविन्द्र चौबे :- नारायण भैया, जब किसानों की बात करते हैं तो आपको क्यों तकलीफ होती है ?

श्री नारायण चंदेल :- वह 15 साल में आ गये।

श्री रविन्द्र चौबे :- आप कुछ कर तो नहीं पाये थे। वहां तो कुछ किये नहीं थे। अब वह बता रहे हैं तो आपको तकलीफ हो जाती है।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- उपाध्यक्ष महोदय, जब छत्तीसगढ़ की बात होती है, और किसानों की बात में विपक्ष के लोग झल्ला उठते हैं।

श्री सौरभ सिंह :- माननीय सभापति महोदय, 15 साल तक किसान बेहाल रहा, परेशान रहा। किसान लगातार आत्महत्या करता रहा। लेकिन इनके कानों में जू नहीं रेंगी। ये किसानों के साथ लगातार छलावा किये, लगातार ठगी किये। हमारी सरकार ने, हमने हमारे घोषणा पत्र में वायदा किया था कि हम धान की कीमत 2500 रूपये देंगे और हमने सीधा-सीधा एक हजार रूपये कीमत बढ़ाकर 2500 रूपये कीमत दी और किसानों को राहत दी। हमारी सरकार यहीं पर नहीं रूकी। हमारे मुख्यमंत्री जी ने, हमने धान के 2500 रूपये कीमत का वायदा किया था और हमने इस साल किसानों को 2640 रूपये दिया (मेजों की थपथपाहट)। हमने वायदे से बढ़कर काम किया हमने वायदे से बढ़कर किसानों को राहत दी। आज किसान खुश है, आज किसान सुखी है। हमने किसानों के धान का भरपूर सम्मान दिया। जहां 2017-2018 में किसानों की संख्या 12 लाख 6 हजार थी और उन्होंने 56 हजार 89 मीट्रिक टन धान खरीदी की थी। इस साल हम लोगों ने बढ़ाकर 1 लाख 7 हजार मीट्रिक टन धार खरीदा और किसानों ने उसको समर्थन मूल्य में बेचा।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, हमारी सरकार, हमारे माननीय मुख्यमंत्री जी लगातार गांव, गरीब और किसान के हित में काम कर रहे हैं। किसानों को लगातार सुविधा दे रहे हैं। हमने किसानों के बोर के बिजली बिल को 500 यूनिट तक माफ किया है। हमने किसानों का धान खरीदा है और इस वर्ष हमारा राज्य सेंट्रल पूल में सबसे ज्यादा चावल देने वाला दूसरा राज्य बन गया है। हमारी सरकार सुराजी गांव

योजना के माध्यम से नरवा, गरूवा, घुरूवा और बारी पर काम कर रही है। इन्होंने आज नरवा, गरूवा, घुरूवा, बारी पर बहुत कमेंट्स बहुत आक्षेप लगाया है। हमारी सरकार लगातार गांवों में गौठानों का निर्माण कर रही है और लगातार गौ-माता का सम्मान कर रही है। हमारे माननीय मुख्यमंत्री जी नरवा के माध्यम से नालों के पानी का संरक्षण करने का काम रहे हैं। नरवा उपचार से भूमिगत जल में वृद्धि हो रही है। मैं आपको बताना चाहूंगा कि मेरे विधान सभा के नवापाड़ा और बोलडीह गांव में, जहां पर भू-जल स्तर 700 फीट नीचे चला गया था अभी केलो नदी में नरवा के उपचार से वहां का भूमिगत जल स्तर ऊपर उठकर 450 फिट में आ गया है। वहां पर अभी भी नरवा उपचार का कार्य चल रहा है। वहां छोटे-छोटे नालों को बांधा जा रहा है और हमारा भू-जल स्तर ऊपर उठ रहा है।

उपाध्यक्ष महोदय, माननीय मुख्यमंत्री जी के नेतृत्व में गोधन न्याय योजना के तहत लगातार गोबर खरीदी की जा रही है। हमारे जो किसान है, जो गोधन के पालक है उनको लगातार फायदा पहुंच रहा है। आज के पेपर में छपा है कि गोधन के माध्यम से हमारी जो प्रति व्यक्ति आय है, उसमें वृद्धि हुई है। गोधन न्याय योजना एक बहुत बड़ी योजना है जिसे पूरे देश की सरकार, हमारे प्रधानमंत्री इसकी प्रशंसा कर चुके हैं। अन्य राज्यों में भी उसका अनुसरण करने का प्रयास चल रहा है। हमने गोधन न्याय योजना के तहत गोबर खरीदी की राशि 200 करोड़ रूपए को पार कर चुके हैं। 28 लाख क्विंटल वर्मी कम्पोस्ट, सुपर कम्पोस्ट एवं सुपर कम्पोस्ट प्लस का उत्पादन किया गया है, जो अपने आप में एक बड़ी उपलब्धि है। गौठान समिति के माध्यम से गौ-मूत्र का क्रय भी किया जा रहा है। हमारी जो भूमि है, लगातार दवाईयों और रसायन के उपयोग से उसकी उर्वरता खत्म हो रही थी, उसके लिए हमारे माननीय मुख्यमंत्री जी ने गौ-मूत्र के माध्यम से जैविक कीट नियंत्रक एवं जीवामृत जैसे उपयोगी उत्पाद तैयार किए जा रहे हैं। जिससे रसायन के उपयोग से हमारी खेती, जमीन की उर्वरता खराब हो रही थी, उसका उपचार किया जा रहा है। फिर हमारी भूमि की उर्वरता वापस आ रही है।

माननीय सभापति महोदय, मैं गौठान की बात कर रहा हूँ। लगभग हमारे प्रदेश में 5 हजार 874 गौठानों में चारागाह विकसित किए जा चुके हैं। गौठान के माध्यम से हमारी जो गौ-माता है उनको हम संरक्षित करने का प्रयास कर रहे हैं। हम लोग लगातार प्रयास कर रहे हैं कि हमारी गौमाता जो हमारे लिए पूजनीय हैं, उनको हम संरक्षण, पालन और सेवा करें। वहां हम उनको एक स्थान दें, जहां वह सुरक्षित रहे। हमने उनके लिए चारे की भी व्यवस्था की है, जिसमें 2 लाख 30 हजार क्विंटल हरा चारा का उत्पादन तथा 15 लाख 80 हजार क्विंटल सूखा चारा पैरा इकट्ठा किया जा चुका है हमने हर गौठान में चारे की व्यवस्था की है ताकि उस गौठान में दिन के समय हमारी गौ माताएं जाएं तो उनको कोई चारे की कमी न हो। हमने लगातार प्रयास किया है कि जो हमारे वनवासी भाई हैं जिनके उत्पाद चाहे वह चार, चिरौंजी, महुंआ हो। हम लोगों ने सभी वनोपजों को खरीदने का काम किया है और हम लोगों ने

हमारे वनवासी भाईयों को आय का साधन दिया है। हम लोगों ने सिर्फ गांव, गरीब और किसान के लिए कार्य नहीं किया है बल्कि हमने शहरों में भी विकास के कार्य किये हैं।

माननीय सभापति महोदय, मैं एक बात राजीव गांधी ग्रामीण भूमिहीन कृषि मजदूर न्याय योजना के बारे में कहना भूल रहा था, जो देश की सबसे बड़ी योजना साबित हुई है। हमारे गरीब भाई जिनके पास भूमि, जमीन नहीं है। उनको हमारे माननीय मुख्यमंत्री जी ने राजीव गांधी ग्रामीण भूमिहीन कृषि मजदूर न्याय योजना के तहत प्रतिवर्ष 7 हजार रूपए की आर्थिक सहायता देने की पहल की है। माननीय सभापति महोदय, वह इस पैसे से उनके जीवन स्तर में सुधार आ रहा है। उनके बच्चे अच्छे स्कूल, कॉलेज में पढ़ पा रहे हैं निश्चित रूप से उनके जीवन स्तर में लगातार सुधार आ रहा है। इससे वह अपनी दिनचर्या को अच्छे से निभा रहे हैं। मैंने अभी कहा कि हमारी सरकार वनोपज का सही कीमत दे रही है। हमारे प्रदेश में आदिवासी, वनवासी भाईयों के लिए तेन्दूपत्ता एक बड़ा व्यवसाय रहा है उनके जीवन में तेन्दूपत्ता का बड़ा स्थान रहा है। तेन्दूपत्ता संग्रहण पारिश्रमिक को 2500 रूपये प्रति मानक बोरा से बढ़ाकर 4 हजार रूपए प्रति मानक बोरा करने से 13 लाख संग्राहकों को प्रतिवर्ष लगभग 250 करोड़ रूपए की अतिरिक्त आ हो रही है। उनके जीवन स्तर में सुधार आया है। संग्राहकों को प्रतिवर्ष लगभग 250 करोड़ रूपए की अतिरिक्त आय हो रही है। निश्चित रूप से जिससे उनके जीवन में एक सुधार आ रहा है।

माननीय सभापति महोदय, मैं अभी नरवा की बात कर रहा था। हम लोगों ने कैम्पा मद से जंगलों में भी नरवा सुधार का काम किया है। कैम्पा मद से वन क्षेत्रों में 6 हजार 395 नरवा एवं लगभग 23 लाख हेक्टेयर जल ग्रहण क्षेत्र को उपचारित किया गया है। वन क्षेत्रों में लगभग 6,395 नरवा को हम लोगों ने उपचारित किया है जिससे 23 लाख हेक्टेयर जल ग्रहण क्षेत्र उपचारित हुआ है। कैंपा मद से हम लोगों ने लगभग साढ़े 66 लाख रोजगार दिवस का भी सृजन किया है जिससे हमारे वनवासी भाईयों को रोजगार मिला है। हम लगातार गांव, गरीब और किसान के लिए काम कर रहे हैं। मैं इस अवसर पर बस्तर के बारे में अवश्य बोलना चाहूंगा। बस्तर के लोहण्डीगुंडा ब्लाक में कारखाना लग रहा था, वहां के आदिवासियों की जमीन को वापिस करने का हमने काम किया और यह संदेश दिया कि आदिवासी समाज को हम उनकी परपंरा से जोड़ रखेंगे। वहां पर कोई कारखाना नहीं लगेगा। उनकी जमीन को हम लोगों ने वापिस किया। हम लोगों ने बस्तर में देवगुडी, घोटूल के विकास के लिए भी काम किया। उसके लिए उनको आर्थिक सहायता दी। उनकी जो परंपरा, धर्म है, उसको हम लोगों ने सरंक्षित करने का प्रयास किया है। छत्तीसगढ़ में हमारी सरकार ने महिलाओं के लिए भी बहुत अच्छा काम किया है। उनको हमने स्व-सहायता समूह से जोड़ने का काम किया। उनको बिहान, सी-मार्ट के माध्यम से उनके उत्पादों को लोगों तक पहुंचाने का काम किया और उनको हमने एक रोजगार देने का काम किया। लगभग 2 लाख 48 हजार 134 स्व-सहायता समूहों को हमने इससे जोड़ा गया है तथा गठित स्व-सहायता समूह को

आवश्यक सहयोग करने हेतु कुल 13 हजार 954 ग्राम संगठन एवं 568 संकुल स्तरीय संगठन संचालित है। हमारी सरकार लगातार शिक्षा के क्षेत्र में भी काम कर रही है। हम लोगों ने स्वामी आत्मानंद स्कूल खोला है। पहले अंग्रेजी माध्यम की स्कूलों में पढ़ना गरीब लोगों के लिए एक दुष्कर काम होता था। उनके पास उतनी आय नहीं होती थी कि वह अपने बच्चों को स्वामी आत्मानंद स्कूल में पढ़ा सकें। हमारी सरकार ने हर ब्लाक में एक अंग्रेजी माध्यम की स्वामी आत्मानंद स्कूल खोला है और उसमें पढाई के बढ़िया स्तर के लिए हम लोगों ने अच्छे शिक्षकों की नियुक्ति की। वहां पर हमारे गरीब बच्चे नि:शुल्क रूप से पढ़ाई कर पा रहे हैं। हमारी सरकार लगातार प्रयास कर रही है कि गरीब बच्चे भी अंग्रेजी माध्यम की स्कूल में पढ़ाई करें, अंग्रेजी में बोलें और उनको भी अंग्रेजी माध्यम की स्कूलों में नौकरी करने का अवसर प्राप्त हो। उनको भी नौकरी में उचित अवसर मिले। हम लोगों ने न केवल अंग्रेजी माध्यम के स्कूल खोले हैं बल्कि अंग्रेजी माध्यम के स्वामी आत्मानंद कालेज खोलने का भी निर्णय किया है। स्वामी आत्मानंद अंग्रेजी माध्यम के स्कूल हमारे प्रदेश में कई जगह खोले गये हैं। हमारे बच्चों को कॉलेज में अंग्रेजी माध्यम से पढ़ने की सुविधा प्राप्त हो रही है। इसके लिए मैं हमारे माननीय मुख्यमंत्री जी को धन्यवाद दूंगा। हमारे बच्चों के भविष्य को सुधारने का काम किये हैं। उसके लिए हमारे सरकार लगातार प्रयास कर रही है और हमारे बच्चे अंग्रेजी माध्यम के स्कूल में पढ़ पा रहे हैं।

माननीय सभापति महोदय, छत्तीसगढ़िया ओलंपिक का आयोजन किया। छत्तीसगढ़िया ओलंपिक खेल छत्तीसगढ़ के लिए एक मील का पत्थर साबित हुआ है। हमारे माननीय मुख्यमंत्री जी, हमारी सरकार ने छत्तीसगढ़ की परंपराओं को, रीति-रिवाज को, खेल को, संस्कृति को, त्यौहार को, खान-पान को लोगों के सामने लाने का काम किया है। हमारे माननीय मुख्यमंत्री जी ने छत्तीसगढ़िया खेल का आयोजन किया। जहां हमारे विलुप्त प्राय खेल चाहे फुगड़ी हो, बाटी हो, कंचा हो, भंवरा हो, इन सब खेलों का उन्होंने आयोजन कराया। उसके लिए भी उन्होंने इस अनुपूरक बजट में प्रस्ताव रखा है। हमारे पूरे प्रदेश में लगातार उस आयोजन के दौरान गांव, पंचायत, ब्लाक स्तर, जिला स्तर में छत्तीसढ़िया ओलंपिक का आयोजन हुआ और हमारे पूरे बच्चे, महिलाओं, श्यान, सभी आयु वर्ग के हमारी माताएं-बहनें, बुजुर्ग ने उस आयोजन में शामिल हुए। यह एक बड़ा आयोजन था। वहां पर गांव-गांव में छत्तीसगढ़िया ओलंपिक के प्रति जो रूझान था, वह देखते ही बनता था। सब लोग जोर-शोर से छत्तीसगढ़िया ओलंपिक में भाग लिये। हमारा जो छत्तीसढ़िया खेल है, उसका निश्चित रूप से बच्चों को ज्ञान हुआ। हमारे बच्चे आज टी.व्ही., मोबाईल के माध्यम से हमारे खेलों को भूल गये थे, वह सब खेल को देखें, सीखें और हमारी छत्तीसगढ़ की संस्कृति, हमारे खेलों का आयोजन हुआ। निश्चित रूप से यह गर्व की बात है।

श्री रामकुमार यादव :- कई झन मन बासी ला चम्मच मा खात रहीस।

श्री प्रकाश शक्राजीत नायक :- हमारे तीज त्यौहार, चाहे पोरा हो, चाहे हरेली हो, चाहे गेड़ी हो, लोग उसको भूल गये थे। हमारी सरकार ने उसका भी आयोजन किया और हमारे त्यौहारों को सभी ने देखा। हमारे खान-पान ..।

श्री शिवरतन शर्मा :- सुन न गा प्रकाश जी। जेन हरेली, पोरा त्यौहार ला भूल गे, ओहर छत्तीसढ़िया नइ हे। जेन छत्तीसगढ़िया नइ हे, तेन हर ही हरेली अउ पोरा ला भूलहीं।

श्री प्रकाश शक्राजीत नायक :- हमने हमारे बच्चों को एक बार फिर दिखाया है कि छत्तीसगढ़ त्यौहार हरेली, पोला ..।

श्री शिवरतन शर्मा :- भैया, सोटा खाना छत्तीसगढ़िया नहीं है।

उच्च शिक्षा मंत्री (श्री उमेश पटेल) :- उनका कहना यह है कि आपके कार्यकाल में हमारे बच्चे हरेली त्यौहार भूल गये थे।

श्री शिवरतन शर्मा :- हरेली त्यौहार पहले भी मनाया जाता था।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- सिर्फ मोबाईल में busy थे।

श्री उमेश पटेल :- हमने उसको फिर से ओलंपिक में डाला। उसको हमने फिर से समझाया कि छत्तीसगढ़ की संस्कृति क्या है, छत्तीसगढ़ी लोक नृत्य क्या है, छत्तीसगढ़ की भाषा क्या है।

श्री शिवरतन शर्मा :- छत्तीसगढ़ की संस्कृति को बचाने वाले नहीं, डुबाने वाले हो। (व्यवधान)

एक माननीय सदस्य :- बोरे बासी ला भुला गेहा। हमन बोरे बासी ला खाये बर सीखा थन।

श्री शिवरनत शर्मा :- हमन बोरे बासी ला देखे हन ग। (व्यवधान)

श्री प्रकाश शक्राजीत नायक :- 1 जून को बोरे बासी का आयोजन हुआ।

श्री उमेश पटेल :- प्रकाश जी मैं एक बात बताता हूं। बोरे बासी का क्या असर हुआ, उसको मैं बताता हूं।

डॉ. कृष्णकूर्ति बांधी :- बिरयानी राजयसभा में जाथे अउ बोरे बासी ये डहर आथे।

श्री उमेश पटेल :- डॉ. साहब, एक मिनट। बोरे बासी का क्या असर हुआ कि बोरे बासी को सब लोगों ने फेसबुक में डाला। मैं रात को इंस्टाल किया। हमारा छत्तीसगढ़ का एक निवासी जो आजकल अमेरिका में रहता है। वह भी फेसबुक में 'आइ एम आल्सो इटिंग बोरे बासी' करके पोस्ट डाला था। यह छत्तीसगढ़ में असर हुआ । यह छत्तीसगढ़ की संस्कृति, छत्तीसगढ़ की भाषा, छत्तीसगढ़ की खानपान को बढ़ाने का काम, छत्तीसगढ़ की सरकार ने की है।

उपाध्यक्ष महोदय :- चलिये, प्रकाश नायक जी।

डॉ. कृष्ण मूर्ति बांधी :- छत्तीसगढ़िया का फायदा किसको मिला? पूरा बिरयानी इधर राज्य सरकार को मिल गया।

श्री रामकुमार यादव :- तुमन बोरे बासी ला चम्मच मा खात रहे हौ।

डॉ. कृष्ण मूर्ति बांधी :- हमन ला पाठ पढ़ाइन अउ बिरयानी अपन मन परोस के खाइन। वाह।

सभापति महोदय :- डॉ. साहब, कृपया बैठ जाईये।

श्री प्रकाश शक्राजीत नायक :- बासी को तो हमारा पूरा छत्तीसगढ़ खाता है, लेकिन हमारे जो सारे भाई हैं, वह बोर बासी को भूल गये थे। 1 जून को उसका आयोजन हुआ और क्या भारत, बल्कि पूरे विश्व में बोरे बासी को सराहा गया। बाहर के लोग भी बोरे बासी खाये। हमारे जीवन में बासी का एक बड़ी उपयोगिता है।

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी :- अति उत्तम।

श्री प्रकाश शक्राजीत नायक :- बांधी जी, आप भी जानते हैं कि बासी की क्या गुणवत्ता हैं। आप डॉक्टर हैं। उसको आप से ज्यादा कौन जानेगा? जिन लोग बोरे बासी भूल गये थे, उसको हमारे मुख्यमंत्री जी ने इस प्रदेश में एक बार पुन: सभी के बीच में लाने का काम किया। हमारी सरकार न केवल इन बातों के लिए बल्कि (व्यवधान) के लिए भी लगातार काम कर रही है।

श्री अजय चंद्राकर :- प्रकाश जी, एक जानकारी भर दे दो कि कितने लोग बासी को चम्मच से खाये हैं?

श्री प्रकाश शक्राजीत नायक :- मैं तो हाथ से खाता हूं।

श्री अजय चंद्राकर :- प्रकाश जी, कितने लोग बासी को चम्मच से खाये हैं, यह मालूम है या नहीं है?

श्री प्रकाश शक्राजीत नायक :- मैं तो हाथ से खाता हूं ।

श्री अजय चंद्राकर :- नहीं-नहीं, आपको यह मालूम है कि नहीं कि कितने लोगों ने बासी को चम्मच से खाया ?

श्री प्रकाश शक्राजीत नायक :- मैं तो हाथ से खाता हूं ।

श्री अजय चंद्राकर :- यह छत्तीसगढ़ सरकार का स्टार्टअप है ।

सभापति महोदय :- चलिये, प्रकाश जी ।

श्री प्रकाश शक्राजीत नायक :- 14-15 झिन खइन होंहीं ।

श्री अजय चंद्राकर :- ओ डॉयरेक्ट नइ ले । कइसे कका ? 14-15 झिन चम्मत में खइन होंहीं ।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- खाये के इच्छा रिहिस हे लेकिन खा नइ सकत रिहिस हे ।

उच्च शिक्षा मंत्री (श्री उमेश पटेल) :- जो लोग भूल गये थे और जनता ने 14 पर सिमट दिया, उन्हीं को याद कराने के लिये बोरे बासी लाया गया था ।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- शक्राजीत जी तें हा कै कोरा बासी खाये रहे हस ?

श्री प्रकाश शक्राजीत नायक :- मैं तो रोज खाथओं । मैं तो रोज बिहनचे पेज खाथओं ।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- कौरा ला बता न, कै कौरा ?

श्री प्रकाश शक्राजीत नायक :- मैं बासी भी खाथओं अऊ रोज बिहनचे पेज भी खाथओं ।

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी :- तें ये बता कि तें हा कौरा के मतलब समझत हस कि नइ ?

श्री प्रकाश शक्राजीत नायक :- मैं नइ समझत हंओं ।

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी :- नइ समझत हस, ऐखरे कारण हे ता फेर तें हा बासी के महत्व ला का समझबे ? तें हा कौरा ला नइ समझत हस ।

श्री उमेश पटेल :- प्रकाश ओहा कहत हे कि तें हा के कौरा खाए हस ? (हंसी)

श्री प्रकाश शक्राजीत नायक :- हां, मैं कौरा ला जानथओं । (हंसी) मैं समझत नइ रहेओं, मैं कौरा ला जानथओं । मैं तो हाथे ले खाथओं ।

श्री उमेश पटेल :- काय हे न कि तोर आवाज हा ओकर तक बने ढंग ले पहुंचत नइ रिहिस हे । (हंसी)

श्रीमती संगीता सिन्हा :- ओ कौरा न दूसरा शब्द सुनाई देवत रिहिस हे ।

श्री अजय चंद्राकर :- अरे भई चम्मच में खाते हैं तो कौरा कैसे गिनेंगे ।

श्री रामकुमार यादव :- बबा के आवाज हा दब गे हे । (हंसी)

सभापति महोदय :- माननीय प्रकाश जी अपनी बात रखें ।

श्री प्रकाश शक्राजीत नायक :- माननीय सभापति महोदय, हमारी सरकार लगातार परिवहन के लिये भी काम कर रही है । पूरे प्रदेश में पुल-पुलिया, सड़कों का जाल बिछा रही है । पिछले 4 साल में गांव-गांव तक सड़कें पहुंची हैं और हमारी जो ग्रामीण सड़कें हैं वो सुदृढ़ हुई हैं । लगभग प्रधानमंत्री सड़क योजना के तहत् 40,222 किलोमीटर लंबी सड़कों का निर्माण हुआ है और 349 बड़े-बड़े पुलियों का भी निर्माण हमारी सरकार ने किया है । हमारी सरकार लगातार सिंचाई के क्षेत्र में भी काम कर रही है । हमारी सरकार मतलब हमारे माननीय मुख्यमंत्री जी लगातार सिंचाई में भी वृद्धि कर रहे हैं । हमारे मुख्यमंत्री जी इस क्षेत्र में भी लगातार काम कर रहे हैं । हमारी जो खरीफ सिंचाई थी वह बढ़ी है । हम लोगों ने पेयजल के लिये भी काम किया है, पेयजल के लिये भी गांव-गांव तक उपलब्धता पहुंचायी है । शहरों में मुख्यमंत्री शहरी स्लम स्वास्थ्य योजना के लिये भी हम लोगों ने काम किया है और समस्त नगरीय निकायों में हमने मोबाईल यूनिट के माध्यम से नि:शुल्क जांच की व्यवस्था की है । हमारे माननीय मुख्यमंत्री जी सभी वर्गों के लिये काम कर रहे हैं, चाहे वह गांव हो, गरीब हो, किसान हो, चाहे नौकरीपेशा हो । हमने पुरानी पेंशन योजना के तहत्...।

श्री शैलेश पाण्डेय :- माननीय सभापति महोदय, बड़ी खुशी बात है कि कल इस पवित्र सदन में एक बड़ी घोषणा हुई । बिलासपुर एम्स खोले जाने को लेकर माननीय मुख्यमंत्री जी की सहमति से हमारे स्वास्थ्य मंत्री जी ने घोषणा की, बिलासपुर में आज केंद्र सरकार की स्वीकृति आ गयी है और बिलासपुर

में एम्स की स्थापना को लेकर दिल्ली सरकार ने स्वीकृति दे दी है । सभी सदन के साथियों को बहुत-बहुत बधाई। (मेजों की थपथपाहट) सदन के सभी साथियों को बधाई ।

श्री प्रकाश शक्राजीत नायक :- हार्दिक बधाई ।

श्री रामकुमार यादव :- इहां नइ करहीं तो उंहां थोड़ी होही गा ।

श्री शैलेश पाण्डेय :- भारत सरकार को भी बधाई । माननीय मुख्यमंत्री जी और माननीय स्वास्थ्य मंत्री जी को भी आभार ।

श्री प्रकाश शक्राजीत नायक :- माननीय सभापति महोदय, हमारे माननीय मुख्यमंत्री जी ने इसको सर्वसम्मति से पास कराया था । हमारे माननीय मुख्यमंत्री जी और हमारी सरकार लगातार गांव-गरीब, किसान सभी के लिये काम कर रही है । चाहे वह निम्न वर्ग हो, चाहे वह गरीब वर्ग हो, चाहे वह किसान हो, चाहे वह मजदूर हो । सभी के लिये काम कर रहे हैं और सभी वर्ग हमारे माननीय मुख्यमंत्री जी के काम से खुश हैं । सभी लोगों का आशीर्वाद मिल रहा है और मैं माननीय मुख्यमंत्री जी को धन्यवाद देना चाहूंगा कि आपकी योजनाओं से सभी वर्गों में हर्ष व्याप्त है । माननीय सभापति महोदय, आपने मुझे बोलने हेतु समय प्रदान किया इसके लिये आपको बहुत-बहुत धन्यवाद ।

श्री धमरलाल कौशिक (बिल्हा) :-माननीय सभापति महोदय, माननीय राज्यपाल के अभिभाषण के कृतज्ञता प्रस्ताव पर हम सब लोग यहां पर बोल रहे हैं और मैं यहां बोलने के लिए खड़ा हुआ हूं। माननीय राज्यपाल का अभिभाषण सरकार के कार्यों का प्रतिबिम्ब है और यह देखा जाता है कि आने वाले समय में उसके आधार पर सरकार काम करेगी, लेकिन जिस प्रकार से इस कांग्रेस सरकार के द्वारा जो घोषणा पत्र जारी किया गया और घोषणा पत्र के आधार पर यह सरकार आयी और आने के बाद में जब प्रथम अभिभाषण हुआ तो उस समय उस घोषणा पत्र को अंगीकृत किया गया। उसको स्वीकार किया गया और जब स्वीकार किया है तो यह कहा जा सकता है कि यह एक ऐसा दस्तावेज है और इस दस्तावेज के आधार पर कार्यवाही होती है। हम लोग जो लगातार देख रहे हैं कि जिस घोषणा पत्र को लेकर यह सरकार आयी और आने के बाद उस घोषणा पत्र को इस सरकार ने किनारे रख दिया। सभापति महोदय, मैंने पिछले समय प्रश्न लगाया और लगाने के बाद उसमें 3 लोगों का अलग-अलग जवाब आया। एक मोहन मरकाम जी ने गिनाया कि हमने इतने घोषणा पूरा कर दिये हैं। एक घोषणा पत्र के बनाने वाले टी.एस. बाबा ने यह बताया कि हमने इतना कर दिया है और मुख्यमंत्री जी ने कहा कि हमने 24 कर दिया है। मैंने मुख्यमंत्री जी को बोला कि मैं गिनते जा रहा हूं आप पढ़ते जाइए, लेकिन मुख्यमंत्री जी 12 से ऊपर नहीं पहुंच सके और इसके बाद मैंने मुख्यमंत्री जी से कहा कि आप पर्ची ले लीजिए। आपको याद नहीं है, क्योंकि आप घोषणा पत्र समिति में नहीं थे और घोषणा पत्र बनाये नहीं हैं और जो घोषणा पत्र बनाये हैं, आज वह क्रियान्वयन समिति में नहीं है और इसलिए वे भी भूल गये, क्योंकि क्रियान्वयन का दूसरे को जवाबदारी दी गई है और इसलिए जो घोषणा पत्र बनाने वाले हैं, वे भी आज

बताने की स्थिति में नहीं हैं। माननीय सभापति महोदय, तो जिस घोषणा को लेकर यह सरकार आयी और सरकार आने के बाद में उस घोषणा को भूल गई, अब घोषणा को भूलने के बाद लगातार कभी सभा के माध्यम से, कभी और किसी माध्यम से ये बताते हैं कि हमने अपनी सारी घोषणाओं को पूरा कर दिया है और घोषणा को पूरा करने की बात ये ऐसे बताते हैं, मैं यदि कुछ बोलूं तो अच्छा नहीं लगेगा, इनके लिए जो शब्द उपयोग किया जाये। शराबबंदी का क्या हुआ? सवा 4 साल का समय निकल गया। कमेटी बनाई गई। कमेटी का प्रतिवेदन आज तक नहीं आया।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- आदरणीय पूर्व नेता जी, आपकी रमन सिंह की जो सरकार बनी थी, उसके पहले वर्ष 2003 में शराबबंदी की घोषणा आप लोगों के अपने संकल्प पत्र में है। वर्ष 2008 में है।

श्री धरमलाल कौशिक :- आप खुद ही निकाल लीजिए।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- वर्ष 2013 में है। हमारे पास है।

श्री धरमलाल कौशिक :- आप खुद ही निकाल लें।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- है। घोषणा आप लोगों ने किया था।

श्री धरमलाल कौशिक :- आप क्यों पूछ रहे हैं? मैं बोल रहा हूं कि आप निकालो।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- अतेक बार तै आये हस, कुछू पता नहीं हे तोला।

श्री धरमलाल कौशिक :- आप मुझे दिखाओ। मगर आपका घोषणा पत्र मेरे पास है।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- मैं दिखा देता हूं। तोर घोषणा पत्र कौन से पूरा करे हे। जरसी गाय देहौ का कोई आदिवासी का एकाध ठोक? बेरोजगारी भत्ता मिलिस का 500 रूपया? किसान मन के कर्जा माफ करैव? बोनस 300 रूपये देके बात करेव, तो करिस का?

श्री केशव प्रसाद चन्द्रा :- माननीय मंत्री जी, एमन पूरा नहीं करिन ता तुमन भी पूरा नहीं करव का?

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- हमन करथन, तै चिंता काबर करथस। तोर हाथी ला चारा देके काम हमी हम करबो।

श्री ननकीराम कंवर (रामपुर) :- भइगे तैं बइठ जा।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- अब ये ननकीराम जी के कोई सुनते नहीं रहिसे। बताए कि पुलिस वाले मन तको मोर नहीं सुनै। गृह मंत्री रहिसे।

श्री ननकी राम कंवर :- मैं विधान सभा में दावे के साथ बोलता हूं, मैंने जिस विभाग में काम किया है, एक मंत्री भी बता दें, एक मंत्री भी बता दें। मैं इस्तीफा दे दूंगा। मोर जैसा एक मंत्री काम करे होही, पूरे देश की बात बोल रहा हूं।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- एक ठोक पुलिस के ट्रांसफर करे के अधिकार नहीं रहिसे। एकाक ठोक पुलिस के ट्रांसफर करे होबे तो बता दे।

श्री ननकी राम कंवर :- एक भी बता दें। मैं उसका पांव पड़ने जाउंगा। आप क्या बात करते हैं?

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी :- रहन दे जान दे भैय्या, ओला दूध भात दे दे।

सभापति महोदय :- ननकी राम कंवर जी कृपया बैठे।

श्री ननकी राम कंवर :- 5 साल में जिले में अपराध में कमी हुई।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- कामा पढ़े ला चल देबे।

श्री ननकी राम कंवर :- चल न, मैं बता दूंहूं। जतका भी रिपोर्ट देख ले। जो काम किया हूं। आप क्या बात करते हो?

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- अभी पीछे वाला हा ताली बजात रहिस, तहूं ताली बजात रहेस। अइसना ताली नहीं बजाये।

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी :- भैय्या, जान दे। दूध भात देदे गा।

श्री रजनीश कुमार सिंह :- ये 2003 के घोषणा पत्र हे। एला पढ़े बर दे देथव, कोनो में नहीं लिखे हे।

श्री धरमलाल कौशिक :- शराब के माध्यम से इन्होंने महिलाओं का वोट लिया। जब हमने पहली बार अभिभाषण में कहा कि तो ये बोले कि हमने 5 साल के लिए कहा है। अब इसके बाद में और अभिभाषण बचा है क्या? यह तो इस कार्यकाल का अंतिम अभिभाषण है और जो बजट भी आयेगा वह भी इस सरकार के कार्यकाल का अंतिम बजट भाषण होगा। तो यह जो दुहाई दे रहे थे कि घोषणा पत्र 5 साल के लिए है, तो अब तो 5 साल पूरे हो रहे हैं ना । सरकार की उल्टी गिनती शुरू हो गई, अब तो कुल मिलाकर 200 दिन भी नहीं बचे हैं, जो आचार संहिता लगेगी उसके बाद आपके हाथ में कुछ नहीं रहेगा । इसलिए इस सरकार की कथनी और करनी को मैं उजागर कर रहा हूं कि वोट लेने के लिए बहला-फुसलाकर ऐसा कहा जाता है । इन्होंने घोषणा पत्र तो जारी किया और उसके बाद कहा कि घोषणा पत्र 5 साल के लिए है । अब अंतिम अभिभाषण भी हो गया, उसके लिए कुछ करोगे ? लेकिन अभी तक उसका प्रतिवेदन प्रस्तुत नहीं हुआ । कमेटी बनाई गई, लेकिन कमेटी की बैठक नहीं हो रही है । यहा कहा गया कि कमेटी में समाज के प्रमुखों को लिया जाए, उसमें समाज के प्रमुखों का नाम नहीं है । अब केवल समाज के प्रमुखों के नाम पर आपने 4 साल निकाल दिये । समाज के प्रमुखों का नाम आज तक नहीं लिखा है । तीन कमेटियां बनाई गईं, तीनों कमेटियों की बैठक नहीं हो रही है । इस प्रकार से इन्होंने इसमें भी छलने का काम किया । सभापति जी, मैं आपको बताना चाहूंगा कि शराब को लेकर राजस्थान में कमी आई, झारखण्ड में कमी आई, हरियाणा में कमी आई है लेकिन छत्तीसगढ़ में शराब की बिक्री बढ़ी है । इस सरकार ने शराब को अवैध कमाई जा ज़रिया बना लिया है । आप देख रहे हैं कि लगातार दुकानें खोलने का काम, लायसेंस देने का काम और उसको अवैध कमाई का ज़रिया बना लिया गया है, इसलिए यह सरकार शराब बंद नहीं करना चाह रही है । उसका मूल कारण यही है । सभापति

महोदय, इन्होंने पहले कहा था कि भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने दो साल का बोनस नहीं दिया है इसलिए हम दो साल का बोनस देंगे । अब हम 6 तारीख़ को आने वाले बजट में देखेंगे कि आपने दो साल के बोनस का प्रावधान रखा है या नहीं रखा है । आपका चार बजट सत्र निकल गया और यह अंतिम बजट सत्र है । आजकल मुख्यमंत्री जी से लेकर सभी मंत्री बोनस की बात भूल गए हैं । ये बोनस की चर्चा ही नहीं करना चाहते हैं । इसके बाद इन्होंने कहा कि हम बेरोज़गारों को भत्ता देंगे । उस समय जो बेरोज़गारों के भत्ते की बात आई । सभापति महोदय, 10 लाख पंजीकृत बेरोज़गार और यह बाता आई कि जिनका पंजीयन है उन्हें हम 2500 रूपए भत्ता देंगे । आज यह संख्या बढ़कर 18 लाख 79 हजार हो गई है । इतने पंजीकृत होने के बाद भी इस अभिभाषण में उनके लिए बेरोज़गारी भत्ता के संबंध में एक लाईन भी नहीं लिखी गई है । एक लाईन नहीं लिखी है कि बेरोज़गारी भत्ता दिया जाएगा । आज जो बेरोज़गारों की संख्या बढ़ी है, इनकी एक रिपोर्ट है जिसके लिए ये विज्ञापन छपवाते हैं । सी.एम.आई.ई. प्रायवेट संस्था है इसका डाटा और इसके बाद 0001 परसेंट ।

श्री उमेश पटेल :- क्या है कि पिछले 7 सालों से केन्द्र सरकार ने बेरोज़गारी का आंकड़ा देना बंद कर दिया है । यही प्रायवेट संस्था है जिसको केन्द्र सरकार भी कोट करती है । यही प्रायवेट संस्था है जिसके आंकड़े को केन्द्र सरकार कोट करती है तो राज्य सरकार क्यों नहीं करेगी ? अगर ये 7 साल से बेरोज़गारी का आंकड़ा देना बंद नहीं करते तो हम उसी सरकारी आंकड़े को प्रस्तुत करते ।

श्री धरमलाल कौशिक :- सभापति महोदय, उमेश जी इस बात को ठीक बोल रहे हैं कि यह आंकड़ा आपके पास है । मैं कह रहा हूं कि छत्तीसगढ़ में पंजीकृत बेरोज़गारों की संख्या 18 लाख, 79 हजार है, इसको तो स्वीकार करेंगे आप । छत्तीसगढ़ की जनसंख्या कितनी है ।

श्री उमेश पटेल :- एक मिनट सुनिए ना। आप भी मंत्री रहे हैं, विधान सभा अध्यक्ष रहे हैं।

श्री धरमलाल कौशिक :- मैं तो एक दिन भी मंत्री नहीं रहा जी।

श्री उमेश पटेल :- Sorry. आप विधान सभा अध्यक्ष रहे हैं। आप बहुत सीनियर हैं। आप भी जानते हैं कि जो बेरोजगारी रजिस्ट्रेशन हैं, उसमें एक बार जो एंट्री हो गया, उसको कोई ट्रैक नहीं कर सकते। आप इस बात को मानते हैं ना। अगर मान लीजिए किसी ने एंट्री किया और उसके बाद उनकी नौकरी लग जाती है तो आप उसको ट्रैक नहीं कर सकते। हटाने का कोई प्रावधान नहीं है। इसलिए इस आंकड़े को परफेक्ट बोलना एकदम सही नहीं है।

श्री धरमलाल कौशिक :- आप परफेक्ट मत बोलिए। आपका जो आंकड़ा है, मैं बता रहा हूं परफेक्ट है।

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी :- उमेश भाई, छत्तीसगढ़िया ला नौकरी चाहिए। आंकड़ा थोड़ी चाहिए।

सभापति महोदय :- डॉ. साहब कृपया बैठिए।

श्री धरमलाल कौशिक :- आज की तारीख में 18 लाख 79 हजार बेरोजगार हैं। आप छत्तीसगढ़ की जनसंख्या देख लीजिए। हम ढाई करोड़ बोले या पौने तीन करोड़ बोले, यदि हम ढाई करोड़ की बात करें या पौने तीन करोड़ की बात करें तो आप 18 लाख का कैल्कुलेशन करके देख लीजिए कि कितने हिस्से में आ रहा है। उसके बाद आप केवल 00.1 प्रतिशत में आ रहे हैं। सभापति महोदय, इस बात को कौन विश्वास करेगा। उसके बाद भी राज्यपाल जी के पूरे अभिभाषण में एक लाईन भी नहीं लिखा हुआ है। हमने समाचार पत्रों में पढ़ा है।

श्री उमेश पटेल :- कौशिक जी देखिए, मैं आपको फिर से टोक रहा हूं। यह योजना अभी तक सरकार ने चालू नहीं की है। सरकार ने चालू नहीं की है तो अभिभाषण में कैसे आ जाएगा ? अगर कोई नई योजना है तो थोड़ा सा इंतजार करिए हो सकता है बजट में आ जाए।

श्री धरमलाल कौशिक :- हां, अब साढ़े चार साल तो हो गया है, अब और इंतजार कर लेते है। जो इंतजार करना है, आपके सामने में हैं। इसके बाद तो आपका कोई अभिभाषण होना नहीं है।

श्री उमेश पटेल :- नई योजना तो बजट में ही आ सकता है ना तो मैं बोल रहा हूं कि हो सकता है कि बजट में आ जाए।

श्री धरमलाल कौशिक :- मैं इसीलिए बोल रहा हूं ना।

श्री केशव प्रसाद चंद्रा :- आप इंतजार कीजिए, वे इंतजाम करेंगे। वे 6 महीने में इंतजाम करेंगे।

सभापति महोदय :- चंद्रा जी, कृपया स्थान ग्रहण करें। कृपया आपस में बातें ना करें।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय सभापति महोदय, पेंशन की बात आई है। मैं उस विषय पर जाना नहीं चाहता। पेंशन की बात आ गयी है। फूडपार्क, आपने फूडपार्क की बात की, उसके बाद रेडी टू ईंट की बात आई। आपने कहा था कि मंडी शुल्क समाप्त कर देंगे। आपने मंडी शुल्क बढ़ा दिया। मैं ऐसे अनेक उदाहरण गिना सकता हूं। मैं बहुत सारी चीजों पर जाना नहीं चाहता कि क्या-क्या घोषणाएं की है। लेकिन इनकी जो फ्लैगशिप योजना है, छत्तीसगढ़ के चार चिन्हारी, नरवा, गरवा, घुरूवा, बाड़ी, अब तो पैसा नई हे संगवारी। बजट में कोई प्रावधान नहीं है, हम लोगों ने कभी गरवा नहीं कहा है, यह लोग कहां से गरवा खोज करके ले आए।

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- गरवा छत्तीसगढ़िया शब्द है।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय सभापति महोदय, मैं भूपेश बघेल जी को, रविन्द्र चौबे जी को और आपको भी आमंत्रित करता हूं कि आप 12 बजे मेरे यहां आ जाईए और उसके बाद हम लोग गौठान चलते हैं। गौठान में जा करके देखेंगे कि उनके कितने गरवा हैं ? किसान ओन्हारी का फसल बोना बंद कर दिए हैं। मैंने पूछा कि तिवरा बोये हो तो उन्होंने कहा कि बंद कर दिए हैं, गेहूं बो रहे हो तो उन्होंने कहा कि बंद कर दिए हैं। मैंने पूछा क्यों ? उन्होंने कहा कि गरवा के कारण हम लोग बचा नहीं पा रहे हैं। एक गांव के गाय को गाड़ी में भर करके हांकते हुए दूसरे गांव में पहुंचा रहे हैं और दूसरे गांव वाले

तीसरे गांव में पहुंचा रहे हैं। यह इनकी स्थिति है। हमारे जो दो फसली किसान थे, आज उन्होंने दूसरा फसल लेना बंद कर दिया। आपको गौठान में एक भी गाय नहीं मिलेगा।

श्री उमेश पटेल :- भैया, जो गाय की समस्या है ना यह समस्या विकराल रूप लेते जा रहा है, आपकी बात बिल्कुल सही है, मैं आपकी बात से सहमत हूं। राज्य सरकार ने उनकी समस्या को समाधान करने के लिए एक योजना चालू की है। ठीक है। अगर इससे कोई बेहतर सुझाव आपके पास है तो सुझाव रखिए, हम तो करने को तैयार हैं। लेकिन अगर इससे बेहतर सुझाव नहीं हैं...।

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी :- क्या इसके पहले गाय का प्रबंधन गांवों में नही होता था ?

सभापति महोदय :- डॉ. साहब कृपया बैठिए। माननीय मंत्री जी कृपया बैठिए।

श्री उमेश पटेल :- सभापति महोदय, एक सेकंड मेरी बात हो जाने दीजिए। आप भी सरकार में रहे हैं, आपको याद होगा कि वर्ष 2016 में किस तरह की स्थिति थी। उसके समाधान के रूप में यह गौठान को लाया गया है। इससे कोई बेहतर सुझाव है तो आपका स्वागत है। आप बिल्कुल सुझाव दीजिए।

सभापति महोदय :- माननीय कौशिक जी, कृपया अपनी बात रखें।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय सभापति महोदय, आपने गौठान बनाये, आपने गौठन किसके लिए बनाये ? आप गरवा के लिए गौठान बनाये न ? क्या आपके गरवा एक भी गौठान में मिलेंगे ?

श्री ननकीराम कंवर :- यह गरवा के लिए गौठान नहीं बनाये हैं। यह अपने आदमी को वहां 10 हजार रूपये देने के लिए बनाये हैं। आप समझ रहे हैं ?

डॉ. कृष्णमूति बांधी :- बात यह है।

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- माननीय सभापति महोदय, जो कांग्रेसी विचारधारा के लोग हैं उनके गांव का गौठान अच्छा है लेकिन बी.जे.पी. विचारधारा के लोग गौठान बनाना ही नहीं चाहते हैं। वह पीछे से भड़काते हैं।

श्री ननकीराम कंवर :- मेरा दावा है। यह उस तरफ से क्या बोलते हैं ? यह वहां पर अपने आदमी को बैठाये हैं। यह जो हमारे प्रभारी मंत्री जी हैं जिसको ग्रामसभा में दिया है उसको हटाकर दूसरे को वहां का अध्यक्ष बनाये हैं।

सभापति महोदय :- माननीय सदस्य, कृपया व्यवधान उत्पन्न न करें।

श्री केशव प्रसाद चंद्रा :- मतलब, कांग्रेसी विचारधारा के गरूवा मन गौठान मा रथे अऊ बाकी विचारधारा के गरूआ मन बाहर मा रथे।

सभापति महोदय :- चंद्रा जी, कृपया बैठिये।

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- क्रियान्वित करने में आलसी कर रहे हैं। उस कार्यक्रम को क्रियान्वित करने में वह ध्यान नहीं दे रहे हैं।

श्री ननकीराम कंवर :- आप मुझे किसी भी गौठान में एक भी गाय बता दीजिए। मैं आपको अभी भी चैलेंज करता हूं, आप मेरे क्षेत्र में चलिये।

श्री उमेश पटेल :- क्या है चंद्रा जी, आप हाथी की चिंता करिये। आप गाय वगैर: में कहां पड़े हैं ? गरूवा आपके लिए नहीं है आप हाथी की चिंता करिये।

सभापति महोदय :- आदरणीय मंत्री जी। सदस्य, कृपया व्यवधान न करें। माननीय कौशिक जी को अपनी बात रखने दीजिए।

श्री ननकीराम कंवर :- माननीय सभापति महोदय, व्यवधान तो उधर से हो रहा है। व्यवधान तो वहीं से आ रहा है। वह बार-बार बोल रहे हैं।

सभापति महोदय :- आप बैठिये-बैठिये।

श्री उमेश पटेल :- ए बबा, चलने देन गा।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय सभापति महोदय, हमारे गौठान की जो स्थिति है मंत्री जी भी अभी यहां पर हैं, मैं वास्तव में बोल रहा हूं कि सत्र खत्म हो जाए फिर एक बार आप गौठान में जाकर उसका सोशल ऑडिट करा लें। 18 लाख रूपये का गौठान, 45 लाख रूपये का गौठान, 50 लाख रूपये का गौठान और आप गौठान में जाकर देखेंगे तो आपको गौठान में कुछ नहीं मिलेगा। वर्मी कंपोस्ट के लिए दो टंकी बने हुए हैं और उसमें से भी एक फटा हुआ है। आप जाकर उसको देख ले।

श्री उमेश पटेल :- कोटना बने हे।

श्री धरमलाल कौशिक :- हां, कोटना बने हवे अऊ ओ कोटना भी फटे हवै और उसके बाद न वहां पर चारा है।

श्री रामकुमार यादव :- तुमन तो काला कोटन कहिथे अऊ काला कोटनी कहिथे, तेला घलो नहीं जानो।

श्री धरमलाल कौशिक :- मैं यह कह रहा हूं और मैं मंत्री से भी यह कहना चाहता हूं कि आप इतना सुंदर गौठान बनाये हो तो आप उस गौठान में पशुओं को रोकते क्यों नहीं हो ? आप उस गौठान में पशुओं को रोकते क्यों नहीं हैं ? आप पशुओं को वहां रोककर रखेंगे तो उससे किसानों को लाभ मिलेगा, गौठान समिति को लाभ मिलेगा लेकिन आप किसी भी गौठान में चले जाएं तो आपको वहां पर पशु नहीं मिलेंगे। कहीं पर भी आपको उस गौठान में न गाय मिलेगी, न बैल मिलेंगे और न ही कोई पशु मिलेंगे। आपके गौठान खाली पड़े हुए हैं और उसके बाद आपने उस गौठान में मॉडल गौठान बनाये हैं। आप मेरे प्रश्न में देखे थे कि गर्मी के दिन में गोबर बह गया। गर्मी के दिन में। इनकी यह हालत है। चौबे जी, बड़े शान से बोलते हैं कि हमारे इतने आत्मनिर्भर गौठान हैं। चौबे जी यहां पर नहीं हैं, मैं उनसे यह पूछना चाहता हूं कि जब इतने आत्मनिर्भर गौठान हैं तो फिर गौठान में मनरेगा से पेमेंट क्यों हो रहा है ? जब वह गौठान इतने मजबूत हैं और उसने 400 करोड़ रूपये कमा लिये तो आखिर गौठान में

मनरेगा का भुगतान क्यों हो रहा है ? आप गौठान में मनरेगा से भुगतान करवा रहे हैं। गौठान समिति का नाम लिखा गया है तो इससे आप अंदाज लगा सकते हैं कि गौठान की माली हालत क्या है और आप जितना पैसा दिये थे, मैं ईमानदारी के साथ बोल रहा हूं कि आप उस गौठान का ऑडिट करवा लीजिए, यदि आप ऑडिट करवाएंगे तो आपको पता लग जाएगा कि इनके गौठान में कितना करप्शन और कितना भ्रष्टाचार हुआ है। ननकीराम जी ठीक बोल रहे हैं कि यह गरूवा के चरने के लिए नहीं है बल्कि यह अपने लोगों के चरने के लिए बनाये गये हैं। हमें उसका हश्र दिखाई दे रहा है। आज यहां पर वर्मी कंपोस्ट की जो बात आई, हम लोग आपके सुपर फॉस्फेट को खेत में डालते हैं, उसकी कीमत 10 रूपये किलो नहीं है। हम खेत में यूरिया डालते हैं, वह 10 रूपये किलो नहीं है। हम लोग खेत में पोटॉश डालते हैं, वह 10 रूपये किलो नहीं है, लेकिन वह लैब में जाता है उसकी टेस्टिंग होती है और टेस्टिंग होने के बाद में उसको किसानों को दिया जाता है। आप 10 रूपये में बेच रहे हैं और 10 रूपये में बेचने के बाद वह कौन से लैब में गया है और कौन सी टेस्टिंग हुई है ?

श्री रामकुमार यादव :- ए सीधा ओरिजनल हे। गोबर कस ओरिजनल कोई पाही ? एमन ला कौन बताए कि ओ गोबर के ओरिजनक हे। भाई, ओ ओरिजनल हे।

श्री धरमलाल कौशिक :- रामकुमार जी, समय हो गया है।

डॉ. कृष्णमूति बांधी :- तै निकालथस गोबर ला।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय सभापति महोदय, मैं यह कहना चाहता हूं कि इसके लिए लैब खोलना चाहिए और इसकी टेस्टिंग होनी चाहिए। इसकी टेस्टिंग के बाद इसको किसानों को दे। मैं आपको बता रहा हूं कि सही बात यह है कि गांव में जो गौठान समिति है वहां पर सवेरे 1 घण्टा, 2 घण्टा पशु रहते हैं उस गोबर को लेकर उससे वर्मी कंपोस्ट बनाने के लिए आप जो भी करते हैं लेकिन उसमें किसानों का गोबर नहीं आ रहा है। दूसरी बात यह है कि जब 10 रूपये किलो की बात आई तो हर किसान को उसको थमाया जाता है तो मैं आपसे यह पूछना चाहता हूं कि यदि हर किसान ने गोबर बेचा नहीं तो फिर आपके पास गोबर कहां से आया और मुझे जो जानकारी मिली है कि ये लोग महाराष्ट्र में किसी को तय किये हैं और महाराष्ट्र से यहां गोबर लेकर आ रहे हैं। महाराष्ट्र से लाकर यहां पर मिट्टी पहुंचाने का काम इनके द्वारा किया जा रहा है। इसकी जांच करानी चाहिए । इन्होंने किसानों के साथ में लूट-खसोट शुरू किया है । आपको सुपर फास्फेट खाद लेना है तो सबसे पहले आपको वर्मी कम्पोस्ट खाद लेना पड़ेगा । यदि आपको बैंक से लोन लेना है, जो किसान का पैसा है, उस पैसे को लेने के लिए भी जब तक आपको खाद नहीं थमाएंगे, तब तक आपको बैंक से पैसा भी नहीं मिलेगा । वर्मी कम्पोस्ट के नाम पर लूट-खसोट करना शुरू कर दिया गया है, कृपा करके आप इसको बंद कर दीजिए । किसानों में इसे लेकर भारी आक्रोश है कि इस सरकार के द्वारा किसानों को लूटने का काम किया जा रहा है ।

माननीय सभापति महोदय, हम किसानों के बिजली की बात करते हैं तो आज शाम 5 बजे से 11 बजे रात तक बिजली की कटौती है । आपकी जानकारी में है या नहीं है ? यह सरप्लस स्टेट है और सरप्लस स्टेट में पांच घंटे की कटौती होती है और 5 घंटे की कटौती के कारण किसानों का धान सूख रहा है । वोल्टेड नहीं मिल रहा है, ट्रांसफार्मर बदलने की स्थिति में नहीं हैं । अभी मेरे प्रश्न में उत्तर आया कि उनके ऊपर में 1 करोड़ और कुछ लाख का जुर्माना लगाया गया है कि समय पर सप्लाई नहीं हो रही है और ऐसी कम्पनियों को फिर से दोबारा ठेका दे दिया गया । कृपा करके यह बताएंगे कि साढ़े चार साल में इस सरकार के द्वारा यहां पर कितने पावर प्लांट लगाए गए, कितने मेगावाट का उत्पादन यहां पर शुरू किया गया ? साढ़े चार साल में एक भी प्रोजेक्ट नहीं आया है । भारतीय जनता पार्टी के शासनकाल के ही प्रोजेक्ट चल रहे हैं । साढ़े चार साल में एक भी प्रोजेक्ट की स्थापना ये लोग नहीं कर पाये और एक यूनिट अतिरिक्त पावर का उत्पादन ये लोग नहीं कर पाये । जिस प्रकार से किसानों के साथ में इन्होंने छलावा किया । छत्तीसगढ़ में डेढ़ लाख से ऊपर अस्थाई पम्प कनेक्शन हैं । अस्थाई पम्प कनेक्शन में किसानों को पैसा देना पड़ेगा। स्थायी पम्प कनेक्शन में 5 हार्स पॉवर में रिबेट है । आप आखिर उनको रेग्युलर कनेक्शन क्यों नहीं देना चाहते ? वह पैसा पटाने को तैयार, लेकिन बिजली आफिस पैसा लेने को तैयार नहीं है । इसलिए जो रेग्युलर 50 हजार से ऊपर कनेक्शन है, उसे भी ये लोग कनेक्शन लगाने को तैयार नहीं हैं । उसका कारण सब्सिडी है । अनुदान की राशि देनी चाहिए । यह सरकार इतनी खोखली हो गई है कि इनके पास में किसानों को देने के लिए एक लाख रूपये अनुदान की राशि नहीं है । वर्ष 2021 का पम्प कनेक्शन का क्लीयर नहीं हुआ है, सन् 2020 का अंतिम समय का पम्प कनेक्शन देने का काम चल रहा है। पम्प कनेक्शन का इस सरकार में जो भी पेंडेंसी है, वह भी क्लीयर करने की स्थिति इस सरकार की नहीं है। हम लोग भी सरकार में रहे हैं । जिस किसान ने पैसा पटाया, उनका डिमांड नोट काटा गया और डिमांड नोट काटने के बाद में टेंडर हुआ और टेंडर के बाद में पम्प कनेक्शन दिया गया। अभी 2023 चल रहा है । पैसा पटाने के बाद में तीन साल से किसान बैठे हुए हैं, लेकिन यह सरकार उन किसानों के खेतों में पम्प कनेक्शन देने को तैयार नहीं है। इन्होंने आर्थिक सर्वेक्षण में कितनी भी आय बतायी है, लेकिन व्यक्तिगत आय होनी चाहिए, केन्द्र सरकार का आंकड़ा 1 लाख, 73 हजार है, वहीं राज्य सरकार का आंकड़ा 1 लाख, 30 हजार का है । आर्थिक सर्वेक्षण ने आपकी पोल खोली है कि आपकी सरकार की क्या नीति और कैसी स्थिति चल रही है ? जितना किसानों का नाम लेते हैं, उतना किसानों के साथ में अन्याय करने का काम इस सरकार के द्वारा किया गया है ।

सभापति महोदय, मुख्यमंत्री जी सिंचाई के क्षेत्र में बड़ी-बड़ी बातें करते हैं । हमारे कृषि मंत्री चौबे जी ने इन सवा चार सालों में एक भी नया प्रोजेक्ट पूरा नहीं कर पाये, न नई शुरूआत कर पाये । यह जो बता रहे हैं कि हमने इतना बढ़ाया है । हम लोग तो जानना चाहते हैं कि आपने कितना प्रोजेक्ट कहां पर बढ़ाया हैं । भारतीय जनता पार्टी के शासनकाल में जो पुरानी योजनाएं चल रही थीं, उस योजना के

अंतर्गत ही जो हमारे सिंचाई के रबके बढ़े हैं, उस रबके को ये लोग बता सकते हैं कि कितना बढ़ा है । उदाहरण के लिए बोल सकता हूं जैसे मैं अरपा-भैंसाझार योजना, यह योजना उस समय प्रारंभ हुई थी, अभी अंतिम स्टेज का काम बाकी है उसको भी यह सरकार लोकार्पण के लिए तैयार नहीं कर पाई। सिंचाई का जो रकबा बढ़ा है, ये आने के बाद एक शिलान्यास करके नहीं बता सकते कि हमने इसका भूमि पूजन किया और भूमिपूजन करने के बाद सिंचाई रकबा बढ़ाया है।

माननीय सभापति महोदय, ये धान खरीदी के बारे में बोल रहे हैं कि 1 करोड़ 7 लाख मीट्रिक टन धान की खरीदी हुई है। मैं ईमानदारी से कहता हूं कि इसके लिए नरेन्द्र मोदी जी का स्वागत करना चाहिए और मैं नरेन्द्र मोदी जी का स्वागत करता हूं, जिन्होंने 61 लाख मीट्रिक टन चावल पिछली बार खरीदा था। इस बार भी वही कोटा आयेगा। तो यह सारा पैसा नरेन्द्र मोदी जी द्वारा प्रदत्त राशि है, मैंने तो विधानसभा में प्रश्न लगाया था कि प्रदत्त राशि कितनी है, अमरजीत बताया कि 11 हजार करोड़ रूपये का योगदान राज्य सरकार का है।

श्री रामकुमार यादव :- बोल के ओ महंगाई ला घलो कम करवा देवा।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- गैस सिलेण्डर के रेट ला घलो कम करवा देवा। मोदी जी ला बोल के सिलेण्डर का रेट कम करवा दीजिये।

डॉ.(श्रीमती) लक्ष्मी ध्रुव :- महंगाई को भी कम करवा दीजये।

श्री धरम लाल कौशिक :- आप किसानों के कितने हितैषी हैं, इनका कुल योगदान 11 हजार करोड़ रूपये का है और 55 हजार करोड़ रूपया नरेन्द्र मोदी सरकार के द्वारा दिया गया है। यदि छत्तीसगढ़ के किसानों की किसी ने चिंता की है, तो केन्द्र की सरकार ने किया है, नरेन्द्र मोदी ने किया है इसलिए मैं उनका अभिनन्दन करना चाहता हूं।

सभापति महोदय :- माननीय कौशिक जी 25 मिनट हो गए हैं। कृपया समय का ध्यान रखिये। संक्षिप्त में रखिये।

माननीय सभापति महोदय, माननीय राज्यपाल जी के अभिभाषण में जीरो प्रतिशत ब्याज दर पर कर्ज देने की बात का उल्लेख है। आपको मालूम होगा कि कांग्रेस सरकार के समय में 15-16 प्रतिशत, 17 प्रतिशत तक ब्याज की राशि की अदायगी करनी पड़ती थी। जब अटल बिहारी बाजपेयी जी प्रधानमंत्री बने और राजनाथ सिंह जी कृषि मंत्री बनें, सबसे पहले 14-15 प्रतिशत ब्याज को 9 प्रतिशत करने का काम राजनाथ सिंह के द्वारा किया गया। जब छत्तीसगढ़ में भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनी तो उस 9 प्रतिशत ब्याज को 6 प्रतिशत करने का काम किया और फिर 6 प्रतिशत ब्याज को 3 प्रतिशत करने का काम किया। पूरे छत्तीसगढ़ में जीरो प्रतिशत में किसानों को कर्ज देने का काम किसी ने किया है तो डॉ. रमन सिंह की सरकार ने किया है, भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने किया है। उस समय से

इस प्रदेश के किसानो की चिंता की गई कि हम इस प्रदेश के किसानों को कैसे कर्ज मुक्त कर सकें। डॉ. रमन सिंह की सरकार के द्वारा योजना बनाकर किया गया।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- उस समय 15 हजार किसानों ने आत्महत्या किया था।

श्री धरमलाल कौशिक :- मैं 15 हजार आत्महत्या के बारे में तो नहीं बता सकता, लेकिन 5 हजार से 25 हजार लोग यहां आत्महत्या कर लिए हैं, मैं इसको बता सकता हूं। यह रिकार्ड में है। आपकी सरकार कितना बढ़िया चल रही है, जब आपकी सरकार सब लोगों के लिए इतनी बढ़िया काम कर रही है तो आखिर 25 हजार लोग आत्महत्या क्यों किए ? आपको मालूम कि अभी 3 दिन पहले एक बच्ची तीसरी मंजिल से कूदकर आत्महत्या कर ली। आप उस परिवार से मिलने के लिए जरा जाओ और जाकर बातचीत करो। आखिर यहां के युवा अवसाद में क्यों जा रहे हैं ? जब सरकार द्वारा इतना अच्छा काम हो रहा है और जब लोगों के लिए काम कर रहे हैं तो अवसाद में जाने का कारण क्या है ?

श्री अजय चन्द्राकर :- अवसाद में जाने का कारण यह है कि हर बात में वसूली होती है। जो वसूली नहीं दे सकता, वह मर जाता है।

श्री भुनेश्वर शेभाराम :- बच्ची से क्या वसूली हो गया भईया ?

डॉ.(श्रीमती) लक्ष्मी ध्रुव :- पहले जांच तो होने दीजिये कि वह किस कारण से मरी है। सीधा इधर लगा दिए।

सभापति महोदय :- आदरणीय कौशिक जी, संक्षिप्त करिये।

श्री धरमलाल कौशिक :- मैं कुछ बातों का उल्लेख कर देता हूं। माननीय सभापति महोदय, यहां डी.एम.एफ. की क्या स्थिति है ? बंदरबांट। आपने बंदरबांट का उदाहरण देखा है। पिछले विधानसभा में जांजगीर का मामला आया था, यहां कोरबा का उदाहरण आया था, अभी बलौदा बाजार का मामला आया है, जिसमें जांच के आदेश हुए हैं। मैं अभी एक मामलें में मंत्री जी को जांच के लिए बोलने वाला हूं। दुर्ग जिले में 104 करोड़ रूपये टंकी की मरम्मत के लिए स्वीकृत किया गया है। एक टंकी के लिए साढ़े तीन लाख रूपये, यदि आप वहां जाकर देखेंगे तो वहां केवल टंकी की पुताई कर दिया गया है।

श्री केशव चन्द्रा :- टंकी का चीज के हे ?

श्री धरमलाल कौशिक :- पानी टंकी ए । पानी टंकी का उसमें केवल पुताई किये हैं और साढ़े तीन लाख रूपये एक टंकी के हिसाब से रिलीज कर लिये । 104 करोड़ की योजना है ।

श्री केशव प्रसाद चन्द्रा :- गोबर वाला पेंट ले करथें का ?

उपाध्यक्ष महोदय :- चन्द्रा जी, कृपया बैठिये ।

श्री धरमलाल कौशिक :- डी.एम.एफ. का 104 करोड़ का बंदरबांट दुर्ग जिले में है, लगभग पूरे प्रदेश में यही स्थिति है, जो डी.एम.एफ. की राशि का दुरूपयोग है, उसकी जांच की बात अभी करेंगे । सभापति महोदय, जल जीवन मिशन के बारे में जितना कहें, वह कम है । मैं आपको बताना चाहूंगा कि

केन्द्र सरकार के द्वारा वर्ष 2020 में यह लागू हुआ है, वर्ष 2020 में लागू होने के बाद में मैं आपको बताता हूँ कि वर्ष 2019-2020 में जो लक्ष्य रखा गया था, उस लक्ष्य के मुकाबले में 96,827 कार्य पूर्ण हुये और 6,89,173 अपूर्ण है, वर्ष 2020-2021 में 61,609 कार्य पूर्ण हुये, 2 लाख 225 अपूर्ण हैं, वर्ष 2021-2022 में 4,43,953 कार्य पूर्ण हुये, 17,71,033 अपूर्ण हुये हैं, वर्ष 2022-2023 में देखेंगे तो 9,73,994 कार्य पूर्ण हुये हैं और 13 लाख 83 हजार 700 अपूर्ण हुये हैं । इनको दिया गया है कि कितना हमको पूर्ण करना है, इनका अभी 58 लाख 84 हजार अपूर्ण है, यह गति है । सभापति महोदय, इनका पूर्ण कार्य 15 लाख 76 हजार है । वर्ष सितम्बर 2023 इसकी पूर्णता की तारीख है । सभापति महोदय, हम जल मिशन के मामले में छत्तीसगढ़ में कहां पर हैं ? केन्द्र के मंत्री यहां समीक्षा करने आते हैं, केन्द्र के मंत्री यहां क्यों आते हैं, जब समीक्षा किये तो 28 वां नंबर पर हमारा छत्तीसगढ़ है । सभापति महोदय, प्रधानमंत्री आवास योजना, यह योजना प्रधानमंत्री जी की इच्छा थी कि अमृत महोत्सव के कार्यकाल में सब गरीबों का घर बन जाये, लेकिन छत्तीसगढ़ में क्या स्थिति है ? मैं आरोप नहीं लगा रहा हूँ, इनके पंचायत मंत्री ने त्याग पत्र दे दिया, उन्होंने लिखा कि 7 लाख 71 हजार मकान हम प्रारंभ नहीं कर पाये हैं, उसके लिये कई बार पत्राचार किया गया, इसमें 10 हजार करोड़ की राशि चाहिये थी, वह 10 हजार करोड़ की राशि नहीं मिली है, इसलिये टी.एस.बाबा मंत्री ने त्यागपत्र दे दिया ।

सभापति महोदय :- 35 मिनट हो गये हैं ।

श्री धरमलाल कौशिक :- सभापति महोदय, पूरे हिन्दुस्तान में 66 प्रतिशत से ऊपर, बजट में अभी वृद्धि की गई है, प्रधानमंत्री आवास योजना में पूरे हिन्दुस्तान को लाभ मिल रहा है, लेकिन छत्तीसगढ़ के गरीब लोग उससे वंचित हैं । छत्तीसगढ़ की सरकार यदि चाहती कि प्रधानमंत्री का नाम हो और इतना बड़ा उनका हृदय विशाल हो, केवल प्रधानमंत्री का नाम हो, इसकी वजह से 16 लाख गरीब घर से वंचित हो गये । इसके लिये कोई दोषी है तो इसके लिये छत्तीसगढ़ की सरकार दोषी है और मुख्यमंत्री दोषी है ।

सभापति महोदय :- कृपया समाप्त करें, 35 मिनट से ज्यादा हो गये हैं, दोनों पक्ष से और भी वक्ता हैं ।

श्री धरमलाल कौशिक :- सभापति महोदय, शिक्षा के क्षेत्र में हमारे सदस्यों ने बहुत तारीफ की है कि हमने स्वामी आत्मानंद स्कूल खोले हैं, यह लोग क्यों नहीं खोले हैं, कितना खोल लिये हैं, 300 खोले होंगे, 400 खोले होंगे, प्रदेश में कुल स्कूलों की संख्या क्या है, पूरे स्कूलों की संख्या के साथ में केवल आत्मानंद में जो पढ़ रहे हैं, उनको सुविधा देना चाह रहे हैं । हमारे वनांचलों में लाखों बच्चे जो गरीब पढ़ रहे हैं, आखिर उनके लिये दोहरी नीति क्यों अपना रहे हैं, जो सुविधा आप यहां दे रहे हैं, वह सुविधा हमारे वनांचल के गरीब के बच्चों को भी मिलनी चाहिए और हमारे दूर-दराज के जो बच्चे हैं, उनको भी वह सुविधा मिलनी चाहिए।

श्री राजमन वेंजाम :- माननीय सभापति महोदय, इनकी सरकार ने जो वनांचल के 3 हजार से ज्यादा स्कूल बंद किये थे। उन स्कूलों को भी हमारी सरकार ने खोला है जो इनकी सरकार ने बंद कर दिये थे।

श्री धरमलाल कौशिक :- सभापति महोदय, आज वह सुविधा से वंचित है। केवल आप मॉडल बनाकर के दिखाना चाहते हैं और मॉडल में भी करप्शन है। आपके इस्टीमेट का अता-पता नहीं है। डी.एम.एफ. से कितना पैसा आ रहा है और आप डी.एम.एफ. से पैसा लाने के बाद उसको लगा रहे हैं। उसकी चिंता करने वाला कोई है ? उसका हिसाब करने वाला कोई है ?

श्री अजय चंद्राकर :- सब खोटा ही खोटा है।

श्री धरमलाल कौशिक :- सभापति महोदय, उसका छज्जा गिर रहा है। यह मॉडल स्कूल दिखाने का नहीं केवल यह करप्शन का अड्डा बन रहा है।

सभापति महोदय :- कृपया समाप्त करें।

श्री धरमलाल कौशिक :- इसलिये उसका प्राक्कलन बनाकर स्कूल का निर्माण होना चाहिए। जितने स्कूलों का रेनोवेशन हुआ है, वहां रेनोवेशन के नाम पर उसका भ्रष्टाचार हो रहा है। आज शिक्षा की क्या स्थिति है ? मैंने आपको प्रधानमंत्री आवास योजना के बारे में बताया, मैंने जल मिशन के बारे में बताया। उसके बाद मैं आपको यह बता रहा हूं कि आपकी शिक्षा का स्तर क्या है ? अभी भारत में शिक्षा के स्तर की जो रैंकिंग हुई है, उस रैंकिंग में शिक्षा के स्तर में हम सबसे नीचे स्तर में है और नीचे में भी पहले स्तर पर है (शेम-शेम की आवाज)। आपने समय-समय पर देखा होगा कि जो घटनाएं घट रही है, चाहे वह छात्रावास में हो या जो स्कूलों में घटनाएं घट रही है। हम लोगों ने उस समय डिमांड किया था कि कैमरे लगने चाहिए।

सभापति महोदय :- कृपया समाप्त करिये।

श्री धरमलाल कौशिक :- हर छात्रावास में कैमरे लगने चाहिए। अब तो मैं बोल सकता हूं कि इनके स्कूलों में भी कैमरे लगाने की आवश्यकता है। अब कैमरे लगाकर पढ़ाई होनी चाहिए, वह स्थिति आ गई है। अभी कुछ ही दिन पहले आपने एक स्कूल की घटना देखी है, मैं उसका ज्यादा जिक्र नहीं करना चाहता। पढ़ाई के नाम पर जीरो। आप जिस प्रकार से केवल 300 स्कूलों को लेकर चल रहे हैं और जो हजारों स्कूल, जिसमें हमारे ग्रामीण बच्चें पढ़ रहे हैं, आपको उसकी चिंता नहीं है। आपने क्यों उन स्कूलों को खोला हैं, वह भी हमको याद है और आप क्यों उसका ढिंढौरा पीट रहे हो, यह किसी से छिपा हुआ नहीं है।

सभापति महोदय :- कृपया समाप्त करें।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय सभापति महोदय, यह जो मेडिकल कॉलेज की बात करते हैं। मेडिकल कॉलेज की 75 प्रतिशत राशि केन्द्र सरकार की है। केन्द्र सरकार ने मेडिकल कॉलेज दिये हैं। एक

साल में मेडिकल कॉलेज खुल जाने चाहिए थे लेकिन एक साल में तो क्या, इनके मेडिकल कॉलेज को अस्तित्व में आने में अभी भी समय लग रहा है। पहले तो राज्यों को यह लगता था कि यदि केन्द्र की कोई योजना हो, तो उस योजना को लपक लू और इस योजना के माध्यम से हमारे राज्य को लाभ मिले। लेकिन जैसे ही कोई केन्द्र की योजना आये, तो अब सरकार के हाथ पैर फूलने लगे हैं। उनके हाथ-पैर इसलिये फूलने लगे हैं क्योंकि राज्यांश की राशि के कारण प्रदेश दिवालियापन की कगार पर है। इनके पास आवास देने के लिये मैंचिंग ग्रांट के पैसे नहीं है। आपके नल जल योजना के लिये, जल मिशन के लिये मैचिंग ग्रांट की राशि नहीं है और इसलिये इनके हाथ-पैर फूलने लगे हैं क्योंकि छत्तीसगढ़ दिवालियापन की कगार पर खड़ा हुआ है। आज सरकार की स्थिति नहीं है। यह कोरोना काल की बात कर रहे थे कि कोरोना काल में हमने यह किया, वह किया। उस समय पंचायत ने राशि लगाई है। मैंने पिछली बार भी इस बात को उठाया था। अभी-भी हमारे सरपंच बोल रहे हैं कि हम लोगों ने उस समय जो राशि दी थी , सरकार ने उसको वापस करने की बात कही थी। आज भी वह राशि वापस नहीं हुई है। वह राशि जो पंचायत की है, उसमें छत्तीसगढ़ सरकार का एक पैसे का भी योगदान नहीं है। क्योंकि टी.एस. बाबा पंचायत मंत्री बने और मुख्यमंत्री जी ने समग्र की राशि बन्द कर दी। समग्र की राशि बंद करने के बाद आज पंचायत के पास पैसा है।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय सभापति जी, मात्र एक मंत्री यहां बैठे हैं और वह भी सो रहे हैं। अब कैसे करें?

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- सभापति महोदय, सुन रहा हूं।

श्री अजय चंद्राकर :- देख लीजिये क्या हाल है ।

श्री रामकुमार यादव :- वह सोवत नहीं हे गा।

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- वह आंख बन्द करके ध्यान से सुन रहे हैं।

श्री रामकुमार यादव :- वो सोवत नहीं हे, ओ हा कठुवा के सुनत हे ।

सभापति महोदय :- माननीय कौशिक जी, समाप्त करें।

श्री रामकुमार यादव :- ऊहा कठुवा के सुनत हे।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय सभापति महोदय, मैं एक -दो मिनट में अपनी बात खत्म कर रहा हूँ।

माननीय सभापति महोदय, मैं कानून व्यवस्था की स्थिति के बारे में कहना चाहूंगा। यहां कानून व्यवस्था की स्थिति में कोई बात कहना नहीं चाह रहे हैं। माननीय मुख्यमंत्री जी बड़े शान से कहते थे कि आजकल नक्सलाईट की चर्चा नहीं होती। हमने पूरे प्रदेश से नक्सलाईटों को खत्म कर दिया है। नक्सलाईटों ने दे दिया। अब मैं क्या बोलूं, इनके संरक्षण में टारगेट केवल भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्त्ता हों, केवल भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्त्ता मारे जाएं और उसके बाद उस विषय में हम

चर्चा न करें। हम उन विषयों पर चर्चा करें तो हमारे कार्यकर्त्ताओं के ऊपर यह लोग एफ.आई.आर. दर्ज कराएं। जो ई.डी. के सामने बैठे हुए हैं कांग्रेसियों को किसने अनुमति दी है ? वह किसके कहने पर बैठे हुए हैं ? जब भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्त्ता चक्काजाम, धरना करते हैं तो आप एफ.आई.आर. दर्ज करते हैं तो उनके खिलाफ में एफ.आई.आर. दर्ज क्यों नहीं हो रहा है ?

सभापति महोदय :- आप कृपया समाप्त करें।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय सभापति महोदय, यह अधिकारियों को भी विचार करना पड़ेगा। यह कानून का दो रूप नहीं चलेगा। जब भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्त्ता जो नक्सलियों के द्वारा मारे गए, यदि उनकी बात उठाने के लिए आवाज उठा रहे हैं तो एफ.आई.आर. दर्ज करके, उनके मुंह को बंद नहीं कर सकते। आप धमतरी में एक तरफ से आप कांग्रेस को माफी मांगने के लिए गये कि हमसे गलती हो गई। यह हम सब देख रहे हैं । अभी बोलने के लिए बहुत सारे विषय हैं। हम यहां पर विधान सभा में प्रश्न लगाते हैं तो उसका जवाब नहीं दे पाते, हमारे प्रश्नों के उत्तर नहीं आते। हम आधे घण्टे की चर्चा करते हैं, उसमें भी इनका जवाब नहीं आता। माननीय मुख्यमंत्री जी ने जेम पोर्टल की बात कही। मैं उसमें कार्यवाही करूंगा। मैं आज दस्तावेज दे सकता हूँ। अब इनकी स्थिति यह हो गई है। मैं केवल मुख्यमंत्री जी के बारे में बता दूं। यह बिलासपुर संभाग गये थे।

सभापति महोदय :- माननीय कौशिक जी, आप कृपया समाप्त करें।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय सभापति महोदय, मैं एक मिनट में अपनी बात समाप्त करता हूँ। माननीय मुख्यमंत्री जी बिलासपुर संभाग में गये थे। बिलासपुर संभाग में उन्होंने अलग-अलग जिलों में जो घोषणाएं कीं थीं । वर्ष 2019 से 75 घोषणाएं कीं, जिसमें सिर्फ 18 काम हुए और 23 प्रतिशत कार्य अपूर्ण हैं। वहां 23 प्रतिशत कार्य हुए, जो घोषणाएं पूर्ण हुईं, उसमें 57 कार्य अपूर्ण है यानी 77 प्रतिशत कार्य अपूर्ण हैं। आप अंदाजा लगा सकते हैं कि माननीय मुख्यमंत्री की बात अधिकारी कितना सुन रहे हैं? इसी प्रकार से जो बाद में बिलासपुर संभाग में 37 स्थानों पर भेंट मुलाकात में गये। उन्होंने 423 घोषणाएं कीं हैं। मैं भी यह सोच रहा था कि जितनी घोषणाएं कर रहे हैं उसे पूर्ण कहां से करेंगे? लेकिन अब विधान सभा में असलियत सामने आई और जब असलियत सामने आई है तो अभी भी 255 कार्य अपूर्ण हैं, उसका 60 प्रतिशत कार्य अपूर्ण है। अभी हम लोग बजट में देखेंगे कि कितना कार्य अपूर्ण कर रहे हैं? जिस प्रकार से यह सरकार चल रही है तो मैं यह कह सकता हूँ कि इनकी कथनी और करनी में अंतर दिखाई दे रहा है, इनके सारे भ्रष्टाचार सामने आ रहे हैं, एक समय में प्रदेश का विकास की दिशा में नाम था, जो पंजाब, हरियाणा से तुलना की जाती थी। आज मुख्यमंत्री के कार्यकाल में प्रदेश अपमानित हो रहा है। हमारे आई.ए.एस. अफसर जेल में बंद हैं और वह भी भ्रष्टाचार के कारण जेल में बंद हैं। इस मुख्यमंत्री ने और इस प्रदेश की कांग्रेस की सरकार ने यह प्रदेश को अमानित करने का काम किया है। मैं समझता हूँ कि इससे ज्यादा कुछ और हो नहीं सकता।

माननीय सभापति महोदय, आपने मुझे बोलने का समय दिया, इसके लिए आपको बहुत-बहुत धन्यवाद्।

श्रीमती संगीता सिन्हा (संजारी बालोद) :- माननीय सभापति महोदय, माननीय राज्यपाल महोदय जी के अभिभाषण में बोलने के लिए खड़ी हुई हूँ...।

श्री अजय चन्द्राकर :- संगीता जी, यदि रसोई गैस का दाम बढ़ गया है तो उससे सिन्हा जी परेशान होंगे, उससे आप क्यों परेशान हैं ? खाना तो सिन्हा जी को बनाना है। आपको थोड़ी खाना बनाना है।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- माननीय सभापति महोदय, मैं बता रही हूँ। राज्य के जनता तो बनाथे खाना ला। एक घर में पुरूष बना दिही तो दूसरा जगह तो महिला खाना बनाथे।

श्री रामकुमार यादव :- तुंहर घर के भवजी भेंट करे रिहिस तो कहत रिहिस हे।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- माननीय सभापति महोदय, मुझे माननीय राज्यपाल महोदय जी के अभिभाषण में बोलने के लिए अवसर प्रदान किया, इसके लिए मैं आपको आभार व्यक्त करती हूँ।

श्री केशव प्रसाद चन्द्रा :- तुहंर कहवईया तो कोई नइ हे।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- माननीय सभापति महोदय,हमारे छत्तीसगढ़ राज्य ने इन 15 सालों में बहुत कुछ खोया है और 4 साल के हमारी सरकार, माननीय भूपेश बघेल जी की सरकार में बहुत कुछ पाया है।

श्री अजय चन्द्राकर :- एक मिनट सुनना। यदि 15 साल के एम्स में खुसरबे न तो निकल नइ सकबे, उहां भूला जबे। कते कर हे कहिके। अउ ट्रीपल आई.टी. ला देखबे तो बेहोश हो जबे। आई.आई. के परिसर ला देखबे न तो तेहा चकरा जबे। ते ओती ले निकल नइ सकबे, भूला जबे।

सभापति महोदय :- माननीय चन्द्राकर जी, माननीय सदस्या को अपनी बात रखने दें।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- माननीय सभापति महोदय, मैं माननीय राज्यपाल महोदय जी के अभिभाषण में हम पहले पृष्ठ में जाते हैं तो इसमें लिखा है कि "गढ़बो नवा छत्तीसगढ़", जो आज चरितार्थ हो रहा है। साथ ही "सेवा-जतन-सरोकार के ध्येय वाक्य से शुभारम्भ हुआ है जो कि छत्तीसगढ़ मॉडल को प्रत्यक्ष रूप से सामने रखा है और 15 सालों के शासन की बात करूं तो बहुत बड़ी बातें हो जाएंगी। हम इन 4 सालों की बात करते हैं। हमारे मुख्यमंत्री जी ने घोषणा पत्र की बात की थी और घोषणा पत्र में, महोदय जी में छत्तीसगढ़ी बोल देव का ?

सभापति महोदय :- आप छत्तीसगढ़ी में बोल सकते हैं।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- माननीय सभापति महोदय, में छत्तीसगढ़ी में बोलत हो, काबर की हमला छत्तीसगढ़ के बात करना हे। हमर छत्तीसगढ़िया मुख्यमंत्री ला भी धन्यवाद् देना हे तेखर सेती छत्तीसगढ़िया सबले बढ़िया। छत्तीसगढ़ के घोषणा पत्र के बारे में बात करना चाहत हौं, काबर कि हर

समय विपक्ष के साथी घोषणा पत्र ला सामने ला देथें और पहले के बाद ला याद दिला देथे जो हम याद नई करना चाहन। काबर कि हम पहले के बात ला भूलना चाहथन। हमर मुखिया घोषणा पत्र में चर्चा करे रहिस हे कि छत्तीसगढ़ में कांग्रेस पार्टी की सरकार आही तो किसान मन के 2 घंटे के अंदर कर्ज माफ होही। 10 दिन मोहलत मांगे रहिस। लेकिन हमर सरकार आईस अउ 2 घंटे के अंदर कर्ज ला माफ करिस। जबकि आपके शासन काल में 2003 मा वादा करे रैहो कि धान ला पूरा खरीदा जाही। साथ में आप मन समर्थन मूल्य के भी चर्चा करै रेहो। पहले समर्थन मूल्य के बात करहूं तो वर्ष 2018 में आप समर्थन मूल्य 2100 रुपये प्रति क्विंटल लेके के बात करे रेहो। जब हमर आदरणीय महोदय जी जीतिस हे और ओकर बाद मनमोहन सिंह जी ला चिट्ठी लिखिस हे, ओमा बाद रखिस और केन्द्र के ऊपर डाल दिहिस। केन्द्र के ऊपर डाल के वह 2100 रुपया आज तक नई मिलिस। 15 साल के राज में सिर्फ 1750 रुपया में सिमट के रह गये। कम से कम आपके राज में अगर आप 2100 रुपया समर्थन मूल्य कर देते तो आप 14 सीट में नई सिमटते। इसलिए हमर सरकार हा किसान ला मजबूत करै के काम करत हे, कर्जा माफ होये हे। जब भाजपा शासनकाल रहिस तो लगभग 15 हजार किसान मन आत्महत्या करे रहिस। जबकि आज हमर राज्य में भूपेश बघेल जी की सरकार बने हे तो आज तक कोई भी किसान मन हा कर्ज के कारण आत्महत्या नई करिस हे। ओला समृद्ध करै के काम करे हे। हमर किसान, भाई मन ला मजबूती करे हे। अब तो लोग कृषि करना चाहत हे। समर्थन मूल्य 2500 मिलत हे। इस बार 2640 रुपये मिलत थे। इही कारण हे कि लोग आज कृषि के क्षेत्र में अग्रसर होये हे। 15 साल में तो लोग पलायन करना शुरू कर देय रहिस हे। अपन छत्तीसगढ़ राज्य ला छोड़कर दूसरा राज्य पलायन करै के शुरूआत कर चुके रहिस। आज हमर राज्य के जनता, हमर राज्य के किसान भाई, हमर राज्य के बहिनी मन पूर्ण रूप से संतुष्ट हे। अपन आप ला संतुष्ट ओर समृद्ध पात हे। वैसने मैंहा गौधन न्याय योजना के बात करहूं। 2 रुपये किलो में गोबद खरीदत हे। आप अन्य राज्य में पता करहू तो कहीं भी 2 रुपये किलो में गोबर खरीदी के कार्य नई चलत हे। जब गोबर खरीदी के कार्य शुरू होईस तो हमर विपक्ष के साथी मन हंसी उड़ाइस। हमर संस्कृति ला हंसी उड़ाइस के काम करिस। आज 4 रुपये किलो में गौमूत्र खरीदी के कार्य करत हन। साथ में हमर सरकार के सबसे बड़ी उपलब्धि हे कि गोबर से पेंट बनाये जात हे। गोबर से कोई कल्पना नई कर सकत रहिस हे कि पेंट बनही। आज आप जिला बालोद में जाकर देखहू तो कलेक्ट्रेट भी गोबर पेंट से पोताई हो गये हे। आप ला सम झन ला मैं निमंत्रण देवत हौं कि आप मन जाकर देखो।

श्री अजय चन्द्राकर :- बालोद ला जिला कौन बनाईस? धन्यवाद नई देय? आज तोर घर ले निकालही।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- लेकिन जो गोबर ला आप मन हसत रहौ कि गोबर खरीदत हे, सरकार गोबर बनात हे। गोबर खरीदे के काम हमर सरकार करिस। हमर संस्कृति ला उजागर करिस। चन्द्राकर

जी मैं इतना भी बता देथौं कि अगर कोई भी शुभ काम होथे चाहे वह शादी हो, ब्याह हो, छट्ठी हो, बरिही हो, कोई भी काम होथे, ओमे सबसे पहली गोबर से लीपे जाथे।

श्री शिवरतन शर्मा :- छत्तीसगढ़ी संस्कृति में अच्छा घर के सियान कौन होथे, एला बता।

सभापति महोदय :- माननीय शर्मा जी, माननीय सदस्य को बोलने दीजिए।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- मोला बोलन दे, आप ला भी मौका मिलही।

उद्योग मंत्री (श्री कवासी लखमा) :- माननीय सभापति जी, यह दोनों महिला लोगों को क्यों छेड़छाड़ करते हैं? क्या इनकी उम्र छेड़छाड़ करने की है?

श्रीमती संगीता सिन्हा :- माननीय सभापति महोदय, हमर जो छत्तीसगढ़िया मुख्यमंत्री हे वो सिर्फ छत्तीसगढ़ राज्य ला आगे बढ़ाये के काम करत हे। गौधन न्याय योजना के तहत 100 लाख क्विंटल गोबर की खरीदी 200 करोड़ रुपये पार कर चुके हे। साथ मे मैं ओलंपिक गेम के बात करहूं जेकर कर चर्चा बहुत होईस। हमर जो ओलंपिक गेम हे, ओकर लिए कल हमर माननीय विपक्ष के साथी अजय चन्द्राकर जी बहुत बड़े-बड़े बात करत रहिस हे। मैंहा इतना कहना चाहत हौं कि जो हमर ओलंपिक गेम हे, कबड्डी, बाटी, संखनी, ये सब ला ओलंपिक गेम मा शामिल करे हे। जो ओलंपिक गेह हे ओमे 65 साल की बुढ़िया भी मंच में चढ़कर गेढ़ी में दौड़े हे। ये हमर संस्कृति है। ये हमार कल्चर हरे। ये हमर माननीय भूपेश बघेल जी की सरकार हे कि हमर जो कल्चर है, जो हमर संस्कृति हे, ओला उजागर करे के काम करे हे, न कि दूसरा कल्चर ला।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- तैं गेड़ी में दउड़े हस का?

श्रीमती संगीता सिन्हा :- हाँ, हमन चढ़े हन।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- कहाँ?

श्रीमती संगीता सिन्हा :- बचपन में फुगड़ी खेले हन अउ आज हमर माननीय मुखिया हर हमन ला खेला दीस।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- बचपन में तो हम गोड़ी चढ़े हन। तैं काबर नइ खेले हस, तेला बता?

श्रीमती संगीता सिन्हा :- माननीय सभापति जी, मैं एक अउ चीज बताना चाहत हौं, हमर माननीय मुख्यमंत्री जी हर छत्तीसगढ़ राज्य ला एक करे के काम करीसे, समाज ला एकरूपता में लाइस, साथ ही परिवार ला भी एक करे के काम करीस । मैं ओकर प्रत्यक्ष उदाहरण बता दुहूं कि जब हमर यहां ओलंपिक गेम होइस, हमन भी ओला देखे गेन। तो जब सब ओलंपिक खतम हो गइस अउ मैं जहां आगे बढ़त रहे ओतना में पीछे के कुर्सी में एक झन श्यान बइठे रहीसे, तो मैं श्यान ला देखे ता खुश हो गए अउ ओला बोलेव कि दाई तहूं हर ओलंपिक खेले बर आय हस का? ता ओहर बड़ा संकोच से बोलिस कि नहीं बेटी, मोर बहु हर ओलंपिक गेम खेलत हावय, मोर बेटी हर कबड्डी मा भाग लेहे, तो मैं हर लइका राखे बर आय हौं। ये हर हे हमर संस्कृति, (सत्तापक्ष के सदस्यों द्वारा मेजों की थपथपाहट) ये हर हे

हमर संस्कार। हमर मुखिया हर परिवार ला भी एक करीसे। कहीं न कहीं ओलंपिक गेम खेलन, ओकर बाद जब लोग घर में जाथे ना त बात रखथे। सास भी ओलंपिक गेम में भाग लेहे, बहू भी ओलंपिक गेम में भाग लेहे, बेटा भी कबड्डी गेम में भाग लेहे। चर्चा होथे न कि ..।

श्री अजय चंद्राकर :- सबके श्रेय माननीय भूपेश बघेल जी ला जाथे।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- हाँ, ये बात आपके मुंह से बोलवाना रहीसे। आप बोले, ओकर लिए बहुत-बहुत धन्यवाद चंद्राकर जी। तो येकर श्रेय हमर मंत्री जी ला जाथे, हमर मुखिया ला जाथे, हमर भूपेश बघेल के सरकार ला जाथे। साथ में भूमिहीन किसान योजना के बारे में कहना चाहूं कि जो छोटे तबके के लोग हे, खेतीहार, मजदूर, चरवाहा, लोहार, मोची अउ पंडित हे, इस टाईप के जो छोटे-छोटे तबके के लोग हे, ओलो 7 हजार रूपये देहे के हमर सरकार घोषणा करे हे। आज हमर जम्मो कृषि मजदूर न्याय योजना के तहत 4 लाख 66 हजार किसान ला 326 करोड़ 75 लाख के राशि प्रदान कर देहे जो बहुत बड़े बात हे। मैं हमर मुखिया ला धन्यवाद देत हौं। काबर कि 15 साल में ये लोग मन ला कोई पूछने वाला नइ रहीसे। सिर्फ हमन महसूस करन कि शोषण बहुत हो रहीसे जबकि आज हमर मुख्या हर सब्बो झन ला समानता के अधिकार दे दिस। सब झन ला आगे बढ़े के बात रखीसे। अइसे हमर मुखिया हे। साथ ही स्वास्थ्य के क्षेत्र में बात करहूं। मुख्यमंत्री हाट बाजार क्लीनिक, शहरी स्लम स्वास्थ्य योजना हे, येकर लिए मैं कहना चाहूं कि कोई भी महिला अगर ओकर तबीयत खरात होथे तो अपन बारे में नइ सोच के सबसे पहली ओहर अपन परिवार के बारे में सोचथे अउ जब हॉस्पिटल जाए के बात होथे न तो ओहर अपन आप ला हॉस्पिटल जाय बर रोक लेथे, हॉस्पिटल जाय बर तैयार नइ रहय। आज हम देखथन कि जो शहरी स्लम स्वास्थ्य योजना हे, हमार गांव में जो हाट बाजार क्लीनिक हे, ओमा महिला मन बाजार करे बर जाथे, अउ जब ओला लगथे कि मोर तबीयत खराब रहीसे ता एक बार चेक करा लेथव तो लगभग महिला मन वहां जाकर बी.पी., शुगर चेक कराथे। वो हमर शासन के योजना हे। वो हमर मुख्या के बात हे, भूपेश सरकार के बात हे, जो हमर गांव में भी फ्री में ईलाज करवाय बर हमर बेटी, बहनी, श्यान मन ला जो बाजार में जाकर चौक-चौराहा में बइठे रइथे, ओमन भी अपन तबीयत ला दिखाथे अउ फ्री में ईलाज करके अपन घर मा जाथे अउ साथ में ..।

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी :- विधायक जी, बोरे बासी अउ भंवरा बाटी में भी प्रकाश डाल ले।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- आप याद दिलाके अच्छा करेव। मोर साथी हर तो बोरे बासी के बारे में बोल चुके हे, लेकिन मैं इतना कहना चाहत हौं कि हमर माननीय भूपेश बघेल जी हर तीज त्यौहार, रोटी, बेटी, रोटी हे, ठेठरी-कुरमी नंदा गे रहीसे। हमला याद हे कि हम बचपन में ठेठरी बरत बइठे रहन, लेकिन आज के बच्चा मन ठेठरी नइ जानत रहीसे। कोई बच्चा भंवरा ला भी नइ जानत रहीसे। बांधी जी, आप भंवरा के अच्छा याद दिलाय हौं। मैं बता देत हौं, जब हमन ..।

श्री रामकुमार यादव :- दीदी, बिलाई के पूंछी ला घलौं याद करा दें, रोटी बनाथे तेला, बिलाई के पूंछी।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- मैं बता देत हौं। जब हमन एक जगह के कार्यक्रम में रहेन तो एक बच्चा के जेब बहुत बड़े फूले रहीसे। हमन सोचेन के भई ओहर काय रखे हे, चाकलेट रखे हे। हमन बहुत देर से विचार करत हन, देखत हन, लेकिन बाद में जब ओहर धीरे से अपन जेब से निकालीस ता हमन देख के दंग रह गेन। ओहर अपन जेब से भंवरा निकालीस। ये हमर सरकार हे जो बच्चा के हाथ में भंवरा पकड़ाइस। जो बचपन के बात रइथे। आप बोरे बासी के बात करे हौं। मैं बोरे बासी के बारे में भी बता देथओं कि जब हमर गांव के सियान रहय न, ओ सियान मन हा जब जाये तो हाथ में बासी के टिफिन अऊ आचार ला धर के खेत जायें । सिर्फ दाऊ आदमी मन घर ही दाल-चावल अऊ भात-साग ए सब बनय लेकिन गरीब आदमी मन घर ककरो इंहां खाना नइ बनत रिहिस हे । बासी, गोंदली अऊ मिर्चा, ओ बटकी में रखतिस अऊ खातिस ।

श्री रामकुमार यादव :- दीदी, शिवरतन शर्मा जी मन बाटी अऊ चूरमा ला धरथें । तें हा ओमन ला झन कही ।

श्री शिवरतन शर्मा :- सुनना रामकुमार, छत्तीसगढ़ी कल्चर में चल चर्चा कर ले कि तें ज्यादा बोलबे कि मैं ज्यादा बोलहूं ?

श्रीमती संगीता सिन्हा :- ये जो गरीब आदमी मन हर हे, गरीब किसान वर्ग हे।

श्री रामकुमार यादव :- तुंहर रटे वाला हे, मोर हा देखे वाला हे । (हंसी)

श्री शिवरतन शर्मा :- तें देखे वाला नइ हस । जतेक सुने हस ओतके बोलबे । (व्यवधान)

श्री रामकुमार यादव :- तें हा तो गेच नइ हच । (व्यवधान) महोदय तुंहर रटे वाला हे ।

सभापति महोदय :- कृपया सदस्य आपस में बात न करें ।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- माननीय सभापति महोदय, हमर जो किसान साथी मन हे । गांव के मजदूर साथी मन हे । ओमन हा केवल एक टईम खाना बनाय अऊ ओहा बासी धर के जाये अऊ चटनी-बासी खा के आये । ऐहा हमर संस्कृति हे । ऐमा लज्जा करे के बात नइ हे । आज हमर मुखिया ओला करके दिखा दिस अऊ आप मन ला भी बासी खवा दिस ।

माननीय सभापति महोदय, मैं हा एकर साथ में मुख्यमंत्री सुपोषण योजना के बात करहूं । मुख्यमंत्री सुपोषण योजना में 2 लाख 65,000 बच्चों को कुपोषण मुक्त किया गया है ओ कतना बड़े खुशी के बात हे काबर कि महिला वर्ग या बच्चा ला हमन देखत रहेन कि बहुत ज्यादा कुपोषित होत रिहिस हे । हमरे राज्य में, हमरे विधानसभा में हमन देखन ता बहुत सारा महिला मन कुपोषण के शिकार रिहिस हे । आज हर जगह नियम के तहत् खाना खिलात हे, गर्भवती महिला मन ला खिलात हे अऊ सुपोषित होत हे ऐकर लिये मैं हा हमर मुखिया जी ला बहुत-बहुत बधाई देत हंओं । साथ में शिक्षा

के क्षेत्र में जो आत्मानंद स्कूल खुले हे । ए हमर शिक्षा के क्षेत्र मा बहुत बड़े सुधार होत हे । आज शिक्षा के क्षेत्र में हम छत्तीसगढ़ राज्य ला पीछे पात हन अऊ प्रयास करत हन कि 4 साल में हम शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़न । लोग तो नीट करे बर बाहर जाथे । कोई भी पढ़ाई करना हे ओकर लिये अपन बच्चा ला बाहर भेजथे लेकिन हमर एक सोच हे कि काबर हम छत्तीसगढ़ में ओ नइ कर सकन, जो बाहर में किये जाथे । सिर्फ रईस के बच्चा, करोड़पति के बच्चा, बड़े-बड़े आदमी के बच्चा मन हा बड़े-बड़े प्राईवेट स्कूल मा पढ़े, इंग्लिश मीडियम मा पढ़े अऊ गरीब के बच्चा मन हा नइ पढ़ सकय, सिर्फ हिंदी मीडियम मा जाये । ऐकर लिये हमर मुख्यमंत्री जी हा प्रयास करिस अउ आत्मानंद स्कूल खोलिस हे । जो 789 आत्मानंद स्कूल खुले है, 2 लाख 15,000 बच्चा मन ला ये लाभ प्राप्त होत हे । जबकि मैं आपके बारे में बात करहूं कि सन् 2013 में आप मन घोषणा करे रहेओ कि 146 मुख्यालयों में अंग्रेजी माध्यम स्कूल खोलबो कहिके । अब आप घोषणा के बात करथओ तो हम भी आप मन ला याद दिलात हंओं कि ओ घोषणा ला अगर आप करे रहितओ तो आज आप वहां नहीं बइठे रहितओ ।

सभापति महोदय :- कृपया संक्षिप्त करेंगे ।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- माननीय सभापति महोदय, साथ में परीक्षा शुल्क भी माफ करिस बड़े-बड़े ए.आई.सी. के परीक्षा दिलाना रहिथे ता ओकर लिये परीक्षा शुल्क लगय । काबर कि गरीब आदमी मन हा नइ कर पात रिहिस हे अऊ आज हमर शुल्क हा नाममात्र होए हे तेकर लिये भी मैं हमर मुखिया ला धन्यवाद देथओं । मैं सड़क-पुलिया के बात करथओं ।

समय :
2.48 बजे

(उपाध्यक्ष महोदय (श्री संतराम नेताम) पीठासीन हुए)

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, अगर आप बालोद विधानसभा में सड़क-पुलिया में जातेओ न तो वहां के स्थिति इतना खराब रिहिस हे । गांव तो टापू बन जाये, पानी गिरए तो हमर घोघोपुरी में जो चोरहा नाला बने रिहिस हे । ओ हा हमेशा टापू बन जाये, वहां के बच्चा मन 4 दिन तक स्कूल नइ जाये, जितना दिन तक ओ पानी नइ उतरतिस । आज देखहू तो आज पूरा रोड बनत हे । भेदभाव के एक-बार चंद्राकर जी बात करिस, मोला याद आगे कि हमर साथ मंच में भेदभाव किये जाथे । एक-बार विधानसभा में ए बात रखे रिहिस हे कि मंच में भेदभाव किये जाथे । मैं तो कहिथओं, चूंकि आपके कहना रिहिस हे जनप्रतिनिधि मन भेदभाव करथें । मैं कहेओं आप तो हमर राज्य के जनता मन संग भेदभाव करे रहेओ । काबर करे रहेओ इहू बता देथओं, काबर कि जहां पर हमर विधायक रिहिस हे वहां पर कहीं पर रोड-पुलिया निर्माण नइ रिहिस हे । जहां आप मन रहेओ वहां पर हर जगह सी.सी. रोड़, पुलिया निर्माण होए हे, यहां तक कि नाली रोड ला भी नइ छोड़े हे । चंद्राकर जी ला पूछ लओ, यह हे । जो नाली रहिथे ओकरे बीच में रोड बने हे ए सड़क अउ पुलिया हे जेन आज हमर मुखिया हा, भूपेश

सरकार हा हर तरफ रोड बना दे हे, हर तरफ पुलिया बना दे हे अऊ हर जनता ला ओखर सुविधा प्राप्त होत हे । साथ में हर राज्य के हमर छत्तीसगढ़ कल्चर हे । हमर छत्तीसगढ़ संस्कृति हे, आज हमर छत्तीसगढ़ के पहचान हे। हर राज्य छत्तीसगढ़ ला जानथे। हर कोई छत्तीसगढ़ ला पहिचानथे। हर कोई ये छत्तीसगढ़ के जो योजना हे ओला कॉपी करे के प्रयास करथे। अइसे हमर छत्तीसगढिया मुख्यमंत्री ला हम बहुत-बहुत धन्यवाद देथन। महोदय जी, आपने मुझे बोलने का मौका दिया, एखर लिए बहुत-बहुत धन्यवाद।

उपाध्यक्ष महोदय :- श्री बृजमोहन अग्रवाल जी।

श्री बृजमोहन अग्रवाल (रायपुर नगर दक्षिण) :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, राज्यपाल का अभिभाषण सरकार का आइना होता है। यह पांचवां अभिभाषण है। हम राज्यपाल जी के कृतज्ञता ज्ञापन प्रस्ताव पर यहां पर चर्चा कर रहे हैं। कहां है कृतज्ञता ज्ञापन करने वाले? उनका भाषण क्यों नहीं हुआ?

श्री कवासी लखमा :- किसका ?

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- पहला भाषण उनका होना था। ये सरकार राज्यपाल जी का कितना सम्मान करती है?

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- कल बोल दिये थे।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय उपाध्यक्ष जी, मैं इस सदन की गरिमा के बारे में बात कर रहा हूं। 13 मंत्रियों में 4 मंत्री हैं। अधिकारी दीर्घा में विभागों के प्रिंसिपल सेक्रेटरी, सेक्रेटरी, चीफ सेक्रेटरी, अगर हम बोल रहे हैं तो उसका जवाब कौन देगा?

श्री कवासी लखमा :- हैं।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- संसदीय कार्य मंत्री जी मैं तो आपके जमीर को जगा रहा हूं। आप 7 वीं बार विधायक हैं। चौथी बार मंत्री हैं। माननीय उपाध्यक्ष महोदय, क्या मजाक हो रहा है। कौन से राज्यपाल के अभिभाषण पर आप हम लोगों से बोलवा रहे हैं? जिन राज्यपाल के खिलाफ आप हाईकोर्ट में जाकर केस करते हैं। जिन राज्यपाल जी को आप भा.ज.पा. का एजेंट बताते हैं। आज भी शहर की सड़कों पर बोर्ड लगे हुए हैं। भा.ज.पा. कार्यालय जाने का रास्ता राजभवन के लिए बोर्ड लगे हुए हैं। सरकार को लज्जा आनी चाहिए। (शेम-शेम की आवाज) आज तक उन बोर्डों को नहीं तुड़वाया। आज तक बोर्डों कोनहीं तुड़वाया। यहां की नगर-निगम तो [XX]हो गई है।

श्री उमेश पटेल :- बृजमोहन भैय्या, सारे बोर्ड हटा देंगे। अगर आप हमारे साथ आरक्षण के लिए राज्यपाल जी को मनाने चलेंगे कि ये आरक्षण पूरा करें।

श्री अजय चन्द्राकर :- दादी, [XX]किसको बोलते हैं?

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- रायपुर नगर-निगम हमारे बोर्ड हटाता है। क्यों भैय्या, राज्यपाल जी को अपमानित करने वाले आपको लज्जा आनी चाहिए। आप राज्यपाल जी का अभिभाषण करवाते हैं, आप हमसे उसमें भाषण दिलवाते हैं।

श्री कवासी लखमा :- माननीय उपाध्यक्ष जी, हम लोग तो बहुत अच्छा बनाते हैं। आदिवासियों का आरक्षण, पिछड़े वर्ग का आरक्षण। इनको रोकने वाले आपको लज्जा आनी चाहिए।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- दादी, मैं अभी उस पर आउंगा। उस पर भी मैं आउंगा। अभी उस पर भी बात करूंगा।

श्री कवासी लखमा :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, एक राज्यपाल को अभी माननीय भारत सरकार ने हटा दिया। हरिचंदन को लाये, उन्हें भी आपने बोलने नहीं दिया। आपको लज्जा आनी चाहिए। आपकी सरकार ने राज्यपाल को भेजा है।

श्री उमेश पटेल :- क्या है, यहां कुछ और बात करना और पीछे कुछ और बात करना [XX]उन्हीं को कहा जाता है।

श्री रामकुमार यादव :- अउ लज्जा ला छत्तीसगढ़ी में नकटा कहे जाथे। (हंसी)

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- उपाध्यक्ष जी, मैं तो आपको धन्यवाद दूंगा, क्योंकि छत्तीसगढ़ की विधान सभा में बहुमत का आपातकाल है और इस बहुमत के आपातकाल में विपक्षी सदस्य स्थगन प्रस्ताव पर वे बोल नहीं सकते। मंत्री खड़े होकर टोकेंगे। मैं तो आपको धन्यवाद दूंगा। यहां पर हम हत्या में चर्चा नहीं कर सकते। यहां पर हम बेरोजगारी में चर्चा नहीं कर सकते। कार्यकर्ताओं की हत्या पर चर्चा नहीं कर सकते। इससे लज्जाजनक बात और क्या होगी? ये राज्यपाल जी का बहुत सम्मान करते हैं। राज्यपाल जी के अभिभाषण पर चर्चा करवा रहे हैं। अगर आप संविधान को नहीं मानते, आप कानून को नहीं मानते, आप राज्यपाल के पद को नहीं मानते तो फिर आप राज्यपाल जी के अभिभाषण पर चर्चा क्यों करवा रहे हैं? हमारे संविधान के अंतर्गत अनुच्छेद 14 में जो राज्यपाल जी होते हैं, वे कानून से ऊपर होते हैं। संविधान के अनुच्छेद 14 के तहत राज्यपाल पर कानून के समक्ष समानता लागू नहीं होती। अनुच्छेद 32 में रिट याचिका, परमादेश अर्थात् राज्यपाल के खिलाफ जारी नहीं हो सकता । अनुच्छेद 361 के तहत राज्यपाल को किसी न्यायालय की नोटिस जारी नहीं हो सकती । [xx][6] आनी चाहिए । जो संवैधानिक प्रमुख है ।

श्री रविन्द्र चौबे :- [xx] किसको आनी चाहिए । हाईकोर्ट ने नोटिस जारी किया तब ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- आपको आनी चाहिए । आपने याचिका लगाई, आपने रिट लगाई ।

श्री रविन्द्र चौबे :- नोटिस किसने जारी किया ?

[6] [xx] अध्यक्षीय पीठ के आदेशानुसार निकाला गया ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- आपने रिट लगाई ।

श्री रविन्द्र चौबे :- नोटिस किसने जारी किया ?

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- और मैं तो कहता हूं [xx][7] जिसने रिट पर नोटिस दी है । इस विधान सभा में बोलने में मुझे कोई दिक्कत नहीं है । हाई कोर्ट के चीफ़ जस्टिश को राज्यपाल शपथ दिलाते हैं । यहां के मुख्यमंत्री को राज्यपाल शपथ दिलाते हैं । राज्यपाल की शपथ का संचालन चीफ़ सेक्रेटरी करते हैं, वह चीफ़ सेक्रेटरी हाई कोर्ट में केस करने जाते हैं और आप उन्हीं राज्यपाल से यहां पर भाषण करवा रहे हैं और उस पर हमसे चर्चा करवा रहे हैं । क्या हो रहा है इस प्रदेश में ? आप संविधान का घोर अपमान कर रहे हो । देखिए, सत्ता आज आएगी, कल नहीं रहेगी । यह आने-जाने वाली है ।

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- धर्म-निर्पेक्ष का अपमान कौन करता है, बताइए तो ? भारत धर्म-निर्पेक्ष राष्ट्र है ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- अगर हम संवैधानिक संस्थाओं को नष्ट करेंगे तो यह देश कभी माफ नहीं करेगा । क्योंकि यह उदाहरण बनता है, यह परम्परा बनती है । आने वाली पीढ़ी इसको अपनाती है । इसके बारे में मैं तो चाहूंगा कि हमने मुद्दे को उठाया था, सदन को संज्ञान में लेना चाहिए ।

श्री रामकुमार यादव :- आरक्षण मिलना चाहिए या नहीं मिलना चाहिए ?

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- बड़े बड़े मंदिर बनाए हैं, कितने मस्जिद और गिरिजाघर बनाए हैं यह भी बताओ ?

श्री उमेश पटेल :- इस आरक्षण से भारतीय जनता पार्टी का दोहरा चरित्र सामने आ गया है ।

उपाध्यक्ष महोदय :- बैठे-बैठे टोका टाकी न करें ।

श्री शिवरतन शर्मा :- आज राहुल गांधी जी ने चीन की तरीफ करके प्रदर्शित किया । वही दोहरा चरित्र है ना ।

श्री उमेश पटेल :- आपका जो एक्सटर्नल अफेयर मिनिस्टर है ना, उनके भाषण को सुनिए, वे चीन के बारे में क्या बोलते हैं ।

उपाध्यक्ष महोदय :- अभी बहुत से माननीय सदस्यों को बोलना है आप लोग टोका टाकी न करें ।

श्री ननकीराम कंवर :- यह जो बोल रहे हैं ना, आप लोगों को समझ में नहीं आएगा ।

श्री उमेश पटेल :- दादा, तोर बड़ इज्ज़त करथौं मैं । थोड़कन चुप रहौ ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- जो राज्यपाल जी के अभिभाषण पर, जिन्होंने इस सदन में कृतज्ञता ज्ञापन प्रस्ताव रखा । उन्होंने राज्यपाल जी को भाजपा का एजेंट बताया, वाह रे वाह कांग्रेस के अध्यक्ष

[7] [xx] अध्यक्षीय पीठ के आदेशानुसार निकाला गया ।

(शेम शेम की आवाज) । वाह रे कृतज्ञता ज्ञापन करने वाले, उन्हीं से कृतज्ञता ज्ञापन प्रस्ताव रखवाया । कौन है वो ?

श्री कवासी लखमा :- तुम ही बता दो ।

श्री शिवरतन शर्मा :- नहीं, इस प्रकार की टीका-टिप्पणी नहीं होनी चाहिए ।

उपाध्यक्ष महोदय :- बैठकर न टोकें ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- और उस राज्यपाल के अभिभाषण पर हमसे कहते हैं कि धन्यवाद् प्रस्ताव रखो । अरे, आपको विश्वास नहीं है । अब दो-मुहापन किसका है। बाहर कुछ बोलते हो, अंदर कुछ बोलते हो । यह सरकार बहुमत के बोझ से चरमरा चुकी है । अपने बोझ से ही दब रही है । ऐसा है मंत्री जी, मुझे मालूम है आपकी भी वही हालत है । आपके सचिव को बताया कि मंत्री का आदेश जारी मत करना, उसकी बात मत मानना, जब तक मुख्यमंत्री निवास से अनुमति नहीं होगी । यह आदेश जारी हुआ है ।

श्री कवासी लखमा :- उपाध्यक्ष जी, ये भी जब मंत्री थे तो बहुत परेशान करते थे ।

श्री उमेश पटेल :- दादी, मैं बता रहा हूं । नहर में पानी पानी छोड़ने का आदेश जारी हो जाता था और इनको पता ही नहीं रहता था उस समय ।

समय :
3:00 बजे

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- कलेक्टर्स और एस.पी. को निर्देश है कि इस विधायक का काम नहीं करना, इस मंत्री का काम नहीं करना। भैया, इससे ज्यादा शर्मनाक बात क्या हो सकती है कि किसी मंत्री को, मेरी बात नहीं सुनी जा रही है, मेरा अपमान हो रहा है, इसलिए मैं विभाग छोड़ देता हूं। (शेम-शेम की आवाज) इससे बड़ी शर्मनाक बात कोई हो सकती है। एक मंत्री कहता है कि मेरी कलेक्टर भ्रष्ट है, एस.पी. मेरे को फंसाना चाहता है, यह क्या है ? यह बहुमत में क्या हो रहा है ? एक विधायक कहता है, एस.पी. क्या है, एस.पी. दंगाई है, क्या दंगाई एस.पी. को एक मिनट भी पद पर रहना चाहिए ? पोस्टर लगाए गए हैं, आप लोग सत्ता में बैठकर क्या पूरा शासन प्रशासन, संविधान, कानून व्यवस्था किसी की तो इज्जत करना सीखिए। संस्कृति की बहुत बड़ी-बड़ी बातें कर रहे थे। बस्तर में क्या हो रहा है ? बस्तर में शमशान घाट में लोगों को दफनाने नहीं दिया जा रहा है। वहां के बुजुर्ग परेशान हैं कि हमारी संस्कृति को समाप्त किया जा रहा है। छत्तीसगढ़ में 33 प्रतिशत आदिवासी हैं। माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आप भी हैं। मुझे मालूम है, चर्चा होती है, छत्तीसगढ़ की मूल संस्कृति आदिवासी संस्कृति है। उनका घोटुल है, उनका करमा है, आप उसको तंग कर रहे हो। उस संस्कृति को कोई बर्बाद करने का काम कोई कर रहा है...।

श्री राजमन बेंजाम :- माननीय उपाध्यक्ष जी, सरकार प्रत्येक घोटुल के लिए 10 लाख रूपए दे रही है। हमारी सरकार देवगुड़ी के लिए 5 लाख रूपए और घोटुल के लिए लिए 10 लाख रूपए दे रही है।

श्री कवासी लखमा :- हमारे आदिवासी क्षेत्रों में 15 साल में कभी मंदिर बनवाए थे। कभी देवगुड़ी गये थे ? (व्यवधान)

सभापति महोदय :- सीधा संवाद न करें।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय उपाध्यक्ष जी, कौन सी छत्तीसगढ़ी संस्कृति की बात कर रहे हो। छत्तीसगढ़ का मूल आदिवासी है, आज आदिवासी अपने आपको असुरक्षित महसूस कर रहा है।

श्री कवासी लखमा :- इसीलिए तो आदिवासी लोगों को देवगुड़ी में बसा रहे हैं।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- आज एक भी दिन ऐसा नहीं है जिस दिन बस्तर में आदिवासी सड़कों पर न हो। कवर्धा की घटना क्या है ? नारायणपुर की घटना क्या है? कल कवर्धा में एस.पी. सहित 25 पुलिसकर्मियों के सिर फूटे हैं। किसने फोड़ा है? किसने फोड़ा है?

श्री उमेश पटेल :- अग्रवाल जी, आपकी पार्टी के सांसद लोग कवर्धा में रैली में चल रहे हैं और वहां तोड़-फोड़ हो रहा है। आपकी पार्टी के सांसद लोग चल रहे हैं। उस रैली में उनके सामने तोड़-फोड़ हो रहा है।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय उपाध्यक्ष जी, मैं कल की घटना की बात कर रहा हूं। उमेश जी, हमारे शहीदों ने यह केसरिये और भगवे के लिए अपने प्राण गवाएं थे। आज उस केसरिया को पैरों से कुचला जा रहा है। उस भगवे को पैरों से कुचला जा रहा है। मैं आपसे भी जानना चाहता हूं । बताओ भैया, कौन सी छत्तीसगढ़ी संस्कृति है, मुख्यमंत्री जी के घर में हरेली मना लिए तो हो गया। क्या गांव में हरेली मनाई जा रही है ? क्या मुख्यमंत्री जी घर में गेड़ी में चढ़ गए तो हो गया ? क्या गांव में लोग गेड़ी चढ़ रहे हैं ? मुख्यमंत्री जी के घर में भौरा चला दिया तो हो गया। मुझे भी मालूम है, खाली मुख्यमंत्री जी के घर में छत्तीसगढ़ी त्यौहार मनाने से त्यौहार नहीं होगा।

श्री राजमन बेंजाम :- माननीय बृजमोहन भैया, हमारे मुख्यमंत्री जी, यहां के आदिवासी लोगों की संस्कृति को बचाने के लिए आयोजन कर रहे हैं। उसके लिए आपको क्या आपत्ति है।

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- आप लोगों को भी करना था, आप लोगों ने क्यों नहीं किया।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- उपाध्यक्ष महोदय, जिस दिन बस्तर के जंगल में, जिस दिन बस्तर के गांव में मांदर की थाप होगी, वहां पर ढोल बजेंगे, वहां पर करमा होगा, ददरिया होगा, उस दिन यह छत्तीसगढ़िया संस्कृति जीवित होगी। (मेजों की थपथपाहट) आज वहां पर क्या हो रहा है ?

श्री कवासी लखमा :- जगरगुंडा में बाजार बंद था, चिंतलनाग बेच दीं। 15 साल से 3 हजार स्कूल बंद थे। किसने खोला ? जगरगुंडा में 25 साल मड़ई हुआ, आपको पता है? (व्यवधान)

श्री ननकीराम कंवर :- भैय्या, आप इतना ही बतला दो कि झीरम घाटी में आप ही कैसे बच गये? उसमें कितने लोग शहीद हुए। यह तो आपको मालूम है न क्योंकि यह बस्तर में हुआ है। (व्यवधान)

श्री कवासी लखमा :- आप दूसरा कारण नहीं बता रहे हैं। जब बृजमोहन जी गृह मंत्री थे तो आपको क्या कोई पुलिस छूता था ? अलग से कमेटी का गठन करके तैयार करके घुम रहे थे। यह गृहमंत्री थे तो तुम्हारे घर में ए.सी. की चोरी होती थी।

कुछ पता नहीं था। (व्यवधान)

श्री ननकीराम कंवर :- आपको तो सब कुछ मालूम है। (व्यवधान)

श्री कवासी लखमा :- माननीय बृजमोहन जी, मैं आपसे हाथ जोड़कर विनती करता हूं कि आप आदिवासी के खिलाफ मत बोलना। कितनी दुर्गति किये। 700 गांव खाली हुए। (व्यवधान)

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- इनके ऊपर एक्ट्रोसिटी एक्ट लगना चाहिए। (व्यवधान)

श्री कवासी लखमा :- सीधा-सीधा 300 घर जल गये तो क्या आप कभी उसको देखने के लिए गये थे ? हम लोग पोलनपाली में जा रहे थे तो पुलिस ने हमको जेल भेज दिया। स्वर्गीय नंद कुमार पटेल जी और हम सब लोग जा रहे थे। उस समय अच्छा था। (व्यवधान)

श्री ननकीराम कंवर :- वह आपको छोड़ दिये। (व्यवधान)

श्री कवासी लखमा :- बगैर दल के 700 गांव की यात्रा किये। (व्यवधान)

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मंत्री जी, शायद आपको मालूम नहीं है। (व्यवधान)

श्री कवासी लखमा :- मुझे मालूम नहीं है लेकिन क्या आप बस्तर गये हैं ?

श्री ननकीराम कंवर :- इनको सब मालूम है कि कौन नक्सली है और कौन क्या है। इनके साथ उनका संपर्क है। (व्यवधान)

श्री कवासी लखमा :- आप मेरे साथ एक दिन बस्तर चलिये। आप बस्तर गये नहीं हैं और बस्तर के बारे में बात करते हैं। (व्यवधान)

श्री शिवरतन शर्मा :- दादी, आप यह बताइये कि क्या आप सीलगेर गये हैं ? आपका मतदान केन्द्र क्रमांक-1 है। क्या आप कभी सीलगेर गये हैं ?

श्री कवासी लखमा :- नारायणपुर से बस चलती है। अभी जखरमुण्डा से बीजापुर तक बस चलती है। (व्यवधान)

श्री शिवरतन शर्मा :- सीलगेर आपके विधान सभा क्षेत्र में आता है। (व्यवधान)

श्री गुलाब कमरो :- आप लोग 1300 आदिवासियों को जेल में डाले थे। हमारी सरकार ने 1300 आदिवासियों की रिहाई करवाई है। (व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय :- चलिये, आपस में सवाल न करें। अग्रवाल जी, आप बोलिये। (व्यवधान)

श्री रामकुमार यादव :- कबीर दास जी रचना रचे थे कि "जाको राखे साइयां, मार सके न कोय"। (व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय :- आप बैठिये। आप बोलिये। रामकुमार जी, आपकी बारी आएगी। (व्यवधान)

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं आज से नहीं, 18 साल की उम्र से बस्तर में घूम रहा हूं। (व्यवधान)

श्री कवासी लखमा :- रोड-रोड में घूमे हों।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- रोड-रोड नहीं, मैं बस्तर के अंदर गया हूं। मैं जगरगुण्डा भी गया हूं, मैं मुलगेर भी गया हूं और मैं सुकमा भी गया हूं। (व्यवधान)

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- आप अंदर जाकर देखिये, तब आपको पता चलेगा।

श्री कवासी लखमा :- यह ऊपर-ऊपर जाते हैं।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- मंत्री जी जो खड़े होकर बोल रहे हैं न...। (व्यवधान)

श्री कवासी लखमा :- आप यहां पैदा हुए हैं। (व्यवधान)

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- मंत्री जी जो बोल रहे हैं मैं उससे ज्यादा बस्तर गया हूं। वह जितना बस्तर नहीं घूमे हैं, मैं उससे ज्यादा घूमा हूं। मैं आपको लिस्ट दे दूंगा। (व्यवधान)

श्री राजमन वेंजाम :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, यह हमारे मंत्री जी के ऊपर आरोप लगा रहे हैं। हमारे माननीय कवासी लखमा जी जितना बस्तर में घूमते हैं और बस्तर के लोगों की चिंता करते हैं। (व्यवधान)

श्री कवासी लखमा :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, यह मेरे से ज्यादा घूमे हैं। यह कितना असत्य बोल रहे हैं। मेरे मां-बाप वहीं पैदा हुए हैं। (व्यवधान)

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- बिना सबूत के आरोप लगाना गलत है। इसका मतलब आप सब लोग जानते थे। (व्यवधान)

श्री नारायण चंदेल :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, यह क्या हो रहा है ?

उपाध्यक्ष महोदय :- कृपया, आप लोग शांत रहें। आप शांत रहिये। (व्यवधान)

श्री कवासी लखमा :- वहां मैं पैदा हुआ हूं, मेरे बाप-दादा पैदा हुए हैं। (व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय :- मंत्री जी, एक मिनट। कृपया आप लोग आपस में सीधे सवाल न करें। आप मेरी तरफ से बात करें। आप सब सहयोग करें। मंत्री जी, बैठिये। श्री कवासी लखमा :- यह कमाने-खाने आये हैं। (व्यवधान)

श्री नारायण चंदेल :- नहीं, हम किसको सहयोग करे ? यह जो बोल रहे हैं यह गलत तरीका है। लेकिन यह गलत तरीका है। यह क्या तरीका है ? क्या सदन ऐसे चलेगा ? (व्यवधान)

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं इस सदन का सदस्य हूं, मेरे बाप-दादा नहीं हैं। उन्होंने मेरे बाप-दादा के बारे में बोला है। वह पहले माफी मांगे। वह माफी मांगे। आप उनको बाहर निकालिये। (व्यवधान)

श्री शिवरतन शर्मा :- नहीं, यह ऐसे कैसे बोल देंगे ?

उपाध्यक्ष महोदय :- देखिये, आपस में सवाल न करें। आप लोग बैठिये।

श्री नारायण चंदेल :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, यह ठीक नहीं है। यह क्या कह रहे हैं ? (व्यवधान)

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, यह उल्टा-सीधा आरोप लगा रहे हैं। आप सबूत के साथ आरोप लगाइये। (व्यवधान)

श्री नारायण चंदेल :- सदन की कोई मर्यादा होती है। यह क्या हो रहा है ?

उपाध्यक्ष महोदय :- सदन की कार्यवाही 10 मिनट के लिए स्थगित की जाती है।

(3.08 से 3.28 बजे तक कार्यवाही स्थगित रही)

समय :

3:28 बजे **(उपाध्यक्ष महोदय (श्री संतराम नेताम) पीठासीन हुए)**

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, पूरे छत्तीसगढ़ की संस्कृति को बरबाद करने का काम, उसका सत्यनाश करने का काम अगर कोई कर रहा है तो भूपेश बघेल की सरकार कर रही है । आखिर पूरा छत्तीसगढ़ आग में क्यों जल रहा है ? कांग्रेस पार्टी के लोगों को छूट है, कहीं पर भी आन्दोलन करो, कहीं पर भी धरना करो, कहीं पर भी प्रदर्शन करो । मेरे विधान सभा क्षेत्र के पचपेड़ी नाका में पिछले चार दिनों से कांग्रेस पार्टी के लोगों ने धरना प्रदर्शन करके रास्ता जाम कर दिया है । यह क्या छत्तीसगढ़ की संस्कृति है ? अगर भारतीय जनता पार्टी के लोग घोषित चक्का जाम करते हैं तो उनके खिलाफ में जुर्म दर्ज होता है । क्या यही सपना खूबचंद बघेल जी ने देखा था, क्या यही सपना सुन्दरलाल शर्मा ने देखा था, क्या यही सपना संत कवि पवन दीवान जी ने देखा था, क्या यही सपना छत्तीसगढ़ के निर्माता अटल बिहारी वाजपेयी ने देखा था ? सबसे सपनों को चकनाचूर करने का काम, संविधान की हत्या करने का काम, लोकतंत्र का मान-मर्दन करने का काम, छत्तीसगढ़ियों का अपमान करने का काम, छत्तीसगढ़ की संस्कृति के नाम पर भ्रष्टाचार करने का काम इस सरकार में हो रहा है ।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आप भी तीसरी बार विधायक बने हैं । आपने भी 10 साल हमारा कार्यकाल देखा है । 2014 के पहले केन्द्र में कांग्रेस की सरकार होती थी, पहले भी छापे पड़ते थे । 5-5, 7-7, 8-8 आई.ए.एस. अधिकारियों से पूछताछ हो, उनके यहां छापे पड़े, वह जेल जाये, 5 सौ करोड़ रूपये की सम्पत्ति जब्त हो, यह कभी हुआ है क्या ? क्या यह पैसा छत्तीसगढ़ियों का नहीं है ?

यह किसका पैसा है ? कहां से आया ? उनको आज भी पलायन का दंश झेलना पड़ रहा है। ई.डी. छापा मारती है, इनकम टैक्स डिपार्टमेंट छापा मारता है, 5 सौ करोड़ रूपये की सम्पत्ति जब्त होती है। डायरियां मिलती हैं। यही छत्तीसगढ़ की संस्कृति है ? आप कौन से छत्तीसगढ़ की संस्कृति की बात कर रहे हैं ? छत्तीसगढ़ के कौन से आदिवासी संस्कृति की बात कर रहे हैं ? बस्तर क्यों जल रहा है ? क्यों बस्तर के लोग सड़कों पर उतरे हए हैं ?

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, इस सरकार में जाति से जाति को लड़ाना, वर्ग से वर्ग को लड़ाना, धर्म से धर्म को लड़ाना। अगर यह सरकार सचेत नहीं हुई तो स्थिति विस्फोटक हो सकती है। यह मैं नहीं कह रहा हूं, आपके सुकमा का एस.पी. बोल रहा है। आपके बस्तर का आई.जी. बोल रहा है कि धर्मान्तरण के कारण स्थिति विस्फोटक हो रही है। सभी पुलिस के अधिकारी सचेत हो जायें। जरा बताये तो ?

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- उस समय आप आये नहीं थे, हमारे शिवरतन भईया धर्मान्तरण पर आधा घंटा भाषण दिए। आप उसी को फिर शुरू कर दिए। प्रदेश में धर्मान्तरण का एक भी मामला है, बताओ बोलता हूं तो नहीं बता सकते और आधा-आधा घंटा भाषण दे रहे हो। वह बोले उसके बाद दूसरा शुरू हो गए।

उपाध्यक्ष महोदय :- कृपया, मंत्रीगण बार-बार खड़े ना हों।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय उपाध्यक्ष जी, ये मंत्री हैं या चूं-चूं का मुरब्बा है ? बस्तर में 3 महीने में 80 प्रकरण दर्ज हुए हैं।

उपाध्यक्ष महोदय :- माननीय आप सीनियर हैं, हम लोग आप सीखे भी हैं। नये लोग भी आ रहे हैं। आप थोड़ा ज्यादा उत्तेजित हो जाते हैं।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- मैं कहां उत्तेजित हो रहा हूं।

उपाध्यक्ष महोदय :- आप थोड़ा नार्मल बोलिये, आपसे सब सीखेंगे।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- नहीं, वह सरकार में हैं, वियाग्रा उनको मिलती है, हमको नहीं मिलती है।

उपाध्यक्ष महोदय :- चलिये, आप थोड़ा कम समय लें।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय उपाध्यक्ष जी, बस्तर में 80 प्रकरण दर्ज होते हैं, धर्मान्तरण करवाने वाले एक भी प्रकरण में कार्रवाई नहीं होती है, उसके कारण विस्फोट हो रहा है। आखिर सरकार क्यों नहीं चेत रही है ? भईया, अभी तो धान के 120 रूपये क्विंटल पर वसूली शुरू हो गई है। 20 रूपया क्विंटल लेंगे पिछले साल का 1 करोड़ टन, इस साल का 1 करोड़ 7 लाख टन। यहां पर ई.डी. है, यहां पर इनकम टैक्स डिपार्टमेंट भी है। मैं तो चाहूंगा कि हम सब एक दूसरे के मित्र भी हैं, हम लोग जरा इससे बचकर रहे। हमारा राजनीतिक जीवन बर्बाद हो जायेगा। आखिर ये क्या कर रहे हैं ? कभी 40

रूपये क्विंटल में धान की मिलिंग होती थी। हम अभी 120 रूपया दे रहे हैं। वह इसलिए दे रहे हैं क्योंकि 50 रूपया घूस के रूप में लेना है। क्या यह पैसा छत्तीसगढ़ का नहीं है ? यह किसका पैसा है ? यह कहां से आया है ? क्या यह किसान का पैसा नहीं है ? क्या यह गरीब जनता का पैसा नहीं है ? बार-बार बड़ी-बड़ी बात करते हैं कि हम ईमानदार हैं, हम छत्तीसगढ़ की संस्कृति की रक्षा कर रहे हैं। हमने कानून व्यवस्था को बचाया है। क्यों भईया ? क्या पुलिस के जवान इस प्रदेश के नागरिक नहीं हैं ? बस्तर के ब्लास्ट में 3 जवानों को मार दिया जाता है। राजनांदगांव में नक्सलवाद समाप्त हो गया था।

श्री कवासी लखमा :- इसमें राजनीति मत करिये।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- मैं बोल रहा हूं कि हम राजनीति नहीं कर रहे हैं। दादी, आपका भी जीवन खतरे में है, मेरा जीवन भी खतरे में है। हम नक्सलवाद के खिलाफ बोलेंगे तो हमारे ऊपर भी हमले हो सकते हैं। देश में पहली बार किसी विधानसभा ने गोपनीय सत्र बुलाये थे, आप उसमें थे, उस पर चर्चा हुई थी। आज जब हम उसके बारे में स्थगन लाते हैं तो उस पर चर्चा नहीं होती है। कार्यकर्ता आपका हो या हमारा हो, वह भी इस प्रदेश का नागरिक है, उनकी हत्या हो जाती है, उस पर चर्चा नहीं होती है । वहां पर विकास के काम रोक दिये जाते हैं, गाड़ियां जला दी जाती है, उस पर चर्चा नहीं होती है, क्यों नहीं होती है ? रायपुर के गुढ़ियारी में एक सोलह साल की जवान लड़की को बाल पकड़कर थाने से सौ मीटर दूर वीभत्स तरीके से घसीटकर ले जाया जाता है, फरसे से, गंडासे से वार होता है, कोई है, किसी को लज्जा आती है, किसी को दुःख होता है, किसी को दर्द होता है, वह बच्ची तो हमारी भी हो सकती है । ऐसा क्यों हो रहा है ? रायपुर को लोग चाकुपुर बोलने लगे हैं, क्यों यहां पर इतने चाकू चल रहे हैं, कहीं न कहीं शासन प्रशासन की धमक होती है, पुलिस के जूतों की धमक होती है, अपराधी उससे डरता है, सब खत्म हो गया, क्योंकि थाने बिकने लगे हैं, अधिकारियों की पोस्टिंग पैसे में होने लगी है, रात की गश्त समाप्त हो गई है, पिकेट्स लगना बंद हो गये हैं, आखिर हम छत्तीसगढ़ को कहां ले जा रहे हैं, हम नई पीढ़ी को कहां ले जा रहे हैं ? माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मुझे कष्ट होता है, रायपुर शहर में छत्तीसगढ़ का हर नागरिक चाहता है कि उसका एक प्लॉट हो, उसका एक मकान हो, उसके बच्चे यहां अच्छे एजूकेशन इंस्टिट्यूट में पढ़ पायें । रायपुर में चरस, गांजा, अफीम, कोकीन, मारफीन, इंजेक्शन की लत हो रही है, बच्चों को लालच देकर, उनको टेस्ट करवाकर दे रहे हैं । ऐसे लोगों की रूह कांपती थी । किसी की ताकत नहीं थी कि रायपुर में अफीम, चरस, गांजा बेचे । उसको मालूम है, उसकी जगह जेल के सींखचों में होगी । आज तो सईयां भये कोतवाल तो डर काहे का, आप अकेले में मिलोगे तो बिकवाने वाले का नाम भी बता दूंगा । मैंने एस.पी. को बताया है, आई.जी. को बताया है, मैंने स्थान भी बताये हैं, कोई कार्यवाही नहीं हुई । आपके भी बच्चे रायपुर में पढ़ते हैं, उन बच्चों को बिगाड़ने का काम कौन कर रहा है, हमारी नई पीढ़ी को बिगाड़ने का काम कौन कर रहा है, अगर हमारी नई पीढ़ी बरबाद हो जायेगी तो हमारे छत्तीसगढ़ का भविष्य बरबाद हो जायेगा । आज छत्तीसगढ़ बहुत छोटा

प्रदेश है, पौने तीन करोड़ की आबादी है, शराब के खपत के मामले में छत्तीसगढ़ दूसरे नंबर पर है, मंत्री जी ने कभी इसकी चिन्ता की है ? ऐसा क्यों हो रहा है, क्या कारण है इसका ? कल हम अंदर बैठे थे, एक विधायक आये, उन्होंने कहा कि भईया पहले हमारे दुकान में 50 लाख रूपये की शराब बिकती थी, जब से ई.डी. आ गई है तो डेढ़ करोड़ की बिक रही है । बलौदाबाजार में, भाटापारा में, सिमगा में, कसडोल में, मंत्री जी आपके बजट की चर्चा आयेगी तो जरा रख देना । ई.डी. के आने के पहले कितनी शराब बिकती थी और अब कितनी शराब बिक रही है, डबल सिस्टम से घबरा रहे हैं ?

श्री उमेश पटेल :- भईया, आप बहुत देर से ई.डी. की बात कर रहे हैं । यह बताईये कि ई.डी. जहां विपक्ष की सरकार है, वहीं आयेगी ? क्या ई.डी. काम काम यही रह गया कि विपक्षी पार्टियों के राज्यों में जाकर छापामारी करे, उन्हें डरायें, धमकायें, सरकार गिराये, भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनाये, क्या सिर्फ यही काम रह गया है ? इसी तरह की संस्थाओं को आप चलाने की कोशिश कर रहे हैं ?

श्री शैलेश पाण्डेय :- ई.डी. जो है, देश में नरेटिव सेट कर रही है । हमारा उपयोग यह भी किया जा सकता है । यह नरेटिव सेट हो रहा है कि हम यह काम भी कर सकते हैं । उपाध्यक्ष जी, मैं आपसे मांग करना चाहता हूँ और आपसे मांग भी करता हूं कि आज एक संसदीय समिति बनाई जाये। जिसमें पक्ष विपक्ष दोनों साथी आये और ई.डी. के ऑफिस में जांच करवाई जाये कि कांग्रेस के कार्यकाल में और मोदी जी के कार्यकाल में ई.डी. के क्या-क्या काम रहे हैं। इसका पता लगाया जाये।

उपाध्यक्ष महोदय :- चलिये माननीय बृजमोहन जी।

श्री उमेश पटेल :- उपाध्यक्ष महोदय, ई.डी. का जो इतना सीधा-साधा केस है, जहां मनी लॉन्ड्रिंग का पूरा मामला दिख रहा है, लोग बता रहे हैं, उसमें ई.डी. कहीं पर भी जांच नहीं करेगी। लेकिन जहां कांग्रेस की गर्वन्मेंट है, जहां विपक्षी पार्टियों की गर्वन्मेंट है, वहां ई.डी. आयेगी।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय उपाध्यक्ष जी, उमेश जी तो मंत्री हैं। इनकी सरकार है और 4.5 साल से है। बृजमोहन ने भ्रष्टाचार किया है, बृजमोहन ने गड़बड़ की है, बृजमोहन ने अवैध कमाई की है। आपके पास ई.ओ.डब्ल्यू. है। आपके पास आर्थिक अनुसंधान ब्यूरो है। आप केस दर्ज करिये और ई.डी. को ट्रांसफर करिये कि हम चाहते हैं कि इसमें मनी लॉन्ड्रिंग हुई है इसमें आप जांच करें। आप एक केस, दो केस, भेजिये तो।

श्री उमेश पटेल :- भैया, मैं यहां के बारे में बोल ही नहीं रहा हूं। मैं तो अडाणी की बात कर रहा हूं। मैं तो अडाणी की बात कर रहा हूं। आप अडाणी के मनी लॉन्ड्रिंग की जांच क्यों नहीं करवाते हो ? उसकी जांच क्यों नहीं होती है ?

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- मैं अपना उदाहरण देकर बोल रहा हूं। यदि आपके पास कोई प्रमाण है तो आप ई.डी. को उपलब्ध करवाईये। आप तो झीरम के प्रमाण को भी 4.5 साल से लेकर घूम रहे हैं।

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- अडाणी जी 609 से दूसरे नंबर पर कैसे आये ? इसकी जांच होनी चाहिए।

श्री उमेश पटेल :- अग्रवाल जी, जो रिपोर्ट आ रही है। हिंडनबर्ग ने अपनी रिपोर्ट जारी की है। क्या उसके आधार पर किसी तरह की जांच नहीं होगी ?

सभापति महोदय :- बृजमोहन जी, आप और कितना समय लेंगे ?

श्री उमेश पटेल :- ई.डी स्वमोटो में नहीं ले सकती ?

उपाध्यक्ष महोदय :- मंत्री जी, उनकी बात आने दीजिये।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय उपाध्यक्ष जी, यह जो राज्यपाल का अभिभाषण है। यह सरकार की पिछले सवा चार साल की कारगुजारियों का है। ये उसके ऊपर चर्चा नहीं करेंगे। यह चर्चा करेंगे बीजेपी के 15 सालों की, यह चर्चा करेंगे हिंडनबर्ग की, यह चर्चा करेंगे अडाणी की। आप यहां पर चर्चा करिये ना।

श्री उमेश पटेल :- मैंने तो चर्चा इसलिये लायी क्योंकि आप बार-बार ई.डी. की बात कर रहे हैं। इसलिये मुझे चर्चा लानी पड़ी। मैं तो चर्चा ला ही नहीं रहा था।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- उपाध्यक्ष महोदय, मैं अपने मित्रों को सचेत कर रहा हूं। ऐसा है कि खायेगा कोई और भरेगा कोई। इसलिये जरा सचेत हो जाओ। यह सरकार का नारा है "सेवा जतन सरोकार", वह हो गया है "लूट भय भ्रष्टाचार"। गढ़बो छत्तीसगढ़, बोरबो छत्तीसगढ़। आप नशे की आघोष में छत्तीसगढ़ की जवानी को डूबोकर, बच्चों को डूबोकर, शराब में पैसा कमाकर, छत्तीसगढ़ गढ़बो होगा या बोरबो होगा।

संसदीय सचिव, सहकारिता मंत्री से सम्बद्ध (श्री द्वारिकाधीश यादव) :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं यह कहना चाहता हूं कि यदि भारतीय जनता पार्टी की सरकार 15 साल पहले शराबबंदी कर देती तो यही छत्तीसगढ़ 15 वर्ष पहले शराब मुक्त प्रदेश होता। लेकिन आपके समय में कैसे गली-गली में भी शराब बिकी है, उसको भी छत्तीसगढ़ की जनता ने देखा है।

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- सरकारीकरण किये है, सरकारीकरण।

श्री द्वारिकाधीश यादव :- आखिरी में सरकारीकरण किये हैं।

उपाध्यक्ष महोदय :- चलिये, आप लोग थोड़ा सहयोग कीजिये।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- उपाध्यक्ष महोदय, मैं तो यही पूछ रहा हूं कि दो महीने पहले शराब की दुकानों में कितनी शराब बिकती थी और दो महीने में कितनी बढ़ गई ? बस इतना बता दो। मुझे कुछ पूछने की जरूरत नहीं है। शराबबंदी के लिये मैंने नहीं बोला था, बीजेपी ने नहीं बोला था। बीजेपी के 15 साल के किसी घोषणा पत्र में शराबबंदी नहीं था। यदि शराबबंदी का वायदा किसी ने किया था तो भूपेश बघेल जी ने किया था, रविन्द्र चौबे जी ने किया था।

श्री उमेश पटेल :- उपाध्यक्ष महोदय, बीजेपी के घोषणा पत्र में तो जर्सी गाय भी थी, चप्पलें भी थी, बहुत सारी चीजें थी। आप भूल जाते हैं। शराबबंदी नहीं था, वह तो हम समझ गये।

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- रतनजोत भी था।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय उपाध्यक्ष जी, लोकतंत्र की हत्या हो रही है। लोकतंत्र लूटतंत्र में परिवर्तित हो रहा है। लोकतंत्र लहुतंत्र में परिवर्तित हो रहा है। लोकतंत्र को बहुमत ने अपहरण कर लिया है। छत्तीसगढ़ की जनता इस कांग्रेस शासन से कराह रही है। ऐसी सरकार जो घमण्ड में है, जो गुरूर में है, ऐसी सरकार, जिस सरकार को छत्तीसगढ़ की जनता से कोई लेना-देना नहीं है। यह सरकार केवल पहला, दूसरा, तीसरा काम भ्रष्टाचार कर रही है। जहां से पैसे आएं, वह आ जाएं। यह मैं नहीं बोल रहा हूँ यह जल जीवन मिशन बोल रहा है। यह मैं नहीं बोल रहा हूँ यह शिक्षा विभाग का ट्रांसफर और निरस्तीकरण बोल रहा है।

स्कूल शिक्षा मंत्री (डॉ. प्रेमसाय सिंह टेकाम) :- यह आपके शासन के समय में हुआ होगा।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- यह मैं नहीं बोल रहा हूँ। यह शैलेश पाण्डे जी बोल रहे हैं।

डॉ. प्रेमसाय सिंह टेकाम :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, यह सब भारतीय जनता पार्टी के शासनकाल के समय हुआ है।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, यह शैलेश पाण्डे जी बोल रहे हैं कि थाने में रेट लिस्ट टांग दो। यह मैं नहीं बोल रहा हूँ। हमारे वह विधायक नहीं हैं वह बोल रहे हैं। आखिर इस प्रदेश में क्या हो रहा है?

डॉ. प्रेमसाय सिंह टेकाम :- आप शांत खड़े हैं?

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं कुछ नहीं बोल रहा हूँ। मैं इसीलिये कह रहा था कि यहां सदन में सब मंत्री, विधायक, सब अधिकारी रहें। हम किन कमियों को बता रहे हैं। यह लोकतंत्र का एक पार्ट है कि विपक्ष के लोग सरकार की कमियों को बताते हैं। सरकार उसको सुधारने की कोशिश करती है, पर यहां तो गंभीरता ही नहीं है।

नगरीय प्रशासन मंत्री (डॉ. शिवकुमार डहरिया) :-तें लिखकर दे दे, बोले के का जरूरत हे।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- अइसे हे सुनबे तो कुछ दिमाग में घुसही। जतेक लिखकर आथे ओकर ले ज्यादा लिफाफा आ जथे। ओला देखके नइ फर्सत हे।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, राजनांदगांव जिले में नक्सलवाद समाप्त हो गया था या नहीं हो गया था ? गरियाबंद में नक्सलवाद समाप्त हो गया था या नहीं हो गया था ?आप तो उसी के नजदीक से आते हैं कांकेर में नक्सलवाद की घटनाएं बंद हो गईं थीं। बलरामपुर, कवर्धा यहां पिछले 10 सालों से नक्सलवाद की घटनाएं जीरो हो गयी थी अब वहां पर भी नक्सलवाद सिर उठा रहा है। माननीय मुख्यमंत्री जी बोलते हैं कि हमने नक्सलवाद पर नियंत्रण कर लिया। मेरे पास आंकड़े हैं। पूरे देश में

छत्तीसगढ़ में सबसे ज्यादा नक्सल घटनाएं हो रही हैं। पूरे देश में छत्तीसगढ़ में नक्सलियों के द्वारा सबसे ज्यादा सिविलयन की हत्या हो रही है। पूरे देश में छत्तीसगढ़ में नक्सलियों द्वारा सबसे ज्यादा पुलिस की हत्या हो रही है। क्या हो रहा है ? यह टारगेट किलिंग है। यह लोकतंत्र की हत्या है। लोकतंत्र खतरे में है। सरपंच, पंच इस्तीफा दे रहे हैं। भारतीय जनता पार्टी के पदाधिकारी इस्तीफा दे रहे हैं। कल आपके लोगों को भी यह परिस्थिति बर्दाश्त करनी पड़ेगी। भारतीय जनता पार्टी के 4 कार्यकर्त्ताओं की हत्या होती है सरकार में किसी को फुर्सत नहीं है कि उनके प्रति दो शब्द श्रद्धासुमन अर्पित कर दें। सरकार में किसी को फुर्सत नहीं है कि उनके घर जाकर मिल लें। क्यों, भारतीय जनता पार्टी का कार्यकर्त्ता, कार्यकर्त्ता नहीं है, इस प्रदेश का नागरिक नहीं है। आप उनको कुछ आर्थिक सहायता दे दें।

श्री कवासी लखमा :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, छोटे डोंगर वाली घटना में मैं खुद उनके परिवार से मिलकर आया हूँ। आप असत्य न बोले।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, उनको कुछ आर्थिक सहायता दे दें।

श्री राजमन बेंजाम :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, इन लोग एक एक्सीडेंटल केस को भी हत्या से जोड़ रहे हैं।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, महारानी के लिए 5 करोड़ के फूल बिछाएं जा सकते हैं, पर छत्तीसगढ़ के नागरिक की हत्या होगी तो उसके लिए 5 लाख रूपये भी नहीं होगा। यह क्या हो रहा है ? छत्तीसगढ़ प्रदेश का पैसा इसी के लिए है। आंध्रप्रदेश में 18 नक्सली घटनाएं, बिहार में 65 नक्सली घटनाएं होती हैं छत्तीसगढ़ में 263, 315, 255 नक्सली घटनाएं होती हैं। मैं नक्सल मौतों के बारे में कहना चाहूंगा...।

श्री उमेश पटेल :-माननीय बृजमोहन भईया, क्या है? भारतीय जनता पार्टी तिल का ताड़ बनाने में इतनी माहिर है। आप तो घांस की माला को भी सोने की माला में बदल देते हो।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- ऐसा है फर्जीवाड़ा करने में कांग्रेसी माहिर हैं। जो बेचारे राष्ट्रीय नेता आये थे न, वह सोने की माला पहनकर समझकर चले गये। उसको जाकर देखते हैं तो वह माला घास की निकली। क्योंकि मैं देख रहा था।

श्री शिवरतन शर्मा :- यहां भी फर्जीवाड़ा हो गया।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- बृजमोहन जी, वह अंदर से अलग दिये थे न, वह दिखाने के लिए थी।

श्री उमेश पटेल :- क्या है कि उन लोगों को आर्ट की समझ थी। वह आर्ट था। यहां की संस्कृति का, यहां के लोगों का वह आर्ट था। उसकी समझ थी, इसलिए लोगों ने रखा। आप उसको गलत समझ गये। आपको लगा कि यह सोने की माला है।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय उपाध्यक्ष जी, मैं टी.व्ही. में फोटो देख रहा था। जब मंच पर चढ़ रहे थे तो माननीय मुख्यमंत्री जी माला पहना रहे थे। वह लोग हाथ लगाकर देख रहे थे कि यह सोने

की है क्या? माननीय उपाध्यक्ष महोदय, छत्तीसगढ़ को अपराध का, नशे का, सट्टे का, माफियाओं का, भ्रष्टाचार का, कोयला माफियाओं का, वन माफियाओं का गढ़ बना दिया। वन जीवों का शिकार तो ऐसे हो रहा है। हाथी का शिकार ऐसे हो रहा है, जैसे कोई चूहे को मार रहे हैं।

श्री शैलेश पांडे :- भैया, यह लिखकर कौन दिया है?

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, जब देखो तब हाथी की हत्या हो गई, हाथी की सड़ी-गली लाश मिली, करेन्ट से हाथी मर गया। एक भी हाथी की रिपोर्ट नहीं आई कि कि उस हाथी के दांत थे या नहीं, उसके अस्थि-पंजर थे या नहीं, मारने वाले ने क्यों मारा, मारने का उद्देश्य क्या था? मारने वाले भी आपके लोग हैं, दिखाने वाले भी आपके लोग हैं और खाने वाले भी आपके लोग हैं।

श्री अजय चन्द्राकर :- तस्करी कराने वाले लोग भी आपके हैं।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- देखिये, मैं आपको बता दूं कि छत्तीसगढ़ संकट में है। जंगलों पर एक विशेष वर्ग का राज हो गया है। वह जंगलों को काट रहा है, तबाह कर रहा है। वह शिकार कर रहा है। सब मंत्री आंख बंद करके मत बैठो, कल आपको भी भुगतना पड़ेगा। आपको सबको मालूम है कि 10 अपराध में 8 अपराधी कौन होते हैं। वही लोग जंगलों में घुस गये हैं। बाहर से आ रहे हैं। उनको जंगलों का ठेका मिल रहा है। मुझे कोई सपना नहीं आता है। मुझे अधिकारी बताते हैं, कार्यकर्ता बताते हैं कि सर, हमारे हाथ में कुछ नहीं है। हमको तो ऊपर से निर्देश आता है, उनको देना पड़ता है। दादी, अगर आदिवासी संस्कृति जीवित रहेगी, जंगल बचेंगे तो जीवित रहेगी। अगर जंगल पट जायेंगे तो छत्तीसगढ़ की संस्कृति खत्म हो जायेगी।

श्री अजय चन्द्राकर :- नहीं तो [XX] हो जायेगा।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, हत्या की, बलात्कार की घटनायें बढ़ रहीं हैं।

श्री अमितेश शुक्ल :- माननीय, यह क्या बोले रहे हैं, इसको विलोपित कर दें।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- हॉ, हॉ, छत्तीसगढ़ को [XX] बनाने का काम कांग्रेस पार्टी भूपेश बघेल जी की सरकार कर रही है।

श्री अमितेश शुक्ल :- [XX] अमर्यादित है।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- बताईये, कहां अमर्यादित है।

श्री अजय चन्द्राकर :- यह शब्द क्यों असंसदीय है, यह बता दीजिए। फिर हम उसको बतायेंगे कि क्यों संसदीय है।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- महाराज, [XX] का अर्थ बता दीजिए न कि [XX] का अर्थ क्या होता है?

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- रविन्द्र चौबे जी, आप भी इस सदन के सदस्य रहे हैं, आज भी हैं, आज मंत्री हैं। पहले विधायक थे, उसके पहले मंत्री थे। क्या पहले बिजली की कटौती होती थी? मुख्यमंत्री जी का विभाग है। आज बिजली कटौती शुरू हो गई। रायपुर शहर में बिजली कटौती शुरू हो गई। 24X7

बिजली वाला राज्य था, आज बिजली कटौती वाले राज्य की श्रेणी में आ गया और यह सरकार अपने कंधे थपथ्पाती है। कल के मेरे प्रश्न में 13 हजार करोड़ के बताया है, माननीय उपाध्यक्ष जी, क्या सी.एस.ई.बी. के लिए कोई नियम, कायदे, कानून नहीं है? क्या उसके लिए वित्त विभाग नहीं है? उसके लिए accountant general नहीं है क्या? 100 रूपये की चीज को 5000 रूपये में खरीदा जाता है और जब हम प्रश्न पूछते हैं तो कहते हैं कि यहां पर नियम लागू नहीं होता है, खरीदी भण्डार नियम लागू नहीं होता है। सी.एस.ई.बी. हजारों-करोड़ों रूपये के घाटे में जा रहा है। बिजली उत्पादन कम हो रहा है। नये पावर प्लांट नहीं लग रहे हैं। छत्तीसगढ़ में पहचान बनी थी, छत्तीसगढ़ में उद्योगपति इसलिए आना चाहते थे कि यहां पर सस्ती बिजली मिलती है, यहां पर 24 घंटे बिजली मिलती है, यहां पर पानी मिलता है।

उपाध्यक्ष महोदय :- पर्याप्त समय आ गया है। आपकी सभी बात आ भी गई है। कृपया 5 मिनट में अपनी बात समाप्त करें।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय उपाध्यक्ष जी, interference के कारण जो लोग पहले बात कर चुके हैं, मैं उनको नहीं बोल रहा हूं। मैं नई बातों को ही बोल रहा हूं।

उपाध्यक्ष महोदय :- 5 मिनट में अपनी बात समाप्त करें।

श्री उमेश पटेल :- बृजमोहन जी, आप पुरानी बातों को repeat कर रहे हैं।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- कौन सी बात repeat हुई, जरा बजाईये?

श्री उमेश पटेल :- बिजली वाली बात repeat हुई है।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- मैं उससे अलग बोल रहा हूं। मैं सबका भाषण सुनकर उससे नया विषय में ही बोल रहा हूं।

उपाध्यक्ष महोदय :- आप लोग आपस में समय बर्बाद न करें।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, हम सब लोग रायपुर में रहते हैं। आज यहां की स्वास्थ्य सुविधाओं की क्या हालत है? छत्तीसगढ़ में एक भी शासकीय हॉस्पिटल नहीं है जहां पर open heart surgery हो सकें। मैंने तीन बार प्रश्न पूछा है। छत्तीसगढ़ का गरीब आदमी कहां जायेगा? ब्लड टेस्ट करने के लिए दवाइयां नहीं हैं। बड़ी-बड़ी बात कर रहे हैं। छत्तीसगढ़ की नई राजधानी में विश्व स्तरीय अस्पताल बनेगा। कब बनेगा, कौन बनायेगा, कहां से बनेगा? आप विश्व स्तरीय अस्पताल बनायेंगे।

श्री अजय चंद्राकर :- वह विश्व स्तरीय अस्पताल का नक्शा बनायेंगे।

श्री रामकुमार यादव :- हमर जमाना मा आपरेशन कराय करके आंखी ला थोड़ा बहुत करत रहीसे, उहुं ला बंद करा देया।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- अभी माननीय रविन्द्र चौबे जी चले गये। पिछले साढ़े चार साल में छत्तीसगढ़ में एक भी नई सिंचाई परियोजना आई हो तो जरा बतायें। क्या हुआ अहिरन नदी का? क्या हुआ अहिरन, खारंग, खुंटाघाट का? क्या हुआ महानदी, तांदुला नदी का? क्या हुआ सिकासेर, महानदी का? खाली बात, बातों का जमाखर्च। मुख्यमंत्री जायेंगे। आजकल वह क्या चल रहा है, जो मुख्यमंत्री जी गांव-गांव में कार्यक्रम कर रहे हैं?

श्री शिवरतन शर्मा :- भेंट मुलाकात।

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- 15 साल तक तो तरवा का मेंटेनेंस नहीं हुआ, उसी मेंटेनेंस में सब फण्ड जा रहा है। पानी बह रहा है। आप लोग ध्यान नहीं दिये।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- आपको मंत्री नहीं बनायेंगे।

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- ठीक है न मंत्री नहीं बनायेंगे, लेकिन जो बात है, उसको तो बोलने दीजिये।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- आखिर क्या हुआ? छत्तीसगढ़ की सिंचाई सुविधा क्यों नहीं बढ़ रही है? एक भी योजना नहीं आई। क्यों नहीं आई? छत्तीसगढ़ के किसानों को क्या सिंचाई की जरूतर नहीं है?

श्री अजय चंद्राकर :- अमितेश शुक्ल जी को सिंचाई बना देते तो श्यामा भैया से ज्यादा काम करके बताते। वह तो दुर्भाग्य है कि वह बने नहीं।

श्री अमितेश शुक्ल :- इसमें कोई शक नहीं है। (हंसी)

श्री शिवरतन शर्मा :- क्या है, आपका डायलाग है न कि ऐसा कलयुग आएगा। उसको आप फिर से एक बार सुना दीजिये।

श्री अमितेश शुक्ल :- रामचंद्र कह गये सिया से कि ऐसा कलयुग आएगा जब हंस चुभेगा दाना।

श्री शिवरतन शर्मा :- और आगे।

श्री अमितेश शुक्ल :- मैं आगे नहीं बोलूंगा।

श्री शिवरतन शर्मा :- आगे-आगे।

श्री अमितेश शुक्ल :- अब मैं आगे नहीं बोलूंगा।

श्री अजय चंद्राकर :- बोल दो, नहीं तो आप भी मंत्री नहीं बनने वाले हो। बोल दो, घबराओ मत।

श्री शिवरतन शर्मा :- आप पं. रविशंकर शुक्ल जी के पोते हो।

श्री अजय चंद्राकर :- आज हमने उनका नाम लिया है।

श्री शिवरतन शर्मा :- आज हमने उनका नाम लिया है। उनसे प्रेरणा लेकर कुछ तो सही बात को बोलिये।

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- अधिग्रहित भूमि का मुआवजा आप लोग क्यों नहीं दिये? दे देना था।

श्री अमितेश शुक्ल :- बोल तो रहा हूं हंस चुभेगा दाना।

श्री शिवरतन शर्मा :- उसके आगे।

श्री अजय चंद्राकर :- नहीं बोलेंगे, तो [XX] हो जायेगा।

उपाध्यक्ष महोदय :- चलिये, आपस में सवाल न करें।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय उपाध्यक्ष जी, छत्तीसगढ़ का किसान कराह रहा है। छत्तीसगढ़ का किसान परेशान है, वह कर्जे में डूब रहा है। माननीय कृषि मंत्री जी के जिले में 100 करोड़ के टमाटर खेतों में फेंके। वह खून के आंसू रो रहे हैं। इनके नेता आते हैं, फूड पार्क लग गये, किसान आता है, टमाटर बेचता है । केचअप बनता है और पैसा लेकर घर चला जाता है । हमें लज्जा आनी चाहिए कि किसान अपने टमाटर को खेत में फेंकने के लिये मजबूर है और सरकार अपनी महारानी के लिये गुलाब के फूल बिछाकर स्वागत में है। यह क्या हो रहा है, क्या इससे छत्तीसगढ़ बनेगा ?

आबकारी मंत्री (श्री कवासी लखमा) :- बार-बार उसी को बोल रहे हैं ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- सौ बार बोलेंगे । माननीय उपाध्यक्ष महोदय, रायपुर शहर में भूमाफियाओं का खुला खेल चल रहा है । मैंने विधानासभा में ध्यानाकर्षण भी लगाया था कि अवैध प्लाटिंग हो रही है, अवैध प्लाटिंग में नगर-निगम सड़क के लिये पैसे सेंक्शन कर देता है । भाठागांव, काठाडीह, मठपुरैना, बोरिया, कांदुल, दतरेंगा, डोमा, नयी राजधानी के जोरा, पिरदा, नरदहा, मांढ़र, कबीरनगर, संडोगरी, लालपुर, देवपुरी, छेरीखेड़ी । माननीय मंत्री जी आपकी जानकारी में नहीं है अभी तो एक बड़ा...।

श्री अजय चंद्राकर :- हम जांच करने आरंग गये थे ।

श्री शिवरतन शर्मा :- क्या है मंत्री जी सैंया भये कोतवाल तो डर काहे का ?

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय मंत्री जी, एक मैनपुर की छिंदौला की घटना है । एक आदिवासी की जमीन को दूसरे के नाम चढ़ा दिया और उसके खिलाफ भी 420, 467, 468, 471 । मैंने उन लोगों की जमानत करवाई । मैंने तहसीलदार को कहा कि यह तुम क्या कर रहे हो ? मैंने कलेक्टर को कहा ।

उपाध्यक्ष महोदय :- कृपया समाप्त करें ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, ऐसी ही पुल्हाड़ीघाट की घटना है । पुल्हाड़ीघाट राजीव गांधी जी गये थे । अधिकारी पैसे के लालच में किसी को देखते नहीं हैं । बहुत बुरी हालत है ।

श्री कवासी लखमा :- उन्होंने भी आदिवासियों की जमीन पर कब्जा करके रखा है ।

श्री अजय चंद्राकर :- दादी, अधिकारी पैसा क्यों ले रहे हैं ?

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, पूरे रायपुर शहर में लूट का कारोबार चल रहा है, जमीन पर कब्जे का कारोबार चल रहा है । मुख्यमंत्री जी का वरदहस्त है, कोई अधिकारी उनका कुछ नहीं बिगाड़ सकता । अभी एक नयी योजना ले आये । नयी योजना, वह योजना क्या है ?

श्री अमितेश शुक्ल :- बृजमोहन भाई, क्या है कि मैं एक चीज जानता हूं कि मैं उस समय जब मंत्री था तो एक समिति बनी थी, रविन्द्र चौबे जी उसके अध्यक्ष थे। (व्यवधान)

श्री अजय चंद्राकर :- अब बस उसको रहने दो । (व्यवधान)

श्री अमितेश शुक्ल :- नहीं, बोलने दो । (व्यवधान) ग्रीन बेल्ट बनाया था, आपके डॉ. रमन सिंह जी गवाह हैं, आपकी सरकार ने उसको बदल दिया था । (व्यवधान)

श्री अजय चंद्राकर :- उसको याद करो, कॉपी में लिख लो । उसको कॉपी में लिखकर याद कर लो ।

श्री अमितेश शुक्ल :- पूरा ग्रीन बेल्ट बदलकर उसको सब भूमाफियाओं को परमिशन दे दी गयी थी । डॉ. रमन सिंह जी बैठे हैं, आप उनसे इस चीज को कन्फर्म कर सकते हैं । पूरा ग्रीन बेल्ट इतना बढ़िया बनवाया था ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, माफिया राज चल रहा है, सरकार के संरक्षण में चल रहा है । अभी बीच की एक घटना है कि शंकर नगर में एक किसी का घर था, बंद पडा था । उसके घर का ताला तोड़कर पोताई शुरू हो गयी । मैंने पूछा क्यों तो बोले कि कुछ विशेष समाज के लोग घुस गये हैं और वे बोलते हैं कि हमारा घर है । मैंने पुलिस को फोन किया, पुलिस वाले बोलते हैं कि सर हमको ऊपर से फोन आया, हम कुछ नहीं कर सकते । मुझे आदमी भेजने पड़े, लोगों के मकानों पर कब्जा हो रहा है । कोई बोलने वाला नहीं है, रिवॉल्वर लेकर बार में गोलियां चलती हैं, कोई बोलने वाला नहीं है । आखिर आप राजधानी को क्या बनाना चाहते हैं ? राजधानी में अफीम, ड्रग्स, गांजा, चरस बिकता है । आप रायपुर को क्या बनाना चाहते हैं ? रायपुर को बर्बाद करने का काम यह भूपेश बघेल की सरकार कर रही है । अवैध कॉलोनियां डवलप करने का काम हो रहा है । संतोषी नगर में 50 एकड़ में अवैध प्लॉटिंग और नगर-निगम से रोड । मुझे तो कई बार कोफ्त होती है कि जब नये आई.ए.एस., नये आई.पी.एस. आते थे तो उनमें कुछ जज्बा होता था कि हम काम करके दिखायेंगे । अब नये आई.ए.एस., नये आई.पी.एस. खाली पैसा कमाने वाली पोस्ट का है, वहां पर जाना है । आपने यह सिखा दिया है क्योंकि अच्छी पोस्टिंग चाहिए तो आपको सेवा करनी पड़ेगी, आपको पैसा देना पड़ेगा । आपको इतने पैसा महीने देना है । जिस दिन इस देश का आई.ए.एस., आई.पी.एस. करप्ट हो जायेगा उस दिन इस देश का आई.ए.एस., आई.पी.एस. करप्ट हो जायेगा, उस दिन इस देश को कोई नहीं बचा सकता। इस प्रदेश को कोई नहीं बचा सकता। कम से कम इन दो अधिकारियों के ऊपर में सबको विश्वास होता था कि वे जिले की कमांड करते हैं। आपने तो अति कर दी। अति कर दी। अति कर दी। जूनियर से जूनियर अधिकारियों को जहां कोयला निकलता है, जहां लोहा निकलता है, जहां फैक्ट्रियां हैं, जहां कारखाने हैं, जहां डी.एम.एफ. हैं, वहां पर हर आई.ए.एस., आई.पी.एस. जाना चाहता है। कोई अनुभव की जरूरत नहीं है। जरूरत है तो आपमें देने की कितनी ताकत है? बोली लगाओ। बोली लगाओ।

लगाओ 1 दोगे, 2 दोगे, 4 दोगे, 5 दोगे, 10 दोगे, आखिर यह क्या हो रहा है? माननीय उपाध्यक्ष महोदय, माननीय नगरीय प्रशासन मंत्री जी, पूरे हिन्दुस्तान में नई सड़कें बनाई जाती हैं, किसी सड़क को बंद नहीं किया जाता। बूढ़ातालाब की सड़क को बंद कर दिया गया है।

श्री उमेश पटेल :- बृजमोहन भैय्या, आपके बगल में जो बैठे थे, वे आपका भाषण सुन-सुन के थक गये, वे भी चले गये, बताओ।

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- एक लिमिट टाइम होना चाहिए।

श्री कुलदीप जुनेजा :- रमन सिंह जी अभी सिर्फ इशारा करके निकले हैं। नेता प्रतिपक्ष जी, उन्होंने कुछ इशारा किया है।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- मैं 2 मिनट में अपनी बात समाप्त करूंगा।

श्री उपाध्यक्ष महोदय :- एक घंटा हो गया।

श्री रामकुमार यादव :- तोर लबारी ले घली लजा जात होही। तोर गोठ ला सुनके।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- मुझे वैसे एक घंटे नहीं हुआ है।

श्री उपाध्यक्ष महोदय :- हो गया है। चलिए, 2 मिनट में खत्म कीजिए।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आप भी इस सदन में थे। माननीय मुख्यमंत्री जी ने गरज कर कहा था कि हम स्काई वॉक के बारे में निर्णय लेंगे। हम एक्सप्रेस हाइवे के बारे में निर्णय लेंगे। अरे, भैय्या, सब विधायक, सब मंत्री आपको भी रायपुर में रहना है। अगर रायपुर की सुंदरता नहीं बढ़ेगी, राजधानी अच्छी नहीं बनेगी तो लोग यहां पर नहीं आयेंगे। रायपुर के साथ में सौतेला व्यवहार हो रहा है। यहां के विकास के लिए पैसे नहीं मिल रहे हैं। यहां की सड़कों में गड्ढे नहीं भरे जा रहे हैं।

श्री कुलदीप जुनेजा :- माननीय उपाध्यक्ष जी, रायपुर में इतना सुंदर स्काई वॉक बना है।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- स्कई वॉक के बारे में इतने अनिर्णय की सरकार तो मैंने जिंदगी में नहीं देखी। साढ़े 4 साल में आपने निर्णय नहीं लिया।

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- एक्सप्रेस वे एक साल में टूट गया।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- शारदा चौक के चौड़ीकरण के बारे में माननीय मंत्री जी, मैंने 10 पत्र लिख दिये। मैंने विधान सभा में विषय उठा दिया, इसके बाद क्या बचता है? रायपुर शहर के लिए 44 करोड़ नहीं है।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- बनाया भी कौन है?

श्रीमती संगीता सिन्हा :- मेट्रो रेल भी बनाबो कहे रहिसे।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- हमने 75 प्रतिशत बना दिया है तो 25 प्रतिशत बचा है। हमने 75 प्रतिशत बना दिया। आप उसके बारे में कोई निर्णय नहीं ले रहे हैं। स्मार्ट सिटी के पैसे का स्वार्थपूर्ण

बंटवारा हो रहा है। अगर 1000 करोड़ रूपये रायपुर में ईमानदारी से खर्च हो जाते तो माननीय उपाध्यक्ष महोदय, रायपुर शहर चमक जाता। आज रायपुर शहर को बर्बाद करने का काम कर रहे हैं।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- कोई स्वार्थपूर्ण बंटवारा नहीं हो रहा है। बंदरबांट आपके समय में होता था।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैंने कहा है कि जरा सब लोग सचेत हो जायें।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- उपाध्यक्ष जी, बंद करवाइए।

उपाध्यक्ष महोदय :- चलिए, अब आपके 2 मिनट हो गये।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय उपाध्यक्ष जी, अब आपको आदेश मंत्री जी देंगे न? उनके आदेश से आप चलेंगे।

श्री उपाध्यक्ष महोदय :- नहीं-नहीं, मैंने पहले ही दे दिया था।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- उनके आदेश पर आप चलेंगे?

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- मैं आदेश नहीं मैं माननीय उपाध्यक्ष जी से निवेदन कर रहा हूं।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं अपनी बात कहना चाहता हूं। छत्तीसगढ़ का किसान गाढ़ी कमाई करके अपना धान पैदा करता है। मेहनत करके पैदा करता है। कम से कम उस धान में तो भ्रष्टाचार मत करो। राइस मिल वालों से 120 रूपये वसूली करोगे तो बाजार में चावल महंगा बिकेगा। (शेम-शेम की आवाज) आप लोगों को यह समझना चाहिए। अभी पिछले साल के मिलिंग का अभी पेमेंट नहीं हुआ है। अब 60 रूपये मिलिंग हो रहा है तो 20 रूपये कमीशन लिया जा रहा है।

उपाध्यक्ष महोदय :- ये बात आपने अपने भाषण में बोला है। कृपया समाप्त करें। यह बात आ गई है। आपने यह पहले भी बोल दिया है।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपसे इस बात का आग्रह करते हुए केवल मुख्यमंत्री जी से जवाब चाहता हूं कि सभी किसानों का कर्जा कब माफ होगा? शराबबंदी कब होगी? घर-घर रोजगार कब मिलेगा?

श्री अमितेश शुक्ल :- बृजमोहन भैय्या, आधा जवाब तो मैं दे देता हूं। 2200 रूपये समर्थन मूल्य क्यों पूरा नहीं किया गया? राजिम में 15 दिन तक शराबबंदी क्यों नहीं की गई?

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- यूनिवर्सल हेल्थ कार्ड कब मिलेगा? भूमिहीन परिवारों को घर बाड़ी कब मिलेगी? शहरी भूमिहीन कब्जाधारी को पट्टा कब मिलेगा? महिला को सुरक्षा कब मिलेगी? क्रमोन्नति, पदोन्नति, 4 स्तरीय वेतनमान कब मिलेगा? नियमितीकरण कब होगा? विधवा पेंशन कब मिलेगी? स्व-सहायता समूह का कर्जा कब माफ होगा? 200 फूड पार्क कब खुलेंगे। लोकपाल कब बनेगा? नक्सल समस्या कब दूर होगी? नक्सल पंचायतों को 1-1 करोड़ रूपये कब मिलेगा? जब मुख्यमंत्री जी

अभिभाषण का जवाब देंगे तो वे बताएंगे । वकील और डॉक्टर्स के लिए विशेष कानून कब बनेगा ? गजराज योजना कब लागू होगी ? पर्यटन स्थलों का विकास कब होगा ? आउटसोर्सिंग कब बंद होगी ? एक लाख 25 हजार पदों पर भर्ती कब होगी ? नवीं के सभी बच्चों को सायकिल कब मिलेगी ? सम्पत्ति कर आधा कब होगा ? स्कूल कॉलेज के छात्रों को मुफ्त परिवहन सुविधा कब मिलेगी ?

उपाध्यक्ष महोदय :- अब समाप्त करें ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं को कलेक्टर दर कब मिलेगा? सभी जिलों में वृद्धाश्रम कब स्थापित होंगे ? इंदिरा पेंशन योजना कब चालू होगी ? मितानिनों को पांच हजार रूपया कब मिलेगा ? सुपेबेड़ा में नलजल योजना कब आएगी ? क्या सातवें वेतनमान की बकाया राशि दी जाएगी ?

श्री अमितेश शुक्ल :- लक्ष्मी जी, आपके नाम घोषित हो गया, आप बोलना शुरू कीजिए ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- विद्या मितानिनों का नियमितिकरण होगा ? पुलिस कर्मियों को साप्ताहिक अवकाश कब मिलेगा ? चिटफंड का पूरा पैसा वापस होगा और अंत में खिलाड़ियों के लिए उत्कृष्ट खिलाडी की घोषणा कब की जाएगी ? उनका पुरस्कार कब मिलेगा ?

उपाध्यक्ष महोदय :- चलिए, समाप्त करें ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- ये सरकार राज्यपाल जी का अपमान करके उनके खिलाफ हाईकोर्ट में केस दर्ज करके और कृतज्ञता ज्ञापन प्रस्तुत करने वाले सदस्य को अनुपस्थित करके और मंत्रियों के..अब मैं उनको [XX] नहीं बोल सकता । अगर वे राज्यपाल जी का सम्मान नहीं कर सकते तो फिर उनको अपने बजट के प्रस्ताव लाने का भी अधिकार नहीं है । इसलिए राज्यपाल जी के अभिभाषण पर प्रस्तुत कृतज्ञता ज्ञापन प्रस्ताव का विरोध करते हुए इस [XX], इस [XX], इस [XX] सरकार की निंदा करते हुए अपने भाषण को समाप्त करता हूं ।

उपाध्यक्ष महोदय :- चलिए डॉक्टर लक्ष्मी ध्रुव जी ।

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव (सिहावा) :- माननीय सभापति महोदय, जब राज्यपाल जी पहली बार सदन में आए तब विपक्षी पार्टी ने उनका अपमान किया और यह शब्द जो इन्होंने बोला है, वह इनके ऊपर लागू होता है । क्योंकि राज्यपाल जी ने सरकार के कार्यों का आंकलन किया और गढ़बो नवा छत्तीसगढ़, सेवा जतन सरोकार की भावना से अभिप्रेरित छत्तीसगढ़ मॉडल के तहत जो कार्यक्रम 4 वर्षों तक चलाए गए, उनकी राज्यपाल जी ने बहुत ज्यादा प्रशंसा की है । यह प्रशंसा भारतीय जनता पार्टी के लोगों के पेट में नहीं पची है । उन्होंने ग्रामीण विकास किसान और खेती इसके संदर्भ में हमारे छत्तीसगढ़ के मुखिया भूपेश बघेल की सरकार ने जो काम किया, आज तक किसी भी मुख्यमंत्री ने नहीं किया और न ही भारत के किसी प्रदेश में हुआ । इसीलिए उनके इस ग्रामीण विकास के नियमों को अन्य राज्यों में भी स्वीकार किया जा रहा है । क्योंकि छत्तीसगढ़ किसानों का प्रदेश है, यहां 80 प्रतिशत से ज्यादा किसान निवास

करते हैं । जब तक हम किसानों के लिए काम नहीं करेंगे तब तक छत्तीसगढ़ में समृद्धि कैसे आएगी ? माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं एक दिन शॉपिंग करने के लिए पण्डरी गई थी, तब एक व्यापारी ने कहा कि आपकी सरकार पुन: आएगी । मैंने कहा आप ऐसा क्यों बोल रहे हो ? आपकी सरकार ने किसानों के लिए इतना काम किया है जिसके कारण हमारा व्यापार और व्यवसाय फल फूल रहा है तो निश्चित रूप से अगले चुनाव में आपको आना ही है, रिपीट होना ही है । मैंने उसे धन्यवाद् कहा, क्योंकि छत्तीसगढ़ के किसानों के लिए जो काम प्रदेश के मुखिया ने किया है वह आज तक किसी ने नहीं किया है । ये लोग 15 सालों तक शासन में रहे लेकिन कभी किसानों के लिए सोचा ही नहीं । ऊपर से जब वे मांग करते थे तो उनके ऊपर लाठियां चलाई जाती थी, गोलियां बरसाई गईं । यहां तक उनके साथ अत्याचार करते हुए उन्हें मारकर जेल में ठूंस दिया गया । उन्हें बोनस भी नहीं दिया गया । सारे किसान ऋण से लदे हुए थे । ऐसी स्थिति में वे क्या काम कर पाते ? इस दुख-दर्द को माननीय मुख्यंत्री जी ने समझा और किसानों के लिए तरह-तरह के कार्यक्रम बनाए, नियम बनाए, कानून बनाए और उस कानून के तहत् सबसे पहले जो जहरीले रासायनिक पदार्थ का उपयोग हो रहा था उसका माटीपूजन त्यौहार के तहत् रोका गया। क्योंकि जमीन ही प्रदूषित होगी तो उसमें कौन सा फसल होगा। हम जहरीली पदार्थ खायेंगे तो बीमार पड़ेंगे। आप देख लीजिए, पहले कैंसर नहीं होता था, कितने लोग कैंसर की बीमारी से पीड़ित हैं। दूसरी ओर गोधन न्याय योजना लागू की। गोधन न्याय योजना किसी से छिपी नहीं है। इस योजना के लिए बजट में 400 करोड़ रूपए दिया गया है। गौठान में रीपा योजना दो ब्लाक में शुरू हुई है। मेरा विधान सभा क्षेत्र में सांकरा और गट्टाशिल्ली में उसकी नींव डली हुई है। उसकी जो कार्यक्रम और नीतियां बनी हुई है, वह बहुत ही अच्छा है। इससे निश्चित तौर से हमारे युवाओं को, राजीव युवा मितान के बच्चों को काम मिलेगा, काम सीखने का मौका मिलेगा जिससे बेरोजगारी की दुर्दशा चल रही है। हमारे माननीय प्रधानमंत्री जी जो चार साल के लिए भर्ती कर रहे हैं, इससे उनको छुटकारा मिलेगा। क्योंकि उनके पास पूरा काम आएगा तो उधर ध्यान नहीं जाएगा। अभी 75 गौठानों में से 13 गौठानों में पेंट निर्माण किया जा रहा है और 5,874 गौठानों में चारागाह का काम लिया गया है और पैरादान की भी अपील की गयी है जिसके कारण गौठान की रौनक बढ़ गयी है। जो लोग यह बोल रहे हैं, वे लोग कभी गौठान गये नहीं। पहले जो बड़े-बड़े अधिकारी होते थे, वे लोग भी गांव की ओर जाना नहीं चाहते थे लेकिन जब से यह नरवा, गरवा, घुरूआ, बाड़ी सुराजी योजना लागू हुई, तब से हमारे बड़े अधिकारी, छोटे अधिकारी और जनप्रतिनिधि भी गौठान की तरफ जा रहे हैं, क्योंकि उनको समझ में आ रहा है कि आने वाला भविष्य कुटीर उद्योग का भविष्य होगा जिससे लोगों को रोजगार मिलेगा और इसीलिए अब सब लोग इस ओर ध्यान दे रहे हैं। प्रारंभ में विपक्षी दल के लोग जो उनके आदमी रहते थे, काम नहीं करने के लिए भड़काते थे, काम मत करिए। कई पंचायतों में शासन का पैसा गया और वापस लौट गया। इस तरह से ग्रामीण विकास के लिए जो नियम बनाया गया है, उसमें सबको समर्थन करना चाहिए। जो 15

साल तक नहीं कर पाए, जो यह नीति बननी थी, यह लोग हमेशा विरोध करते दिखाई दिए। 1 करोड़ 07 लाख 53 हजार मीट्रिक टन समर्थन मूल्य पर धान की कीमत दी गयी है। कोदो, कुटकी, रागी को भी समर्थन मूल्य के तहत् खरीदा जा रहा है और सेंट्रल पूल में चावल देने वाला दूसरा राज्य बन गया है। इसी तरह से बिना ब्याज के किसानों को ऋण प्रदान किया जा रहा है। कृषि को बढ़ावा देने के लिए उद्यानिकी को भी बढ़ावा दिया जा रहा है। साथ ही साथ हम कृषि में और आगे बढ़ सकें, इसके लिए कृषि महाविद्यालयों की स्थापना की गयी। साथ ही कृषि यंत्रों का केन्द्र स्थापित किया गया है। 5 लाख 91 हजार मीट्रिक टन मछली, खेती के साथ-साथ मछली का भी उत्पादन किया जा रहा है ताकि किसानों को लाभ मिले, उनकी आमदनी बढ़े। बीज अच्छी क्वालिटी का मिले, इसके लिए भी हमारे मुखिया ने कम्युनिटी सीड बैंक की स्थापना की। जब बीज अच्छा मिलेगा तो फसल अच्छा होगा, फसल अच्छा होगा तो किसानों के यहां पैसा आएगा और छत्तीसगढ़ किसानों का प्रदेश है तो निश्चित तौर से समृद्धि बढ़ती हुई दिखाई दे रही है। मैं इसके लिए माननीय मुख्यमंत्री जी का आभार व्यक्त करना चाहती हूं, धन्यवाद देना चाहती हूं कि आने वाले समय में भी किसानों के लिए बढ़ चढ़कर कार्य करें, नियम बनाएं ताकि हमारे जो किसान वर्ग हैं, वह अपना विकास करते हुए एक अच्छा संदेश दे सकें।

दूसरी तरफ मैं वनों की बात कहूंगी। हमारे मुख्यमंत्री और हमारी सरकार ने वनों के संरक्षण और संवर्धन में स्थानीय निकायों को आजीविका के साथ जोड़ा। आजीविका के साथ कैसे जोड़ा गया ? चाहे तेंदूपत्ता की बात हो, चाहे वनोपज की बात हो। सबको पता है, तेंदूपत्ता का समर्थन मूल्य 2500 रूपये से 4000 रूपये मिल रहा है। इनके कार्यकाल में केवल सात वनोपज को लिया जाता था और जंगल की स्थिति को देखते हुए, आदिवासी वर्ग के समर्पण को देखते हुए क्योंकि वह जल, जंगल और जमीन के लिए हमेशा लड़ाई लड़े हैं और आज यदि वह जंगल बचा है तो केवल आदिवासियों के लिए ही बचा है तो उनके घर में समृद्धि लाने के लिए 65 प्रकार के वनोपज को समर्थन मूल्य में लिया जा रहा है। साथ ही साथ उनकी दशा को और सुधारा गया है। आज तक कोई ऐसा नहीं सोचता था कि आदिवासियों के घर समृद्धि आये। उनको केवल आरक्षण दे दिये, हो गया। जहां तक, ज्यादा से ज्यादा वह एजुकेशन प्राप्त किये। लेकिन हमारी सरकार ने इस वन अधिकार के अंतर्गत व्यक्तिगत पट्टा भी दिया, वन संसाधन अधिकार भी दिया, वन सामुदायिक अधिकार भी दिया और यहां तक कि अभ्यारण्य में भी वन सामुदायिक अधिकार दिया है। यह निश्चित तौर पर दर्शाता है कि वनों की रक्षा के साथ-साथ वनोपज से भी इनके घरों में पैसा आये और इनकी आमदनी बढ़े। तो क्या छत्तीसगढ़ के आदिवासियों को आगे बढ़ाना, छत्तीसगढ़ के लोगों को आगे बढ़ाना और उनके घरों में समृद्धि लाना कोई गलत काम है ? मैं आपसे पूछती हूं कि क्या यह कोई गलत काम है ? अच्छा तो कर रहे हैं। इससे आदिवासी वर्ग खुश हो रहे हैं। साथ ही साथ कैम्पा मद से 6000 नरवा के लिए 345 करोड़ रूपये की राशि दी गई। आजकल जंगली क्षेत्र में हाथी एक बहुत बड़ी समस्या है। जो लोगों के जीवन और उनकी फसल को बर्बाद कर रहे

हैं, उसकी ओर भी सरकार ने ध्यान दिया है। "हाथी मानव संगवारी योजना" लागू की गई है ताकि उनकी फसल की भी रक्षा हो सके और किसी भी प्रकार की दुर्घटना न हो सके। जो जंगली जानवर हैं जैसे-बाघ, मगरमच्छ, कृष्णमृग, पहाड़ी मैना, गिद्ध के संरक्षण के लिए भी उपाय किये गये हैं। इसके अलावा पिछड़ी जनजातियों में पुनर्वास का अधिकार धमतरी जिले से ही शुरू हुआ है और उनको पुनर्वास का अधिकार भी दिया गया है। साथ ही विशेष पिछड़ी जनजाति के लोगों को वर्ग-3 और वर्ग-4 में उनकी योग्यता के अनुसार उनको आगे बढ़ाने के लिए नौकरी दी जा रही है।

उपाध्यक्ष महोदय :- आपके 10 मिनट हो गये हैं। कृपया समाप्त कीजिए।

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, साथ ही साथ 562 खाद्य प्रसंस्करण इकाइयां, घोटूल।

उपाध्यक्ष महोदय :- एक मिनट। आप बैठ जाइये। सभी माननीय सदस्यों के लिए 10-10 मिनट का समय निर्धारित है। आप सभी अपनी बात इसी 10 मिनट के अंदर समाप्त करियेगा। डॉ. लक्ष्मी ध्रुव जी।

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, नई पीढ़ी को संस्कृति और शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़ाने के लिए छात्रावास की व्यवस्था की गई है, शिष्यवृत्ति की व्यवस्था की गई है। "राजीव युवा उत्थान योजना" का भी कार्य किया गया है। "जवाहर उत्कर्ष योजना" के तहत् आदिवासी बच्चों को और सामान्य वर्ग को भी पढ़ने का मौका दिया गया है ताकि यह बच्चे पढ़कर आगे बढ़े। "पेसा कानून" के लिए बहुत दिनों तक आंदोलन हुए। 15 साल तक आंदोलन हुए, लेकिन इन लोगों ने "पेसा कानून" के लिए ध्यान नहीं दिया और एक तरफ हमारी सरकार है जिसने "पेसा कानून" का क्रियान्वयन किया। उसी तरह से "राजीव भूमिहीन किसान योजना" के लिए भी 326 करोड़ रूपये की सहायता दी है ताकि आगे चलकर वह भी एक भूमि का मालिक बने। स्व-सहायता समूहों के ऊपर भी ध्यान दिया। 2 लाख, 48 हजार, 134 रूपये है।

उपाध्यक्ष महोदय :- कृपया आप समाप्त करें। केशव प्रसाद चंद्रा जी।

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- ताकि महिलाओं का विकास हो। गांव में जो महिलाएं हैं वह भी अपना जीवन-यापन कर सके, स्वावलंबी बन सके, इसके लिए भी काम किया गया। श्रमिक कल्याण के लिए भी "मुख्यमंत्री श्रमिक सियान योजना", शिक्षण-प्रशिक्षण, मुख्यमंत्री नोनी-बाबू और बच्चों के लिए भी नि:शुल्क कोचिंग क्लास की व्यवस्था की गई। इसी तरह से राजीव युवा मितान क्लबों का निर्माण किया गया ताकि वह सामाजिक, सांस्कृति कार्य कर सके, समाज के प्रति जवाबदेह बन सके। इसके लिए भी 13 हजार, 107 क्लबों की स्थापना की गई है और वह अपने कार्यों में सक्रिय हो गये हैं। खेलों इंडिया के माध्यम से खेल की अधोसंरचना का भी विकास किया। आवासीय, गैर आवासीय, छत्तीसगढ़ ओलम्पिल खेल का आयोजन किया गया, जिससे छत्तीसगढ़ में एकता और समरसता की भावना पैदा हुई। संगीता

मैडम ने इसको बहुत अच्छे से बताया। प्रशासनिक अधोसंरचना की ओर भी उन्होंने काम किया है। 6 नये जिले, 19 नये अनुभाग और 43 नये तहसील बनाये हैं। यह कोई मजाक बात नहीं है। जब भी मुख्यमंत्री हमारे क्षेत्र में गए तो हम लोगों ने कहा कि यहां से तहसील इतने किलोमीटर है, यहां पर तहसील कार्यालय की स्थापना होनी चाहिए । ये स्थान जिला के लायक है, यहां जिला बनना चाहिए तो मुख्यमंत्री जी ने जनता की बात सुनी और सुनने के पश्चात् तुरंत निर्णय लिया और प्रशासन का विक्रेन्द्रीयकरण किया गया । उसी तरह सड़क अधोसंरचना के तहत आप देख रहे हैं चाहे भारतमाला परियोजना हो, ए.डी.बी. हो, पी.एम.जी.एस.वाई. हो, चाहे केन्द्रीय सड़क निधि हो, चाहे प्रधानमंत्री ग्राम सड़क हो, सभी तरफ सड़कों का जाल बिछाया गया है । बरसात में बहुत सारी सड़कें खराब हो गई है, उसका भी जीर्णोद्धार करने के लिए काम किया जा रहा है ।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, उसी तरह जनता को विमानन सेवा भी देने का प्रयास किया गया है । जगदलपुर, बिलासपुर, कोरबा, बैकुण्ठपुर और अंबिकापुर में भी विमानन सेवा देने का काम हो रहा है । विपक्ष के साथीगण बेरोजगारी की बात कहकर बहुत चिल्लाते हैं, केन्द्र सरकार में बेरोजगारों की संख्या बहुत ज्यादा है, लेकिन यहां बेरोजगारी दर निम्न स्तर पर है और इस श्रेणी का पंजीयन योजना लागू है । इसके लिए 337 करोड़ आवंटित किया गया है । उपाध्यक्ष महोदय, आपने बोलने का मौका दिया, उसके लिए धन्यवाद ।

श्री केशव प्रसाद चंद्रा (जैजैपुर) :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं माननीय राज्यपाल के अभिभाषण के कृतज्ञता ज्ञापन में बोले कर मैं खड़ा होए हवं । सत्ता पक्ष अउ विपक्ष के बहुत अकन साथी मन बोलिन हवय । राज्यपाल जी के अभिभाषण सरकार के काम अउ सरकार के नीयत ला दर्शाथे । एक तरह से सरकार के काम के प्रतिबिम्ब हे कि सरकार के मंशा का हे, का करना चाहत हवय अउ सरकार जेन दिन सत्ता में अईस, नरवा, गरूवा, घुरूवा, बारी के जे दिन नारा दिस, हमर एक सम्मानीत सदस्य ह कहिस कि मुख्यमंत्री जी सावधान रहिहौ । योजना ला देख के बनाहव काबर के छत्तीसगढ़ के पहिली सरकार डबरी में चल दिस । दूसरा सरकार रतनजोत मा चल दिस अउ यह तीसरा सरकार हे, कहीं ये सरकार ह नरवा, गरूवा, घुरूवा, बारी में झन चल दै । साथी मन गोठान के बहुत अकन प्रशंसा करिन हे । मैं नहीं समझ पाएव कि गोठान का हे, गोठान में सरकार ह काबर पईसा लगावथे अउ गोठान के उपयोगिता का हे । न कोई गोठान में गरूवा रहाय, मुख्यमंत्री जी कहिथे त एक सेकण्ड नहीं लागय । अईसे गोठान बना देबो, पांच एकड़ ला कांटा तार में घरे देबो, ओकर तीर मा चारा लगा देबो, कट्टा राख देबो, कट्टा पैरा ला काटही । कोटना बना देबो, दू झन चारवार राख देबो, जतका गरूवा ला ऊंहा खवाही। बोले मा एक मिनट नहीं लागय । कोन करा पैरा कट्टा हे, कोन करा के गोठान मा गरूवा हे, जतका गरूवा सड़क मा हे, अब धीरे से गोठान बने के शुरू होईस तो डे केयर । जानवर ह दिन में रहिही, रात के नहीं रहाय तो रात के जानवर कहां रहिही तो ये गोठान के उपयोगिता कहीं नहीं हे

। मुख्यमंत्री जी के कोन सलाहकार हे, मुख्यमंत्री जी ह कहिथे कि मैं किसान के लईका आंव । गोठान के उपयोगिता ला मुख्यमंत्री जी ह समझ नहीं पात हे अउ अधिकारी तो अईसे हे कि सरकार के मंशा ला वाह-वाह करबे करही । कलेक्टर दौड़त-दौड़त जाथे, गोठान मा महिला समूह ला इकट्ठा करथे । केचुआ, खाद, वर्मी कम्पोस्ट के अलावा गोठान में कुछ नहीं होवथे, ओ वर्मी कम्पोस्ट ह भी गुणवत्ताविहीन हे, जेन ला किसान मन ला जबरदस्ती 10 रूपया किलो में यूरिया लेना हे, सुपर फास्फेट लेना हे, कोई भी खाद लेना हे तो तोला एक बोरा के साथ मा 30 किलो के वर्मी कम्पोस्ट ले ला लागही, तभे तोला खातु मिलही । ये मजबूरी किसान मन करा कहे हें ।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, अभी हमारा ध्रुव मैडम ह रिपा के बारे में बतईन । सरकार के सोच बढ़िया हे । गांव में भी उद्योग बनय । गांव के महिला मन एक-एक ब्लॉक में दू दी जगह पार्क बनात हवयं । गांव के युवा मन ला रोजगार मिलय, लेकिन बनाए बर शुरू नहीं करे हें, भ्रष्टाचार शुरू होगिस । ध्रुव मैडम, 2 करोड़ रूपया स्वीकृत होय हे, आप अपन सरकार ला बोला कि योजना बढ़िया हे।

डॉ.(श्रीमती) लक्ष्मी ध्रुव :- नहीं भ्ईया, बनना चालू हुआ है, बन रहा है।

श्री केशव चन्द्रा :- बनना चालू होइस हे, भ्रष्टाचार शुरू हो गइस कहत हव। बनना शुरू होइस हे, भ्रष्टाचार शुरू हो गय। मोर जांजगीर-चाम्पा जिला मा जहां-जहां स्वीकृत होय हावय, कोई पंचायत ला ओकर काम नइ दे हावय। ठेकेदार जा के काम करत हे, कागज मा पंचायत एजेंसी हे। लेकिन ठेकेदार कोन जानी कोन हाउस ले जाथे। कलेक्टर कहथे कि हम का करबो, हाउस के आदमी हे। रामकुमार जी ज्यादा जानत होही कि कोन हाउस के हे। हाउस के आदम हे, ओला नइ देबो तो हमर कलेक्टरी नइ रहय। जिला के सी.ई.ओ. कहथे कि विधायक जी ओला काम नइ देबो तो हम जिला पंचायत के सी.ई.ओ. नइ रहन। तो जे से सरकार के भावना हे, अगर शुरूआत मा ही भ्रष्टाचार छू गइस तो मोला नइ लागत हावय कि पोहा बनाय के मशीन एको दिन चलही। हल्दी कूटे के मशीन एको दिन चलही। चाउर बनाय के मशीन एको दिन चलही। हां, अधिकारी अउ नेता मन के घर परिवार चूल्हा अउ बर्तन दू-चार दिन जरूर चल जही, लेकिन गांव के गरीब महिला, जे मन ला रोजगार के सपना दिखात हावा, आप रोजगार के अवसर के सपना दिखावत हावा, ओ रोजगार मोला मिलही, मोला ऐसे महसूस नइ होत हावय।

श्री रामकुमार यादव :- विधायक जी, लइका हा जन्मेच नइ हे तो तू जान डारा कि चोर होत हे कि डाकू होवत हे?

श्री केशव चन्द्रा :- बिलकुल, अगर लइका पेट हावय तो होही, कुछ न कुछ तो होही। कैसे नइ जानहा कि नइ होवत हे।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, ये हा सरकार के 5वां अभिभाषण हे। 4 साल तक ठगत चुटुल देवत आइस हे। ले खा ले बाबू, चुपे रव। आज एक रूपया के चुटुल का खा ले कल तोर बर बने आइसक्रीम ले देहव। जितना घोषणा करे रहिस हावय , घोषणा के दम मा सरकार बने हावय। ये सदन मा कहत गइन

कि ये घोषणा हा 5 साल बर हे, 5 साल हो जान दे। अब दिन गिना कि कितना दिन बाचे हावय। 5 साल होय मा कतका दिन बाचे हावय। राम कुमार यादव जी, आदमी मन से कैसे सामना करिहा, ये अनियमित कर्मचारी, जेला नियमित करबो कहे रेहा, तुहर भरोसा मा, तुंहर विश्वास मा, सबसे बड़े बात प्राण जाय पर वचन ना जाय, कहके राजा साहब लिख-लिख के दे देइस। सब ला लिख-लिख के दे दिन, ओ बेचारा मन प्लास्टिक कोटेड करके अपन मार्कशीट ला धरते, तैसनहे धरे हे। चिराय झन रे ददा, ता अनियमित कर्मचारी मन ला कैसे नियमित करिहा। संविदा कर्मचारी ला आश्वास दे हावा। प्लेसमेंट ना नियुक्त कर्मचारी घलो आश्वासन दे हा कि हम आउट सोर्सिंग नइ करन, भारतीय जनता पार्टी आउट सोर्सिंग करिस। हम आउट सोर्सिंग नइ करन, हम रोजगार देबो, नियमित करबो, तुंहर लोक-लइका के भविष्य बनाबो, दैनिक वेतन भोगी कर्मचारी मन ला नियमित करबो करके आश्वासन दे हा। काल देखे हा रायपुर में कतका बढ़िया मेला लगे रहिस हे, हम गय रहेन। उहां आंगनबाड़ी कार्यकर्ता और सहायिका मन आय रहिस हे। ओ मन ला आश्वासन दे रहा, मितानीन मन ला कहे रहा कि तोला मानदेय दे देबो, केवल प्रोत्साहन राशि मा काम नइ चलत हे बहिनी, घर-घर मा घूम के बड़ बूता करत हावस, मानदेय तय करबो। केवल प्रोत्साहन राशि नहीं। ओ मन ला कारोना काल मा कहे राहा ओही 5 हजार राशि ला नइ दे हावा। कोरोना काल के, हम सब घर मा लुकाय रहेन लेकिन मितानीन घूम-घूम के बुता करत रहिस हे, ओखरो राशि ला नइ देय हावा। गौ सेवक मन ला आश्वासन दे राहा कि भारतीय जनता पार्टी तुमन ला निकाल दीस, हमर सरकार आन देवा। भारतीय जनता पार्टी गरूवा के सेवा करने वाला नइ हावय, हमन असली गौ सेवक हन, तुमन ला राखबो, ओ मन के का होवत हे ? तुंहरे सरकार में जनभागीदारी मा पढ़ाय रहिस हे, मध्यप्रदेश रहिस तो स्कूल खोले रेहा, 8वीं स्कूल खोलना हे तो खोल लेवा, जनभागीदारी मा गुरू जी पढ़ाही। हाई स्कूल खोलना हे तो खोल लेवा, जनभागीदारी मा स्कूल मा पढ़ाही। 4 साल, 5 साल, 6 साल, 7 साल, 8 साल पढ़ाय रहिन, वोमन ला कहे हावय तुहुं मन ला नौकरी देबो, कालेज मन मा हर साल संविदा मा जतका प्राध्यापक राखत हवव, भर्ती त करत नई हवव, माननीय उपाध्यक्ष महोदय, हसौद म शासकीय नवीन महाविद्यालय हसौद, विद्यार्थी मन के संख्या 2023 अऊ प्राध्यापक 4, रामकुमार ला कईहंव त 2023 गरूवा ल चार ठन लाठी मां हांके नई सकव, 2023 लईका ला कईसे...।

श्री रामकुमार यादव :- मैं वो यादव हंव वो कि गांव भर के गरूवा ला एक ठन लाठी मा चरा देथंव ।

श्री केशव प्रसाद चन्द्रा :- तुमन एक ठन लाठी मा राजा ला भगा देहव । लेकिन 2023 विद्यार्थी ला 4 प्राध्यापक पढ़ात हावें । वो प्राध्यापक मन ला आश्वासन दे रेहेव, तुमन ला नियमित करबो कहिके । माननीय उपाध्यक्ष महोदय, पुराना पेंशन बहाल कर देहन करके जगह-जगह पोस्टर लगाय हव, माला पहिने हंव, लेकिन वो गांव के गरीब, निराश्रित ला, वो बेवा ला, वो दिव्यांग ला, जे चल नई पाथ

हवै, वो वृद्ध ला, जेमन गांव मा पेंशन मिलथे, तेमन ला केहे रहव, तुंहर पेंशन ला बढ़ाबो हमर सरकार त बनन दे, 7-8 महीना बचे हे, बढ़िया बात हे, अभी बजट में ले आवव, बढ़ा देवव, नई त एमन गांव म छेंकही त तुमन जानिहव, छेंकबे च करिहीं, रोका-छेका लगाहीं, एमन ला गोठान म ओइलाही । माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मोर दूनो हाथ में लड्डू रहि त खाहूं तो एके ठन मुंह म, तुमन ला गौठान मा धांध दिही । माननीय उपाध्यक्ष महोदय, जमीनी हकीकत काय हे ।

उपाध्यक्ष महोदय :-चलिये, समाप्त करें ।

डॉ. (श्रीमती) लक्ष्मी ध्रुव :- जर्सी गाय के लिये काखा डाले के दौड़य ना ।

श्री केशव प्रसाद चन्द्रा :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मुख्यमंत्री ला कहना पड़थे कि राजस्व विभाग के काम अच्छा नई हे, मुख्यमंत्री ला समीक्षा करना पड़थे, एखर ले अऊ शर्मनाक बात ए, मुख्यमंत्री पूरा प्रदेश के राजस्व विभाग के समीक्षा करै, जहां बटांकन के काम नई होवथे, सीमांकन के काम नई होवथे, बंटवारा के काम नई होवथे, फावती नई कटथे, हर काम मा पैसा के डिमांड होथे, एखर लिये माननीय मुख्यमंत्री ला समीक्षा करना पड़थे, निर्देश देना पड़थे कि तत्काल कराय जाये, काबर कि पटवारी मुख्यालय म नई हे, काबर कि सबके नियुक्ति पेमेंट सीट मा होवथे, कलेक्टर के कहीं अंकुश नई ए, कलेक्टर एक भी व्यक्ति ला बोल नई पाथे, एक भी कर्मचारी ला कंट्रोल नई कर पाथे । आपके सरकार के ए जमीनी हकीकत ए । माननीय उपाध्यक्ष महोदय, राज्यपाल जी ला बोलवादिन, सड़क के निर्माण होवथे, कहां सड़क के निर्माण होईस, एमन के सरकार मा, राजनांदगांव विधान सभा, फिर ये अलकर गोठियाथे, हाथी कथे तेखर विधान सभा, वोखर बाद शर्मा जी के विधान सभा, माननीय उपाध्यक्ष महोदय, जब सूची तीन विधान सभा ले निकलय, चौथा विधान सभा म कुछ बुता काम नई रहाय । आज ए सरकार हा काय करथे, दुर्ग के अलावा बाकी जगह परसाद बांटथे, खीर पुड़ी ला दुर्ग मा खात हवय ।

श्री रामकुमार यादव :- एमन 15 साल ले नई बनाईस, जैजेपुर से अभी जो बनथ हावय, तुंहर गोबरा तक । अभी हमरे कार्यकाल में बनथे महोदय । तुंहरे विधान सभा के बात हरै ।

श्री केशव प्रसाद चन्द्रा :- माननीय रामकुमार यादव जी, मोर विधान सभा के 22 सड़क बजट मा एक भी प्रशासकीय स्वीकृति नई मिलिस । काबर कि मैं विपक्ष के विधायक अंव । उंहा के जनता ला सड़क बनाय के अधिकार नइ ये । वोला प्राप्त करे के अधिकार नई ए । अउ त अउ उपाध्यक्ष महोदय, सैजेपुर अनुविभाग के लिये अंतिम प्रकाशन होगे रहिसे, सुनवाई होगिस, दावा आपत्ति होगिस, चूंकि मैं उंहा के विपक्ष के विधायक अंव, बहुजनसमाज वादी पार्टी के विधायक अंव तेखर पायके जैजेपुर के अनुभाग ला नई बनाय बर कांग्रेस के विधायक, रामकुमार यादव जी के विधायक मालखरौदा ला अनुविभाग बना दे गिस

उपाध्यक्ष महोदय :- चलिये समाप्त करिये।

श्री केशव प्रसाद चंद्रा :- सरकार के ये दुर्भावना रहिस। सरकार के ये सोच है। जल जीवन मिशन के बहुत बड़े बात होथे। केन्द्र सरकार की योजना, हर घर ला पानी देना है लेकिन जल जीवन मिशन केवल भ्रष्टाचार के भेंट चढ़थे। मैं पूरे प्रदेश ला नहीं जानव लेकिन मोर जिला में 35 प्रतिशत Above में ठेका दिये गे हे। 35 प्रतिशत सी.एस.आर. का होथे ? तकनीकी स्वीकृति कैसे मिलथे ? ओकर इस्टीमेट कैसे बनाये जाथे ? यदि अधिकारी इस्टीमेट बनाये हे ओकर बाद 35 प्रतिशत Above में काम देना, यह भ्रष्टाचार की तरफ इंगित करथे। लेकिन आज भी मोर विधान सभा मा केवल तीन योजना चालू होये हे। सोलर के जतके योजना बने हे, वह रिकॉर्ड में चालू हे लेकिन एक भी सोलर कहीं भी चालू नहीं हे। मैं दावा करत हव अधिकारी जाकर देख ले, बता दे, जतका पाइप लगे हे, वह गुणवत्ताविहीन लगे हे, जतका नल लगे हे, वह गुणवत्ताविहीन लगे हवय अउ आज 100 करोड़ रूपये के दुरूपयोग अउ 100 करोड़ रूपये मा पानी मिलने वाला नहीं है बल्कि वह 100 करोड़ रूपया पानी में डूबने वाला हवय।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, राजीव युवा मितान क्लब के बात आइस। राज्यपाल जे अपन अभिभाषण में सरकार की उपलब्धि बताये रहिसे कि हम राजीव युवा मितान क्लब के गठन करे हन। आप युवा ला कौन दिशा में ले जाना चाहथन ? युवा के सोच का होना चाही, युवा के दिशा का होना चाही। आप केवल युवा मन ला राजनीति में जोड़कर ओकर भविष्य ला बर्बाद करथन। वो गांव के माता-पिता आपके का बिगाड़े हे ? जे युवा के अभी भविष्य है, बनना है, जीवन ला अभी पढ़ना-लिखना हे, लायक बनना हे। आज वो युवा ला एमा जोड़कर के केवल भ्रष्टाचार अउ गन्दा राजनीति सिखाय के काम करत हव। अउ सरकार एकर उपलब्धि बताथे। युवा मितान क्लब के हमन गठन करे हन ओला रोजगार देबो। जे परिवार अपन सब कुछ ला लगाकर के युवा ला तैयार करै हवय, वह युवा के भविष्य ला बर्बाद करे मा यह सरकार लगे हवय।

श्री कवासी लखमा :- अब हमारे वृद्ध होने के बाद कौन आयेगा ? उन्हीं लोग तो आयेंगे।

उपाध्यक्ष महोदय :- केशव चंद्रा जी, अभी हमारे बहुत से माननीय सदस्यों का भी सूचि में नाम है।

श्री केशव प्रसाद चंद्रा :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, जी, अंतिम है। माननीय मंत्री महोदय बोल दीही कि एमन के बाद कौन आही ता ऊ तो ठीक ही ले लेहे कि समाज पूरा बिगड़ जाये। काबर के शराबबंदी करबो कही, अऊ दुकान खोलथे। कल मोला समझाथ रहिन, बढ़िया शराब ला बेचान दे। माननीय मंत्री जी, आबकारी विभाग और पुलिस विभाग का और कुछ काम नहीं हे, केवल शराब पकड़ना, सेटिंग करना अऊ सेटिंग नइ होथे तो जेल डालना। ऐकर अलावा आबकारी अउ पुलिस विभाग के कोई काम नहीं हे। (मेजों की थपथपाहट) माननीय उपाध्यक्ष महोदय, कानून व्यवस्था के का स्थिति हे ? यही सदन में मे हा बात ला रखत रहेव। मोर घर में 20 जुलाई को चोरी होये हे।

उपाध्यक्ष महोदय :- 5 मिनट में अपनी बात समाप्त करेंगे।

श्री केशव प्रसाद चंद्रा :- उपाध्यक्ष महोदय, एक विधायक के घर मा चोरी होना अउ पुलिस कहीं भी गंभीरता नहीं हे। आज भी चोर ला नहीं खोजना। कैसे उम्मीद कर सकै कि एक आम आदमी के साथ न्याय होही, एक आम आदमी के सुनवाई होही। केवल ये थाना और थाना के पुलिस लूट खसोट करे बर ही सरकार में हे। केवल लूटत खसोटत हावै, कहीं कोई ला न्याय नहीं मिलथे। सेटिंग, वसूली, महीना मा जुआ खिलाना, महीना मा दारू बेचवाना, महीना मा गांजा बेचवाना, महीना मा अफीम बेचवाना, पुलिस के केवल ये जवाबदारी रह गे हे। नहीं तो चोर कहां जातिस। चोर ला वहीं ले पकड़त हे, जहां टकरात जात हवै। जे टकरा गिस ते चोर ला पकड़ही। माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आपने समय दिया तेकर लिये धन्यवाद।

उपाध्यक्ष महोदय :- श्री भुनेश्वर शोभाराम बघेल जी।

श्री भुनेश्वर शोभाराम बघेल (डोंगरगढ़) :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, धन्यवाद। आज बहुत दिन बाद हमर मन के नंबर लगिस। अउ आज हमर सरकार के..।

श्री केशव प्रसाद चंद्रा :- लेकिन भुनेश्वर भैया प्राधिकरण मा हमन मन ला दे दिहा 28 प्रतिशत अनुसूचित जनजाति हमरो अंगत रहिथे।

श्री रामकुमार यादव :- तु तो कुछूच नहीं देथे कहाथस। सब ला देथस अउ कुछूच नहीं देथे कहत हवव।

श्री भुनेश्वर शोभाराम बघेल :- सब ला, हमर सरकार मा सब के बराबर के अधिकार हे । हमर सरकार जे ला कहिथे तेला करै के काम करथे। ऐकर सेती के हमर बहुत सारा पुरखा मन ये देश बर अपन जान के बाजी ला लगाये हे। चाहे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी ला लेव, चाहे देश के प्रथम महिला प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी जी ला लेव। चाहे देश के सबसे युवा प्रधानमंत्री राजीव गांधी जी ला लेव, जे हा ए देश बर, ए देश ला सजाए बर, ए देश ला सवारे बर अपन जान के बाजी ला लगईस। संगवारी हो, हमन ओ पार्टी के कार्यकर्त्ता हन। आज छत्तीसगढ़ में हमर सरकार बने के बाद छत्तीसगढ़ के चार चिन्हारी नरवा, गरूवा, घुरवा, बाड़ी एला बचाना हे संगवारी तेखर बारे में बात होए के चालू होईस हे। 15 साल जेकर सरकार रिहिस, ओ कभी छत्तीसगढ़ के संस्कृति, सभ्यता, खान-पान, रहन-सहन के बारे में बात करे काम नइ करिस। संगवारी हो। हमर छत्तीसगढ़ के जे सभ्यता हे, ओला हटाए के काम, भारतीय जनता पार्टी के सरकार मन करिस। हमर गांव के व्यवस्था ला आप देखव। हमर जे पुरखा मन हे, हमर पुरखा मन जे सोचे रिहिस कि गांव के व्यवस्था अइसन होना चाही अउ हर गांव में हर जाति, हर समाज के व्यक्ति मन ला लाकर बसाए गिस, जेमे ओमन ला ए सीखे ला मिलिस कि जब गांव में हर समाज के व्यक्ति रही ता ओकर रहन-सहन, खानपान, बोली भाषा, आचार-विचार, तिज त्यौहार ला एक साथ भाईचारा के साथ मनाए के काम करही। जे मनुष्य जीवन पाए हे ओला आगे बढ़ाए के काम करही। ए हमर पुरखा मन हमन ला सीखा के गिस। धान खरीदी केन्द्र, आप सब जानथौ कि जब 15 साल

भारतीय जनता पार्टी के सरकार रिहिस, ओमन किसान के बारे में कोई बात नइ करिस। 85 गांव के एक ठन धान खरीदी केन्द्र रहाए, लेकिन आज हमर सरकार बने के बाद 85 गांव ला 10-10 गांव में अलग करे के काम करिस, जेमे हमर किसान साथी मन एक घण्टा में अपन धान ला बेचके अपन घर में पहुंचे के काम करथे। जब भारतीय जनता पार्टी के सरकार रिहिस। तब 80-85 गांव के किसान उहां जाए, अपन धान ला दू-दू दिन, तीन-तीन दिन रखवाली करे तब जाकर ओकर नंबर लगे, ओ बड़ा मुश्किल से अपन ला बेचके अपन घर में आए। ए हमर सरकार बने के बाद छोटे-छोटे धान उपार्जन केन्द्र बनिस, एमे किसान के सुविधा होईस।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, में स्वास्थ्य केन्द्र के बात करहूं। भारतीय जनता पार्टी वाले के सरकार के समय बड़े-बड़े बिल्डिंग बनाए के काम करिस। ओमन कमीशन खाए के काम करिस अउ ओमे न डॉक्टर के भर्ती करिस, न नर्स के भर्ती करिस, न कोई एक ठन स्टॉफ के भर्ती नइ करिस। आज कोरोना के वैश्विक महामारी में हमन सब कोई देखन कि हमन ला 20-20 किलोमीटर, 40-40 किलोमीटर के जिहां अस्पताल रिहिस हे उहां जाए के हमन ला जाए के नौबत आइस। अगर 15 साल में हर क्षेत्र के हर गांव में अगर एमन उप स्वास्थ्य केन्द्र ठीक कर लेतिस ता उहां हमर सब नागरिक मन ला स्वास्थ्य सुविधा मिलतिस। कोरोना काल में हमर मन के साथ बहुत सारा मजाक केन्द्र में बइठे मोदी सरकार भी करिस कि ताली बजाओ, थाली बजाओ, दीया जलाओ। ए सब बात होए रिहिस हे। आप सब जानथौ। जब केन्द्र में बइठे मोदी सरकार ताली बजाए के काम करत रिहिस हे ता वही दूनो हाथ ला आदरणीय भईया भूपेश बघेल जी, हमर मुख्यमंत्री जी के सरकार हा वही दूनो हाथ ला रोजगार गारण्टी के काम देकर चालू करिस।

श्री रामकुमार यादव :- बबा गा, कई जगह थारी टूट गे। थारी ला बदली दिहा का ?

श्री भुनेश्वर शोभाराम बघेल :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय,जब केन्द्र में बइठे मोदी सरकार थाली बजाए के काम करत रिहिस तब हमर सरकार हा उही थाली में 4-4 महीना, 5-5 महीना के राशन फोकट में डाले के काम करिस। ए हमर सरकार चलत हे। जब हमन दीया जलात रेहेन। दीया कोन जलाथे ? ए भारतीय जनता पार्टी वाले मन ला दीया कोन जलाथे, ए संस्कृति ला बताए के जरूरत पड़ही । काबर हमर सब दीदी, दाई, बहिनी मन बइठे हे। दीया कोन जलाथे। हमर छत्तीसगढ़ के संस्कृति हरे कि जब शाम के हमर घर में खाना बन जथे ता हमर के माता मन रहिथे ओमन तुलसी चौरा में जाकर दीया जलाए के काम करथे। इकर सरकार का करिस। ओकर बाद हमर जे सियान मन रहिथे ओला खाना खवाए बर आमंत्रित करथे। ए हमर छत्तीसगढ़ के संस्कृति रिहिस। इकर सरकार का करिस ? इकर सरकार ए करिस कि दीया जलाओ, जब दीया जलाये के बारी आईस ता एक चीज अउ बोलिए कि लाईट भी बंद करो अउ दीया जलाओ। मैं बांधी भईया, आदरणीय पुन्नू लाल मोहले जी ला पूछना चाहत हौं कि रात के दीया कहां जलाए जथे ?

श्री पुन्नूलाल मोहले :- तुंहर घर मा।

श्री रामकुमार यादव :- मठखड़वा में दीया जलाए जथे।

श्री भुनेश्वर शोभाराम बघेल :- कहां दीया जलाथे ? में बतात हौं। रात के दीया उहां जलाए जथे, जे मेड़ में सोधे रहिथे उहां जाकर दीया जलाए के काम करथे।

उपाध्यक्ष महोदय :- माननीय बघेल जी, आप मेरी तरफ देखकर बात करें। उधर सीधे देखकर बात न करें। आप सीधे संवाद न करें।

श्री भुवनेश्वर शोभाराम बघेल :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, जब इकर सरकार रहिस तो 2100 रुपये के वादा करे रहिस। महूं जिला पंचायत के सदस्य रेहौं। 2100 रुपये देय बर हमन हल्ला करन, चक्काजाम करन, प्रदर्शन करन तो किसान संगवारी मन ला जेल में डारय के काम करय। महूं 03 दिन जेल में रहौं, ये इकर सरकार में होईस। ये केन्द्र में बैठे मोदी सरकार हे, वाहू किसान मन बर आज बेरियर लगाथे, खीला लगाये के काम करथे। अउ किसान मन ला आतंकवादी, नक्सली भी बताये के काम अगर कोई करथे तो केन्द्र में बैठे मोदी सरकार करै के काम करथे।

उपाध्यक्ष महोदय :- चलिये, समाप्त करिये।

श्री भुवनेश्वर शोभाराम बघेल :- माननीय उपाध्यक्ष जी, दो-तीन बात और रख लेता हूं। स्वामी आत्मानंद अंग्रेजी माध्यम स्कूल की स्थापना हमर सरकार करिस। अउ येमे ये बात कहिस कि गरीब के लइका, हमर किसान के लइका भी इंग्लिश मीडियम स्कूल में पढैं। ये सुनिश्चित करै के काम अगर कोई करिस तो हमार आदरणीय भैया भूपेश बघेल जी की सरकार करै के काम करिस। दाई-दीदी क्लीनिक मुख्यमंत्री हाट बाजार क्लीनिक योजना, मुख्यमंत्री सुपोषण अभियान, धनवंतरी जेनेरिक मेडिकल स्टोर के काम हमर सरकार करिस हे।

उपाध्यक्ष महोदय :- चलिये, समाप्त करिये। श्री पुन्नूलाल मोहले।

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी :- भुवनेश्वर जी, अभी बोल दीजिए कि अनुसूचित जाति प्राधिकरण में 35 करोड़ रुपये आते हैं, 23-30 लाख रुपये दे दें।

श्री भुवनेश्वर शोभाराम बघेल :- 15 साल तक आपके मुख्यमंत्री जी हा अनुसूचित जाति वर्ग के लइका ला या विधायक ला कोई प्राधिकरण के जवाबदारी देये रहिस का। (व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय :-चलिये, अब बघेल जी, समाप्त करिये। पुन्नूलाल मोहले जी।

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी :- आपके लिए ताली बजायेंगे, जरा उस पर बोलो।

श्री भुवनेश्वर शोभाराम बघेल :- हमर भूपेश भैया के सरकार जब बनिस तो हमार समाज के ला ये अधिकार मिलिस कि अनुसूचित जाति विकास प्राधिकरण के अध्यक्ष बनाकर जवाबदारी देय के काम करिस, माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मोला बोलै के मौका देव, एखर लिए बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री पुन्नूलाल मोहले (मुंगेली) :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं माननीय राज्यपाल के अभिभाषण पर प्रस्तुत कृतज्ञता ज्ञापन प्रस्ताव के विरोध में बोलने के लिए खड़ा हुआ हूं।

उपाध्यक्ष महोदय :- 5 मिनट में समाप्त करिये।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं कुछ ही बात बोलना चाहता हूं, मुझे ज्यादा बोलने की जरूरत भी नहीं है, क्योंकि बहुत से वक्ता उन विषयों में बोल चुके हैं।

उपाध्यक्ष महोदय :- बहुत बढ़िया।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, जब कांग्रेस की सरकार नहीं थी, उनके घोषणा पत्र के कारण बी.जे.पी. की सरकार चली गई, कांग्रेस की सरकार आ गई। यह अपने घोषणा पत्र के अनुसार शराब बंदी नहीं कर पाये। यह इनकी सरकार के पांचवा वर्ष चालू हो गया है, चुनाव आने की स्थिति में हैं। जब शराब बंदी को अपने घोषणा पत्र में शामिल किया है तो राज्यपाल के दस्तावेज में भी उसका पालन करना चाहिए और लाना चाहिए। शराब बंदी की कमेटी बनी है, मैं हमारे सत्तापक्ष से जानना चाहता हूं कि कमेटी की रिपोर्ट कितने वर्ष में आती है ? 1 महीने, 2 महीने, 6 महीने में आती है और इस कमेटी की कितनी बैठक हुई और कमेटी की रिपोर्ट क्यों नहीं आई ?

उद्योग मंत्री (श्री कवासी लखमा) :- माननीय पुन्नूलाल मोहले जी मैं आपका बहुत सम्मान करता हूं। लेकिन आपकी पार्टी आपका कितना सम्मान करती है। हमारे वर्ग के 2 लोगों को छोड़कर भग गये हैं। डॉक्टर बांधी साहब बैठे हैं और सभी लोग पुन्नूलाल जी को छोड़कर भग गये हैं।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- आपके डर के मारे भग गये हैं। माननीय उपाध्यक्ष महोदय, शराबबंदी को सरकार लागू नहीं कर पाई है। इनकी योजना असफल है। इस कारण मैं कहना चाहूंगा। दूसरा अगर इनकी सरकार के बारे में बात करें कि घोषणा पत्र में बेरोजगारों को 2500 रुपये भत्ता देने की बात थी और अभी तक यह सरकार बेरोजगारों को भत्ता नहीं दे पाई है। अगर इन लोगों को भत्ता भी देना है तो पिछले 04 साल का आंकड़ा निकाल लें, कितना भत्ता देंगे, इनकी सरकार को बताने की आवश्यकता है। यह बात का जवाब मुख्यमंत्री जी अपने भाषण में दें। मैं तीसरी बात कहना चाहता हूं कि अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति के 34 हजार पद रिक्त हैं। उन रिक्त पदों की भर्ती के लिए सरकार कोई विशेष ध्यान नहीं दे रही है।

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी :- यह नौकरी देने वाली बात है।

उपाध्यक्ष महोदय :- डॉक्टर साहब, इसके बाद आपका भी नंबर है।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं आरक्षण के बारे में कहना चाहता हूं कि आरक्षण के बारे में हाईकोर्ट का फैसला आया। इसके बाद अनुसूचित जाति को 16 प्रतिशत आरक्षण मिलने का फैसला आ गया। उसके बाद सरकार ने आरक्षण का विधेयक लाया। हाईकोर्ट के फैसले का पालन यह सरकार नहीं कर रही है, अर्थात अनुसूचित जाति के अधिकारों का सरकार ने उल्लंघन किया

है। राज्यपाल के अभिभाषण में इस बात का जिक्र किया गया है और उस बात का जिक्र नहीं किया है। इसलिए मैं सरकार को चेतावनी देता हूं कि इस बात को भी ध्यान दें। दूसरी बात कहना चाहता हूं कि जितने आरक्षण पद में भर्ती होनी है, उसमें आरक्षण कोटा लागू नहीं किया है। उस कोटे को बतायें कि कितने-कितने प्रतिशत आरक्षण कब देंगे। ऐसे करके आपके 25 हजार पद खाली हैं। चाहे वह व्यावसायिक शिक्षा मंडल हो, पी.एस.सी. हो, शिक्षा विभाग में या अन्य पदों में भर्ती की जा रही है, लेकिन कितना-कितना कोटा एस.सी., एस.टी. और अन्य पिछड़े वर्ग को देना है। यह सरकार ने नहीं किया है। उसके बाद में जितने शिक्षित बेरोजगार कह दें या नौकरी के लिए आवेदन करने दिये हुए हैं, वह अधर में लटका हुआ है । तो यह सरकार जटकाने का काम कर रही है। यदि मैं गोठान की बात करूं। गोठान बना रहे हैं। हमारे माननीय मंत्री जी बैठे हुए हैं। आपने 5,894 गोठान कहा है। उसमें आपने 2 लाख क्विंटल चारा की बात की है। यदि चारा पैदा हुआ है तो सिर्फ एक गोठान में 40 क्विंटल चारा आता है।

उपाध्यक्ष महोदय :- चलिये, समाप्त करिये।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- उसके बाद सूखा पैरा की बात किये। वैसे सूखा पैरा तो कोई लेते नहीं है। यदि कहे तो इनके गोठान में कितने लोग लगे, कितने मजदूर लगे या इनको कोई नौकरी देंगे? उससे ज्यादा पैसा तो दैनिक वेतन भोगी को होगा, जिसमें मंत्री जी ध्यान दें।

उपाध्यक्ष महोदय :- बबा, समाप्त करिये।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- गौमाता इधर-उधर चरती नहीं। वहां चारा नहीं है। चरने बाहर जाते हैं। खेत में जाते हैं तो ध्यान भी नहीं रखते हैं।

उपाध्यक्ष महोदय :- श्रीमती अनिला योगेन्द्र शर्मा जी। लेना बबा, अब होगे गा।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- सड़क में घूमते हैं। कहीं ऐसे गोठान में गाय नहीं दिखता। आप गौमाता की सेवा की बात करते हैं तो यह कैसी सेवा है? गोबर की बात करते हैं। आप 2 रूपये किलो में गोबर खरीदते हैं और 10 रूपये में बेचते हैं। आप चार गुना लाभ कमा रहे हैं। क्यों कमा रहे हैं? 2 रूपये में चार गुना कह दें। चार गुना लाभ कहां है? आप कितना खर्च करते हैं और आप वर्मी कंपोस्ट खाद कैसे बनाते हैं? कितना दिन में बनता है, वह बता दीजिये। गोबर लिये, गोबर सूख गये और सूखे गोबर में मिट्टी डाल दिये और कहां बेच दिये वर्मी खाद और सहकारी सोसायटी में बेच रहे हैं । तो खाद बनाने का तरीका क्या है? आप तो किसान हैं। कब खाद बनता है? घुरवा है तो कितने गोबर में खाद बना है?

उपाध्यक्ष महोदय :- मोहले साहब, चलिये समाप्त करेंगे।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- समय हो रहा है बर्बाद और दे रह हैं ऐसी बेकार खाद।

उपाध्यक्ष महोदय :- श्रीमती अनिता योगेन्द्र शर्मा जी, आप अपनी बात शुरू करें।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- उपाध्यक्ष जी, एक मिनट। मैं एक और बात बता देता हूं।

श्रीमती अनिता योगेन्द्र शर्मा :- माननीय सभापति महोदय।

उपाध्यक्ष महोदय :- चलिये, एक मिनट बोल रहे हैं। बबा को बोलना है।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- मैं दूसरी बात यह बोलना चाहता हूं कि आप पंचायती राज में पंचायत मंत्री है। एक मंत्री ने तो इस्तीफा दे दिया। किस कारण इस्तीफा दिया? आवास योजना को पैसा नहीं दिये। तो क्या आप भी उसी लाईन में मंत्री जो जायेंगे? आप भी आवास योजना का पैसा नहीं दिये हैं। सब है उदास, नहीं मिल रहा है किसी को आवास, कर दो काम खास, इसमें कुद करेंगे पास, ऐसी है आपको आस। (हंसी)

श्री मोहित राम :- वेरी गुड, वेरी गुड।

उपाध्यक्ष महोदय :- चलिये। एक मिनट में समाप्त करिये।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- सड़क में आप देखे होंगे। बहुत से सड़क बन रही हैं आपने कई हजार करोड़ रूपये की बात की है, पर ऐसे सड़क है, जिसको बता दूं। दो साल के बाद टेण्डर हुआ, वह कैंसल। रोड गड्ढे पड़े हुए हैं। हालांकि मैं मुंगेली जिले का बात करूं।

श्रीमती उत्तरी गनपत जांगड़े :- बबा, 15 साल ले तो ओ रोड हर गड्ढा रहीसे ओहर अभी बन इन सकथे। 15 साल ले रोड गड्ढा रहीसे ओला अभी भरथन।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- 15 साल का मैं बता रहा हूं कि 15 साल में कितने रोड बने। हर गांव में रोड बने हैं। आपको शायद नहीं मालूम। आप नई-नई आई हो।

उपाध्यक्ष महोदय :- चलिये, आप उधर ध्यान मत दीजिये।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- मेरा कहना यह है कि रोड गड्ढे-गड्ढे पड़े हैं। यदि यह नये रोड नहीं बना सकते तो गड्ढे रोड को बनाये। माननीय मुख्यमंत्री ने शेखी मारकर उस समय बात किये थे, चैलेंज करके बात किए थे। पूरे ई.इन.सी. को हटा दिये थे। रोड नहीं बना रहे हैं, गड़बड़ हो रहा है। रोड बनाना है और रोड बनाने का अदेश दिये, पर रोड नहीं बन रहे हैं।

उपाध्यक्ष महोदय :- चलिये, इस बात को सी.एम. साहब सुन रहे हैं। अब अपनी बात समाप्त करें। श्रीमती अनिला योगेन्द्र शर्मा जी। पांच-पांच मिनट में अपनी बात समाप्त करें।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- मैं इतना ही कहूंगा कि आप मरम्मत करने का प्रावधान कीजिये और इसमें आप ध्यान देंगे। ऐसी आशा करते हुए अपनी वाणी विराम देता हूं।

श्री शिवरतन शर्मा :- उपाध्यक्ष जी, सबसे सीनियर व्यक्ति का चुनाव जीतने का रिकार्ड है।

उपाध्यक्ष महोदय :- नहीं, वह तो हम उधर कक्ष में बता देते हैं।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- उपाध्यक्ष जी, सीनियारिटी का ध्यान रखकर पहले बोलवाया करिये।

श्री रामकुमार यादव :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय। रूक न बबा। तोरे बर ही गोठियात हौं। तैं हर श्यनहा अस। उपाध्यक्ष जी हर भी तोर बहुत इज्जत करीस। बड़े ला कइथे आरा अउ छोटे ला कइथे ..।

श्री शिवरतन शर्मा :- तैं श्यनहा हे कइके कइसे कइ देहे?

श्री रामकुमार यादव :- सुन न।

श्री शिवरतन शर्मा :- तैं कइसे बोल देहे कि ये हर श्यान हो गेहे? तोला कइसे मालूम श्यान होगे कइके।

श्री रामकुमार यादव :- वह तो सब जान हन। बड़े ला कइथे आरा अउ छोटे ला कइथे यारी, श्यान होकर तूं हर बड़ मारा था लबारी। (हंसी)

उपाध्यक्ष महोदय :- चलिये, मैडम।

श्रीमती अनिला योगेन्द्र शर्मा :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं माननीय राज्यपाल महोदय के अभिभाषण पर कृतज्ञता ज्ञापन करने के लिए ..।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- उपाध्यक्ष जी, एक मिनट?

उपाध्यक्ष महोदय :- मैडम, दो मिनट।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- विकास प्राधिकरण का पैसा, अनुसूचित जाति प्राधिकरण का, पिछड़ा वर्ग प्राधिकरण का, समग्र योजना का पैसा, इनके ऊपर ध्यान नहीं दिया जा रहा है। अनदेखा किया जा रहा है। सरकार असंवेदनशील है। जहां अनुसूचित जाति की जनसंख्या टाप है और यहां पर बघेल जी सेखी मार रहे थे। चर्चा नहीं करते, लोगों को बोलते नहीं। अनुशासन में दिमाग को भूल गये हैं। ऐसी असमानता का व्यवहार लोग न करें। मैं अनेक सदस्यों से आशा करता हूं। मुझे बोलने में चूक है कि ऐसे लोग जो बातचीत, चर्चा करने में पीछे हो जाते हैं । वे ध्यान दें और समानता का व्यवहार करते हुए वे सामान्य स्थिति में काम करेंगे ऐसी आशा करते हुए मैं अपनी वाणी को विराम देता हूं । मैं माननीय राज्यपाल जी के अभिभाषण का विरोध करता हूं । माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आपने मुझे बोलने के लिये समय प्रदान किया इसके लिये आपको बहुत-बहुत धन्यवाद ।

श्रीमती अनिता योगेन्द्र शर्मा (धरसींवा) :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं माननीय राज्यपाल जी के अभिभाषण में कृतज्ञता ज्ञापित करने के लिये खड़ी हुई हूं। मुझे बहुत देर बाद अवसर मिला है ।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से माननीय मुख्यमंत्री जी, माननीय राज्यपाल जी का बहुत-बहुत आभार व्यक्त करती हूं । जिन्होंने राज्य के किसानों को अब तक 16,415 करोड़ की इनपुट सब्सिडी दी है । यह केवल किसान ही कर सकता है । माननीय मुख्यमंत्री जी किसान पुत्र हैं और किसान के हित में सोचते हुए उन्होंने यह कदम उठाये हैं । 15 सालों तक लगातार किसान आत्महत्या कर रहे थे, किसान परेशान थे लेकिन हमारे विपक्ष के साथियों को कभी उनके प्रति ध्यान नहीं आया, कभी उनके प्रति दया नहीं आयी और आज वे इस सभा में बैठकर किसान विरोधी बात कर रहे हैं । ये लोग किसान विरोधी हैं, किसानों का हित नहीं चाहते हैं । आज माननीय मुख्यमंत्री जी को धन्यवाद कहना छोड़कर ये लोग तंज कस रहे हैं । मैं माननीय मुख्यमंत्री जी को धन्यवाद दूंगी, इसके साथ ही साथ धान खरीदी चूंकि इस वर्ष हमारी सरकार नया रिकॉर्ड बना रही है, इस वर्ष खरीफ फसल में राज्य

के 23 लाख 42,000 किसानों को समर्थन मूल्य दर पर 107 लाख 53,000 मीट्रिक टन धान खरीदी की गयी । अब आप यहां पर कह रहे हैं कि आप केवल दिखावा कर रहे हैं, ऐसा नहीं है । अगर धान खरीदी हुई है तो पूरे देश में, पूरे किसानों की धान खरीदी हुई है और हम सब सदन में जो लोग बैठे हुए हैं हम सबकी धान खरीदी हुई है । इस बात को ये लोग झुठलाने में लगे हुए हैं ।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, हमारे छत्तीसगढ़ की सरकार आज लगातार हम किसानों के लिये, गांव-गरीबों के लिये काम कर रही है । आज राजीव गांधी ग्रामीण भूमिहीन कृषि मजदूर न्याय योजना, यह योजना लाने की आवश्यकता क्यों पड़ी ? आज हमारी सरकार किसानों को तो उनके वाजिब दाम दे ही रही है । जो ऐसे किसान हैं, जो लोग रेगहा-अधिया के माध्यम से खेती करते हैं । उनके पास एक एकड़ जमीन नहीं है । उस किसान को सम्मान दिलाने का काम अगर किसी ने किया है तो वह माननीय मुख्यमंत्री जी ने किया है । (मेजों की थपथपाहट) इन लोगों को यह चीज सराहनीय क्यों नहीं लग रही है ? आज गांव-गरीब किसानों को न्याय मिल रहा है । इस तरीके से माननीय मुख्यमंत्री जी ने ग्रामीण भूमिहीन किसानों को न्याय दिलाने का काम किया है । दूसरी तरफ समर्थन मूल्य में कोदो-कुटकी, रागी की खरीदी ।

उपाध्यक्ष महोदय :- चलिये, समाप्त करें । अभी बोलने के लिये और भी लोग हैं ।

श्रीमती अनिता योगेन्द्र शर्मा :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मुझे पहली बार बोलने का अवसर मिला है । मैं आपसे निवेदन करना चाहूंगी कि आज कोदो-कुटकी जिसको लोग जानते नहीं थे । आज के परिवेश के लोग कोदो-कुटकी क्या है उसको जानते नहीं थे लेकिन आज कोदो-कुटकी की पहचान हो रही है । कोदो-कुटकी को मिलेट्स के रूप में आज उसका फूड बनाया जा रहा है। उसका केक बनाया जा रहा है। ब्रेड, बिस्किट वे सारी चीजें बन रहे हैं। आज जो लोग कोदो की पैदावार नहीं करते थे, आज वे लोग भी कोदो कुटकी की तरफ जा रहे हैं। उपाध्यक्ष महोदय, एक कहावत है कि गांव में कहते थे कि घुरवा के दिन बहुरगे, आज कोदो-कुटकी का दिन बहुर गया है।

उपाध्यक्ष महोदय :- चलिए, बहुत-बहुत धन्यवाद। श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू जी। कृपया समाप्त करिए।

श्रीमती अनिता योगेन्द्र शर्मा :- इस चीज को समझनी थी। मैं माननीय मुख्यमंत्री के प्रति बहुत-बहुत आभार व्यक्त करूंगी कि गोधन न्याय योजना के तहत हमारे यहां बहुत अच्छा काम हो रहा है। आज विपक्ष के साथी बोलते हैं कि गोधन न्याय योजना में कुछ नहीं हो रहा है। आप आकर देखिए कि मेरे विधान सभा क्षेत्र में बहुत अच्छा गोबर का पेंट बनाया जा रहा है और मैंने खुद उस गोबर के पेंट से अपने ऑफिस और घर की भी पुताई करवाया है। तो इस तरीके से प्राकृतिक पेंट वहां बनाया जा रहा है। दाई-दीदी क्लीनिक से आज हमारी माता और बहन, जिन लोगों का उपचार नहीं हो पाता था, उनको हॉस्पीटल जाने तक के लिए टाइम नहीं मिलता था, आज दाई-दीदी क्लीनिक के माध्यम से उनका ईलाज

किया जा रहा है। मुख्यमंत्री हाट बाजार में आज बहनें सब्जी खरीदने के लिए बाजार जाती हैं और वहां पर भी अपना ईलाज करवाकर, अपना ब्लड टेस्ट करवाती हैं और अपना जो भी दवाई लेना रहता है, वह दवाई लेकर वह घर वापस आती हैं। इस तरीके से स्वामी आत्मानंद उत्कृष्ट स्कूल जो माननीय मुख्यमंत्री जी ने चलाया, आज हमारे गांव के जो गरीब लोग हैं, जिनके पास बच्चों को पढ़ाने के लिए पैसा नहीं होता है, उन लोगों को आज सीधा-सीधा फायदा दिलाने का काम माननीय मुख्यमंत्री जी कर रहे हैं। महातारी दुलार योजना, उसी योजना में आज स्वामी आत्मानंद स्कूल में जिनके मां-बाप नहीं हैं, उनके बच्चे भी आज उस अंग्रेजी मीडियम स्कूल में पढ़ रहे हैं। कोरोनाकाल में जिनके मां-बाप का निधन हो गया था, आज उनको फ्री में वहां पढ़ने का अवसर प्राप्त हो रहा है। उन बच्चों को मां-बांप के समान दुलार और प्यार मिल रहा है। इस तरीके से स्वामी आत्मानंद स्कूल का संचालन हो रहा है। मैं अंत में एक बात और कहना चाहूंगी कि राम वन गमन पथ के बारे में आपको बताना चाहूंगी कि पूर्व में जो सरकार थी वह सिर्फ राम भक्त होने की बात करती थी। ये लोग राम भक्त के नाम से सिर्फ जय श्री राम बोलकर केवल इतना कहकर निकल जाते थे।

श्री उपाध्यक्ष महोदय :- चलिए, समाप्त करें। श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू जी।

श्रीमती अनिता योगेन्द्र शर्मा :- लेकिन आज सही मायने में अगर राम की पूजा हुई है और अगर सही मायने में राम को यहां पूजा है तो वे छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री माननीय भूपेश बघेल जी हैं। आज कौशल्या माता जो राम की माता हैं, कौशल्या माता की जन्म स्थली को इन्होंने कभी पूछा नहीं, कभी देखा नहीं, आज कौशल्या माता के निवास स्थान, जहां उन्होंने जन्म लिया था, आज उस जगह को सुंदर, स्वच्छ और उसे पर्यटन का स्थल बनाकर जो सौगात हम लोगों को दिये हैं, वह बहुत ही सराहनीय है। मैं माननीय मुख्यमंत्री जी, माननीय मंत्री जी लोगों के प्रति बहुत-बहुत आभार व्यक्त करती हूं और आपने मुझे बोलने का अवसर दिया, उसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। (मेजों की थपथपाहट)

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू (धमतरी) :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय जी, आज इस सदन में माननीय राज्यपाल महोदय जी के अभिभाषण पर कृतज्ञता ज्ञापित करना है, लेकिन सत्ता पक्ष के साथी हैं, उनकी चिंता हमारे लिए अर्थात् विपक्ष के लिए जो चिंता है, उसे देखकर आज बहुत आश्चर्य हो रहा है कि इतनी चिंता ये हमारे लिए कर रहे हैं। संत गुरू कबीर साहब जी ने इस बात को कहा कि :-

मल मल शरीर धोइए, पर धोए न मल का मैल।
नहाए गंगा गोमती पर, रहे बैल के बैल।।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय जी, कहने का तात्पर्य यह है कि ये कितनी भी चिंता जाहिर कर लें, इस पुस्तक में लिखा वही है, हमने पूरा अध्ययन कर लिया। राज्यपाल जी के अभिभाषण में ऐसी कोई चीज या ऐसा कोई शब्द नहीं है जो प्रदेश की जनता के हित के लिए हो, जो सीधे जनता के हित से जुड़ा हो, एक शब्द का भी उल्लेख नहीं है। माननीय उपाध्यक्ष महोदय जी, इस पुस्तक में केवल और

केवल 15 साल में भा.ज.पा. के शासनकाल ने जिसकी शुरूआत की थी, अंत भी इसी पुस्तक में हो रही है। माननीय राज्यपाल महोदय ने जो कहा है, वह भा.ज.पा. शासनकाल के उपलब्धियों को कहा है और इसीलिए संत कबीरदास जी इस बात को भी कहते हैं कि "सदा न कोयल बोलती, सदा न खिलते फूल । सदा न कोयल बोलती, सदा न खिलते फूल । यह अवसर मिले तभी, जब समय होय अनुकूल ।" माननीय उपाध्यक्ष महोदय, सत्ता पक्ष को इतना समय मिला है, इतना बहुमत मिला है, इतना बड़ा जनादेश मिला है । लेकिन इस जनादेश का इतना अहंकार इनको, इतना अहंकार इनको कि ये भूल गए हैं कि जनता ने ही इनको यहां बिठाया है । यह किस बात का अहंकार है । जनता ने इन्हें यहां बिठाया है, जो ये सत्ता में आए हैं और बैठने के पहले इन्होंने प्रदेश की जनता से इतने वायदे किये थे, अभी तक कोई वायदा इन्होंने पूरा नहीं किया है । उपाध्यक्ष जी, नरवा, गरवा, घुरूवा, बारी की दो-दो लाईन से मैं शुरूआत करूंगी ।

श्री रामकुमार यादव :- बहिनी, "आछे दिन पाछे गए, हरि से किया न हेत, अब पछताए होत क्या, चिड़िया चुग गई खेत ।" ये तुमन बर लागू होत हे ।

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- माननीय उपाध्यक्ष जी, मैं आपकी तरफ देखकर बोलूंगी । नरवा, गरवा, घुरवा, बारी की बात इन्होंने की । यह सुनने में बहुत अच्छा लगता है । हमको विधान सभा के प्रश्न के एक उत्तर में मिला है कि आत्म निर्भर गौठान की क्या परिभाषा है ? इन्होंने स्पष्ट रूप से लिखकर दिया कि आत्म निर्भर गौठान की कोई विशेष अलग परिभाषा नहीं है । तो यह करना क्या चाह रहे हैं ? उपाध्यक्ष महोदय, बिना बजट के कोई योजना नहीं चलती । हमारे बुजुर्गों ने कहा है कि थूके थूक मा बरा कभी नइ चुरय । लेकिन इस सरकार ने वह करके दिखाया है । आपने इस फ्लैगशिप योजना के लिए एक रूपए का बजट नहीं लिया । आप केन्द्र की सरकार के पैसे का उपयोग कर रहे हैं । कन्वर्जेंस आप मनरेगा से कर रहे हैं तब इस योजना को पूरा करने की ओर आगे बढ़ रहे हैं, अभी बढ़े नहीं हैं क्योंकि आपने कुछ किया ही नहीं है ।

उपाध्यक्ष जी, ये कहते हैं कि हम जैविक खेती को बढ़ावा दे रहे हैं कम्पोस्ट, सहकारी समितियों में वर्मी कम्पोस्ट के माध्यम से किसानों को उपलब्ध कराए नहीं जा रहे हैं । जबरदस्ती किसानों को पकड़ाया जा रहा है, जबरदस्ती । और उनको धमकी दी जा रही है कि यदि आपने प्रति एकड़ एक क्विंटल वर्मी कम्पोस्ट को नहीं खरीदा, अधिकारी उनको धमकी देते हैं, सोसायटी के लोग किसानों को धमकी देते हैं, यदि आपने इसे नहीं खरीदा तो आपको ऋण नहीं मिलेगा । यह किसानों के साथ कैसी जबरदस्ती है ? उपाध्यक्ष जी, यह सरकार किसान-किसान करके रह गई और किसानों के नाम से यह सरकार दंभ भरती है । इन्होंने अभिभाषण में बिना ब्याज के ऋण प्रदान करने की बात कही है । इसकी शुरूआत भारतीय जनता पार्टी के कार्यकाल में डॉ. रमन सिंह जी जब मुख्यमंत्री रहे तब इसकी शुरूआत हुई थी और निश्चित रूप से जीरो प्रतिशत ब्याज पर ऋण मिला तो सबसे ज्यादा लाभ हमारे किसान

भाईयों को हुआ । इन्हें यह बात भूलना नहीं चाहिए । उपाध्यक्ष महोदय, यह बार-बार किसान की बात करते हैं । मैं आपको बताना चाहती हूं कि दो-दो, तीन-तीन गांव के पीछे हमारे किसान मित्र भाई होते हैं । किसान मित्रों का मानदेय बहुत ज्यादा नहीं होता, केवल एक हजार रूपए होता है लेकिन एक वर्ष से ज्यादा हो गया इन किसान मित्रों को मात्र एक हजार रूपए का मानदेय नहीं मिल पाया है । एक किसान मित्र 2-2, 3-3 गांव तक शासन की योजना आम जनता तक पहुंचाते हैं, मध्यस्थता कराते हैं । उनका काम बहुत महत्वपूर्ण होता है लेकिन उन्हें केवल एक हजार रूपया ही मिलता है । पिछले एक डेढ़ वर्षों से किसान मित्रों को उनका मानदेय नहीं मिला है । यह स्थिति पूरे प्रदेश की है । उपाध्यक्ष जी, यह सरकार किसान-किसान करते रह गई । राज्य में राज्य स्तरीय कृषक पुरस्कार 10 किसानों को मिला था । राज्य स्तरीय प्रतियोगिता रही, उसमें 10 किसानों का चयन किया गया था । 10 किसानों को 25 हजार रूपए का चेक मिला लेकिन दुर्भाग्य की बात यह है कि वह चेक बाउंस हो गया । यह तो हमारे किसान भाईयों का सम्मान है ।

उपाध्यक्ष महोदय :- माननीय सदस्यों के लिए स्वलपाहार की व्यवस्था लॉबी स्थित कक्ष में एवं पत्रकारों के लिए प्रथम तल पर की गई है । कृपया सुविधानुसार स्वलापाहार ग्रहण करें ।

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, यह उद्यानिकी एवं कृषि महाविद्यालय के विषय में इसमें लिखा है । मैं आपको बताना चाहती हूं कि माननीय मुख्यमंत्री जी का आगमन धमतरी जिले के धमतरी विधान सभा क्षेत्र में प्रथम आगमन था । उन्होंने हमारे धमतरी की जनता से वायदा कि हम आपको एक उद्यानिकी कॉलेज खोलकर देंगे । लेकिन 4 साल पूर्ण हो गए, कहीं पर भी उद्यानिकी खुलने के आसार हमको नज़र नहीं आते, केवल और केवल झूठा आश्वासन देने का काम इस सरकार ने किया है । जहां पर यह बात कर रहे थे, इन्होंने जगदलपुर कांकेर और धमतरी में कम्यूनिटी सीड बैंक की स्थापना की बात की है । उपाध्यक्ष जी, मैं आपको भी अवगत कराती हूं कि इनके कार्यकाल में इन चार सालों में कहीं पर भी इस कम्युनिटी सीड बैंक की स्थापना नहीं हुई। धमतरी में भाजपा शासनकाल में यह कम्युनिटी सीड बैंक की स्थापना हो चुकी थी और यह बहुत अच्छे से संचालित हो रही थी लेकिन चूंकि इन्होंने इंटरफेयर किया और अब समस्या यह है कि वहां पर किसान धान देने के लिए तैयार नहीं हैं। यह सरकार केवल और केवल बात करती है। यह तेंदूपत्ता संग्रहण के बारे में बात कर रहे थे, इन्होंने कहा कि हमने 2500 रूपए प्रति मानक बोरा बढ़ाकर 4 हजार रूपए किया। लेकिन हमारे जो भाई बहनों को पारिश्रमिक के रूप में बोनस मिलता था, पारिश्रमिक के अलावा जो बोनस मिलता था, उस बोनस को इन्होंने बंद कर दिया। बल्कि भाजपा शासनकाल में 2500 रूपए प्रति मानक बोरा खरीदकर हम उन्हें अलग से जो बोनस देते थे, वह 4 हजार रूपए से भी उपर जाता था। मतलब उनको 5600 रूपए से भी उपर मिलता था। इन्होंने उस बोनस को बंद कर दिया। जो चरणपादुका मिलता था, उसको बंद कर दिया।

उपाध्यक्ष महोदय :- कृपया समाप्त करें।

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- उनको जो स्कॉलरशिप मिलती थी, वह भी बंद कर दिया गया। माननीय उपाध्यक्ष महोदय जी, वहां पहले 15 से 20 दिन तेंदूपत्ता की खरीदी होती थी लेकिन अब इन्होंने केवल दो और तीन दिन कर दिया ताकि हमारे उधर के भाई तेंदूपत्ता बेच ही ना पाएं। प्रदेश में हरित आवरण सुरक्षा की बात 16 नंबर पर की गयी थी। मैं आपको धमतरी की एक घटना बताती हूं। यह सरकार बहुत ढिंढोरा पीटती है कि हम प्रकृति का संरक्षण कर रहे हैं, हम हजारों लाखों पौधे लगा रहे हैं। निश्चित रूप से इस सदन में भी वह बात आई थी । धमतरी में 7 हजार पेड़ों की कटाई वन विभाग ने की। 7 हजार पेड़ों की कटाई में नीलामी 2 करोड़ 25 लाख रूपए की हुई और मजे की बात यह है कि कटाई और परिवहन में 2 करोड़ 51 लाख रूपए की खर्च हुई। माननीय उपाध्यक्ष महोदय जी, यह हो क्या रहा है ? सरकार किस बात की मानिटरिंग करती है, सरकार कर क्या रही है और कह क्या रही है। यह सरकार माननीय राज्यपाल महोदय से बार-बार असत्य और असत्य बुलवाती रही है। इन्होंने वन्यप्राणियों के संरक्षण में हाथी मानव संगवारी योजना की बात की है। पिछले तीन सालों से हमारा क्षेत्र हाथियों का क्षेत्र नहीं रहा है लेकिन चंदा हाथी दल और एक अन्य हाथी दल पिछले तीन सालों से हमारे क्षेत्र में विचरण कर रहे हैं। जन और धन दोनों की हानि हुई है लेकिन वन विभाग को इसकी कोई चिंता नहीं है। केवल और केवल योजना के नाम पर यह बखान करते हैं। इन्होंने काम कुछ भी नहीं किया। माननीय उपाध्यक्ष महोदय जी, यह कहते हैं कि जो ग्रामीण भूमिहीन मजदूर हैं, हम उनके लिए कोई न कोई व्यवस्था बना रहे हैं। सरकार ने अपने जन घोषणा पत्र में बहुत स्पष्ट कहा है कि हम ऐसे लोगों को बाड़ी देंगे। उनको बाड़ी मिली नहीं है। उन्होंने कहा है कि हम प्रधानमंत्री आवास देंगे, उनको अभी तक प्रधानमंत्री आवास भी नहीं मिला है। इन्होंने कहा कि प्रदेश में लगभग 13,554 ग्राम संगठन हैं और संकुल संगठन भी है जो संचालित है, उसकी हमने स्थापना की है। इन चार सालों में एक भी समूह ऐसा नहीं है, जिन्होंने नये समूहों की स्थापना की। यह भारतीय जनता पार्टी के कार्यकाल में 85 हजार बिहान की समूह बहनें जो इस संस्था, इस समूह से जुड़ी और उन्होंने बहुत सारे कर्ज भी लिए थे। उसी के बेस पर सरकार ने कहा था कि महिला समूह का कर्ज माफ कर दिया जाएगा। मजे की बात यह है कि इन्होंने इन बहनों की समूह का कर्ज माफ नहीं किया। दिखाने के लिए दो चार समूह का कर्ज माफ किया।

श्रीमती उत्तरी गनपत जांगड़े :- महिला बाल विकास समूह के कर्ज माफ हो गे हे।

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- आपकी समूह का माफ हो गया होगा।

श्रीमती उत्तरी गनपत जांगड़े :- आपके समूह के भी हो गे हे। चेक करवा के देख लो।

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय जी, दो चार समूह दिखाने के लिए है, जिसे खाना पूर्ति करने के लिए कहते हैं। इस सरकार ने यदि कुछ कर्ज माफ किया तो उससे ज्यादा इन्होंने 11 करोड़ के होर्डिंग्स और एड पेपरों में दिए कि हमने समूह का कर्ज माफ कर दिया।

उपाध्यक्ष महोदय :- 11 मिनट हो गए हैं।

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय जी, 85 हजार से अधिक हमारी बहनें हैं, इनका यह समूह चल रहा है लेकिन 22 हजार से अधिक ऐसे बहनें हैं जिनके हाथ से काम छीनकर, जो रेडी टू ईट का काम बड़े स्वाभिमान के साथ हमारी बहनें काम करती थीं। जब महिलाएं घर से निकलती हैं, बहुत सारी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। सरकार ने इनको कहीं का नहीं छोड़ा। इनके हाथ से काम छीनकर अपने चहेते ठेकेदारों को दे दिया। यह कहते हैं कि हम महिलाओं के पक्ष में काम कर रहे हैं। इन्होंने कुछ भी काम हमारी बहनों के लिए नहीं किया है। इन्होंने 13,107 राजीव मितान क्लब का गठन किया। माननीय उपाध्यक्ष महोदय जी, इन्होंने केवल और केवल अपने राजनैतिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए राजीव मितान क्लब का गठन किया है। मैंने कल एक प्रश्न लगाया था। मैंने पूछा कि आपने जो राजीव मितान क्लब बनाया है, उसके क्या उद्देश्य हैं और उसमें कैसे लोग शामिल हो सकते हैं ? आप मुझे इसकी गाइडलाइन बताइये। इन्होंने शामिल कैसे किया है, इसका उत्तर इन्होंने मुझे नहीं दिया, पर इन्होंने बहुत स्पष्ट कहा कि उनकी गाइडलाइन यह है कि ऐसे लोग जो सोशल एक्टिविटी में आगे हो, जो समाज सेवा में आगे हो और जिन्होंने समाज सेवा की हो, ऐसे लोगों को इसमें प्राथमिकता दी जाएगी। जो एन.एस.एस. या अन्य कोई रेड क्रॉस, एन.सी.सी. हैं, ऐसे संगठनों में जो युवा जुड़ चुका है ऐसे लोगों को इसमें प्राथमिकता दी जाएगी। माननीय उपाध्यक्ष महोदय, यह केवल और केवल पैसों के बंदरबांट के लिए राजीव युवा मितान क्लब का निर्माण किया गया है और उसमें केवल और कांग्रेसी लोग जुड़े हुए हैं। उनमें कांग्रेस के कार्यकर्ता जुड़े हैं।

उपाध्यक्ष महोदय :- चलिये, समाप्त करिये। श्री गुलाब कमरो जी।

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, यह केवल और केवल नाम का है।

उपाध्यक्ष महोदय :- आपको 12 मिनट से ज्यादा हो गया है। मुझे आपके ही दल के अन्य लोगों को मौका देना है। आप सहयोग करियेगा।

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं अपने क्षेत्र के भी थोड़ा से विषय रखूंगी। इन्होंने कहा कि हमने मुख्यमंत्री ग्राम सड़क योजना के तहत् 4 वर्षों में इतने हजार किलोमीटर की सड़के बनाईं। मैं अपने क्षेत्र का बहुत ही सीधा और सरल विषय बोलती हूं। पिछले 4 सालों में मैंने 33 किलोमीटर रोड के लिए कम से कम 15 बार विभाग के मंत्री और इनके अधिकारियों को चिट्ठी लिखी है। 15 बार किसे कहा जाता है ? यह केवल बड़ी-बड़ी बात करते हैं। मैंने कई बार इस सदन के माध्यम से भी उस रोड की तरफ सरकार का ध्यान आकर्षण कराया है। जिसे दर्री-खरेंगा रोड कहा जाता

है लेकिन आज पर्यन्त तक इन्होंने मुझे बार-बार यह आश्वासन दिया कि ए.डी.बी. (एशियन डेव्हलपमेंट बैंक) में फोर्थ फेस में यह योजना शामिल हो जाएगी, लेकिन क्या 4 वर्षों में यह सरकार कुछ नहीं कर पाई ? क्यों इन्होंने इस रोड को नहीं बनाया ? माननीय मुख्यमंत्री जी का बयान आता है कि गड्ढों को भरा जाए, रोड बनाये जाए तो यह किसके घर के गड्ढे भर रहे हैं ? क्या यह अपने रोड के गड्ढे भर रहे हैं। आप मुझे यह जवाब दीजिए कि मेरे विधान सभा क्षेत्र में 33 किलोमीटर का रोड क्यों नहीं बन पाया ?

उपाध्यक्ष महोदय :- आप मंत्री जी से कक्ष में अलग से मिलियेगा। चलिये मैडम, आप समाप्त करें।

श्रीमती रंजना डीपेप्द्र साहू :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं अपने क्षेत्र के ही विषय रखूंगी। इन्होंने इसके बाद ई-श्रेणी पंजीयन की बात कही थी और इस सरकार ने युवाओं को रोजगार देने की बात कही थी लेकिन इन्होंने केवल और केवल इस सुगम सड़क योजना की शुरूआत की। इनका उद्देश्य बहुत अच्छा था। इन्होंने इसकी शुरूआत भी बहुत अच्छे से की, लेकिन इन्होंने केवल एक व्यक्ति को, एक युवा को 20 लाख रूपये तक का काम देने की तैयारी की। पहली बार इन्होंने काम देने का प्रयास किया। लेकिन 3 साल हो गये, आज पर्यन्त तक उनको उनके पैसे नहीं मिले। टेण्डर लग गया था और काम हो गया था लेकिन आज तक उन युवाओं को उनके पैसे नहीं मिले हैं। अपने पैसे के लिए युवा साथी भटक रहे हैं। यह सरकार कहती है कि हम युवाओं को काम दे रहे हैं । यह युवाओं से गोबर बिनवाती है और उसे यह कहती हैं कि हम युवाओं को रोजगार दे रहे हैं। राजीव युवा मितान क्लब में युवाओं को जोड़ लेते हैं और कहते हैं कि हम युवाओं को रोजगार दे रहे हैं।

उपाध्यक्ष महोदय :- चलिये, आपके साथियों का भी नंबर आएगा। मैडम, अब आप समाप्त करिये।

श्रीमती रंजना डीपेप्द्र साहू :- जी। ऐसे काम नहीं चलेगा।

उपाध्यक्ष महोदय :- मैं आपको 1 मिनट से ज्यादा समय नहीं दूंगा।

श्रीमती रंजना डीपेप्द्र साहू :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मुझे आपके समक्ष केवल एक विषय रखना है कि इन्होंने कहा कि सुघ्घर पढ़वइया योजना के माध्यम से सभी शासकीय विद्यालयों में शिक्षा के स्तर को सुधारने के लिए कदम उठाया गया। आज प्रदेश के शिक्षक खुद इस बात को स्वीकार करते हैं कि शिक्षा विभाग को केवल और केवल प्रयोगशाला बनाया गया है। कोई नया एक्सपेरिमेंट करना हो तो यह शिक्षा विभाग में करते हैं। कुछ और नया करना हो तो यह शिक्षा विभाग में करते हैं। आज मैं आपको इस प्रदेश की स्थिति बताना चाहती हूं कि अभी एक महीने पहले शिक्षा के संबंध में एनवल स्टेट ऑफ एजुकेशन की जो रिपोर्ट आई है उसमें 15-16 प्रतिशत बच्चे ऐसे हैं जो स्कूल ही नहीं जा रहे हैं। 48 प्रतिशत बच्चे ऐसे हैं जो पांचवी में तो हैं पर वह कक्षा दूसरी का भी मैथ्स सॉल्व नहीं कर पा रहे हैं।

48 प्रतिशत बच्चे ऐसे हैं जो हिंदी नहीं पढ़ पा रहे हैं। शिक्षा का स्तर कहां जा रहा है ? हम बड़े-बड़े आत्मानंद इंग्लिश मीडियम स्कूल की बात करते हैं, लेकिन पहले हम हिंदी को तो सुधार लें।

श्री अजय चंद्राकर :- जब गोबर बिनना है तो पढ़ाई की क्या जरूरत है ?

श्रीमती रंजना डीपेप्द्र साहू :- हम अपने बच्चों को हिंदी तो ठीक से सिखा ले। 32 प्रतिशत बच्चे ऐसे हैं जो 11 से 99 तक की संख्या को भी पढ़ नहीं पा रहे हैं।

श्री गुलाब कमरो :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय।

उपाध्यक्ष महोदय :- बोलिये न आप।

श्रीमती रंजना डीपेप्द्र साहू :- यह जो राज्यपाल महोदय का अभिभाषण है निश्चित रूप से यह केवल और केवल लिखा हुआ है। इस सरकार को इस प्रदेश की चिंता नहीं है और इन्होंने राज्यपाल महोदय जी से केवल भाषण पढ़वाया है।

श्री गुलाब कमरो :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, राज्यपाल महोदय के अभिभाषण पर चर्चा के लिए मैं खड़ा हुआ हूं।

डॉ. रश्मि आशिष सिंह :- वह महोदया नहीं थे, महोदय थे।

सुश्री शकुंतला साहू :- अब राज्यपाल महोदया नहीं हैं। वह राज्यपाल महोदय थे।

श्री गुलाब कमरो :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आपने मुझे अवसर दिया उसके लिए मैं आपका आभार व्यक्त करता हूं। छत्तीसगढ़ में भूपेश बघेल जी की सरकार बनने के बाद से जिस तरह से बापू जी की सोच थी, उसी तर्ज पर छत्तीसगढ़ की सरकार ने अपनी योजनाओं की शुरूआत की है। सबसे पहले मैं बताना चाहूंगा कि छत्तीसगढ़ में कांग्रेस की सरकार बनने के बाद सरकार ने किसानों का कर्ज माफ किया । इसके साथ ही आपको बताना चाहूंगा कि जिस तरह से बापू जी कहते थे कि भारत की आत्मा गांव में बसती है । इसलिए हमारी सरकार ने किसानों की चिन्ता की है, उसके लिए हमारी सरकार ने किसानों के धान का समर्थन मूल्य 25 सौ प्रति क्विंटल देने का शुभारंभ किया ।

उपाध्यक्ष महोदय :- माननीय राज्यपाल के अभिभाषण पर चर्चा पूर्ण होने तक सभा के समय में वृद्धि की जाये, मैं समझता हूं कि सभा सहमत है ।

सदन द्वारा सहमति प्रदान की गई.

श्री गुलाब कमरो :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, किसानों के सिंचाई पम्प के लिए बिजली बिल में 10,400 करोड़ रूपये की राहत दी गई है । उपाध्यक्ष जी, मैंने बहुत तैयारी की थी, पर आपने समय कम कर दिया है इसलिए मैं संक्षिप्त में कहना चाहूंगा । गोधन न्याय योजना के लिए हमारी सरकार ने 403 करोड़ रूपए का भुगतान किया है । मैं विपक्ष के साथियों की बातें सुन रहा था, वे बोल रहे थे कि सरकार ने कुछ नहीं किया। हम लोग नये सदस्य हैं, पर हम लोग सीखने की कोशिश करते हैं । मैं कहना

चाहता हूं कि कांग्रेस की सरकार ने इन चार सालों में किसानों, नौजवानों, युवाओं, आदिवासी भाईयों के लिए लगातार चिन्ता की है । मैं प्रत्यक्ष उसका उदाहरण हूं । पूर्ववर्ती सरकार में आदिवासियों का कोई मान-सम्मान नहीं होता था । इनके कार्यकाल में सरगुजा और बस्तर प्राधिकरण कर गठन किया गया था, लेकिन हमारी सरकार बनने के बाद मठ का भी गठन हुआ । वह आदिवासी वर्ग की सीट है, लेकिन इन लोगों ने 15 साल में एक भी आदिवासी को नहीं बैठने दिया गया। मैं स्वयं आज उपाध्यक्ष हूं, लेकिन हमारी सरकार बनने के बाद तीन आफिस है, वहां बैठकर हम लोग निर्णय लेते हैं । जिस काम को करने में एक साल लगता था, उस काम को हम लोग तत्काल करते हैं । अभी विपक्ष के साथी लगातार बस्तर की बात कर रहे थे, आदिवासियों के हित की बात कर रहे थे । हमारी सरकार बनने के बाद लौहण्डीगुड़ा में 1700 किसानों की जमीन वापसी करने का काम कराया है । पूरे सरगुजा और बस्तर संभाग में जो हमारे आदिवासी भाई रह रहे हैं, उनको देवगुड़ी का जो स्थान मिला है, उसके लिए हम मुख्यमंत्री जी को धन्यवाद देते हैं । पूर्व मुख्यमंत्री जी अभी बड़ी-बड़ी बात कर रहे थे, वे यहां बैठते तो मेरी बात सुनते । मैं उनको बताना चाहूंगा कि उन्होंने कोरिया जिले को गोद लिया था । मैं सम्माननीय विपक्ष के साथियों से पूछना चाहता हूं कि गोद किसको कहते हैं । उन्होंने गोद लिया, पर एक भी काम नहीं किया । जब मैं विपक्ष में था तो मैं आरोप लगाता था कि नहर है तो बांध नहीं, बांध है तो नहर नहीं, लेकिन आज चौबे जी की कृपा से पूरे किसानों को पानी मिल रहा है और किसान सिंचाई कर रहे हैं, गेहूं, धान लगा रहे हैं। उसके लिए मैं माननीय भूपेश बघेल जी, माननीय कृषि मंत्री जी को धन्यवाद देना चाहता हूं । रमन सिंह जी ने गोद लिया था, पर कुछ नहीं किया । हमारे मुख्यमंत्री भूपेश बघेल जी ने गोद लेने के बाद एक जिला बनाया, एक अनुभाग कार्यालय बनाया, दो तहसील बनाया, आपने देवगुड़ी का निर्माण किया, आपने 32 गांव के लिए बिजली दी, कॉलेज दिया, गांव-गांव में धान खरीदी केन्द्र दिया । यह हमारे भूपेश बघेल जी और हमारी सरकार का काम है । आज पूरे प्रदेश में पंचायती राज व्यवस्था चल रही है । मध्यप्रदेश में जब हमारे कांग्रेस की सरकार थी तो पंचायत राज की व्यवस्था दी थी । पंचायतों को सशक्त करने के लिए, विकेन्द्रीयकरण करने के लिए छोटे-छोटे प्रशासनिक रूप को बढ़ाते हुए नया जिला बनाया गया है । इसके साथ ही प्रदेश में हमारी सरकार तेजी से काम कर रही है ।

उपाध्यक्ष महोदय, विपक्ष के बहुत से साथी कह रहे थे कि नरवा, गरूवा, घुरूवा, बारी में कुछ नहीं हो रहा है, कैम्पा में कुछ नहीं हो रहा है । मैं बताना चाहूंगा कि सिर्फ बस्तर में ही जंगल नहीं है, बल्कि मेरे कोरिया जिले में, मेरे भरतपुर विधान सभा क्षेत्र में 70 परसेंट में वनांचल क्षेत्र आता है । मेरे साथ चलिए, मैं अपने विधान सभा क्षेत्र में दिखाऊंगा । आप किस दिन चलना चाहते हैं, आप तिथि तय कीजिए, मैं आपको दिखाऊंगा कि नरवा प्रोजेक्ट के तहत कितना अच्छा काम हुआ है, किस तरह से हमारे किसान भाइयों को सुविधा मिल रही है । इसके लिए मैं माननीय भूपेश बघेल जी को धन्यवाद

देता हूं । मुख्यमंत्री जी ने, चौबे जी ने पंचायतों को सशक्त करने के लिए सरपंचों के अधिकारों को बढ़ाया है, उनको 20 लाख रूपए का अधिकार था, उसे आपने 50 लाख रूपए किया । चाहे पंच हो, सरपंच हो, जनपद हो, जिला पंचायत हो, आपने उनका मानदेय बढ़ाया है, यह हमारे कांग्रेस की सरकार ने किया है।

उपाध्यक्ष महोदय, विपक्ष के साथी बड़ी-बड़ी बातें करते हैं, इनको भाषण देने में बहुत आनंद आता है, पर मैं इनसे पूछना चाहता हूं कि केन्द्र सरकार ने कहा था कि दो करोड़ लोगों को नौकरी मिलेगी, पर किसको नौकरी मिली । पांडे जी कह रहे थे कि कोरोना का संकट पूरे देश में था । मोमबत्ती बजाओ, थाली बजाओ, सब करा लिए । अब देखे कि संक्रमण से लोगों की मौत हो रही है तो ये अण्डर ग्राउण्ड हो गए। लेकिन हम हमारे मुख्यमंत्री जी को पूरे छत्तीसगढ़ की तरफ से धन्यवाद देते हैं कि कोरोना संकट के दौरान जगह-जगह स्टॉल लगाया। जो लोग बाहर से आ रहे थे, उनके लिए व्यवस्था कराया। अगर लोगों को नि:शुल्क राशन देने का काम किया तो उसका नाम मुख्यमंत्री श्री भूपेश बघेल है। इतना ही नहीं, अभी फिर से जनवरी से लेकर दिसम्बर तक नि:शुल्क राशन देने का काम किया गया , उसका नाम माननीय मुख्यमंत्री भूपेश बघेल है।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, अभी कह रहे थे कि धर्मान्तरण हो रहा है। मैं आपसे पूछना चाहता हूं कि हमारी कांग्रेस की सरकार और आपकी 15 साल की सरकार का, दोनों का तुलनात्मक आकड़ा देख लीजिये कि किसके सरकार के कार्यकाल में कितने गिरजाघर बने हैं तो आपको खुद पता चल जायेगा कि आपकी सरकार ने कितना काम किया और हमारी सरकार ने कितना काम किया है।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, अभी अपराध के बारे में कह रहे थे कि छत्तीसगढ़ नक्सलगढ़ बन गया है। आप नक्सली घटनाओं का आकड़ा देख लीजिये। आप सन् 2008 से 2018 तक का आकड़ा देख लीजिये। 5 सौ, 6 सौ, 7 सौ, 8 सौ घटनाएं घटी थीं, लेकिन हमारी सरकार बनने के बाद 3 सौ, 2 सौ, इस वर्ष 2023 में सिर्फ 25 घटनाएं हुईं हैं। इसलिए मैं बताना चाहूंगा कि आपके देश के नेता असत्य बोल रहे हैं। कम से कम आप तो सही बोलिये। छत्तीसगढ़ मे कांग्रेस की सरकार बनने के बाद से किसान, नवजवान, हमारे आदिवासी भाईयों का लगातार विकास हो रहा है। मैं आपको बताना चाहूंगा। मैं खुद आदिवासी हूं। हमारे 14 हजार बैगा आदिवासी लोग हैं। उनको, इनकी सरकार 15 साल तक कहती थी कि टार्च ले लो, छतरी ले लो, रेडियो ले लो, मोबाइल ले लो, लेकिन कभी भी उनका अनुसरण नहीं किया और ना ही सम्मान दिए। परन्तु हमारी भूपेश बघेल जी की सरकार ने कैम्प लगवाकर उनका जाति प्रमाण-पत्र बनवाया है। 23 हजार लोगों का जाति प्रमाण-पत्र बनाने वाला भूपेश सरकार है। माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आपने मुझे बोलने का अवसर दिया, मैं आपको धन्यवाद देता हूं।

श्री रजनीश कुमार सिंह (बेलतरा) :- सम्माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं आज माननीय राज्यपाल जी के अभिभाषण के कृतज्ञता प्रस्ताव पर बोलने के लिए खड़ा हुआ हूं।

उपाध्यक्ष महोदय, कल से इस कृतज्ञता प्रस्ताव पर चर्चा शुरू हुई है, मैं अपने तमाम साथियों को सुना हूं। ओपनर बैट्समैन आदरणीय अध्यक्ष मोहन मरकाम जी से लेकर अभी तक हमारे जितने साथी हैं और जितने समय तक बोले हैं, 3-4 मिनट अपने सवा चार साल की उपलब्धि को बता पाये हैं, 2-3 मिनट में 2-3 बिन्दुओं पर बोलकर हमारी 15 साल की सरकार पर आ गए हैं। तो यह निश्चित रूप से बताता है कि इनको 15 साल की उपलब्धियों पर आना ही पड़ेगा। पाण्डेय जी, कोई भी 3 मिनट से ज्यादा अपने इस सरकार की उपलब्धि को बखान नहीं कर पाये। इस अभिभाषण में 71 बिन्दु दिए गए हैं, उसके अधिकतर बिन्दुओं में लिखा गया है प्रगतिरत है, किया जा रहा है, प्रयास किया जा रहा है, किया जावेगा।

डॉ.(श्रीमती) रश्मि आशीष सिंह :- आप लोगों को भी अधिवेशन पर बोलना पड़ गया, उस पर भी गौर करो।

श्री शैलेश पाण्डे :- एक काम करते हैं, सुन तो लो।

उपाध्यक्ष महोदय :- पाण्डे जी, सीधा संवाद ना करें। जो भी है, इधर बताईये।

श्री शैलेश पाण्डे :- एक मिनट, सुन तो लीजिये। आदरणीय रजनीश भईया, मैं कहता हूं कि आप 15 साल की ही उपलब्धि बताओ। हमारे साढ़े चार साल के कार्यकाल का मत बोलना। आप अपने 15 साल के बारे में बताईये कि आपने क्या किया ?

श्री रजनीश कुमार सिंह :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं हमारी 15 साल की उपलब्धि के विषय में अलग से डिबेट कर लूंगा, हम 5-10 लोगों को बैठा लेंगे। मैं इसी 4 साल का बता देता हूं।

डॉ.(श्रीमती) लक्ष्मी ध्रुव :- अपने 15 साल के घोषणा-पत्र को बताओ।

उपाध्यक्ष महोदय :- आप लोग शांत रहिये, उनसे बाद में डिबेट होती रहेगी।

श्री रजनीश कुमार सिंह :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, ये 15 साल की बात करते हैं, बार-बार इस सदन में विषय आया है कि ये क्या बनाये हैं। हमने नया रायपुर बनाया है, एम्स, बनाया है, आई.आई.टी. बनाया है, ट्रिपल आई.टी. बनाया है। ये इसी नया रायपुर में अधिवेशन करवाकर वाह-वाही लूट रही है, जो भारतीय जनता पार्टी ने बनाया था। उसी नया रायपुर में क्रिकेट मैच करवाकर अपना नाम रोशन कर रहे हो, यह अलग बात है कि टिकट भी ब्लेक करवा रहे हैं।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं 3-4 चीजों पर बोल देता हूं।

श्री शैलेश पाण्डे :- आप जिस स्कूल में पढ़े होगे, वह भी कांग्रेस की सरकार ने बनवाया है।

डॉ.(श्रीमती) रश्मि आशीष सिंह :- आप लोगों को पीड़ा है कि क्यों बारनवापारा में आप लोगों की बैठक हुई। आप लोगों को भी वहीं करना था।

श्री शैलेश पाण्डे :- आपने जिस भी स्कूल-कालेज में पढ़ा है, वह कांग्रेस ने ही बनवाया है।

डॉ.(श्रीमती) लक्ष्मी ध्रुव :- झलियामारी, आंख फोड़वा काण्ड को बताओ। गर्भाशय काण्ड को बताओ।

श्री रजनीश कुमार सिंह :- जी.एस.जी.बी. क्या है, मातृत्व मृत्यु दर क्या है, शिशु मृत्यु दर क्या है, कुपोषण क्या है, वह किसी राज्य के विकास का सूचकांक होता है । चार साल से हम देख रहे हैं कि इनका जो आंकड़ा अलग-अलग आता है । पाण्डेय जी, एक बार पढ़ लीजिए कि 15 साल में छत्तीसगढ़ वर्ष 2000 में कहां था और वर्ष 2018 में इन तीनों चीजों पर, उन आंकड़ों पर जाऊंगा तो बहुत लम्बा समय लगेगा । इन पन्द्रह सालों के कारण ही आज छत्तीसगढ़ यहां है, आप कहां किये हो, बिजली में पांच घण्टा कटौती हो रही है ।

सुश्री शकुंतला साहू :- असल में मनमोहन सिंह जी ने भेद नहीं किया है ना ।

श्री रजनीश कुमार सिंह :- वर्ष 2003 में बिजली सरप्लस था, कभी बिजली कटौती नहीं होती थी, आज पांच-पांच घण्टे, छै:-छै: घण्टे किसानों के कृषि पम्प का बिजली कटौती बारह महीने हो रहा है । ऐसा नहीं है कि अभी रबी के सीजन में हो रहा है ।

श्री शैलेष पाण्डेय :- आपके कार्यकाल में तभी किसान आत्महत्या कर रहे थे ।

श्री रजनीश कुमार सिंह :- जल मिशन का काम चल रहा है, अधिकारियों से पूछे कि उसके नियम क्या है, जहां ठेका हो रहा है, जहां पुराना पाईप लगा है, उस पाईप का उपयोग किया जायेगा, उसका टेण्डर का पैसा कटेगा, उसको नई बता पा रहे हैं, कहीं पुराना टंकी है तो उसको बता दे रहे हैं, इस तरह से जल मिशन का काम है, इस सितम्बर को पूरा हो जाना चाहिये था, इसमें छत्तीसगढ़ सबसे पीछे है, दूसरा आत्मानंद स्कूल को इसमें जोड़कर बता रहे हैं कि स्कूल का हमारे छत्तीसगढ़ में स्कूली शिक्षा या शिक्षा का प्रतिशत इतना बढ़ गया । पिछले चार साल से मिडिल स्कूल को हाई स्कूल में परिवर्तित नहीं कर पा रहे हैं, हाई स्कूल को हायर सेकेण्डरी में परिवर्तित नहीं कर पा रहे हैं, स्कूलों में शिक्षकों की कमी है, वह तो 3000 का आंकड़ा देते हैं, मैं अभी प्रश्न लगाया हूँ, कितना स्कूल अभी बस्तर में कौन से 3000 स्कूल बंद हुये हैं, बार-बार यहां बोलते हैं कि 3000 स्कूल अभी बंद हुआ था, जिसको हमने प्रारंभ करवाये हैं । छत्तीसगढ़ में स्कूल शिक्षा की हालत यह हो चुकी है कि शिक्षा के नाम पर सब कुछ बंद है । अध्यक्ष महोदय, एक विषय जरूर कहना चाहूंगा कि बार-बार विषय आता है कि केन्द्र सरकार ने हमारा पैसा रोक दिया है, केन्द्र सरकार के कारण हम काम नहीं कर पा रहे हैं, केन्द्र सरकार दे दें तो हम सब पूरा कर लें । उपाध्यक्ष महोदय, मैं कुछ चीजों का जिक्र करूंगा । यह सरकार केन्द्र पोषित सरकार है । केन्द्र के द्वारा दिये गये योजनाओं के कारण चल रही है, किसानों की बात बहुत करते हैं । माननीय उपाध्यक्ष महोदय, किसान सम्मान निधि में 6 हजार करोड़ से अधिक की राशि किसानों के खाते में दी जा चुकी है, आप 12-14 हजार करोड़ बताते हैं ना कि पूरे छत्तीसगढ़ के किसान....। (व्यवधान)

सुश्री शकुंतला साहू :- किसी के खाते में नही आ रहा है भईया । मुख्यमंत्री जी सात हजार दे रहे हैं । (व्यवधान)

श्री रजनीश कुमार सिंह :- उपाध्यक्ष महोदय, 6 हजार करोड़ से ज्यादा और इससे भी बड़ी ज्यादा दुखद बात यह है कि 2 लाख किसानों का आज इस सरकार के कारण पेंडिंग है, उसकी फार्मेलिटी नहीं करने के कारण जिसमें 3 हजार करोड़ मिलना है, यह सरकार के कारण है, पूछ लीजिएगा, समझ लीजिएगा । कुछ चीजों को और बोल देता हूँ, उसके बाद ये समझ जायेंगे । जीएसटी की बात करते हैं, वर्ष 2020-2021 में इनको 6068 करोड़, वर्ष 2021-2022 में 8628 करोड़, वर्श 2022-2023 में 7830 करोड़, कार्पोरेशन टैक्स 6117 करोड़, 7699, 6887, इंकम टैक्स- 6269, 8887, 6652, यह वर्ष 2021-2022-2023 है, इसे कंटिन्यू रखियेगा ।

सुश्री शकुंतला साहू :- बाकी पैसा को भी बताईये कि क्यों नहीं दे रहे हैं । आप लोग मोदी जी को चिट्ठी भेजिये ।

श्री रजनीश कुमार सिंह :- केन्द्रीय एक्साईज ड्यूटी, 686,1019, जीएसटी मद में 50 साल का ऋण जो इनको दिया है ।

सुश्री शकुंतला साहू :- खा गये मोदी जी ।

उपाध्यक्ष महोदय :- कृपया समाप्त करें । आपका समय हो गया है ।

श्री रजनीश कुमार सिंह :- 3109, 4965, 1333, राजस्व मद में 2508, 2583, 2943, केन्द्रीय सड़क मद में 234, 149, 86, राजस्व कम होने पर राज्य को जो राशि प्राप्त होने वाली है, 2870, 1216, 1933, 14 वां, 15 वां वित्त, 1900,1600,1500, तीन साल का बता रहा हूँ । मनरेगा, 5597, 1057, 821, मध्यान्ह भोजन, 380, 213, आजीविका मिशन, 210, 259, 271, प्रधानमंत्री सड़क योजना, 925, 394, 872, समग्र शिक्षा 250, 332, 489, प्रधानमंत्री आवास शहरी, ग्रामीण को छोड़ रहा हूँ, 269, 184, 489, महिला एवं बाल विकास, 500, 600 और इस साल का 570 करोड़, वर्ष 2020-2021 में 39 हजार 55 करोड़, वर्ष 2021-22 में 47 हजार 57 करोड़ और वर्ष 2022-23 में 37 हजार 188 करोड़..।

उपाध्यक्ष महोदय :- चलिये लगभग-लगभग आपकी बात आ गई। श्री किस्मत लाल नंद जी।

श्री रजनीश कुमार सिंह :- उपाध्यक्ष महोदय, कुल मिलाकर के 1 लाख करोड़ से ज्यादा है। कुछ मदों को बता रहा हूं इसमें अभी कई हेड्स छोड़ दिया हूं। यह सरकार केन्द्र के द्वारा पोषित सरकार है। यह राज्य सरकार कुछ बोलने की स्थिति में है ? राज्यपाल जी के अभिभाषण के सारे बिन्दु देख लीजिये। इसमें जितनी भी उपलब्धियां बताये हैं, सब के सब केन्द्र शासित पोषित राज्य है। यदि राज्य सरकार इसमें अपनी राशि जमा कर देती तो और भी अच्छा हो सकता था लेकिन इसमें जो भी कमी है वह सिर्फ और सिर्फ इसलिये है कि यह सरकार ने जो अपना मैचिंग ग्रांट है, उसमें से राशि जमा नहीं की

है। इसलिये मैं राज्यपाल जी के अभिभाषण का विरोध करता हूं। उपाध्यक्ष महोदय, आपने बोलने का समय दिया इसके लिये बहुत-बहुत धन्यवाद।

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- संघीय ढांचा का पालन तो करना पड़ेगा। यह संघीय व्यवस्था है।

उपाध्यक्ष महोदय :- चलिये, किस्मतलाल नंद जी।

श्री किस्मत लाल नंद (सराईपाली) :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं महामहिम राज्यपाल महोदय के कृतज्ञता अभिभाषण के पक्ष में बोलने के लिये खड़ा हुआ हूं। जब वर्ष 2018 में विधान सभा का चुनाव हुआ और उस जनादेश के बाद इस सरकार का गठन हुआ। जैसे ही हमारी सरकार बनी, घोषणा पत्र में जो वायदा किया गया था उन वायदों में से सबसे बड़ी घोषणा जो किसानों के लिये की गई थी कि हम जब जीतेंगे तो 2500 रूपये क्विंटल में धान खरीदेंगे। जीतने के दो घण्टे के भीतर 16 लाख 65 हजार किसानों का कर्जा माफ किया गया और उसमें 2500 रूपये क्विंटल में धान खरीदा गया। 4 वर्ष तक, इस वर्ष 2022-23 के खरीफ फसल की जो खरीदी हुई उसमें 1 करोड़ 7 लाख 53 हजार रूपये का किसानों का धान खरीदा गया। भारतीय जनता पार्टी के 15 वर्ष में शासन में किसानों ने जो तकलीफ उठाई थी उस समय कई हजार किसानों ने कर्ज में डूबकर आत्महत्या की थी। उसी को सोचकर माननीय भूपेश बघेल जी की सरकार ने किसानों के प्रति ध्यान दिया। आज रिकॉर्ड तोड़ जो 1 करोड़ 7 लाख 53 हजार मीट्रिक टन जो धान खरीदी हुई है वह पूरे देश में दूसरे स्थान पर है।

श्री अजय चंद्राकर :- किस्मत लाल नंद जी, यह सराईपाली नगरपालिका को अब तक 4 साल में कितना पैसा मिला है ?

श्री किस्मत लाल नंद :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, सराईपाली में इस साल माननीय नगरीय प्रशासन मंत्री के द्वारा 4 करोड़ 95 लाख दिया गया है।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- तोर यहां कुरूद में कतका मिले है तेकर बता ? कुरूद के ला बता न। ओकर ले पूछ ले।

सुश्री शकुंतला साहू :- भैया बता दे ना ।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- बता दे ना।

डॉ. रश्मि आशीष सिंह :- भैया, तै अतका दे डाले हव, वह जोड़ नहीं पाथे ।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- किस्तम जी ला तो बता दिस।

श्री रामकुमार यादव :- का हे, ओकर गणित मा थोड़ा फेल हे।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- ओकर यहां कतको पैसा चल दिस, चिंता की बात नहीं है।

उपाध्यक्ष महोदय :- नंद साहब, बोलिये।

श्री किस्मत लाल नंद :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं कोई चीज पढ़कर आपको नहीं बता रहा हूं। मैं माननीय विपक्ष और पक्ष के सदस्यों ने जो कहा, उसको सुनकर बोल रहा हूं। अभी कुछ माननीय

विपक्ष के सदस्य यह बोल रहे थे कि मंत्रियों के बारे में सचिवों को कह दिया जाता है कि इसकी बात न सुने। मैं माननीय पूर्व गृहमंत्री जी, श्री ननकीराम कंवर जी, वह अभी इस सदन में उपस्थित नहीं है।

श्री उमेश पटेल :- अजय भैया, वह आपके सुनने लायक बात बोल रहे हैं।

श्री किस्मत लाल नंद :- मैं उनके बारे में बताना चाहता हूं कि वह जिस समय गृहमंत्री थे तो आरंग के ढाबे में शराब पकड़े, उन्होंने वहां पर टी.आई. को बुलवाया, केस बनवाये। उसके बाद एक एस.पी. ने मुझसे पूछा कि क्या एक गृहमंत्री किसी ढाबे में जाकर शराब पकड़ रहा है तो उसके थानेदार की क्या स्थिति होनी चाहिए? मैंने कहा कि सर आप ही बताईये। उन्होंने कहा कि यदि गृहमंत्री किसी ढाबे में शराब पकड़ते हैं तो उस थानेदार को तो बर्खास्त हो जाना चाहिए और उस जिले के एस.पी. का ट्रांसफर होना चाहिए। लेकिन क्या ऐसा हुआ ? मैंने बोला कि नहीं हुआ। उन्होंने बोला तो क्या गृहमंत्री का कोई मतलब है ? आपके भारतीय जनता पार्टी के शासन में मंत्रियों की यह स्थिति थी। आज वह हमारे मंत्रियों के ऊपर आरोप लगाते हैं, वह सरासर गलत है। हमारे स्वामी आत्मानंद इंग्लिस मीडियम स्कूल की बात हो रही थी। हमारे माननीय मुख्यमंत्री जी ने देखा कि यू.पी.एस.सी. में आई.पी.एस., आई.ए.एस. और आई.आर.एस. में हमारे छत्तीसगढ़ के बच्चे क्यों सेलेक्ट नहीं हो पा रहे हैं तो उसके लिये उन्होंने गंभीरता से विचार करते हुये स्वामी आत्मानंद इंग्लिस मीडियम स्कूलों को खोला ताकि हमारे छत्तीसगढ़ के बच्चे भी आई.ए.एस, आई.पी.एस. और आई.आर.एस. बन सके और केंद्रीय सेवाओं में उनकी नियुक्ति हो सके, यह उनका मुख्य उद्देश्य था। आज जब हम दूसरे प्रदेश में जाते थे।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय किस्मतलाल नंद जी, एक मिनट। वह जो टोल टैक्स लगा है, उसमें आपकी कुछ सुनवाई होती है या नहीं होती है ?

श्री किस्मतलाल नंद :- हमारी सुनवाई होती है।

श्री रामकुमार यादव :- भईया, एक मिनट। जब भईया हा टी.आई रिहिस हे तो बड़े-बड़े चंबल के डाकू मन ला ठीक करे हे। तोर खातिर विशेषकर ठीक करे हे।

श्री किस्मतलाल नंद :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आज हमारे माननीय विपक्ष के लोग कानून-व्यवस्था और नक्सली वरदात की घटनाओं के बारे में बता रहे हैं कि 15 वर्षों में...।

उपाध्यक्ष महोदय :- किस्मतलाल नंद जी, अब आप समाप्त करें।

श्री किस्मतलाल नंद :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं बताना चाहता हूँ कि वर्ष 2010 में ताड़मेटला में घटना हुई थी, जिसमें 75 जवान शहीद हो गये थे। वर्ष 2006 में मूर्तिनार थाने में नक्सलियों ने अटैक किया, उसमें 13 जवान शहीद हुए थे। वर्ष 2009 में बेदरे, रानीबोदली में घटना हुई थी, जिसमें 65 जवान थाने में ही शहीद हो गये थे। आज कांग्रेस की 5 वर्षों की सरकार में कोई ऐसी वारदात की थाने में नक्सली लोग घुसकर अटैक कर रहे हों, ऐसा अभी तक आपको नहीं दिख रहा होगा। तो 5 वर्ष के कार्यकाल में जो नक्सली घटना थी, वह आपकी भारतीय जनता पार्टी के कार्यकाल से बहुत

ही कम हुई है। आज आपकी भारतीय जनता पार्टी के तीन कार्यकर्त्ताओं की जो हत्या हुई है, हम उसके लिए खेद व्यक्त करते हैं।

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, यात्रा से बढ़ा है।

श्री किस्मतलाल नंद :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, लेकिन झीरम घाटी में हमारे कांग्रेस के 13 शीर्ष नेताओं की हत्या हुई उस समय केन्द्र में मनमोहन सिंह जी की सरकार थी अगर वहां आपकी सरकार होती और यहां पर कांग्रेस का शासन होता तो भारतीय संविधान की धारा 356 के तहत यहां पर राष्ट्रपति शासन लग गया होता, लेकिन केन्द्र में हमारी कांग्रेस की सरकार थी, उस समय ऐसा नहीं हुआ।

श्री रामकुमार यादव :- धारा 356 बोलिए हे।

श्री किस्मतलाल नंद :- मैंने धारा 356 कहा है।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आज 13 वर्षों से बस्तर में करीब 300 स्कूल बंद पड़े हुए थे, हमारी सरकार ने वहां की सड़क व्यवस्था को दूरस्थ किया और वहां हर 10 किलोमीटर में चौकी खोल दी गई है। आज लोगों में पुलिस प्रशासन और सत्ता के प्रति विश्वास जगा है। भारतीय जनता पार्टी के बहुत सारे नेताओं के भाषण सुन रहा था। वह धर्मान्तरण पर जोर दे रहे थे। क्योंकि आर.एस.एस. और भारतीय जनता पार्टी का एक मूल फण्डा रहता है कि जब हिन्दु धर्म के लोग, आदिवासी, अनुसूचित जाति के लोग दूसरे धर्म में जाएंगे तो हमारा वोट बैंक कम हो जाएगा। उनको सबसे बड़ा डर वही रहता है। इसी लिए जगह-जगह धर्मान्तरण की बात कर रहे हैं। प्रदेश में कहीं धर्मान्तरण नहीं हुआ है। जैसे मैं हमारे सरायपाली बसना की बात करूं तो जो भी धर्मान्तरण हुआ है जो भी क्रिश्चियन समुदाय में गये हैं वह आज से 100-150 साल पहले बने हैं, आज पूरे छत्तीसगढ़ में भारतीय जनता पार्टी और आर.एस.एस. के लोग यह हल्ला कर रहे हैं कि यहां धर्मान्तरण हो रहा है। इनके पास कोई एक भी उदाहरण नहीं है। यह धर्मान्तरण फलाने गांव में फलाना व्यक्ति धर्मान्तरण से क्रिश्चियन बना है।

उपाध्यक्ष महोदय :- आपको 10 मिनट हो गये। आप समाप्त करें।

श्री किस्मतलाल नंद :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आपने मुझे बोलने का समय दिया, इसके लिए आपको बहुत-बहुत धन्यवाद्।

उच्च शिक्षा मंत्री :- भईया बने बोलबे। बने सुत-वुत के आए हस नइ। तें फ्रेस हस या नहीं ? बढ़िया बोलबे।

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी (मस्तूरी) :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आपको धन्यवाद्।

आप ला धन्यवाद्। सुते के मौका देबर। अउ ओसने बोले के समय भी दे दव हो भाई।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, माननीय राज्यपाल महोदय जी के अभिभाषण में छत्तीसगढ़ को एक नई दिशा, दशा देने की बात की गई है कि छत्तीसगढ़ को आर्थिक, सामाजिक रूप से संपन्न बनाने के

लिए एक दिशाएं हैं। उसमें सरकार की पूरी योजनाएं समाहित हैं, पूरा दृष्टिकोण हैं और उनके विचार हैं। लेकिन हम जब इसको अपनी नज़रों से देखते हैं तो जिस तरीके से कांग्रेस सरकार ने इसे लाया है, यह केवल छत्तीसगढ़ के लोगों को गुमराह करने के लिए इनकी पूरी योजना बनी और यह छत्तीसगढ़ लोगों की भावनाओं को ठेस पहुंचाने के लिए है। इससे न उनके सामाजिक स्तर, आर्थिक स्तर में सुधार आने वाला है। यह केवल सिवाए बातों के और कुछ भी नहीं है। मैं अब इसका एक-एक उदाहरण देता हूँ। पहला हम गाय, गोबर की बात करते हैं। आप अंदाजा लगा लीजिए कि गाय के गोबर में 200 करोड़ रूपये खर्च किया गया। 35 करोड़ रूपये का गाय का गोबर बेचा गया है। अब इससे छत्तीसगढ़ की आर्थिक स्थिति किस दिशा में जाएगी ? अब वहां पर गोबर वाली जो बातचीत वहां पर आ गई है, वह छत्तीसगढ़ की भावनाओं से जुड़ी हुई है। क्योंकि शुरू से ही नरवा, घुरूवा हमारी प्राकृतिक संपदा है। उसको इन लोगों ने शासकीयकरण किया है। उसका शासकीयकरण करने के बाद संचालन करने में भी इनका कोई नजरिया नहीं है। केवल उसकी बात भर किये हैं और बातों का क्या है। यह एक गोबर वाला मामला है। अब गाय वाला मामला है। अब गाय को देख लीजिए। यह लोग गाय की बात जरूर किये, केवल छत्तीसगढ़ के लोगों की भावनाओं को छूने के लिये, गुमराह करने के लिये किये। गाय न खेत में है और न किसान के पास है। पूरी गायें तो रोड में रहती हैं। आदमी और गाय की दुर्घटना से मृत्यु की खबर से पूरे चार महीने बरसात के समय में पेपर भरा रहता है। यह गाय का क्या मैनेजमेंट करते हैं? इनको गाय का पाप लगेगा। केवल यह जो बातें कही जाती हैं, छत्तीसगढ़ के लोगों को गुमराह के लिए, भावनात्मक बातें करने के लिए कहीं जाती हैं।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, सरकार जैविक खेती की बात कर रही है। गौठानों की बात की गई है। आप कल्पना किये कि लगभग 8 हजार गोठान हैं और इन 8 हजार गोठानों में औसतन 20 लाख रुपये खर्च हुए होंगे। तो 8 हजार गोठान का पैसा गुणा कर दीजिए कि कितना पैसा खर्च हुआ है। औसतन हमारे ग्रामीण डेवलपमेंट का जो इतना पैसा है केवल अपनी भावनाओं के चलते, अपनी भावनओं पर अहंकार करते हुए, उस पैसे को ग्रामीण डेवलपमेंट पर न खर्च करते हुए उन गोठानों पर खर्च किया गया है। आज उन गोठानों की उपयोगिता कितनी जगह में है। कितने जगह पेंट बनाने का काम हो रहा है? सरकार कहती है कि हम इस गाय के गोठान की उपयोगिता आर्थिक स्वावलंबन में कर रहे हैं। लगभग 6 हजार गोठानों की बात करते हैं। जो इतने गोठानों की बात कर रहे हैं, उन गावों में केवल 35 गोठानों में ही पेंट बनाने की कल्पना करते हैं। वह भी पेंट बनाने की कल्पना की शुरूआत और प्रशिक्षण देने की बात करते हैं। हम 2008 से तो यही बात सुनते आ रहे हैं। इससे छत्तीसगढ़ का क्या भला होगा? केवल उनकी भावनाओं के साथ खेलने का, गुमराह करने का काम कर रहे हैं। उनको सामाजिक, आर्थिक किसी भी दिशा में लाभ नहीं मिल रहा है।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, माननीय कृषि मंत्री जी जैविक खाद की कल्पना करते हैं। जैविक खाद की कल्पना करना एक बहुत अच्छी बात है। लेकिन क्या कृषि मंत्री जी जैविक खाद के लिए गंभीर हैं? अगर कृषि मंत्री जी जैविक खाद के लिए गंभीर रहते तो किसी न किसी रूप में अभिभाषण में जैविक खाद के सर्टिफिकेशन करने के लिए केन्द्र खोलने के लिए जिले-जिले में एक-एक केन्द्र के निर्माण की बात होती। लेकिन इस बात का इस अभिभाषण में उल्लेख नहीं किया गया है। इसका मतलब है कि जैविक खाद की बात करते हैं, लेकिन प्रयास नही है। यह प्रयास नहीं करना, छत्तीसगढ़ को किस दिशा में लेकर जायेगा। अगर यह केन्द्र खुलते तो जो आर्गेनिक खेती है तो निश्चित तौर पर उसकी वेल्यू बढ़ती। लेकिन उसको सर्टीफाईड करने के लिए प्रदेश में केन्द्र है लेकिन जिले-जिले में केन्द्र का निर्माण नहीं हो रहा है।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, किसान मित्र की बातचीत कर रहे हैं। किसान मित्र कोआर्डिनेट कर रहा है। किसान मित्र कौन हैं, आपके छत्तीसगढ़ के लोग हैं। आपने तो उनका मानदेय है, उनको अब तक नहीं दिया है। कई बार बोलने के बावजूद भी उन लोगों को नहीं दिया है। जो भी रेट हैं, जिस भी रेट में दें, वह आपके बंदे हैं जो कृषि के लिए सलाह देने का भी काम करते हैं।

उपाध्यक्ष महोदय :- चलिये, डॉक्टर साहब समाप्त करिये।

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, अभी एक ही बिन्दु हुआ है। वन विभाग में बंदरगाह है। यह एग्रीकल्चर में भी कृषि को सपोर्ट कर सकता है। मैं एक बात बता रहा हूं। मैंने एक बार ऐसा प्रयोग करना चाहा। मुनगे की खेती बहुत बढ़िया बढ़ गई है। मैंने किसानों को कहा कि हम मुनगा की बाड़ी नहीं लगा सकते, लेकिन हर घर में 5-5 पेड़ लगा करके हम मुनगा को आर्थिक समृद्धि का एक प्रतीक मान सकते हैं। हमने इसकी बातचीत किया। लेकिन किसानों ने क्या कहा, भैया हम न भाटा लगा सकते हैं, न तिवरा लगा सकते हैं। क्यों नहीं लगा सकते तो उसका एक ही कारण बंदर हैं। बंदर के प्रति इनका कोई मैनेजमेंट नहीं है, कोई कल्पना नहीं है। अर्थात जो नुकसान पहुंचाने वाला है, आपकी डबल फसल नहीं हो रही है, उन्हारी नहीं हो रही है, उसका कारण केवल बंदर है। उसमें सरकार की कोई सोच नहीं हैं।

संसदीय सचिव (श्री द्वारिकाधीश यादव) :- उपाध्यक्ष महोदय, यह बंदर चार ही साल में आये हैं। उसके पहले 15 साल में छत्तीसगढ़ में बंदर नहीं थे क्या?

उपाध्यक्ष महोदय :- चलिये, टोका-टाकी न करें।

श्री द्वारिकाधीश यादव :- चार साल पहले भी बंदर थे, उसके लिए आप कुछ बतायेंगे?

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी :- अपने गांव में ही किसानों से पूछना। आप अपने ही गांव में पूछना। उस समय डबल फसल लेते थे। तिवरा भी लेते थे, ओन्हारी भी लेते थे, लेकिन आज नहीं लेते। क्या कारण है कि आज डबल फसल नहीं लेते हैं?

श्री द्वारिकाधीश यादव :- नहीं, चार साल पहले छत्तीसगढ़ में बंदर नहीं थे क्या?

संसदीय सचिव (सुश्री शकुंतला साहू) :- आपके कार्यकाल मं ही बंद हो गया। बंदर आकर चालू हो गये।

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी :- आपकी कृषि के प्रति दूर दृष्टा सोच कैसी है, कल्पना शक्ति क्या है, यह आपको पता चल जाएगा।

उपाध्यक्ष महोदय :- डॉ. साहब इधर बात करिये, नहीं तो लंबा होगा।

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी :- दूसरा, पुलिस और शराब की बातचीत है। माननीय मुख्यमंत्री जी, कौन सा ऐसा गांव है जहां कोचियों के बारे में किसी को इनफार्मेशन नहीं है। कोटवार बता देगा, पटवारी बता देगा। शराब को बंद नहीं कर सकते तो कम से कम आपके पुलिस प्रशासन के माध्यम से उन कोचियों को तो बंद कर सकते हैं। पुलिस की भूमिका क्या रह गई। केवल शराब पकड़ने के लिए। कोई छट्ठी में शराग ले गया। छट्ठी में शराब लेकर आना हमारे यहां की परंपरा है। उसको ऐसा पकड़ते हैं कि उसको नींबू टाईप का निचोड़ देते हैं। एक तो किस्सा कहानी देखे ही हैं कि एक गाड़ी में कैसे दस पेटी जाते हैं। जिनसे खपता नहीं, जिनसे डीलिंग नहीं होता उसको तुरंत पकड़ते हैं और वहां पर अपना एक्ट्रा आदमी दलाल लगा कर रखे रहते हैं। क्या शराब के प्रति ऐसी परंपरा चलेगी? एक तो शराब बंद नहीं कर सकते। वादा खिलाफी भी है और ऊपर से बंद करने का सलाह भी देते हैं, उसको मानते नहीं। पुलिस ग्राम पंचायतों में किस भूमिका में है? तो एक वह भी समझने को है। दूसरी बात अनुसूचित जाति के संदर्भ में है।

उपाध्यक्ष महोदय :- चलिये, समाप्त करें। श्री रामकुमार यादव जी।

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी :- उपाध्यक्ष महोदय, मैं एक विषय कह कर समाप्त कर देता हूं। अनुसूचित जाति, ओ.बी.सी. के लिए आपकी सर्वांगीण विकास की आपकी कल्पना है और उनको आरक्षण देने के लिए भी आप कटिबद्ध हैं। अब आप सोचिए कि क्या अनुसूचित जाति का अधिकार नहीं है? सबकी आरक्षण को आप उदारतापूर्वक बढ़ा रहे हैं जो जिन अनुसूचित जाति के लोगों को आपने चुनाव के पूर्व उनके यहां जाकर बता कही, लोगों को भड़काया कि हमारी सरकार आने दो, हम 16 प्रतिशत आरक्षण देंगे। क्या इस बार नहीं होनी चाहिए।

सुश्री शकुन्तला साहू :- भैया, आज अब 16 प्रतिशत आरक्षण दे रहे हैं। उस समय आप विधायक थे। आप उस समय क्यों नहीं बोले अब 13 प्रतिशत आरखण दे रहे थे तो। (व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय :- चलिये, समाप्त करिये। श्री रामकुमार यादव जी। आप लोग शांत रहिये।

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय जी, आज हमको लगता है कि अनुसूचित जाति के विकास के लिए पोस्ट ग्रेजुएट (व्यवधान) हॉस्टल खोल रहे हैं।

उपाध्यक्ष महोदय :- चलिये, एक घंटा नेता जी बोलेंगे।

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी :- आज हमको लगता है कि अनुसूचित जाति के हितों में भी बहुत अच्छा निर्णय हो। अब महिलाओं की सशक्तिकरण की बात करते हैं और उनके रेडी टू ईट के अधिकार को छीन लेना। यह दोहरी बात कैसी चल रही है। इससे लगता नहीं है कि छत्तीसगढ़ के लोगों को सिवाय गुमराह करने की कोई बात ही नहीं है। इसलिए उपाध्यक्ष महोदय जी, मेरा यह कहना है कि जिन महिलाओं को सशक्तिकरण करने के लिए आपने जो बातचीत कहा है, उसको करेंगे। धन्यवाद।

उपाध्यक्ष महोदय :- चलिये, नये सदस्य को मौका मिलना चाहिए। श्री रामकुमार यादव जी। दो-दो मिनट में अपनी बात समाप्त करिये।

श्री रामकुमार यादव (चंद्रपुर) :- माननीय उपाध्यक्ष जी, धन्यवाद। मैं माननीय राज्यपाल महोदय के अभिभाषण में कृतज्ञता व्यक्त करे बर खड़ा होय हौं। मैं इस शब्द से शुरू करना चाहत हौं। हमर कइ झन विपक्ष के साथी मन कबीर साहब के दोहा से शुरू करे हे। तो मोला रबीदास जी के दोहा याद आथे। मोला ओकर बात याद आथे, ओकरे सेतिर मैं शुरूआत करना चाहत हौं। रबीदास जी कहे रहीसे कि ऐसे राज चाहूं मैं अउ सबन को मिले अन्न, छोट-बड़ समय रहे, रबीदास प्रसन्न। ऐला रबीदास जी कहे रहीसे। (सत्तापक्ष के सदस्यों द्वारा मेजों की थपथपाहट) आज हमर माननीय मुख्यमंत्री जी के जो योजना हे, जो कार्य करे के के शैली, ये प्रदेश के हित में जो काम करत हे, ये संत महापुरूष मन के बताए हुए रास्ता मा चलके करथे। आज मैं इस अवसर में कहना चाहत हौं कि कौन सराकार हर कइसे बेहतर काम करीसे। अगर कोई तुलना करे के बात हावय ता 15 साल के सरकार अउ 4 साल में 2 साल कोरोना अउ 1 साल चुनाव, हमन ला मात्र एक से डेढ़ साल काम करे के मौका मिले हे। अब तराजू में तुलना कर सकत हौं। 15 साल में आप मन ये सदन मा विपक्ष के मन कइथे ये मन 10 हजार करोड़ रूपये कर्जा माफी करे हे। भैया हो, हमन 2 साल में 10 हजार करोड़ रूपये कर्जा माफ करे हन, तुमन 15 साल में एक रूपये करा का? पहली बात। अब तुलना करत हन। ए सदन के बात ला पूरा प्रदेश हा देखत होही। आप मन जो हे अब कर्जा माफी के बाद चाहे किसान के धान के बात हो, आप मन तो भारतीय जनता पार्टी के कई जगह ठग-ठग के सरकार बनाये हा । तुमन काबर 2640 रूपया नइ देवओ ? इंहेंच काबर मिलत हे ? हमर छत्तीसगढ़ के किसान हा ए बात के तुलना करही ।

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी :- रामकुमार जी, पैसा मिलत हे तभे तो छत्तीसगढ़ मा सबसे ज्यादा पलायन हे । ओखर लिये कोई योजना नइ हे, कोई कल्पना नइ हे । (व्यवधान)

संसदीय सचिव, महिला एवं बाल विकास मंत्री से संबद्ध (डॉ. रश्मि आशीष सिंह) :- अभी-अभी होत हे गा पलायन ? पहली नइ होत रिहिस हे ? अभी-अभी पलायन होत हे । अगर देना है तो मध्यप्रदेश में बढ़िया दाम दीजिए न ।

श्री रामकुमार यादव :- तुंहर सूजी-माटी अब नइ धरय । डॉ. साहब अब चुपचाप बइठओ । अब तुंहर सूजी-माटी ला जान डरिस, अब नइ धराय । तुमन डॉ. कहिके ठगत रहा न, अब सब भस्म हो गे ।

आज ए अवसर में मैं हा कहना चाहत हंओं कि तुलना करही जरूर, तुमन कहत हओ कि हमन इंहां चिल्ला-चिल्ला के कहिबो तो सब पतिया जही कहिके । अब नइ पतियाने वाला । तुमन 15 साल ले ठगे हओ । आप मन जो हे, ए आदिवासी समाज के भाई मन जंगल के भीतरी मा चुनाव प्रचार में गे रहेओ । मोला विधायक हे कहिस ता पहली मोला देख के पतियात नइ रिहिस हे । काबर कि बने डील-डौल वाले ला पतियाथे ता एक झन हा मोर हाथ ला धर दे रिहिस हे । तुमन जर्सी गाय देबो कहे रहा ता कब देहा तो मैं कहेंओ कि मैं हा कांग्रेस के हंओं, मैं भाजपा के नो हंओं कहेंओं । ओमन मोला लटपट छोड़िन। डॉ. साहब आप मन थोकन धीर धरके सुना काबर कि 15 साल ले तुहू मन स्वास्थ्य मंत्री रहे हओ । तुहू हा अब्बड़ किंदरे हा, फड़फड़- फड़फड़ हवई जहाज में, अब थोड़ा बईठओ । ए प्रदेश के जनता देखथे । भले हमर प्रदेश के जनता मन छत्तीसगढ़िया मन बहुत भोला-भोला हे । 15 साल तक आप मन के विश्वास करिन । ए छत्तीसगढ़ के भोला-भाला किसान चाहे बस्तर के मोर आदिवासी समाज के हो, चाहे सरगुजा के हो, चाहे रायगढ़ के या राजानांदगांव के हो । पूरा छत्तीसगढ़ के जनता मन आप मन ला 15 साल तक झेलीन । आज छत्तीसगढ़ में माननीय भूपेश बघेल जी हा मुख्यमंत्री बनिस ता ए भावना से बनिस कि आज हमर सरकार बदलिस तो जोन सरकार के काम होथे रोड, पानी, बिजली के विकास तो होबे ही करथे । साथ ही साथ हमर मन के संस्कृति, हमर मन के खाना-पीना, हमन के बोली के भी विकास होथे तेला सरकार कथे । आज आप मन ला का तकलीफ हो जात हे ? हमन के पुरखा के खेल, खेल-कबड्डी ला अगर मान ले मुख्यमंत्री खेलावत हे ता तुमन ला काबर तकलीफ हो जात हे ? हमन छोटे-छोटे रहेन, हमन के जेब में बांटी-भंवरा भराय रहय । आज ओला फिर से आगे बढ़ात हे तो तुमन ला तकलीफ हो जात हे । काबर कि तुमन विदेशी सभ्यता वाला आदमी हा । आज बासी खाये के ला आगे बढ़ावत हे ता तुमन काजू-बादाम वाले ला तकलीफ हो जात हे । ए बात ला जरूर पूरा प्रदेश हा देखत हावए । आज इंग्लिश मीडियम स्कूल के तुमन बहुत विरोध करत रहेओ, मैं हा सुनत रहेओं । बड़े-बड़े घर के लईका मन जाकर के डी.पी.एस. स्कूल कहां-कहां तुमन के लोग-लइका मन पढ़त रहिन हे 15 साल के पईसा कमई में ? हमर छत्तीसगढ़ के लइका मन ओ बेचारा मन इंग्लिश गोठियाए नइ जानए अऊ हमर माननीय राज्यपाल हा गोठियइस ता इंग्लिश के महत्व ला हमन ओ दिन सुने हन, सब चेती ला खुजात बइठे रहेन । (हंसी) लेकिन काश मोर मुख्यमंत्री जी हा आज से 25-30 साल पहिली बन जाये रहितिस ता रामकुमार यादव इंहां छत्तीसगढ़ी नहीं, आज इंग्लिश भी गोठियात रहितीस । (मेजों की थपथपाहट) आज तुमन ला मौका मिलिस, तुमन नइ करा लेकिन ओ बस्तर के आदिवासी समाज के मोर भाई, मोर गांव के गरूआ चराने वाला रऊत पारा के मोर बेटा-भतीजा मन जब इंग्लिश में पढ़थे ए फार एप्पल, बी फार बेट, सी फार केट ता ऐ रामकुार यादव के छाती जुड़ा जथे । ऐला कहिथे सरकार अऊ तुमन ओ तीन साल ।

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी :- इसके बाद जब आत्मानंद से कॉलेज में जायेंगे न तो आपके पास इंग्लिश मीडियम का कॉलेज नहीं है । (व्यवधान)

डॉ. रश्मि आशीष सिंह :- खुल रहा है । आपके पुराने हाईकोर्ट की बिल्डिंग में नया आत्माराम कॉलेज खुल रहा है । (व्यवधान)

उच्च शिक्षा मंत्री (श्री उमेश पटेल) :- एक कॉलेज नहीं, आत्मानंद के 10-10 कॉलेज खोल रहे हैं । (व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय :- चलिये यादव जी ।

श्री रामकुमार यादव :- का हे देखओ गरीब के बात हा बहुत ज्यादा हे । मोला कम मौका मिलथे ।

उपाध्यक्ष महोदय :- अब समाप्त करें, आपका समय हो गया है ।

श्री रामकुमार यादव :- मोला बड़का नेता के पाछू देथा, मैं हा नावा-नावा विधायक बने हंओं । आज मैं गरीब के बात करथओं ।

नगरीय प्रशासन मंत्री (डॉ. शिवकुमार डहरिया) :- मैं सुने हंओं तें नवा बिहाव करे हस कहिके, लईका होही तेला उहें भेजबे । (हंसी)

श्री रामकुमार यादव :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आज मैं गरीब के बात करथओं काबर कि महूं एक गरीब के कोख ले जन्मे हुए व्यक्ति हंओं । आज एमन गरीब के दुनियाभर के बात करथे, आज गरीब मन बर दुनिया भर के बात करके ओमन के बात ला समझ जाथौ का? ओ गोठान में करने वाला काम करथे, कोन मन करथे, ओ गांव के महिला, अउ कोन महिला, जेन महिला काला हमाम साबून कहिथे, काला रेक्सोना साबून कहिथे, काला लाइफ ब्वाय साबून कहिथे, ओला बेचारी मन कभू नहीं जाने, काबर कि 15 साल ले ओमन के आर्थिक उन्नति नहीं करिस। आज गोठान खोले हे। ओही महिला समूह मन ओमा जाकर के गोबर बेचथे, वर्मी कंपोस्ट बेचथे। आज उहू महिला घर जाकर देखिहौ तो रेक्सोना साबून हमाम साबून ला चूपरथे तो एमन ला तकलीफ हो जाथे। आज ओ गरीब आदमी घर जाकर देखिहौ, उहू मन चीनी मोती मारके लूगरा पहिन के जाके बइठे रहथे। उहू मन चिंता करथे कि एमन के 15 साल के सरकार रहिसे, कोई महिला ला आगे बढ़ाए के काम नहीं करिस। आज महिला मन ला जाके देखौ, ओमन कइसे आगे बढ़थे। तो गरीब मन जब-जब आगे बढ़थे, एमन के पेट में दर्द होथे। (मेजों की थपथपाहट) ओखरे खातिर मैं कहिथौ कि आज ए प्रदेश में जो भी हे, हमर सरकार जो काम करथे, सर्वहारा समाज ला लेके चलथे। आरक्षण के बात करिस तो उहू ला मैं कह देना चाहथव। आरक्षण के बात। धन्य हे हमर माननीय मुख्यमंत्री जी, मैं आज ये सदन में कहिहौ, आज हमन मुख्यमंत्री हे, आज हमर सरकार हे, 20 साल, 30 साल, 50 साल उम्र एक निश्चित हे, प्रकृति के एक नियम हे, लेकिन ए दिन ला याद करही, माननीय भूपेश बघेल जी ला, ये वर्तमान सरकार ला याद करही, काबर बाबा साहब

अंबेडकर जी कानून लिखिस। महात्मा गांधी जी देश ला आजाद कराइस। कानून लिखिस तो इस भावना के अनुसार कि जिसका जितना संख्या भारी, उसकी उतना हिस्सेदारी। (मेजों की थपथपाहट) आज ये प्रदेश में 12.44 परसेंट अनुसूचित जाति के जनसंख्या, ए मन के सरकार रहिसे, ओला काटके कतका कर दिस, ओला कर दे रहिसे 12, हमर सरकार हा बाबा साहब के कहे के अनुसार जिसका जितना संख्या भारी, 12 से थोड़ा ज्यादा अउ 13 से थोड़ा कम, ओला धन्य हे मोर सरकार, 12 ला बढ़ाकर के 13 कर दिस। (मेजों की थपथपाहट) इही ला बोलथे सरकार।

श्रीमती इंदू बंजारे :- पहले सर्वे करा लीजिए।

श्री रामकुमार यादव :- हां, हम आज भी कह देबो, मुख्यमंत्री जी आज भी कहात हे जिस भी दिन सर्वे होगा, जितना संख्या रहेगा, उतना देंगे। आज भी हमारी सरकार कहात हावै। (मेजों की थपथपाहट)

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- क्वांटिफाइड डाटा प्रस्तुत हो गया है।

श्रीमती इंदू बंजारे :- उसी के आधार पर ही ज्यादा बढ़ाकर करिए।

श्री रामकुमार यादव :- आज भी मैं कहात हावव। इस प्रदेश में आदिवासी समाज ला 32 परसेंट आरक्षण मिलथे। ओखर बाद आथे पिछड़ा वर्ग। ए रंजना डीपेन्द्र साहू अउ मैं कभो-कभो बइठथन। उहू साहू समाज के बेटी हे। आज ओखरो समाज के मन पूछही कि तहू रहेस विधायक तोर राज्यपाल करा दस्तखत कराये बर काबर नहीं गेस। काबर 14 परसेंट आरक्षण ला बढ़ाकर के 27 परसेंट मंडल कमीशन के आधार पर करेन। (मेजों की थपथपाहट) एमन जाके कहे हे साव ला जगादे अउ अचोर ला पेलादे। एमन के भाई मन के। ओखरे खातिर कहे गे हावै ऊपर में राम-राम अउ तरई में कसई काम। इही मन बर कहे हावै। पूरा प्रदेश देखथे। आज युवा साथी मन इंटरव्यू दिलाये हे। ओमन ला नौकरी मा कुर्सी में बइठे बर बांचे हे, एमन के चाल-चरित्र के कारण आज अतेक दुख पाथे। मोर आपसे निवेदन हे।

उपाध्यक्ष महोदय :- चलिए, समाप्त करें। आपका 11 मिनट हो गया।

श्री रामकुमार यादव :- हमन विधायक मन बर राजनीति करे, लेकिन जनता ला छोड़ देवै। नहीं तो बेरोजगार एक दिन खड़े हो जाही। आज 14 ठन एमन हा जोगनी कस बरथे तो ओहा सब्बो के सब्बो बूता जाही। एखर खातिर आपसे निवेदन हे एमन ला समझावव, एमन ला सद्बुद्धि देववव, अउ राज्यपाल के दस्तखत कराके प्रदेश के न्याय करे। बहुत-बहुत धन्यवाद।

उपाध्यक्ष महोदय :- चलिए, राजमन वेंजाम जी, 2 मिनट में अपनी बात कहें।

श्री राजमन वेंजाम (चित्रकोट) :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, विश्वास, विकास, सुरक्षा, सेवा, जतन सरोकार, गढ़बो नवा छत्तीसगढ़। माननीय श्री भूपेश बघेल जी की सरकार इस दिशा में काम कर रही है। अभी आदिवासियों के बारे में बहुत सी बातें आ रही थीं। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार छत्तीसगढ़ में 61 प्रतिशत भू-भाग में हमारे आदिवासी भाई लोग रहते हैं। अगर छत्तीसगढ़ महातारी की

सेवा किसी ने की तो माननीय श्री भूपेश बघेल जी ने की है। छत्तीसगढ़ महातारी के लोगों का अगर विश्वास जीता तो माननीय श्री भूपेश बघेल ने 4 वर्षों में उनका विश्वास जीता। ये लोग सुरक्षा की बात करते हैं। 15 साल बस्तर में खून की होली खेलते थे। वहां पुलिस को भेजते थे कि जाओ मुंडी काटकर लाओ। निर्दोष आदिवासियों के साथ हमारे बस्तर जिले में इन्होंने खून की होली खेला और बेकसूर आदिवासियों को मारा। मैं हमारे माननीय मुख्यमंत्री भूपेश बघेल जी को धन्यवाद देना चाहता हूं। बस्तर के लोगों का विश्वास जीता। बस्तर में विकास कराया। बस्तर में सुरक्षा दिया। ये है हमारी सरकार की उपलब्धि और आज इसी के कारण नक्सलाइट लोग बेकफूट में आये हैं। माननीय उपाध्यक्ष महोदय, ये लोग हमारे आदिवासी भाइयों की बात करते हैं । आज भी गोलापल्ली, सुकमा, किस्टाराम के आदिवासी भाईयों का आधार कार्ड नहीं बना था, जबकि ये लोग 15 सालों तक सत्ता में रहे । मैं माननीय मुख्यमंत्री भूपेश बघेल जी को धन्यवाद् देना चाहता हूं । उनके प्रयासों से बीहड़ जंगलों में जहां शासन, प्रशासन नहीं जा सकता था, वहां हमारे कलेक्टर और एस.डी.एम. जाकर शिविर लगाकर लोगों का आधार कार्ड बनाने का काम कर रहे हैं । यह भूपेश बघेल सरकार की उपलब्धि है।

उपाध्यक्ष महोदय :- चलिए, अब समाप्त कीजिए । श्रीमती इंदू बंजारे ।

श्री राजमन बेंजाम :- उपाध्यक्ष जी, पहली बार तो मौका मिला है, एक मिनट और बोलने दीजिए ।

उपाध्यक्ष महोदय :- चलिए ।

श्री राजमन बेंजाम :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, देवगुड़ी की बहुत बात हुई । देवगुड़ी क्या है, मैं यह बताना चाहता हूं । हमारे बस्तर में आदिवासियों की जो देवगुड़ी है, जब किसी गांव का निर्माण होता है, किसी गांव में जब लोग बसने के लिए जाते हैं तो उस समय किसी पत्थर या किसी झाड़ को मानकर, वहां सेवा आदि करके उस गांव का नामकरण करते हैं और उस गांव में लोग रहने लगते हैं । तब से उस देवगुड़ी का नामकरण होता है । उस समय से, पुरखों से आज तक चली आ रही है । 15 सालों तक भारतीय जनता पार्टी की सरकार रही, हमारे आदिवासियों की जो आस्था है, वहां अनेक जाति के लोग रहते हैं । जिस गांव में जो जाति के लोग रहते हों, चाहे कलार हों, धाकड़ हो, मुरिया हो, माड़िया हो, धुरवा हो । गांव की देवगुड़ी के प्रति सभी की आस्था बराबर रहती है । उस देवगुड़ी के संरक्षण और संवर्धन के लिए माननीय मुख्यमंत्री भूपेश बघेल जी ने पांच-पांच लाख रूपए देने का काम किया और वहां के लोगों का विश्वास जीता (मेजो की थपथपाहट) । उपाध्यक्ष महोदय, हम लोग माड़िया लोग हैं, जो अबूझमाड़ में रहते वे अबूझमाड़िया कहलाते हैं । हम लोग जंगल से थोड़ा दूर हो गए । वे लोग अति जंगल में रहते हैं । वहां की जो परम्परा है, वहां की जो संस्कृति है घोटुल प्रथा । मैं माननीय मुख्यमंत्री भूपेश बघेल जी को धन्यवाद् देना चाहता हूं जिन्होंने घोटुल प्रथा के लिए दस लाख रूपए देने का काम हमारी सरकार ने किया है (मेजो की थपथपाहट) आज पूरे घोटुलों का संरक्षण और संवर्धन काम

करने का काम किया है तो हमारी सरकार ने, माननीय भूपेश बघेल जी की सरकार ने किया है । माननीय उपाध्यक्ष महोदय, माटी पूजन दिवस हमारे आदिवासियों के लिए सबसे बड़ी धरोहर है और सबसे बड़ी सम्पत्ति होती है । हम लोग बिना माटी की पूजा किए अन्न नहीं बोते । मैं धन्यवाद् देता हूं माननीय भूपेश बघेल जी को जिन्होंने माटीपूजा दिवस के लिए भी सहयोग किया है । इसके साथ-साथ मैं विश्व आदिवासी दिवस के बारे में बताना चाहता हूं । हमारे बगल में ही मध्यप्रदेश है और यहां हमारी सरकार है । हमारी सरकार ने 9 अगस्त को विश्व आदिवासी दिवस के रूप में मनाने के लिए छुट्टी दी है । हमारे बगल में बीजेपी की सरकार है उन्होंने आदिवासियों को 9 अगस्त की आदिवासी दिवस की छुट्टी नहीं दी है । उपाध्यक्ष महोदय, ये लोग धर्मान्तरण की बात करते हैं । बस्तर में केवल दो वजहों से धर्मान्तरण हुआ है । वहां की आर्थिक तंगी और स्वास्थ्य की सुविधा उपलब्ध न होना ।

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी :- हुआ तो । आपने इसको स्वीकार तो कर लिया ना ।

श्री राजमन बेंजाम :- अभी हमारी सरकार ने सुविधाएं दीं । आपके 15 सालों में किया गया है ।

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- आपने नहीं किया, हमारी सरकार ने किया है ।

श्री राजमन बेंजाम :- मैं भूपेश बघेल जी को धन्यवाद् देता हूं जिन्होंने वहां स्वास्थ्य की सुविधाएं उपलब्ध कराई, वहां रोजगार उपलब्ध कराया गया । माननीय भूपेश बघेल जी ने बस्तर संभाग में 2100 बस्तर फाइटर्स की भर्ती की, जो आज नक्सलाइट से मुकाबला कर रहे हैं (मेजो की थपथपाहट) । यह होता है रोजगार उपलब्ध कराना । हमारे जंगल के लोग स्वास्थ्य केन्द्रों में कम जाते हैं, लेकिन मैं धन्यवाद् देना चाहता हूं माननीय मुख्यमंत्री जी को जिन्होंने हाट-बाजार क्लिनिक के माध्यम से वहां के लोगों को स्वास्थ्य सुविधा उपलब्ध करा रहे हैं । उपाध्यक्ष महोदय, बोलने के लिए तो बहुत कुछ था । आपने समय दिया आपको बहुत बहुत धन्यवाद् ।

श्रीमती इंदू बंजारे (पामगढ़) :- माननीय उपाध्यक्ष जी, सबसे पहले आपको बहुत-बहुत बधाई। आप उस पद में सुशोभित होकर बिल्कुल नायक पिक्चर के अनिल कपूर के जैसे लग रहे हैं। इसके लिए आपको बहुत-बहुत बधाई। (हंसी)

उपाध्यक्ष महोदय :- धन्यवाद।

श्रीमती इंदू बंजारे :- सम्माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं माननीय राज्यपाल महोदय जी के कृतज्ञता ज्ञापन प्रस्ताव पर बोलने के लिए खड़ी हुई हूं। जब हमारा बजट सत्र चालू होता है तो राज्यपाल महोदय जी के भाषण से शुरूआत होती है। उस भाषण में राज्य सरकार की जो नीतियां होती हैं, जो उनकी उपलब्धि होती है, जो अपने कार्यकालों में काम किए रहते हैं, उन सारी कामों को, उन सारी

उपलब्धियों को उस पुस्तक के माध्यम से राज्यपाल महोदय जी के भाषण के माध्यम से हम सबको अवगत कराया जाता है। लेकिन छत्तीसगढ़ सरकार की जो उपलब्धि है, उस पुस्तक के माध्यम से एक भी उपलब्धि देखने को नहीं मिला है, मिला है तो केवल नरवा, गरवा, घुरूवा, बाड़ी देखने को मिला है। वह भी केवल योजना में सफल है लेकिन क्रियान्वयन में जमीनी स्तर पर जो उनका क्रियान्वयन होना चाहिए, वहां पर एक भी काम शुरू नहीं हुआ है। गौठान के बारे में हमारे बहुत सारे माननीय सदस्यों ने चर्चा की है, मैं उनको दोहराना नहीं चाहूंगी। मैं बस यही कहना चाहूंगी कि जितने भी गौठान हैं, आप पूरे छत्तीसगढ़ प्रदेश की पूरे गौठान का निरीक्षण करवा लीजिए, एक भी गौठान सक्सेस की स्थिति में नहीं है, पूरा विफल है। किसी भी गौठान में मवेशी नहीं रहते हैं, न वहां पानी की सुविधा है, न तो चारे की सुविधा है, सारे मवेशी गाय, वगैरह जितने भी हैं, वह सारे सड़क में निवासरत रहते हैं जिसके कारण आए दिन एक्सीडेंट होती रहती है, अप्रिय घटनाएं घटती रहती हैं।

सम्माननीय उपाध्यक्ष महोदय, छत्तीसगढ़ सरकार की जो दूसरी योजना है। छत्तीसगढ़ सरकार ने अपने घोषणा पत्र में कहा था कि बिजली बिल माफ करेंगे और कर्ज माफ करेंगे। छत्तीसगढ़ सरकार बड़ी-बड़ी होर्डिंग लगवाकर हर जगह चौक-चौराहों में इतनी बड़ी-बड़ी होर्डिंग लगवाते हैं और लोगों को यह जताते हैं कि हमने बिजली बिल माफ किया। माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से इस सदन को अवगत कराना चाहूंगी कि आप मेरे क्षेत्र में चलकर देखिए जितने भी हमारे बिजली के उपभोक्तागण हैं, उनका एक भी बिजली बिल माफ नहीं हुआ है। जब वे अपने बिजली बिल को लेकर बिजली ऑफिस में जाते हैं तो उनको यह कहकर वापस भेज दिया जाता है कि आपका पुराना बिल जब तक बकाया है, उसको पूरा नहीं करेंगे तब तक हम आपका बिजली बिल माफ नहीं करेंगे। यह नीति छत्तीसगढ़ सरकार की है। यह कहती कुछ और है और करती कुछ और है। यूनिट के हिसाब से जो बिजली बिल आना चाहिए। वह यूनिट के अनुरूप आता है और जो पर महीने 300-400 रूपये आता था, वह आज की तारीख में 4 हजार, 5 हजार अनियमिततापूर्वक बिजली बिल भेजा जाता है।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, हमारी बहुत सारी बहनों ने, हमारे बहुत सारे वक्ताओं ने अपनी बातें कही है। माननीय राज्यपाल जी के अभिभाषण में यह भी छपा है कि छत्तीसगढ़ की कितनी सड़कों का जो जर्जर स्थिति में थे, जो नवीन सड़क थे, उनके बारे में लिखा हुआ है। मैं आपके माध्यम से इस सदन को अवगत कराना चाहूंगी कि विगत् चार सालों से प्रत्येक सत्र में, प्रत्येक सदन में मैं अपने क्षेत्र की जो जटिल समस्या है, जो डोंगाकुरूद की सड़क है, जो रीवापार की सड़क है, जो पनगांव की सड़क है, हर सेशन में, हर विधान सभा सत्र में प्रश्न के माध्यम से, ध्यानाकर्षण के माध्यम से मैं लगातार प्रश्न कर रही हूं, धरना प्रदर्शन भी की हूं, उसके बावजूद भी छत्तीसगढ़ सरकार का ध्यान वहां पर आकर्षित नहीं हो रहा है। आप पूछ सकते हैं, माननीय नारायण चंदेल जी हमारे जिले में रहते हैं, उनको भी उस सड़क की स्थिति मालूम है, हमारे जितने भी विधायक साथी हैं जो उस रास्ते से गुजरे हैं, सम्माननीय

शिव डहरिया जी भी उस रास्ते से गुजरे हैं, वह रास्ता इतना जर्जर है कि हम पैदल भी नहीं चल पाते हैं। मैंने कई बार शासन-प्रशासन से इस प्रश्न के बारे में जवाब मांगा है लेकिन आज पर्यन्त तक उस सड़क को बनवाने की एक भी सक्रियता नजर नहीं आ रही है।

सम्माननीय उपाध्यक्ष महोदय, हमारे बहुत सारे साथी महिला सशक्तिकरण के बारे में बोल रहे थे। प्रियंका गांधी जी ने एक नारा दिया था, लड़की हूं, लड़ सकती हूं, निश्चित रूप से इस वाक्य का सही उपयोग, सही मायने में उसका पालन हमारे छत्तीसगढ़ के कर्मचारी महिलाएं हैं, जो हमारी छत्तीसगढ़ की आंगनबाड़ी कार्यकर्ता बहनें हैं, जो सहायिका बहनें हैं, जो मितानिन बहनें हैं, वह इस बात के अनुरूप मानकर आज तक धरने प्रदर्शन पर बैठी हुई हैं। छत्तीसगढ़ सरकार कहती हैं, हमारी बहनें कहती हैं कि हम महिलाओं को सशक्तिकरण करा रहे हैं। किस तरह से सशक्तिकरण करा रहे हैं, हमारी हजारों बहनें, हमारे लाखों बहनें आज तक कई विगत् महीनों से अपने घर परिवार को छोड़कर रायपुर में जाकर धरना पर बैठी हुई हैं। एक उम्मीद के साथ की हमारे साथ न्याय होगा, हमारी उचित मांगों के अनुरूप हमारे मांगों को सुना जाएगा। इस उम्मीद के साथ कई दिनों से वहां पर बैठी हुई हैं। लेकिन आज पर्यन्त तक ना तो हमारी बहनों की बात को सुना जा रहा है, ना तो छत्तीसगढ़ सरकार द्वारा इस पर कुछ पहल की जा रही है। सम्माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मेरे जांजगीर जिले में हमारी जितनी भी आंगनबाड़ी कार्यकर्ता बहनें हैं, वह विगत् कई दिनों से धरना आंदोलन में बैठी हुई हैं। हमें बार-बार फोन से संपर्क करते हैं कि हमारे बारे में आवाज उठाईए, हमारे बारे में शासन से क्या प्रक्रिया है, यह बताईए, हम उनको क्या बोलें ? छत्तीसगढ़ सरकार ने अभी तक उनके बारे में सोचा नहीं है। छत्तीसगढ़ सरकार उसे केवल मजदूरों की तरह काम करवा रही है, हमारी आंगनबाड़ी कार्यकर्ता बहनें इतनी मेहनत करती हैं, दर-दर भटकती रहती हैं, लेकिन उनको मानदेय के रूप में पैसा के रूप में केवल उनको सहानुभूति ही मिलती हैं।

उपाध्यक्ष महोदय :- चलिए, आप समाप्त करिए।

श्रीमती इंदू बंजारे :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आत्मानंद इंग्लिश मीडियम स्कूल के बारे में बहुत सारे सदस्यों ने बोला, इसके लिए मैं छत्तीसगढ़ सरकार को बधाई भी देना चाहूंगी लेकिन आत्मानंद इंग्लिश मीडियम स्कूल केवल खुला हुआ है। उस विद्यालय में जो सिस्टम होना चाहिए, बच्चों के इंग्लिश सिखाने के लिए वहां जो व्यवस्था होनी चाहिए, वह उस विद्यालय में नहीं है। जिसके कारण आज भी हमारे बच्चे हिंदी माध्यम से उस विद्यालय में पढ़ रहे हैं। हमारे मुख्यमंत्री महोदय जी ने इंग्लिश मीडियम स्कूल खोला, यह बहुत अच्छी बात है लेकिन इसके साथ-साथ हमारे छत्तीसगढ़ प्रदेश में ऐसे हजारों स्कूल हैं जो जर्जर हैं, जो भवन विहीन हैं और जिससे हमारे विद्यालयों में हमारे बच्चों के साथ कई अप्रिय घटनाएं भी घट चुकी हैं। उसकी ओर भी सरकार का ध्यान जाना चाहिए। जो विद्यालय भवन विहीन हैं, जर्जर हैं उनको बनवाने के लिए भी छत्तीसगढ़ सरकार बजट में प्रावधान करे। मैं आपके माध्यम से इस सदन को इस बात से अवगत कराना चाहूंगी। रोजगार की बात हुई तो युवाओं को

रोजगार भत्ता देने के लिए छत्तीसगढ़ सरकार ने युवा मितान क्लब जरूर खोला है लेकिन उनका लाभ केवल सत्ता पक्ष के कार्यकर्ता को ही मिल रहा है। आम जन जो युवा बेरोजगार हैं उनको इसका लाभ नहीं मिल रहा है वही रिपा के अनुरूप योजना के माध्यम से स्व-सहायता महिला समूह के रोजगार के लिए एक मुहिम चलाई जा रही है, उसका भी ठेकेदार के द्वारा काम किया जा रहा है। न तो इसमें कोई पंचायत इन्वाल्व है और न ही कोई महिला समूह इसमें इन्वॉल्व है। मेरे विधान सभा क्षेत्र में दो ग्राम पंचायतों में कार्य शुरू हुआ है लेकिन दोनों जगहों में इसका क्रियान्वयन ठेकेदार के द्वारा किया जा रहा है। यह केवल देखने और दिखाने की बातें हैं लेकिन धरातल में इसका बिल्कुल भी प्रयोग नहीं हो पा रहा है।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आजकल हमारे बच्चे इंजीनियरिंग किये हुए हैं, पॉलिटेक्निक किये हुए हैं, आई.टी.आई. किये हुए हैं, हमारी बेटियां नर्सिंग की हुई हैं लेकिन केवल वैकेंसी नहीं निकलने के कारण से कई सारे कोर्स करके भी वह घर में बैठे हुए हैं। उनका एक ही उद्देश्य रह गया है कि वह गोबर उठाये और गौ मूत्र एकत्रित करे और बस उसी को बेचे। उनका केवल यही एकमात्र माध्यम रह गया है तो आपके माध्यम से मैं सम्मानीय मुख्यमंत्री जी से...।

उपाध्यक्ष महोदय :- आपकी लगभग सभी बातें आ गई हैं। श्री नारायण चंदेल जी। (मेजों की थपथपाहट)

श्रीमती इंदू बंजारे :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, केवल एक मिनट। कुछ दिनों से हम लोग देख रहे थे...।

श्री कवासी लखमा :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय।

श्रीमती इंदू बंजारे :- दादी जी।

श्री कवासी लखमा :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, अभी माननीय नेता प्रतिपक्ष जी बोलने वाले हैं और यहां दो ही आदमी हैं। कितनी दुख की बात है कि नेता प्रतिपक्ष जी को केवल दो आदमी के साथ छोड़ दिये। इन लोगों को यह क्या हो गया है? इतनी गुटबाजी।

श्री शैलेश पाण्डे :- समर्थन नहीं है।

श्रीमती इंदू बंजारे :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं केवल एक मिनट लूंगी, ज्यादा समय नहीं लूंगी।

उपाध्यक्ष महोदय :- चलिये, आप एक मिनट में अपनी बात समाप्त कीजिए।

श्रीमती इंदू बंजारे :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, कुछ दिनों से हम लोग देख रहे थे कि दोनों पक्षों के लोग [xx][8] की तरह युद्ध कर रहे थे। एक डाल-डाल है तो दूसरा पात-पात है। एक चीत है तो दूसरा

[8] [xx] अध्यक्षीय पीठ के आदेशानुसार निकाला गया।

पट है। एक सील है तो दूसरा लोढ़ा है और सील और लोढ़ा के बीच में हमारे छत्तीसगढ़ की भोली-भाली जनता टमाटर की तरह पिस रही है।

श्रीमती अनिला भेंडिया :- सील अऊ लोढ़ा के बीच में तुमन का करत रहे हो ता? (हंसी)

श्री शैलेश पाण्डे :- तुम्हारा हाथी कितना अत्याचार कर रहा है?

श्रीमती इंदू बंजारे :- सील और लोढ़ा के बीच में हमारे छत्तीसगढ़ की भोली-भाली जनता पिस रही है।

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- आप हाथी को संभालिये।

श्रीमती इंदू बंजारे :- यहां पर सवाल यह है कि छत्तीसगढ़ की बेरोजगारी को खत्म कैसे किया जाए? छत्तीसगढ़ में जो गरीबी है उसको कैसे खत्म किया जाए? छत्तीसगढ़ में हमारी बहन, बेटियों के साथ जो अन्याय और अत्याचार बढ़ रहा है उस पर अंकुश कैसे लगाया जाए? लेकिन इस पर चर्चा नहीं हो रही है। चर्चा हो रही है तो छत्तीसगढ़ में कैसे शराब को और बेचे, गलियों में बचे, चौराहों में बेचे और हमारे प्रत्येक बच्चे को नशे में लिप्त कर दे। छत्तीसगढ़ सरकार को सबसे ज्यादा आय शराब के कारण होती है क्योंकि इनकी मंशा शराब को बंद करने की नहीं है।

श्री धरमलाल कौशिक :- मंत्री जी, अब बोलिये न। अब आप क्यों चुप बैठे हुए हैं? अब बोलिये न, आप अच्छा बोल रहे हैं।

उपाध्यक्ष महोदय :- आप अपनी बात समाप्त करिये। आपका समय हो गया है।

श्रीमती इंदू बंजारे :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मेरा आरक्षण के संबंध में एक अंतिम निवेदन है। हमारे सम्मानीय रामकुमार यादव जी बोले रहे थे, जो अभी यहां नहीं हैं। वह अनुसूचित जाति के बारे में बोल रहे थे। यहां पर हमारे जितने भी जनप्रतिनिधि आये हैं चाहे वह अनुसूचित जाति से हो, चाहे अनुसूचित जनजाति से हो, चाहे ओ.बी.सी. वर्ग से हो या किसी भी जाति से हो, हर एक जनप्रतिनिधि के क्षेत्र में अनुसूचित जाति का वोट है और वह यहां से उस अनुसूचित जाति के पास भी वोट मांगने के लिए जाएंगे, यदि आप हमारे 16 प्रतिशत आरक्षण में हमारा समर्थन नहीं करते हैं तब, जब आप अपने क्षेत्र में जाएंगे तब आपकी औकात और आपकी सही जगह आपको दिखाई जाएगी। आपने मुझे बोलने का मौका दिया, इसके लिए आपको बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री राजमन वेंजाम :- आप राज्यपाल को दस्तखत करने के लिए बोलिये न।

उपाध्यक्ष महोदय :- चलिये। श्री नारायण चंदेल जी। (मेजों की थपथपाहट)

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- नेता जी अब बोले के तो कुछ बचे नहीं है। नेता जी, अब बोले के तो ज्यादा बचे नहीं है।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- मुख्यमंत्री जी, अब... नहीं आने वाली है।(व्यवधान)

श्री नारायण चंदेल :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय।

श्री अजय चंद्राकर :- एक मिनट, बोले के नहीं बचे हे तो तोर वसूले के तो बचे हे।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- ता तै उहीच-उहीच ला कतेक ले सुनाबे?

श्री केशव प्रसाद चन्द्रा :- पूरा गरजना है कि ओमन पानी-पानी हो जाए।

श्री अजय चंद्राकर :- भैया, का पानी? मोर गंभीर मामला में बात ला बता डरे हे। (व्यवधान)

श्री नारायण चंदेल :- कुछ बाचे रही ता तो।

श्री अजय चंद्राकर :- बोले के नहीं बचे हे तो वसूले के बचे हे गा।

श्री शैलेश पाण्डे :- 15 साल का भी बताते चलना।

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- हां, आप 15 साल की भी वसूली बताना।

नेता प्रतिपक्ष (श्री नारायण चंदेल) :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं देख रहा था कि माननीय राज्यपाल महोदय का अभिभाषण 71 बिन्दुओं का है और पिछले वर्ष के अभिभाषण में 55 बिन्दु थे । माननीय राज्यपाल जी ने यहां आकर अभिभाषण प्रस्तुत किया । सामान्य रूप से जो अभिभाषण होता है, वह सरकार का विजन डाक्यूमेंट होता है, वह सरकार का दस्तावेज होता है । आने वाले समय में सरकार क्या करना चाहती है, उसको माननीय राज्यपाल सदन के अंदर प्रस्तुत करते हैं । छत्तीसगढ़ राज्य का निर्माण देश के पूर्व यशस्वी प्रधानमंत्री माननीय अटल बिहारी वाजपेयी ने किया और जिन भावनाओं को लेकर किया, इस सरकार को हम यह बताना चाहते हैं, अटल जी के नाम का उल्लेख मैंने इसलिए किया क्योंकि उस समय हम लोग मध्यप्रदेश में थे और हम लोग विधायक थे । जिस समय छत्तीसगढ़ राज्य का बंटवारा हुआ, उस समय बहुत से लोगों ने अटल जी से निवेदन किया कि आप छत्तीसगढ़ राज्य का निर्माण मत करिए, वहां भी कांग्रेस की सरकार बनेगी, लेकिन अटल जी ने कहा कि मुझे मालूम है कि मध्यप्रदेश में संख्या बल के आधार पर कांग्रेस का बहुमत है, लेकिन मैं छत्तीसगढ़ राज्य का निर्माण सरकार बनाने के लिए नहीं कर रहा हूं, वहां के गरीब जनता की सेवा के लिए कर रहा हूं । (मेजों की थपथपाहट) जो समाज में सबसे पीछे और नीचे रहने वाला व्यक्ति है, शासन की योजनाएं वहां तक पहुंचे, उसके चेहरे पर हंसी और खुशी का भाव आये । मैं इस भाव से छत्तीसगढ़ राज्य का निर्माण कर रहा हूं, बड़े मन से काम कर रहा हूं । अटल जी ने छत्तीसगढ़ राज्य निर्माण के समय कहा था कि-

छोटे मन से कोई बड़ा नहीं होता, छोटे मन से कोई बड़ा नहीं होता ।

टूटे मन से कोई खड़ा नहीं होता ।

उस व्यक्ति ने, उस महामानव ने इस राज्य का निर्माण किया ।

माननीय उपाध्यक्ष जी, छत्तीसगढ़ राज्य का निर्माण हुआ । हम पहली विधान सभा में राजकुमार कॉलेज के जशपुर हाल में बैठे थे । पंडित राजेन्द्र प्रसाद शुक्ल जी उस समय आसंदी पर विराजमान थे, अजीत जोगी जी मुख्यमंत्री थे, नंदकुमार साय जी नेता प्रतिपक्ष थे । वहां से हमारा यह कारवां शुरू हुआ

था । छत्तीसगढ़ की पहली विधान सभा में चर्चा हुई, जशपुर हॉल के टेंट में हम बैठे थे, लेकिन आज दुर्भाग्य है। भूपेश बघेल जी चुनाव के पहले कांग्रेस पार्टी के अध्यक्ष थे, टी.एस. सिंहदेव साहब अभी उपस्थित नहीं हैं, वे घोषणा-पत्र समिति के संयोजक थे । जब हम चुनाव में जाते हैं तो हर दल चुनाव में अपनी घोषणा-पत्र लेकर जाता है ।

श्री अजय चन्द्राकर :- टी. एस. सिंहदेव जी अनुपस्थित हैं, लेकिन छत्तीसगढ़ के पहले पंचायत एवं ग्रामीण विकास मंत्री अमितेश शुक्ल जी उपस्थित हैं ।

श्री अमितेश शुक्ल :- हम लोगों ने ही एक सप्ताह में धान का मूल्य 25 सौ रूपये किया था, यह भी बता दीजिएगा ।

श्री नारायण चंदेल :- माननीय उपाध्यक्ष जी, इनका घोषणा-पत्र बना, उसमें 36 प्रमुख बिन्दु थे । इन्होंने और भी वायदे किये थे । उस घोषणा-पत्र की कॉपी मेरे पास में है । उस समय छत्तीसगढ़ के चौक-चौराहों में, रायपुर में, सुदूर बस्तर में बड़े-बड़े होल्डिंग्स लगे थे । उस समय भूपेश जी और सिंहदेव साहब की फोटो थी । कांग्रेस के केन्द्रीय नेताओं के फोटो थे । उस समय लिखा हुआ था कि-

वक्त है बदलाव का, वक्त है बदलाव का

लेकिन आज छत्तीसगढ़ की जनता कह रही है कि वक्त है पछताव का । आज छत्तीसगढ़ की जनता पछता रही है, आज छत्तीसगढ़ की जनता दु:खी है। इसलिए दु:खी है कि आप पुराने अभिभाषण को पढ़ लें, पिछली बार के अभिभाषण को पढ़ लें, सरकार क्या करना चाहती है। मात्र 6-7 महीने बचे हैं। आप क्या कर सकते हैं। अगर कोई वादा कर रहे हैं तो उसके लिए पैसा कहां से लाओगे, बजट कहां से लाओगे ?

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, यह सरकार झूठ की इबारत पर टिकी हुई है। आपने जनता के साथ धोखा किया है। इस प्रदेश के किसानों को धोखा दिया है। नवजवान, मजदूर, किसान, महिलाएं, व्यापारी, अधिकारी, कर्मचारी, आपने समाज के सभी वर्गों को ठगा है, ठग कर आपकी सरकार बन गई। आपके साथ तीन चौथाई से ज्यादा बहुमत है। लेकिन दुर्भाग्य है कि आपका जो ड्रीम प्रोजेक्ट है, उसके बारे में हमारे सारे सदस्यों ने बताया कि किस प्रकार से उस पर काम चल रहा है। आज छत्तीसगढ़ में क्या वातावरण है ? छत्तीसगढ़ में समाज का कोई भी वर्ग इस सरकार से खुश नहीं है। इस सरकार की नीति और नीयत दोनों खराब है। इस सरकार की कथनी और करनी में अंतर है।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, यह सरकार कहती है कुछ है, करती कुछ है। आज छत्तीसगढ़ में भूपेश जी के राज में उनकी अगुवाई में प्रशासन का राजनीतिकरण हो गया और राजनीति का अपराधीकरण हो गया है। हम दूसरे राज्यों में इस प्रकार की बातें सुनते थे। लेकिन छत्तीसगढ़ की जनता का स्वभाव शांत है। छत्तीसगढ़ की जनता इस तरह की तासीर को पसंद नहीं करती है। सन् 2000 से 2003 के बीच में इसका प्रयोग किया गया था, जो सरकार में बैठे हुए लोग थे, उनका क्या हश्र हुआ,

उनकी क्या गति हुई ? इसलिए अगर आपको जनादेश मिला है तो जनादेश का सम्मान करना चाहिए। किसी व्यक्ति का अपमान, समाज के किसी वर्ग का अपमान, यह सरकार का काम नहीं है। आप जब से इस प्रदेश में मुख्यमंत्री बने हैं, जब से आपकी सरकार बनी है, लगातार लोकतन्त्र की हत्या हो रही है, प्रजातन्त्र के साथ खिलवाड़ हो रहा है। मैं उसी-उसी विषय को रिपीट नहीं करूंगा। मैं इसी सदन की बात करता हूं।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, अभी यहां पूर्व पंचायत मंत्री नहीं हैं। 22 मार्च, 2022 के प्रश्न के उत्तर में तत्कालीन पंचायत मंत्री ने यहां 4 अधिकारियों को निलंबित करने की घोषणा की थी। महीने निकल गये, दो महीने निकल गये, तीन महीने निकल गये, लेकिन वे अधिकारी उसी कुर्सी पर रहे। जब हमने 4-5 महीने बाद दूसरे सत्र के पहले पता लगाया तो बताया गया कि वे तो उसी सीट पर हैं। अभी भी जिला पंचायत के सी.ई.ओ. हैं। विधायिका का इतना अपमान पहले कभी नहीं हुआ है। मैं इसीलिए कह रहा हूं कि लोकतन्त्र की हत्या हुई है, प्रजातन्त्र के साथ क्रूर मजाक हुआ है। हम मध्यप्रदेश में भी थे। उस समय श्री श्रीनिवास तिवारी जी विधानसभा के अध्यक्ष थे। अगर विधानसभा के अंदर किसी मंत्री ने निलंबन की घोषणा की तो वह मंत्री विधानसभा से बाहर नहीं जा पाता था, निलंबन का आदेश निकल जाता था। ये है विधायिका का सम्मान। प्रजातन्त्र में इससे बड़ा कोई मंदिर नहीं है। विधानसभा प्रजातन्त्र का सबसे बड़ा मन्दिर है। लेकिन दुर्भाग्य है। मैं माननीय मुख्यमंत्री जी को कहना चाहता हूं कि भविष्य में इस प्रकार की घटनाएं ना हों। अगर विधानसभा का सम्मान बढ़ेगा, अगर विधान सभा की हाईट बढ़ेगी, विधान सभा में जो बातें कही जाती है, अगर उसका क्रियान्वयन होगा, आपका भी सम्मान बढ़ेगा, पूरे सदन का सम्मान बढ़ेगा । माननीय मुख्यमंत्री जी, आप भी पुराने जनप्रतिनिधि रहे हैं, मध्यप्रदेश में भी आप मंत्री रहे हैं, आज विधायकों की क्या गति है, आप अपने दल के लोगों से ही पुछिये, बेचारे कुछ नहीं बोल पाते हैं, जब चाय पीते हैं तो बताते हैं, मंत्रियों की क्या गति है, चाय पर चर्चा में बताते हैं ।

श्री धरमलाल कौशिक :- नारायण जी, आधा मिनट । आप बोल रहे हैं, मंत्री यहां से बाहर निकले और आदेश पहुंच जाये । यहां मंत्री आधे बाहर निकले तो अधिकारी का नहीं, मंत्री का ट्रांसफर हो जाता है । अधिकारी वहीं का वहीं रहता है, यह सरकार में है । पंचायत मंत्री जो घोषणा किये हैं, पंचायत मंत्री बदल गये, दूसरे मंत्री कार्यवाही करने की स्थिति में नहीं है, इसलिये वह आज भी सीईओ बनकर बैठा हुआ है ।

समय
6.36 बजे

(अध्यक्ष महोदय (डॉ.चरणदास महंत) पीठासीन हुये)

श्री नारायण प्रसाद चंदेल :- मैं इसलिए बात कर रहा हूँ, संसदीय कार्य मंत्री भी आ गये हैं, वह भी वरिष्ठ हैं, विद्वान है । उपाध्यक्ष जी, मैं इसलिए कह रहा था कि हमारे जितने विधायक हैं, सांसद है, निर्वाचित जनप्रतिनिधि है, कलेक्टर एस.पी. के पास मे जाते हैं, मैं कई विधायकों को देखा हूँ, जहां पर आम आदमी बैठे रहते हैं, वहां बैठे रहते हैं । कलेक्टर उनके पत्रों का जवाब नहीं देते हैं, 10 दिन, 15 दिन, 20 दिन, महीना दिन बाद कलेक्टर उसका जवाब नहीं देते हैं । माननीय अध्यक्ष महोदय, आपसे निवेदन है । आप सरकार को निर्देशित करें । लोकतंत्र में, प्रजातंत्र में, जो निर्वाचित व्यक्ति है, वह सबसे बड़ा होता है, जिसको जनता ने चुनकर भेजा है । मेरा आसंदी से आग्रह है कि आप सरकार को निर्देशित करिये । जनप्रतिनिधियों का अपमान नहीं होना चाहिये । विधान सभा का अपमान नहीं होना चाहिये । माननीय मुख्यमंत्री जी हैं, अभी पूरे प्रदेश के दौरे पर निकले हुये हैं, मेरे जिले में भी गये थे, भेंट मुलाकात में उन्होंने बहुत से भेंट किया । कुछ-कुछ घटनायें भी घटित हुई है, जब हम जनता के बीच में जाते हैं तो सवाल-जवाब भी होता है, मैं मुख्यमंत्री जी से कहना चाहूंगा कि सवाल-जवाब में उत्तेजित न हो । यह प्रजातंत्र की प्रक्रिया है और यही प्रजातंत्र और लोकतंत्र की खूबसूरती है, जनता से जब संवाद होता है, बातचीत होती है, उससे विचलित होने की आवश्यकता नहीं है, लेकिन मुख्यमंत्री जी आप जब भेंट मुलाकात में गये, उसके बाद मैं सरगुजा गया । आपने इतने वादे कर दिये, इतनी घोषणायें दनादन कर दी, मैं एक दिन आंकड़ा देख रहा था कि 7000 से ज्यादा आपने घोषणायें कर दी है । जो आया, हो जायेगा । जो आया, कर दूंगा । कहां से करेंगे, कहां से पैसा लायेंगे, क्या आपके बजट में कोई प्रावधान है । मुझे एक व्यक्ति ने सरगुजा में बताया कि हमारे गांव में मुख्यमंत्री जी आये थे, हमने कहा कि हमर गांव म नदिया नई हे, मैं बनवा दुहूं । (हंसी) यह हाल है । मैं नदिया बनवा दुहूं, भई नरवा समझ में आता है । माननीय अध्यक्ष महोदय, इस सरकार के बारे में मैं कहना चाहता हूँ, हमारे सारे सदस्यों ने सब चीजों को गिनाया है, यह सरकार की सफलता है और यह विफलता है । आप स्वयं किसानों की बात करते हैं, आप स्वयं किसान है, हमारे अधिकांश सदस्य किसान है । हमारी सारी अर्थव्यवस्था है, वह कृषि पर आधारित है, जिस साल फसल अच्छी होती है उस साल रायपुर, दुर्ग, बिलासपुर और भिलाई के बाजार में रौनक होती है। यदि किसी साल फसल अच्छी नहीं हुई तो बाजार में वीरानी रहती है। दुकानदार भी हाथ में हाथ धरे बैठे रहता है। हमारी सारी अर्थव्यवस्था कृषि पर आधारित है लेकिन दुर्भाग्य यह है कि आपने कहा था कि मैं कर्जा माफ करूंगा। आपने कुछ कर्जे माफ भी किये। लेकिन क्या जितने नेशनलाईज्ड बैंक हैं, क्या केंद्रीय बैंकों से, राष्ट्रीयकृत बैंकों से किसानों ने जो कर्जा लिया था, क्या उनका कर्जा आपने माफ किया ? नहीं हुआ है। आप रिकॉर्ड मंगाकर देख लीजिये।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- किये हैं, निर्धारित समय में।

श्री नारायण चंदेल :- अध्यक्ष महोदय, वही। आपने कहा था कि हम पूर्ण कर्जा माफ करेंगे, हम किसानों का एक-एक दाना धान खरीदेंगे, हम दो साल का बोनस देंगे। क्या हुआ तेरा वादा, वो कसम वो

इरादा। यह हाल है। आज किसान एक किसान के बेटे से दुखी है। किसान चिंतित है कि छत्तीसगढ़ किधर जा रहा है। जिस छत्तीसगढ़ को माननीय अटल बिहारी वाजपेयी जी ने बनाया, वह छत्तीसगढ़ किस रास्ते पर जा रहा है। किसान का जितना अपमान हो रहा है, इस सरकार में हो रहा है। अभी धान खरीदी हुई। आपने कहा कि हमने इतना धान खरीद दिया। लेकिन पेमेंट की क्या स्थिति है ? आप पता लगा लीजिये, आज भी सहकारी बैंकों में, कॉपरेटिव बैंकों में किसान सुबह 10 बजे से जाकर बैठे रहता है रात को 10 बज जाते हैं।

श्री रविन्द्र चौबे :- खाता में चले जाता है, वह निकालने के लिये बैठे रहते हैं।

श्री नारायण चंदेल :- मैं आपको बता रहा हूं। चौबे जी, बिचौलिये के पेमेंट पहले होते हैं, आप पता लगा लीजिये । आपके सहकारी बैंकों में, आपके कॉपरेटिव बैंको में, जो गांव का छोटा सा किसान है, उस किसान के साथ दुर्व्यवहार होता है। यदि किसान मुख्यमंत्री होने के बाद किसान का अपमान हो रहा है तो यह इस प्रदेश का दुर्भाग्य है।

श्री उमेश पटेल :- भैया, यहां आप थोड़ा गड़बड़ कर दिये।

श्री कुलदीप जुनेजा :- वह गड़बड़ शुरू से ही कर रहे थे।

श्री उमेश पटेल :- अध्यक्ष महोदय, किसानों को जो मैसेज आता है, वह एक साथ सबको आता है। वह मैसेज हम लोगों को भी आता है, सबको आता है। आप यहां थोड़ा सा गड़बड़ कर दिये। देख लीजिये।

श्री नारायण चंदेल :- अध्यक्ष महोदय, क्या किसानों का चौथा किस्त चले गया ?

श्री भूपेश बघेल :- अभी जायेगा।

श्री नारायण चंदेल :- अभी जायेगा। वही मैंने बताया कि नहीं गया है।

श्री उमेश पटेल :- यह तो हमारी योजनाओं में है।

श्री नारायण चंदेल :- मैं मुख्यमंत्री जी से पूछना चाहता हूं कि आपने कहा कि अभी धान का इतना उत्पादन हो गया, इतनी खरीदी हुई। आप जितना खरीदी करने का टारगेट रखते हैं, उतना ही उत्पादन हो जाता है । आपके पास ऐसा कौन सा थर्मामीटर है ?

एक माननीय सदस्य :- बढ़ा के टारगेट रखथे गा।

श्री उमेश पटेल :- यही किसान का बेटा है, जिसको पहले से पता रहता है। डॉक्टर को दोगे तो ऐसी जानकारी नहीं मिलेगी।

श्री नारायण चंदेल :- उमेश जी, इस बार और यह पिछले साल से शुरू हुआ है। गिरदावरी के नाम से धान के ऊपज का रकबा कम हो गया । मेरे जांजगीर-चांपा जिले में सबसे ज्यादा धान उत्पादन होता है।

श्री शैलेश पाण्डे :- आपके यहां सिंचाई का रकबा सबसे ज्यादा है।

श्री नारायण चंदेल :- अध्यक्ष महोदय, मेरे जिले में सिंचाई का रकबा सबसे ज्यादा है, यह माननीय मुख्यमंत्री जी को मालूम है। जब हम लोग दौरे में जाते हैं तो वहां के जो छोटे किसान है, वह बताते हैं, एक एकड, डेढ़ एकड, दो एकड़ वाले जो सीमांत किसान है, उनका कहना है कि गिरदावरी के नाम से हमारे पास पटवारी आते है, आर.आई. आते है, तहसीलदार आते हैं और हमारे खेत को नापत हैं। पिछले साल से यह काम शुरू हुआ है। गिरदावरी के नाम से हमारा सारा खेत गायब हो जाता है और हम धान नहीं बेच पाते है। वह एस.डी.एम. से, कलेक्टर से शिकायत करते हैं। इस राज में यह पहली बार हो रहा है कि किसान का खेत गायब हो रहा है।

श्री रविन्द्र चौबे :- माननीय नेता प्रतिपक्ष जी, मैं आपको चुनौती देता हूं।

श्री नारायण चंदेल :- स्वीकार है।

श्री रविन्द्र चौबे :- आप अपने ही जिले का बताना। आपने कहा कि किसान का पूरा खेत गायब हो गया, एक किसान का नाम बताना जिसका पूरा खेत गायब हो गया और वह धान बेचने से वंचित रह गया।

श्री नारायण चंदेल :- मैं आपको कल बता दूंगा। आज रात को बता दूंगा। मैं एक नहीं, 20 किसानों का बता दूंगा। हा एक एकड़, दो एकड़, छोटे किसान हैं।

श्री धरम लाल कौशिक :- माननीय चौबे जी, पिछली बार जो धान बेचे हैं और इस साल उनका धान नहीं बिका, वह खेत ही गायब हो गया। मैं आपको 10 उदाहरण दे दूंगा। जिन्होंने पिछली बार धान बेचा है इस बार उनका पूरा खेत ही गायब हो गया।

श्री नारायण चंदेल :- माननीय चौबे जी, यह बनावटी बात नहीं है। यह सच्चाई है और उसको स्वीकार करना चाहिए। अगर कहीं कमी है, आप उसको सुधारने की गुंजाईश करें। सारे विधायक बता देंगे। मैं नहीं, हमारे सारे जितने विधायक हैं वह सब आपको 10-10 नाम देंगे और अध्यक्ष जी भी नाम दे देंगे।

श्री रविन्द्र चौबे :- माननीय अध्यक्ष जी, आपमें शामिल नहीं है।

श्री नारायण चंदेल :- यह आम बात है। मैंने बताया।

माननीय अध्यक्ष जी, जब मेरे क्षेत्र में नवागढ़ के आसपास हम लोग दौरे में गये तो किसानों ने आकर शिकायत की। उन्होंने बताया कि भईया मोर खेत गंवा गे। में रिपोर्ट कहां लिखवव ? किसान मुख्यमंत्री के राज में यह पहली घटना है कि किसान का खेत गायब होता है, किसान के खेत की चोरी होती है। वह कहां पर जाकर रिपोर्ट लिखवाए, यह पहली घटना है पूरे देश के किसी राज्य में किसान के साथ इस प्रकार की घटनाएं नहीं होतीं। आप इसको दिखवाईये। आप इसको सुधरवाईये।

श्री उमेश पटेल :- भईया, क्या है ? ऐसा तो नहीं है कि कहीं पहले त्रुटि में कट गया हो, बाद में सुधरवा लिये हों। देखिए, आप जो चैलेंज ले रहे हैं, वह बहुत खतरनाक चैलेंज है।

श्री नारायण चंदेल :- यह खतरनाक चैलेंज नहीं है। यह वास्तविकता है। आपके जिले में भी है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, पूरे छत्तीसगढ़ के 90 विधानसभा क्षेत्रों में प्रधानमंत्री आवास को लेकर हमारा आन्दोलन चल रहा है। उसमें बड़ी संख्या में प्रधानमंत्री आवास के हितग्राही आ रहे हैं। माननीय चौबे जी और पूर्व पंचायत मंत्री जी, यह सिंहदेव साहब जी ने तो पत्र लिखा था कि प्रधानमंत्री आवास जो है, इस छत्तीसगढ़ में नहीं बन पा रहा है इसलिए मैं दु:खी हूँ। मेरे पास वह पत्र की कॉपी है मैं दु:खी मन से इस विभाग को छोड़ रहा हूँ। हिन्दुस्तान के किस राज्य में ऐसी घटनाएं हुई हैं ? केन्द्र ने भेजा, लेकिन आप प्रधानमंत्री आवास नहीं दे पा रहे हैं। दुर्भाग्य इस बात का है कि वह गरीब जो समाज के अंतिम छोर में रहता है, किसी बड़े आदमी को प्रधानमंत्री आवास नहीं मिला है। माननीय मुख्यमंत्री जी आ गये। वह समाज में सबसे पीछे और नीचे रहने वाले व्यक्ति को मिला है। चाहे वह शहरी एरिया हो या ग्रामीण क्षेत्र हो। हर व्यक्ति गरीब आदमी की यह कल्पना रहती है कि मेरे सर के ऊपर भी छत होनी चाहिए। भारत सरकार ने उस कल्पना को साकार करने के लिए योजना बनाई है, लेकिन इस प्रदेश में दुर्भाग्य है कि छोटे-छोटे राज्यों में प्रधानमंत्री आवास बन गये । हम प्रधानमंत्री आवास के मामले में सबसे पीछे चल रहे हैं और आज 16 लाख मकान, वह 16 लाख मकान नहीं है। वह 16 लाख परिवार है इसलिए माननीय मुख्यमंत्री जी अपने उत्तर में बताएं तो अच्छा रहेगा।

माननीय अध्यक्ष महोदय, अभी चौबे जी सिंचाई की बात कह रहे थे। मैं अभिभाषण में पढ़ रहा था। सिंचाई का रकबा 38.79 प्रतिशत हो गया है। अरे भईया, पहले से ही 34 प्रतिशत था । मेरा जिला तो सबसे ज्यादा सिंचाई वाला, रकबा वाला जिला है। आपने अभी तक इन सवा चार सालों में सिंचाई के क्षेत्र में कोई काम नहीं किया, जबकि आप खुद किसान हैं। पता नहीं, आप इन सवा चार सालों में क्या कर रहे थे ? आप किसके साथ बैठे, किसके साथ विचार-विमर्श किया ? जो बहता हुआ पानी है वह हमारे खेतों तक कैसे पहुंचे ? लेकिन आपकी कोई प्लानिंग नहीं है। इसलिए इस प्रदेश में सिंचाई का रकबा नहीं बढ़ पाया। हमको चाहिए, छत्तीसगढ़ की आवश्यकता है कि हम इस प्रदेश के पानी और जवानी को सही दिशा में कैसे ले जायें। जब तक हम पानी और जवानी को सही दिशा नहीं देंगे, छत्तीसगढ़ विकास के मामले में आगे नहीं बढ़ सकता। छत्तीसगढ़ का उत्थान नहीं हो सकता। जब तक हम छत्तीसगढ़ के जल, जंगल और जमीन को नहीं बचायेंगे तब तक छत्तीसगढ़ आगे नहीं बढ़ सकता। हमारे कल्पनाओं का छत्तीसगढ़ नहीं बन सकता। इसलिए जल, जंगल और जमीन को बचाने की आवश्यकता है। अभी जल जीवन मिशन के बारे में बहुत बड़ी-बड़ी बातें हुईं। कल, परसों में अनेक लोगों के प्रश्न लगे। गुरूजी नहीं हैं।

अध्यक्ष महोदय :- जो बड़ी-बड़ी बातें हो गईं, उनको बोलते चलिये न। आगे बढ़ते जाईये।

श्री नारायण चंदेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आगे बढ़ रहा हूं। जल जीवन मिशन कोई छोटा-मोटा मिशन थोड़ी है। तेलंगाना जैसे राज्य उसको पूरा कर लिया, उड़ीसा जैसे राज्य उसके अंतिम चरण

में है। छत्तीसगढ़ में वह क्यों पूरा नहीं हो पाया? उसके क्या कारण हैं ? उसकी बैठकर समीक्षा करें। आपके पास कितना समय है। वह बन पायेगा या नहीं बन पायेगा ? लोगों को शुद्ध पीने का पानी मिल पायेगा या नहीं मिल पायेगा? मैं उसके आंकड़े में नहीं जाना चाहता। सब लोगों ने आंकड़ों की बात कर ली है। लेकिन वह आम आदमी की प्राथमिक आवश्यकता है। इसलिए उस चीज को हमको दुरूस्त करने की आवश्यकता है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, आज कवर्धा में स्थिति खराब है। पिछले 2-3 दिनों से हमारे आदिवासी समाज के भाई वहां पर धरने पर हैं, आंदोलनरत हैं। वह क्यों हैं? छत्तीसगढ़ में क्यों इस प्रकार की लॉ एण्ड आर्डर की स्थिति बनती जा रही है? माननीय अध्यक्ष महोदय, यहां पर गृहमंत्री जी बैठे हैं, पिछले एक साल में कवर्धा में चाहे वह तिरंगा ध्वज का मामला हो, चाहे और किसी मंदिर का मामला हो, आज वहां गोंडवाना समाज के लोग आंदोलनरत हैं।

गृह मंत्री (श्री ताम्रध्वज साहू) :- सम्माननीय अध्यक्ष महोदय, पिछले 2 दिन की कवर्धा की जो बात नेता प्रतिपक्ष जी ने कही है, उसमें आदिवासी समुदाय के एक गणतंत्र पार्टी के लोग हैं जो अपना झंडा लगवाना चाहते हैं और हमारे आदिवासी समाज के लोग अपना सामाजिक झंडा लगवाना चाहते हैं। दोनों के बीच में विवाद इस बात का है। गणतंत्र पार्टी के लोग जो उनका 7 कलर का झंडा है, वह लगाना चाहते हैं और आदिवासियों ने कहा कि हम राजनैतिक झंडा नहीं लगायेंगे, अपने समाज का झंडा लगायेंगे। यह मूल बात हुई। उसमें पुलिस प्रशासन ने पूरी तौर पर कार्यवाई की। हमारे एस.पी. का हाथ भी फ्रैक्चर हुआ। पुलिस वालों को चोट भी आई। पर लॉ एण्ड आर्डर की स्थिति खराब नहीं होने दी गई है, व्यवस्था बराबर की गई है और दोनों पक्षों को समझाया जा रहा है।

श्री नारायण चंदेल :- माननीय गृह मंत्री जी एक तरफ आप कह रहे हैं कि लॉ एण्ड आर्डर की स्थिति खराब नहीं हुई है और दूसरी तरफ कह रहे हैं कि वहां पर एडिश्नल एस.पी. को, पुलिस कर्मियों को चोट आई है तो यह क्या सब सामान्य स्थिति में हो गया? वहां लॉ एण्ड आर्डर की स्थिति खराब है। इसलिए प्रशासन को उस पर ध्यान देना चाहिए कि उसका निराकरण कैसे हो।

श्री ताम्रध्वज साहू :- माननीय अध्यक्ष महोदय, प्रशासन ने पूरा ध्यान दिया है तभी कंट्रोल किये हैं। दोनो आदिवासी वर्ग हैं पर एक राजनैतिक है और एक सामाजिक है।

श्री नारायण चंदेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, अभी यह कवर्धा में घटना हुई। पिछले दो महीने पहले नारायणपुर में घटना हुई। हम 16 तारीख को बस्तर गये थे। भारतीय जनता पार्टी के हमारे 04 प्रमुख पदाधिकारियों की निर्मम हत्या हुई। लेकिन दुर्भाग्य है वहां पर सरकार का कोई व्यक्ति संवेदनशीलता के नाते जा करके उनसे कोई बात नहीं की, उनके परिवार से कुशलक्षेम भी नहीं पूछा। प्रशासन का कोई व्यक्ति नही गया। राजनीति कभी इस प्रकार से नहीं होती।

उद्योग मंत्री (श्री कवासी लखमा) :- मैं नारायणपुर की जो घटना हुई थी, मैं उनके परिवार से मिला था। उनकी लाश को देखकर आया। उनको अपनी तरफ से व्यक्तिगत रूप से मदद भी किया। यह बोलते हैं कि नहीं गया।

श्री नारायण चंदेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं माननीय मुख्यमंत्री जी से कहना चाहता हूं कि इस प्रकार की जो दुर्भाग्यपूर्ण घटनाएं घटित हो रही हैं, उस पर सजगता के साथ कार्रवाई करें। इन घटनाओं का प्रभाव दूसरे जिलों में न पड़े। नहीं तो दूसरों जिलों में इसकी आग की लपटें तुरंत पहुंचती है। छत्तीसगढ़ का तासीर शांत है। अभी मैं ड्रीम प्रोजेक्ट के बारे में आपसे कुछ बात करना चाहता हूं। नरवा, गरूआ, घुरूवा, बाड़ी अउ एकर ले ज्यादा मैं कुछू नइ जानव संगवारी।

श्री रविन्द्र चौबे :- नरवा, गरूवा, घुरूवा, बाड़ी।

श्री नारायण चंदेल :- नइ बाचे पाथे। मैं पामगढ़ मेर के भैंसो गांव में गए रहे। मैं कुटरा गांव, कुथुर गांव गए रहे। जब मैं ओ दिन गए तो भैंसे गांव में 3 दिन में 35 गौमाता खत्म होय रहीसे। आप पता लगा लो। 35 गौमात एक गांव में खत्म हो रहीसे। ओला पैरा, ताल पतरी ले तोपे रहीन।

श्री ताम्रध्वज साजू :- आपके घर के गोबर बेचाथे या नहीं, तेला बता?

श्री नारायण चंदेल :- अध्यक्ष जी, लेकिन गौठानों की जो स्थिति है। यह शासन का ड्रीम प्रोजेक्ट है। उसमें लाखों रूपये लग गये। उसके विज्ञापन में करोड़ों रूपये लग गये। आपने उसका विज्ञापन मीडिया के माध्यम से दिल्ली तक किया है, लेकिन कोई भी जनप्रतिनिधि जाकर पांच-दस को गौठान को छोड़ कर किसी भी गोठान का निरीक्षण कर सकते हैं। गौठानों की जो दुर्दशा है, वहां न चारा है, न पानी है, न बिजली है, न कोई चौकीदार है, न वहां गौतामाओं की ईलाज की कोई व्यवस्था है और गौमाताएं असमय काल के गाल में समा रही हैं। इस प्रकार की गौ हत्या ठीक नहीं है। मैंने वहां पर डॉक्टरों से बात किया। जब मैंने कहा कि मैं आ रहा हूं तब वहां पर डॉक्टरों की टीम पहुंची। तब वहां पर तहसीलदार और एस.डी.एम. पहुंचा। यह दुर्भाग्य है। ऐसा दृश्य उपस्थित नहीं होना चाहिए, यह मेरा शासन से आग्रह है। नरवा, गरूआ, घुरूआ, बाड़ी, रोका-छेका। आपने गौठान समिति बना दिया। जो गौठान समिति बनी है। आप कहते हैं कि यह सरकार राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के सिद्धांतों पर चल रही है। उनका अनुसरण कर रही है। उनके बताए हुए मार्ग पर चल रही है, लेकिन गोठान समिति जो ग्राम सभा ने पारित किया है, जो ग्राम सभा बैठ करके निर्णय की है, जो उन्होंने नाम चयनित किया है। सरपंचों से मेरी बात हुई। तो सरपंचों ने कहा कि हमन जे गौठान समिति के नाम भेजे हन ओमा एको ठन नाम नइ आय हावय। उन गौठान समिति का आपने राजनीतिकरण कर दिया। उस गोठान को भी आप बचाकर रखते, समाज के सभी वर्गों की उसमें भागीदारी हो जाती। हर चीज का राजनीतिकरण नहीं होना चाहिए। यह बहुत छोटी चीज है। आज जिस तरीके से छत्तीसगढ़ के हालात है। पहली बार अधिकारी, कर्मचारी आंदोलन कर रहे हैं, वह अलग विषय है। वह तो लगातार आंदोलनरत हैं।

डॉ. (श्रीमती रश्मि आशीष सिंह) :- भैया, जी-20 में 20 का जो जीरो है, वह थोड़ा राजनीति से प्रेरित है।

श्री नारायण चंदेल :- जी। मैं देख रहा था कि आवाज किधर से आ रही है। माननीय अध्यक्ष महोदय, पूरे छत्तीसगढ़ प्रदेश में अधिकारी, कर्मचारी आंदोलनरत हैं। जनघोषणापत्र में जो झूठे वादे किए गए हैं, उसके खिलाफ में आंदोलनरत हैं, लेकिन पहली बार इस प्रदेश के सरपंच ने आंदोलन किया है। जो गांव का प्रधान है। जब मैं अपने क्षेत्र में उनके टेंट में गया कि भाई आप लोग क्यों आंदोलन कर रहे हो। पूरे छत्तीसगढ़ राज्य बनने के 22 साल बाद सरपंच मैदान पर आंदोलनरत थे तो सरपंचों ने कहा। उसमें सब पार्टी के लोग थे तो सरपंचों का कहना था कि हम गलत समय में सरपंच बन गये । मैं कहेंओं काबर तो एको पैसा जो हे वो गांव के विकास बर नइ आत हे अऊ छत्तीसगढ़ी में हमर कोती कहिथन कि परता नइ परत हे । परता नइ परत हे माने पोसात नइ हे । यह सरपंचों का कहना था । सारी राशि बंद हो गयी, समग्र की एक राशि नहीं जा रही है, आदर्श गांव की एक राशि नहीं जा रही है, गौरव ग्राम की एक राशि नहीं जा रही है । सरपंच किससे काम कराये ? गांव की पूरी अर्थव्यवस्था, विकास का काम बैठ गया है जिस तरीके से गाड़ी का वह चेचीस बैठ जाता है न, ठीक उसी प्रकार से गांव में विकास का काम बैठ गया है । कुछ क्षेत्रों में होता होगा, 5-10 क्षेत्रों में होता होगा लेकिन छत्तीसगढ़ प्रदेश के अधिकांश गांव की यह हालत है कि वह विकास से कोसों दूर है, विकास वहां तक नहीं पहुंच पा रहा है और इसलिए इस सरकार को कैसे विकास गांव तक पहुंचे, मुख्यमंत्री जी इस बारे में जवाब देंगे तो ठीक रहेगा ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, छत्तीसगढ़ में तेजी के साथ आत्महत्याएं बढ़ रही हैं। आत्महत्याएं क्यों बढ़ रही हैं ? जब एक किसान ने आत्महत्या की तो हम लोग दुर्ग जिले में गये थे । अजय चंद्राकर जी एवं हमारा पूरा विधायक दल वहां गया था। हम लोगों ने बातचीत की, चर्चा की कि इस सरकार की गलत नीतियों के कारण वह किसान कर्ज में डूबा हुआ था । कुछ ने बताया कि साहूकारी कर्जा है, कुछ ने बताया कि बैंक का कर्जा है । लेकिन इस सरकार की गलत नीतियों के कारण इस प्रदेश में एक नहीं बल्कि 5 हजार से ज्यादा किसानों ने अभी तक आत्महत्या की है ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने बेरोजगार नौजवानों से वादा किया । अब पता नहीं आप बजट में क्या करने वाले हैं ? जब से यह सरकार बनी है तब से सारी भर्ती, सारी नियुक्तियां बंद हैं । बेरोजगार नौजवानों में जो पंजीकृत बेरोजगार हैं उनमें हताशा और निराशा का वातावरण है । हर रोज सुबह वे अर्जी लेकर घूमते हैं, किसी उद्योगपति के यहां जाते हैं, किसी ऑफिस में जाते हैं और शाम होते ही घर को वापिस लौट जाते हैं । हताश और निराश इस प्रदेश का जो भविष्य है, जो बेरोजगार नौजवान हैं वह फांसी के फंदे पर झूलने के लिये, आत्महत्या करने को मजबूर होता है ।

श्री रामकुमार यादव :- नेता जी, ओ छत्तीसगढ़ी में एक ठन पड़ता वाला कहेओ ता महूं कहत हंओं कि तें जीयत लबारी झन मारओ ददा मतलब छत्तीसगढ़ी में बड़े लबारी ला जीयत लबारी कहिथे । अब प्रोफेसर के भर्ती होगे हे तभो ले तें हा कहत हस कि एको ठन भर्तीच नइ होत हे । लेवा शुरू करओ बबा, लेकिन जीयत लबारी झन मारिहा ।

श्री नारायण चंदेल :- देख रामकुमार एके झन तोर भर्ती भर होए हे । मैं जानत हंओं कि तहूं बेरोजगार रहे । ओ समय मोरो करा कई बार रोजगार मांगे आये रहेस, अब तोला रोजगार मिल गे लेकिन बाकी मन के भी चिंता करओ ।

अध्यक्ष महोदय :- अभी तो विधायकगण चिंतित हैं कि आप कितना समय लेंगे और माननीय मुख्यमंत्री जी कितने बजे शुरू करेंगे ।

श्री नारायण चंदेल :- माननीय मुख्यमंत्री जी जल्दी शुरू कर देंगे, बस मैं समाप्त करूंगा फिर वैसे ही मुख्यमंत्री जी शुरू करेंगे ।

श्री कुलदीप जुनेजा :- अध्यक्ष जी, इनके पास 15 सालों का पुराना रिकॉर्ड, कटिंग पेपर है उसी को पूरा 15 साल वाले को पढ़ रहे हैं । इनका पूरा 15 साल का रिकॉर्ड बहुत लंबा हो जायेगा ।

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- जल्दी-जल्दी बोलना चाहिए, बहुत धीरे बोल रहे हैं ।

उच्च शिक्षा मंत्री (श्री उमेश पटेल) :- नेता जी, एक्चुअली सारे विधायक आपके समारू को ढूंढ़ रहे हैं कि वह समारू कहां गया ? जब से आप नेता प्रतिपक्ष बने हैं तब से मंगलू को आपका समारू मिल नहीं रहा है ।

श्री केशव प्रसाद चंद्रा :- नहीं, अभी तो गरजना शुरू करिन हे, बरसना बाकी हे।

श्री नारायण चंदेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, राजस्व विभाग में माननीय मुख्यमंत्री जी ने चिंता व्यक्त की थी कि राजस्व विभाग में बहुत सारे प्रकरण लंबित हैं । आप गांव के दौरे में जाईये, आप भी जनसंपर्क में जाते हैं । गांव के जो छोटे-छोटे किसान और मजदूर हैं, राजस्व विभाग में इतने प्रकरण हैं, तहसील ऑफिस में अगर किसी का काम है तो गांव के आदमी का काम है। छोटे आदमी का काम है और चाहे वह पटवारी हो, आर.आई. हो, नायब तहसीलदार हो, तहसीलदार हो, उनका रेट इस समय इतना बढ़ा हुआ है। जो गांव के लोग बताते हैं, वह मैं इस सदन में बता रहा हूं। जो काम पहले 2-4 हजार में हो जाता था, उनका कहना है कि अब 20-25 हजार में होता है। अगर उनको नामांतरण कराना है, अगर उनको सीमांकन कराना है, अगर उनको पर्ची फोड़वाना है और गांव का जो किसान है, वह चक्कर काटते घूमते रहता है। जो पटवारी है, वह अपने हल्के में नहीं रहता। गांव में नहीं रहता। वह मुख्यालय में रहता है और इसलिए इस व्यवस्था को दुरूस्त करने की आवश्यकता है। माननीय अध्यक्ष महोदय, 15 साल में जो योजनाएं चली थीं, मुख्यमंत्री जी आपने तीर्थयात्रा योजना बंद कर दी। पंचायत

विभाग उसका नोडल था। हमारे जो बुजुर्ग थे, हमारे जो 60 साल से ऊपर के बुजुर्ग थे, 15 साल में उन्होंने कितनी तीर्थ यात्राएं की हैं। स्पेशल ट्रेन चलती थी।

श्री कुलदीप जुनेजा :- भैय्या, वहीं जाकर भगवान के चरणों में माथा टेकते थे कि इन लोगों को 15 साल सह लिये, अब इन्हें हटाओ। (हंसी)

श्री नारायण चंदेल :- 15 साल तक वह महत्वपूर्ण योजना इस सरकार ने बंद कर दी।

डॉ. रश्मि आशिष सिंह :- भैय्या, क्योंकि ट्रेन बंद हो गई थी न। (हंसी)

श्री नारायण चंदेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, जो गरीब कन्याओं का विवाह होता था, वह भी करीब-करीब आपने समाप्त कर दिया। इक्का-दुक्का। क्यों समाप्त कर दिया?

श्री कुलदीप जुनेजा :- मुख्यमंत्री जी ने गरीब कन्याओं को रोजगार दे दिया कि वे अब गरीब कन्या नहीं हैं।

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- 100 जोड़ा विवाह अभी हमारे यहां होने वाला है। राशि भी बढ़ा दिये हैं। आपने 15 दिया है, हम तो 25 दे रहे हैं।

श्री नारायण चंदेल :- वह तो हो ही नहीं रहा है तो आप कहां से राशि बढ़ायेंगे?

श्रीमती अनिता योगेन्द्र शर्मा :- हो रहा है। आप अपने क्षेत्र में जाएं, हो रहा है।

श्री नारायण चंदेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, 2-2 3-3 महीने तक, जो हमारे पेंशनर हैं, अभी मार्च आ गया, छत्तीसगढ़ राज्य बनने के बाद में पहली बार ऐसा दृश्य देखने को मिलता है। अभी जैसे-जैसे हम 31 मार्च की तरफ बढ़ेंगे, पेंशनर जब ट्रेजरी में जाता है तो उसको कहा जाता है कि सर्वर डाउन है। 22 साल में सर्वर डाउन नहीं हुआ था। ये 2 साल से शुरू हो गया है। इस सरकार के पास में पैसा नहीं है। इस सरकार का खजाना खाली है और खजाना खाली होने का कारण यह है कि इस सरकार का वित्तीय प्रबंधन ठीक नहीं है। माननीय अध्यक्ष महोदय, वह पेंशनर बेचारा जो 60 साल से ऊपर का है, 65 साल का है, 70 साल का है, वह बच्चों के साथ जाकर दर-दर की ठोकरें खाता है। माननीय अध्यक्ष महोदय, बूढ़ातालाब के सामने में जो हमारी विधवा बहनें हैं, अनुकंपा नियुक्ति को लेकर बैठी हुई हैं। वहां हम दो बार गये और वह हमसे भेंट करने भी आईं। मुख्यमंत्री जी, जब हम गये तो हमने उनसे पूछा था कि क्या कभी माननीय मुख्यमंत्री जी से आपकी भेंट हुई? क्या विभागीय मंत्री से मुलाकात हुई? आपका प्रतिनिधि मंडल मिला? तो उन्होंने एक लाइन में जवाब दिया कि उन्होंने समय नहीं दिया। माननीय अध्यक्ष जी, 3 महीने हो गये। यह संवेदनहीनता का जबर्दस्त उदाहरण है। 3 महीने हो गये, उनसे कोई बातचीत करने वाला नहीं है। चर्चा करने वाला नहीं है। कोई अधिकारी कमर्चारी, हमारी माननीय मंत्रियों को इतनी फुर्सत नहीं है, सत्ता पक्ष के विधायकों को इतना समय नहीं है कि हम जाकर उनका हाल-चाल पूछें, उन्हें मुख्यमंत्री जी तक लेकर आ जायें, विभागीय मंत्री से मुलाकात करा दें। आज आंगनबाड़ी कार्यकर्ता हड़ताल पर हैं। आज रेडी-टू-ईट बच्चों को नहीं मिल पा रहा है। आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं की

वजह से आंगनबाड़ी बंद है। पोषण आहार नहीं मिल पा रहा है, लेकिन ये सरकार हाथ पर हाथ धरे बैठी है। इस प्रदेश में 4 लाख से ज़्यादा कर्मचारी हड़ताल पर थे और वे फिर से हड़ताल शुरू करने वाले हैं । प्रशासन पूरा ठप है, आप किसी भी ऑफिस में चले जाइए, छापा मारिये । लेकिन दुर्भाग्य यह है कि किसी को जाने की फुर्सत नहीं है । अध्यक्ष महोदय, पूरे प्रदेश को स्कूलों की हालत बद् से बद्तर है । इनके विभाग में कोई काम नहीं हो रहा है । न तो स्कूलों का उन्नयन हो रहा है और न ही नए स्कूल खुल रहे हैं । आज भी कई गांवों में परछी में, पेड़ के नीचे कक्षाएं लग रही हैं । कभी अचानक जाकर छापा मारें, इंस्पेक्शन करें । मंत्रिगण जाएं, विधायकगण जाएं । यह स्थिति यहां पर है स्कूल में मास्टर नहीं है, अस्पताल में डॉक्टर नहीं है । स्वास्थ्य मंत्री जी यहां बैठे हैं ।

डॉ. रश्मि आशिष सिंह :- आज की तारीख में मैक्ज़ीमम डॉक्टर हैं भइया ।

श्री नारायण चंदेल :- उन्होंने कल आंकड़ा बताया था । इस तरह का वातावरण पूरे छत्तीसगढ़ प्रदेश में है । इसलिए हम कहना चाहते हैं कि यह सरकार हर मोर्चे पर असफल है, विफल है । आम जनता में इस सरकार के प्रति भारी रोष और आक्रोश व्याप्त है । समाज का हर तबका इस सरकार से हैरान और परेशान है । इसलिए आने वाले समय में सरकार को बदलने के मूड में छत्तीसगढ़ की जनता उतारू है । इस सरकार के प्रति जनआक्रोश है । अध्यक्ष महोदय, आज प्रदेश की राजधानी रायपुर हो, बिलासपुर हो, कोरबा हो किस तेज़ी के साथ अपराध बढ़ रहा है। गृहमंत्री जी हाथ पर हाथ धरे बैठे हैं । रायपुर में चाकूबाजी, चैन स्नैचिंग होना, लूटपाट होना, जमीनों पर जिस तरह से भू-माफियाओं द्वारा कब्जे किये जा रहे हैं । ये किस श्रेणी में है । कोरबा के ट्रांसपोर्ट नगर में दिवाली के पहले दिन बाहर के राज्यों के शूटर आते हैं ।

मुख्यमंत्री (श्री भूपेश बघेल) :- नेता प्रतिपक्ष नियुक्त होने के बाद पहली बार नारायण चंदेल जी भाषण दे रहे हैं । मैं उनका स्वागत् करता हूं लेकिन हमारे भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ सदस्य आपस में गपबाजी कर रहे हैं । कितनी गंभीरता से ले रहे हैं । यह दुर्भाग्यजनक है । सुन नहीं रहे हैं आपस में गपिया रहे हैं, हम लोग तो देख रहे हैं । इसलिए मैं कह रहा हूं अपने-अपने स्थान पर जाइए और गंभीरता से सुनिये कि नेताजी बोल क्या रहे हैं । पूर्व मुख्यमंत्री जी ने तो बायकॉट कर दिया है । नेता जी पहली बार भाषण दे रहे हैं और पूर्व मुख्यमंत्री जी गायब हैं ।

श्री केशव प्रसाद चंद्रा :- उनको पूर्व मंत्री को थोड़े ही सुनाना है, आपको सुनाना है ।

श्री नारायण चंदेल :- वर्तमान को सुनना है । माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं यह कह रहा था कि कानून व्यवस्था की स्थिति बद से बद्तर है । पूरा छत्तीसगढ़ अपराधगढ़ के रूप में परिवर्तित हो रहा है और जो अपराधी है वह पुलिस की पकड़ से बाहर है और नित् नये किस्म के अपराध हो रहे हैं, यह ताज्जुब की बात है । छत्तीसगढ़ में ऐसे अपराध नहीं होते थे । सायबर क्राइम भी हो रहा है और इसलिए छत्तीसगढ़ का ग्राफ अपराध के मामले में देश के अग्रणी राज्यों में आता जा रहा है। अध्यक्ष

जी, अब आप सक्ती जिले में चले गए हैं । डी.एम.एफ. फंड का जिस तरह से दुरूपयोग हुआ है । इस विधान सभा में कई प्रश्न लगे हैं । लेकिन उसके बाद भी उसमें कोई रोक नहीं है । मैं कह रहा था कि यह विधान सभा की अवमानना होती है। जिस तरह से डी.एम.एफ. फंड का स्वार्थपूर्ण बंटवारा होता है । मुझे कुछ स्कूलों में बताया गया कि एक करोड़ का स्कूल है और साढ़े तीन करोड़ तो उसकी मरम्मत में लग गया । आपके जिले में और हमारे जिले में जो प्रतिक्षालय बने हैं, वह तीन लाख से उपर के नहीं हैं, लेकिन साढ़े छः-छः लाख में बने हैं। यहां पर जिस तरीके से डी.एम.एफ फंड का दुरूपयोग हो रहा है, उसको रोकने की आवश्यकता है। अगर हम उसका सदुपयोग कर सकते हैं तो विकास कार्यों में उसको लगता सकते हैं। बहुत बड़ी राशि है लेकिन हमारी नीति और नीयत ठीक होनी चाहिए। मैंने कहा कि इस सरकार की नीति और नीयत दोनों ठीक नहीं है। माननीय अध्यक्ष महोदय, इसलिए छत्तीसगढ़ लगातार विकास के मामलों में पीछे जा रहा है। छत्तीसगढ़ में जिस प्रकार से विकास का ग्रोथ होना चाहिए था, सारे संसाधन होने के बाद भी अगर हमारी नीयत ठीक हुई तो हम छत्तीसगढ़ को नई ऊंचाई दे सकते थे लेकिन दुर्भाग्य है। आपके मंत्रिमंडल में एक तो टीम वर्क का अभाव है, एक मंत्री अपने ही कलेक्टर को भ्रष्ट बताते हैं। दूसरे मंत्री इस्तीफा देते हैं। एक विधायक एस.पी. के खिलाफ धरना देते हैं, एक विधायक कहते हैं कि यहां पर थाने का रेट टंगा हुआ है। कभी ऐसा होता नहीं है। छत्तीसगढ़ में इस प्रकार का दृश्य कभी उपस्थित नहीं हुआ है लेकिन इस समय हमको देखने को मिल रहा है और खुलेआम देखने का मिल रहा है। अगर कोई मंत्री किसी कलेक्टर के उपर में आरोप लगाता है तो माननीय मुख्यमंत्री जी यह संवैधानिक संकट है। जिस मंत्री ने संविधान की शपथ ली है और वह अपने ही प्रशासन के अधिकारी के उपर अगर यह आरोप लगाए कि यह कलेक्टर इस प्रदेश का महाभ्रष्ट कलेक्टर है तो यह संवैधानिक संकट की स्थिति है। आपका विधायक एस.पी. कार्यालय के सामने में सार्वजनिक रूप से धरने पर बैठता है तो यह संवैधानिक संकट है। इस सरकार से क्षुब्ध हो करके एक मंत्री ने इस्तीफा दिया। यह स्थिति इस प्रदेश के हित के लिए ठीक नहीं है, सरकार के लिए ठीक नहीं है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, आज वन विभाग के वन मंत्री जी नहीं हैं। हमारे जिले में तो वन कम हैं लेकिन हमको जो सूचना समाचार प्राप्त होती है। कैम्पा मद का कितना दुरूपयोग हो रहा है ? सरकार के आंकड़े में, कागज में, जितने वृक्षारोपण हो रहे हैं, वनों की तेजी के साथ में माफियाओं के द्वारा अवैध कटाई की जा रही है। सरकार के संरक्षण में हो रहा है। अध्यक्ष जी, शिकायत करने के बाद भी वहां पर कोई कार्रवाई नहीं हो रही है। जो पूरा जंगल है, वह उजड़ रहा है इसलिए जंगल जब उजड़ते हैं तो जानवर शहर की तरफ आ रहे हैं। इसको रोकने की आवश्यकता है। अगर छत्तीसगढ़ को बचाना है, मैंने कहा कि जल जंगल और जमीन को बचाने की आवश्यकता है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, हमारे श्रमिकों को श्रम विभाग के द्वारा जो छोटे-छोटे औजार मिलते थे, उसको आपने बंद कर दिया।

नगरीय प्रशासन मंत्री (डॉ. शिवकुमार डहरिया) :- बंद नहीं किया है।

श्री नारायण चंदेल :- आपने बंद कर दिया है, आप श्रम मंत्री हैं।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- बंद नहीं किए हैं, उनको खाते में पैसा देते हैं।

श्री नारायण चंदेल :- आप मेरे को बता दीजिए कि कितने खातों में पैसा गया है।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- उस समय कमीशन खाते थे, हम लोग डायरेक्ट खाते में पैसा भेजते हैं।

श्री नारायण चंदेल :- आप मेरे को बता दीजिएगा।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- हां, मैं बता दूंगा और जो पंजीकृत होंगे उनकी सूची भेज देना, हम भेज देंगे।

श्री नारायण चंदेल :- माननीय अध्यक्ष जी, मेरे क्षेत्र में बुनकर है, आपके क्षेत्र में भी बुनकर है और जो बुनकर है, वह बड़ा मेहनती होता है। आपके जिले में भी बुनकर हैं, मेरे जिले में भी बुनकर हैं, राजनांदगांव में बुनकर हैं, चौबे जी के क्षेत्र में भी शायद होंगे। लेकिन पिछले चार साल से उन बुनकर भाईयों को जो मेहनती होते हैं, जो एकाग्र हो करके मेहनत करते हैं, उन बुनकरों को बुनने के लिए धागा नहीं मिल रहा है। कई बार बुनकर हड़ताल पर बैठ चुके हैं। राजधानी में भी हड़ताल में बैठे हैं, जांजगीर चांपा में भी हड़ताल में बैठे हैं। छोटी-छोटी बातें हैं, बुनकरों को धागा उपलब्ध नहीं हैं। उनका जो कर्ज है, आप उसको माफ नहीं कर सकते। उनको जो छोटी-मोटी सहूलियत देना है, उनको जो प्रोत्साहन राशि देना है, यह सरकार नहीं दे पा रही है। आप कहते हैं कि बढ़ता छत्तीसगढ़, सुघ्घर छत्तीसगढ़ ।

अध्यक्ष महोदय :- आपके एक घंटे हो रहे हैं और कितनी देर लेंगे।

श्री नारायण चंदेल :- नहीं, एक घंटे नहीं हो रहे हैं। एक घंटे की तरफ बढ़ रहे हैं।

अध्यक्ष महोदय :- नहीं-नहीं, चार मिनट में एक घंटा होने वाला है ।

श्री नारायण चंदेल :- नहीं, 1 घंटा नहीं हुआ है, मैं 1 घण्टे की तरफ बढ़ रहा हूं।

अध्यक्ष महोदय :- नहीं-नहीं, 4 मिनट में आपका 1 घंटा होने वाला है तो आपका रिकॉर्ड तो बन गया कि आप अपना पहला भाषण 1 घंटे का दे दिये।

श्री नारायण चंदेल :- 2-4 मिनट।

अध्यक्ष महोदय :- आप 6 बजकर 24 मिनट में अपना भाषण शुरू किये हो, आपका 1 घंटा पूरा हो जाएगा। आपका कम से कम 1 घंटे का रिकॉर्ड होना चाहिए।

श्री नारायण चंदेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, जब यहां पर सदन शुरू होता है तो हम राष्ट्रीय गीज और राजकीय गीत का सम्मान करते हैं और हम सब लोग खड़े रहते हैं। अजय चंद्राकर जी।

श्री रविन्द्र चौबे :- तुमन हा सुनबे नहीं करो। (हंसी)

श्री नारायण चंदेल :- लेकिन मुझे जो जानकारी मिली है।

श्री कुलदीप जुनेजा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह लोग बार-बार यही बोल रहे हैं कि यह बोर हो रहे हैं, बोर हो रहे हैं।

श्री नारायण चंदेल :- कालू, थोड़ा चुप बइठ। माननीय अध्यक्ष महोदय, मुझे जो जानकारी मिली है, यह हमारे छत्तीसगढ़ का अपमान है। 24, 25 और 26 तारीख को आपका जो राष्ट्रीय अधिवेशन हुआ, जब उसमें राजकीय गीत बजा तो उसमें आपके जो डेलीगेट आये थे, उनमें से कोई भी राष्ट्रीय गीत में खड़े नहीं हुए। (शेम-शेम की आवाज) छत्तीसगढ़ की भूमि पर राजकीय गीत का अपमान दुर्भाग्यपूर्ण बात है।

श्री अमितेश शुक्ल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं प्रतिपक्ष के नेता जी से यह पूछना चाहता हूं कि क्या इन्होंने ए.आई.सी.सी. का अधिवेशन अटेण्ड किया ? यह इस बात को कैसे बोल रहे हैं ? सब खड़े थे। (व्यवधान)

डॉ. रश्मि आशिष सिंह :- यह वीडियो में बना है। (व्यवधान)

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय मुख्यमंत्री जी, अमितेश शुक्ल जी जब आप आते हैं तो आते हैं और जब आप जाते हैं तो ये भी चले जाते हैं। आप अभी अपने भाषण में उनके लायक कुछ घोषणा करियेगा और यह हवाई अड्डे में जो धक्का खाये उसको आप किसी को भी मत बताइयेगा।

श्री अमितेश शुक्ल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मुझे अफसोस इस बात का है कि यह वहां हवाई अड्डे में क्या कर रहे थे ? (हंसी) यह मुझे धक्का खाते कैसे देखे ? क्या यह कांग्रेस में शामिल होना चाह रहे हैं ? क्या यह हमारे कांग्रेस के नेता के स्वागत के लिए आये थे ? यह मुझे धक्का खाते कैसे देख लिये ?

श्री रविन्द्र चौबे :- यह प्रथम पंचायत मंत्री और द्वितीय पंचायत मंत्री दोनों शांत बैठिये, नेता प्रतिपक्ष जी को अपना भाषण खत्म करने दीजिए।

श्री अजय चंद्राकर :- लेकिन मुख्यमंत्री जी, आज वह बोले कि हंस चुगेगा दाना। आगे को वह नहीं बोलूंगा बोले। अब वह यहां तक पहुंच गये हैं। आप उनके लिए कुछ करिये। वह आगे का नहीं बोलूंगा बोल दिये।

श्री अमितेश शुक्ल :- आप यह चुगली करने की आदत कब बंद करेंगे ?

श्री अजय चंद्राकर :- चलिये, पूरा बोलिये। पूरा बोलिये न।

श्री अमितेश शुक्ल :- इनकी चुगली करने की आदत कब जाएगी ?

श्री कुलदीप जुनेजा :- अजय जी, पहले आप यह बताइये कि इनको कौन धक्का दे सकता है ? इनको कोई हिला भी नहीं सकते हैं और आप धक्के की बात कर रहे हैं।

श्री अजय चंद्राकर :- क्या है वह गाना कि हंस चुगेगा दाना ?

श्री अमितेश शुक्ल :- क्या है कि यह तो कुछ बोल नहीं पाते। यह इधर की उधर ही बात करते हैं।

श्री अजय चंद्राकर :- क्या बोलते हैं कि हंस चुगेगा दाना ?

श्री भूपेश बघेल :- आप यह बताइये कि क्या उनको कोई धक्का दे सकता है?

श्री नारायण चंदेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैंने तो इसलिए कहा क्योंकि वह सारा वीडियो वायरल हुआ था। आपके अधिवेशन में राजकीय गीत पर कोई खड़े नहीं हुआ था।

श्री कुलदीप जुनेजा :- आप सब 3-4 दिनों तक हमारे अधिवेशन का पूरा वीडियो देख रहे थे। मुझे लगा कि आप सब वीडियो देख रहे थे। आपको अच्छा आनंद आ रहा था।

श्री नारायण चंदेल :- मैं इसलिए कह रहा हूं कि छत्तीसगढ़ की भूमि पर यह दृश्य उपस्थित न हो तो अच्छा है। वह हमारा राजकीय गीत है। आपने ही घोषित किया है। माननीय मुख्यमंत्री जी, आप किसान के बेटे हैं मैं आपसे कहना चाहता हूं। मैं फिर से किसान पर आता हूं। यदि उत्तर प्रदेश में कोई बात होती है तो आप वहां के किसान को 50 लाख रूपये देते हैं। आप वहां पर घोषणा करके आते हैं लेकिन यदि आपने उत्तर प्रदेश में 50 लाख रूपये दिया है और यदि यहां पर किसानों के साथ कोई घटना, दुर्घटना, आत्महत्या होती है, यहां पर किसान के साथ ऐसी दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति न हो लेकिन यदि कोई घटना होती है तो आप यहां के किसान को 50 लाख रूपये न देकर 5 लाख रूपये तो दे दीजिए। किसान के बेटे को इतनी संवेदनशीलता रखनी चाहिए। अंत में माननीय अध्यक्ष महोदय, आप बोल रहे हैं और मुख्यमंत्री जी भी जवाब देंगे और समय भी हो रहा है, यह बात सही है इसलिए मेरा आपसे आग्रह है।

अध्यक्ष महोदय :- आपका 1 घंटा हो गया ।

श्री नारायण चंदेल :- मेरा आपसे आग्रह है कि छत्तीसगढ़ कैसे सही दिशा में जाए। छत्तीसगढ़ महातारी का सम्मान कैसे बचे, इसलिए हम सब लोगों को मिलकर काम करने की आवश्कता है और मैं आपको राजनीति से ऊपर उठकर कह रहा हूं और मैं आपको फिर से अटल जी की बात याद दिलाता हूं कि बड़े मन से हमारा काम करने का स्वभाव हो। हम किसी को यातना मत दे, प्रताड़ित मत करे, चाहे वह हमारा हो या विपक्षी हो।

अध्यक्ष महोदय :- धन्यवाद।

श्री कुलदीप जुनेजा :- आप इसको दिल्ली वालों को भी बताइये। आप यही पर खड़े होकर बता रहे हैं।

श्री उमेश पटेल :- चलिये, मोदी जी के जमाने में आपको कम से कम अटल जी याद तो आये।

श्री नारायण चंदेल :- तो मैं इन्हीं सारी बातों को कहते हुए माननीय मुख्यमंत्री जी से कहूंगा कि छत्तीसगढ़ में हम समाज के हर वर्ग की चिंता करे और समाज के हर वर्ग की चिंता करते हुए एक बात को स्मरण रखे कि यहां प्रजातंत्र की हत्या मत हो, यहां लोकतंत्र का अपमान मत हो । विधायिका का

पूरा सम्मान हो, जनप्रतिनिधियों का पूरा सम्मान हो और आज के जो हालात हैं, उस पर एक लाईन कहते हुए मैं अपने भाषण को समाप्त करूंगा । मुख्यमंत्री जी,

हर आंसू, हर दर्द,
हर आंसू, हर दर्द का हिसाब रखा जाएगा ।
हर आंसू, हर दर्द का हिसाब रखा जाएगा ।
भूपेश, तेरी नाकामी को याद रखा जाएगा ।। (मेजों की थपथपाहट)

अध्यक्ष महोदय :- वाह-वाह । नेता जी, आपने बड़ी शालीनता से विरोध प्रकट किया है, इसके लिए मैं धन्यवाद देता हूं । आपके साथियों से अनुरोध करूंगा कि इतनी शालीनता से ही विरोध किया जाये तो लोकतंत्र में ज्यादा मजा आएगा।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष जी, नेता जी ने एक बात उठाई कि जो जनप्रतिनिधि हैं, उनका सम्मान होना चाहिए, विधायकों का सम्मान होना चाहिए। अध्यक्ष जी, आपकी तरफ से एक निर्देश जारी होना चाहिए कि विधायक का जो प्रोटोकॉल है, वह चीफ सेक्रेटरी से ऊपर है तो कम से कम विधायक को जिलों में, ब्लॉक में अधिकारी सम्मान दें, उनके फोन को उठाएं, उनकी चिट्ठियों का जवाब दें, उनके कार्यक्रमों में नाम छपवाएं, ऐसा एक आदेश आप जारी कर दें। नेता प्रतिपक्ष जी का आज पहला भाषण हुआ है । कम से कम इतना काम करेंगे तो उनका सम्मान होगा ।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष जी ने कहा है कि पूरी शालीनता से चल रहा है ।

अध्यक्ष महोदय :- शालीनता से विरोध प्रकट किये हैं ।

श्री अजय चन्द्राकर :- मुख्यमंत्री जी सिर्फ चिट्ठी ही को नहीं, बल्कि पूरी शालीनता से विधायकों के हर मामले को हल करेंगे, आप देख लीजिएगा ।

मुख्यमंत्री (श्री भूपेश बघेल) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय राज्यपाल महोदय के अभिभाषण की चर्चा में भाग लेने वाले माननीय सदस्यों सर्वश्री मोहन मरकाम जी, माननीय अजय चन्द्राकर जी, माननीय शैलेश पांडे जी, माननीय शिवरतन शर्मा जी, माननीय प्रकाश शक्राजीत नायक जी, माननीय धरम लाल कौशिक जी, माननीया श्रीमती संगीता सिन्हा जी, माननीय बृजमोहन अग्रवाल जी, माननीया डॉ. लक्ष्मी ध्रुव जी, माननीय केशव प्रसाद चंद्रा जी, माननीय भुनेश्वर बघेल जी, माननीय पुन्नूलाल मोहले जी, माननीया श्रीमती अनिता शर्मा जी, माननीया श्रीमती रंजना साहू जी, माननीय गुलाब कमरो जी, माननीय रजनीश कुमार सिंह जी, माननीय किस्मत लाल नंद जी, माननीय डॉ. कृष्णकुमार बांधी जी, माननीय रामकुमार यादव जी, माननीय राजमन बेंजाम जी, माननीया श्रीमती इंदू बंजारे जी और अंत में नेता प्रतिपक्ष आदरणीय नारायण चंदेल जी को धन्यवाद देता हूं और विशेष रूप से नेता प्रतिपक्ष को धन्यवाद देता हूं कि नेता प्रतिपक्ष के रूप में उनका पहला भाषण था और आसंदी से जिस प्रकार से और सदस्यों के लिए टिप्पणी आई कि जिस शालीनता से नेता प्रतिपक्ष जी ने अपना

विरोध दर्ज किया, ऐसी अपेक्षा अन्य सदस्यों से भी की गई है, अध्यक्ष महोदय, इस टिप्पणी के लिए मैं आपकी भी प्रशंसा करता हूं । (मेजों की थपथपाहट)

अध्यक्ष महोदय, मैं तो नहीं चाहता था कि धरम लाल कौशिक जी नेता प्रतिपक्ष से हटें, लेकिन आप लोगों ने तिकड़म किया, इतिहास दर्ज किया कि पहली बार नेता प्रतिपक्ष बीच में बदला, लेकिन एक सत्र और बचा है और तीसरा नेता प्रतिपक्ष मत आये, इसके लिए मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- आप दुआ दे रहे हैं या बद्दुआ दे रहे हैं ?

श्री भूपेश बघेल :- मैं नेता प्रतिपक्ष के रूप में इनके लंबे कार्यकाल की कामना कर रहा हूं । (हंसी)

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- आप कुछ इशारा कर रहे हैं ।

श्री नारायण चंदेल :- मुख्यमंत्री जी, हमारी भी ईश्वर से प्रार्थना है कि आप जल्दी से जल्दी इधर आ जाएं ।

श्री भूपेश बघेल :- अध्यक्ष जी, का हे कि चील के कटरे से, गिधवा के कटरे से ढोर ह नहीं मरय, रामकुमार अईसने बोलथे न । गिधवा के चोंच कटरे से ढोर नहीं मरय ।

श्री अजय चन्द्राकर :- कौआ कह दीजिए ।

श्री भूपेश बघेल :- अच्छा कौआ कर दो । अभी हमारे जुनेजा साहब बोल रहे थे ।

श्री रामकुमार यादव :- मुख्यमंत्री जी, छत्तीसगढ़ी का एक ठव अउ कहावत हे, जैसे हमन 70-71 हन ओ मन 14 हे। हाथी हा कतको सूखा जाही, भैसा ले छोटे नइ होवय। (हंसी)

श्री भूपेश बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं सभी माननीय सदस्यों को धन्यवाद देता हूं कि छत्तीसगढ़ के इस पवित्र सदन में सभी पक्ष-विपक्ष के माननीय सदस्यों, हमारे केशव चन्द्रा जी और इन्दू बहन ने भी अपनी बात रखीं। अध्यक्ष महोदय, आपको धन्यवाद इसलिए कि आपने नये उपाध्यक्ष आसंदी में बैठने का पूरा अवसर दिया, इसलिए आपको धन्यवाद करता हूं।

माननीय अध्यक्ष महोदय, यह अवसर है कि पंचम विधानसभा के 16वें सत्र में माननीय राज्यपाल जी के अभिभाषण से इस सत्र की शुरूआत हुई। माननीय राज्यपाल जी हमारे पडोसी राज्य से आते हैं। उड़ीसा और छत्तीसगढ़ का भौगोलिक ,सांस्कृतिक, धार्मिक, आध्यात्मिक, सभी प्रकार से बहुत प्राचीन सम्बन्ध हैं। समझबूझ है, आपसी प्यार भी है। हम लोग कभी उड़ीसा के लोगों को बाहरी नहीं बोलते हैं। भले किसी को बोल दें, लेकिन जो उड़ीसा से आये रहते हैं, हमारा उड़ीसा के साथ काफी सांस्कृतिक प्रगाढ़ सम्बन्ध है और पारिवारिक सम्बन्ध भी है। क्योंकि रोटी-बेटी का भी सम्बन्ध है। हमारे छत्तीसगढ़ राज्य का सबसे कोई लंबा पड़ोसी है तो उड़ीसा है, जो रायगढ़ से लेकर सुकमा तक उड़ीसा राज्य लगता है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय राज्यपाल के रूप में श्री हरिचंदन जी के आने का लाभ हमारे छत्तीसगढ़ को अनेक रूप से मिलेगा, ऐसी मेरी कामना है और विश्वास भी है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, श्री विश्व भूषण हरिचंदन जी पहली बार राज्यपाल के रूप पधारे, इसलिए उनका अभिनन्दन करता हूं। उन्होंने हमें अभिभाषण के रूप में जो आशीर्वाद दिया, मैं उसके लिए उनका आभार व्यक्त करता हूं। मुझे इस बात की खुशी भी हो रही है। लेकिन अध्यक्ष महोदय, राज्यपाल जी पहली बार आये, लेकिन जिस प्रकार से हमारे विपक्ष के साथियों ने व्यवहार किया, टोका-टाकी की और तो और उनकी भाषा के बारे में टिप्पणी की है, इसका मुझे खेद और मैं खेद व्यक्त करता हूं।

माननीय अध्यक्ष महोदय, हमारे साथियों ने अनेक बार रूकावट डाली कि हाईकोर्ट में गये हैं, Sub-Judice है, उन्होंने और प्रकार की बातें कहीं। जो अभिभाषण की कण्डिका-43 है, उन्होंने उनके बारे में चर्चा की। क्योंकि यह मामला Sub-Judice है। चूंकि आपके पास विचाराधीन है, इसकी यहां पर चर्चा नहीं होनी चाहिए, उनके अभिभाषण में नहीं डालना चाहिए। लेकिन आपने अभिभाषण की कण्डिका-65 के बारे में कुछ नहीं कहा। अभिभाषण की कण्डिका-65 को देखेंगे, उसमें भी हमने राज्यपाल महोदय से कहा है कि छत्तीसगढ़ जुआ प्रतिषेध विधेयक-2022 पारित किया गया है, इसकी तरफ आपका ध्यान नहीं गया। आपने केवल कण्डिका-43 के बारे में ही चर्चा की। यह बिल भी राज्यपाल के पास लंबित है। अभी यूनिवर्सिटीज में नियुक्तियां हो रही हैं, किस प्रकार से हो रही है, सभी देख रहे हैं। वह विधेयक भी पारित हुआ है, वह भी लंबित है। तो बहुत सारे विषय हैं, जो लंबित हैं। Sub-Judice नये राज्यपाल आये हैं, हम अपेक्षा करेंगे कि निश्चित रूप से इस दिशा में पहल होगी। आप जो बार-बार कह रहे हैं कि यह मामला Sub-Judice है, मैं आपको कहना चाहूंगा कि यह मामला कैसे Sub-Judice है और किस मामले में है। बृजमोहन जी ने बहुत अच्छी बात कही कि यह जो बिल है, वह विधानसभा की सम्पत्ति है, जब राजभवन से उस पर हस्ताक्षर हो जायेगा फिर विधानसभा के पटल में रखा जायेगा, फिर राज्य सरार को वह अधिकार मिलेगा। उन्होंने बिलकुल सही कही।

माननीय अध्यक्ष महोदय, भारत के संविधान के अनुच्छेद 200 को देख लें यह स्पष्ट रूप से लिखा हुआ है कि विधानसभा से जो बिल आयेगा, उसे राज्यपाल हस्ताक्षर करेगा या उन्हें किसी कण्डिका पर आपत्ति है, तो पुनर्विचार के लिए फिर से सदन को भेजेगा। यदि केन्द्र और राज्य का विषय हो, तो फिर राष्ट्रपति के पास अनुशंसा कर सकेगा। अध्यक्ष महोदय, इसके अलावा चौथा विषय नहीं है । लेकिन आप सब जानते हैं, सदन का पूरा प्रदेश जान रहा है कि राजभवन का किस प्रकार से दुरूपयोग हुआ है, कौन प्रवक्ता बना था..।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह आपत्तिजनक उत्तर है । राजभवन का क्या दुरूपयोग और सदुपयोग है, यह अभिभाषण का विषय नहीं है ।

श्री भूपेश बघेल :- मैं वही तो बता रहा हूँ, बैठिये आप, मैं बता रहा हूँ ।

श्री अजय चन्द्राकर :- कुछ भी कैसे कह देंगे । ऐसा थोड़ी होता है ।

श्री अमितेश शुक्ल :- आप बैठ जाईये, समझ नहीं पा रहे हैं कि आप क्या बोल रहे हैं । माननीय अध्यक्ष जी, समझ ही नहीं पा रहे हैं कि मुख्यमंत्री जी क्या बोल रहे हैं ।

श्री भूपेश बघेल :- राज्यपाल जी सार्वजनिक रूप से बयान दिये कि आप या तो आरक्षण के मामले में अध्यादेश लाईये या विशेष सत्र बुलाईये, एक घण्टे के भीतर में हस्ताक्षर करूंगी । यह सार्वजनिक उनका बयान था । यह बयान था ।

श्री अजय चन्द्राकर :- यह बहस का विषय नहीं है, इसमें बहस नहीं होता ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरा व्यवस्था का प्रश्न है, राज्यपाल जी के अधिकारों के ऊपर में इस सदन में बहस नहीं हो सकती, क्योंकि वह संवैधानिक प्रमुख है । उन्होंने क्या कहा, क्या नहीं कहा...।

श्री अमितेश शुक्ल :- राज्यपाल के अभिभाषण में जो लगातार हल्ला कर रहे हैं, उसका क्या जवाब है माननीय अध्यक्ष महोदय ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- इसके ऊपर में जरा आपसे निवेदन है कि राज्यपाल महोदय को इस सदन के चर्चा का विषय न बनाये तो ज्यादा उपयुक्त होगा, मैं आग्रह करना चाहूंगा । हम राज्यपाल जी के अभिभाषण के ऊपर में चर्चा कर रहे हैं, न कि राज्यपाल जी के अधिकारों के ऊपर में चर्चा कर रहे हैं...।

श्री अजय चन्द्राकर :- यह कैसे साबित हुआ कि कोई उसका दुरूपयोग कर रहा है या सदुपयोग कर रहा है । यह आरोप है । यह आरोप किसके ऊपर है । क्या दुरूपयोग किया है, यह आना चाहिये ।

सुश्री शकुंतला साहू :- जब वह अभिभाषण पढ़ रहे थे तो आप लोग क्यों उनको डायरेक्शन दे रहे थे । अगर यहां चर्चा पर गवर्नर के ऊपर चर्चा नहीं हो सकती तो आप कैसे बोल रहे थे कि आपका मामला कोर्ट में है, आपको यहां नहीं आना चाहिये ।

नेता प्रतिपक्ष (श्री नारायण प्रसाद चंदेल) :- हम महामहिम को धन्यवाद देने के लिये यहां अभिभाषण पर चर्चा कर रहे हैं...।

श्री अजय चन्द्राकर :- क्या दुरूपयोग हुआ, कौन दुरूपयोग किया, राजभवन का ।

श्री भूपेश बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं निवेदन करूंगा कि माननीय नेता प्रतिपक्ष जी खड़े हुये हैं तो माननीय सदस्यों को निर्देशित करिये कि बैठ जायें ।

श्री नारायण प्रसाद चंदेल :- हम अभिभाषण के धन्यवाद प्रस्ताव पर चर्चा कर रहे हैं । राज्यपाल के किसी अधिकार पर यहां चर्चा नहीं हो रही है और इसलिए महामहिम के खिलाफ में कोई ऐसा शब्द न बोलें, जो उनको आहत करने वाला हो ।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, कौन दुरूपयोग किया है, यह स्पष्ट होना चाहिये । यह आरोप है, उत्तर नहीं है । यह आरोप किसके ऊपर है । कौन दुरूपयोग किया है ।

श्री भूपेश बघेल :- मुझे बोलने दें, मैं जवाब दूंगा ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष जी, नेता जी ने भी कहा है कि जवाब कि आवश्यकता नहीं है । यह कांस्टिट्यूशनल ब्रेक डाऊन जैसी स्थिति है, राज्यपाल जी हमारे संवैधानिक प्रमुख है, इस विधान सभा की अधिसूचना उनके नाम से जारी होती है, हम राज्यपाल के अभिभाषण पर चर्चा कर सकते हैं, राज्यपाल जी के अधिकारों पर चर्चा नहीं कर सकते हैं । राज्यपाल जी को अधिकार है, वह संविधान प्रदत्त है, उनके कार्यों पर चर्चा नहीं कर सकते हैं ।

श्री अमितेश शुक्ल :- राज्यपाल जी जब यहां पर बोल रहे थे तो उस समय हल्ला कर रहे थे ।

श्री अजय चन्द्राकर :- स्पष्ट आरोप लगा ।

अध्यक्ष महोदय :- स्पष्ट करें ना ।

श्री अमितेश शुक्ल :- वापस जाओ, वापस जाओ के नारे लग रहे थे । राज्यपाल जब बोल रहे थे तो उस समय राज्यपाल जी का आदर क्यों नहीं किये । यह जो आप बात कर रहे हैं ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- मुख्यमंत्री जी, राज्यपाल जी के राजभवन के दुरूपयोग का आरोप लगा रहे हैं, इस प्रकार का आरोप लगाना मुझे लगता है कि वह सदन के सर्वोच्च हैं, इसलिए आरोप लगाना उचित नहीं है । इसके बारे में आपको व्यवस्था देनी चाहिये । मुख्यमंत्री जी, हमने जो भाषण दिया है, उसके ऊपर में बोलें। मुख्यमंत्री जी राज्यपाल ने जो अभिभाषण दिया है, उस पर बोलें । सबसे पहले तो माननीय अध्यक्ष जी, कृतज्ञता ज्ञापन प्रस्ताव प्रस्तुत करने वाले सदस्य हैं, वह आज गायब हो गये हैं, उनका भाषण पूरा नहीं हुआ है । जब कृतज्ञता ज्ञापन करने वाले सदस्य ही नहीं है तो मुख्यमंत्री जी जवाब किसका दे रहे हैं, किसके प्रति कृतज्ञता व्यक्त कर रहे हैं । हम तो इसका विरोध कर रहे हैं । कृतज्ञता ज्ञापन जब कल माननीय अध्यक्ष जी ने सदन को स्थगित किया, उन्होंने कहा कि उनका जो भाषण है, जारी रहेगा । उनका भाषण पूरा नहीं हुआ । अगर कृतज्ञता ज्ञापन करने वाले सदस्य का भाषण ही पूरा नहीं हुआ तो मुख्यमंत्री जी जवाब किसका दे रहे हैं ।

अध्यक्ष महोदय :- चलिये, अब इसको लंबा मत खींचिये ।

श्री नारायण प्रसाद चंदेल :- यह भी एक नई परम्परा की शुरूआत हो रही है । यह भी एक नई नजीर है ।

अध्यक्ष महोदय :- माननीय मुख्यमंत्री जी ।

श्री भूपेश बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हमारे माननीय विद्वान सदस्यों ने आपत्ति दर्ज की और व्यवस्था का प्रश्न उठाया। शुरूआत इन्होंने की। (मेजों की थपथपाहट) राज्यपाल जी का अभिभाषण चल रहा था और इन्होंने कहा कि मामला सब-ज्यूजिश है। यह बात किसने कही ? आपकी तरफ से कही

गई। जब सब-ज्यूडिश है तो कौन-सा सब्जेक्ट सब-ज्यूडिश है, वह मुझे बताना होगा। मैं बता रहा हूं कि कौन सा सब्जेक्ट सब-ज्यूडिश है। मैं यही बात कह रहा हूं। मैं यहां राज्यपाल के अधिकारों की समीक्षा नहीं कर रहा हूं लेकिन यह बताने का प्रयास कर रहा हूं कि राज्यपाल को किसी भी बिल में क्या-क्या अधिकार है ? मैं उनके अधिकार की कटौती के बारे में भी चर्चा नहीं रहा हूं। लेकिन यदि संपत्ति विधान सभा की है, बिल विधान सभा से पारित हुआ है और राज्य सरकार से सवाल पूछा जाता है और इस मामले में हम कहे कि आपको यह अधिकार नहीं है कि आप राज्य सरकार से बिल के संबंध में प्रश्न पूछे। (मेजों की थपथपाहट)

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, (व्यवधान) यह राज्यपाल की भूमिका पर ही चर्चा हो रही है। (व्यवधान)

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष जी, (व्यवधान) ।

सुश्री शकुंतला साहू :- क्या हर बात आप लोग ही तय करेंगे ? (व्यवधान)

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- अध्यक्ष जी, यदि आप चर्चा करवायेंगे तो हम सदन की कार्यवाही में भाग नहीं लेंगे। (व्यवधान) यदि राज्यपाल की भूमिका में चर्चा होगी तो हम सदन की कार्यवाही में भाग नहीं लेंगे। (व्यवधान)

सुश्री शकुंतला साहू :- हर बात आप लोग तय करेंगे ?

श्री कुलदीप जुनेजा :- माननीय अध्यक्ष जी, यह लोग जबर्दस्ती का ... (व्यवधान)।

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- आप लोगों ने स्टार्ट किया है। (व्यवधान)

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- अध्यक्ष जी, राज्यपाल (व्यवधान) संसदीय और (व्यवधान)।

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- राज्यपाल का अपमान आप लोगों ने किया है।

डॉ. रश्मि आशीष सिंह :- आप ही लोग हर बात में हंगामा करते हैं। (व्यवधान)

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- अध्यक्ष महोदय, यह विषयांतर हो रहा है। (व्यवधान)

श्री नारायण चंदेल :- अध्यक्ष महोदय, यह विषयांतर हो रहा है। (व्यवधान)

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- अध्यक्ष जी, यह विषयांतर हो रहा है। (व्यवधान) यह विषयांतर हो रहा है। यदि आपकी व्यवस्था इस पर नहीं आयेगी तो हम सदन छोड़कर चले जायेंगे।

श्री नारायण चंदेल :- माननीय अध्यक्ष जी, यह विषयांतर हो रहा है। (व्यवधान)

श्री अजय चंद्राकर :- यदि (व्यवधान) तो हम सदन में नहीं बैठेंगे।

श्री नारायण चंदेल :- अध्यक्ष महोदय, अभिभाषण पर चर्चा हो (व्यवधान) । यह विषयांतर हो रहा है। (व्यवधान)

श्री अजय चंद्राकर :- हम मुख्यमंत्री जी को पूछना चाहते हैं कि यदि वह इस विषय में बात करेंगे तो हम सदन में नहीं बैठेंगे। (व्यवधान)

डॉ. रश्मि आशीष सिंह :- राज्यपाल के सम्मान का ड्रामा बन्द करो।

श्री भूपेश बघेल :- आप लोग जो प्रश्न उठाये हैं, मैं उसी का उत्तर दे रहा हूं। (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय :- प्लीज, प्लीज।

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- आप लोग पूरे सदन में हंगामा किये हो।

अध्यक्ष महोदय :- मैं इसीलिये बोल रहा था कि शाम ज्यादा हो रही है लेकिन आप लोगों ने, किसी ने नहीं सुना। यहां माननीय राज्यपाल के बारे में बहस नहीं हो रही है। आपकी तरफ से जो आरोप है, मुख्यमंत्री जी उसका जवाब दे रहे हैं।

श्री अजय चंद्राकर :- अध्यक्ष महोदय, हमने कोई आरोप नहीं लगाया है। (व्यवधान) (मेजों की थपथपाहट) राज्यपाल का जवाब मांगा जा रहा है। (व्यवधान) का दुरूपयोग हुआ है। मैंने कहा कि दुरूपयोग हुआ है। हमने कहा कि राज्यपाल से जवाब मांगा जा रहा है। यह विषयांतर का विषय नहीं है।

श्री नारायण चंदेल :- विषयांतर हो रहा है। कोई आरोप नहीं है।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष जी, मैं आपसे एक मिनट ..।

अध्यक्ष महोदय :- प्लीज, मैं खड़ा हूं। मैं सिर्फ यह कह रहा हूं कि माननीय मुख्यमंत्री जी अभिभाषण पर अपना जवाब दे रहे हैं। चूंकि अभिभाषण के समय आप लोगों ने जो आपत्ति की है, उस पर अपना विचार व्यक्त कर रहे हैं। (मेजों की थपथपाहट)

श्री अजय चंद्राकर :- राज्यपाल की भूमिका पर कोई बात नहीं करेंगे। हमने कभी नहीं कहा कि राजभवन का दुरूपयोग हो रहा है। (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय :- बहस कहां हो रही है ? बस, बस, प्लीज। कृपया शांति से सुने। जितनी शालीनता से भाषण समाप्त हुआ है और जितने शालीनता का वातावरण में आप लोगों ने पूरे 5.30 घण्टे तक बनाये रखा है।

श्री अजय चंद्राकर :- अध्यक्ष महोदय, व्यवस्था का सवाल है। गवर्नर की चर्चा होगी या नहीं होगी। इसमें बात करिये ? आप इसमें व्यवस्था दीजिये।

अध्यक्ष महोदय :- माननीय मुख्यमंत्री जी।

श्री अजय चंद्राकर :- हम तो सुनना चाहते हैं।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष जी, आपने कहा हम लोगों ने राज्यपाल की भूमिका पर चर्चा नहीं की। हमने यह चर्चा की कि राज्य सरकार हाई कोर्ट में गई है, हमने इस पर चर्चा की। हमने इस पर चर्चा की कि राज्यपाल के पद पर प्रश्न चिन्ह लगाया गया है, हमने राज्यपाल के अधिकारों पर चर्चा नहीं की। (व्यवधान) मुख्यमंत्री जी ने तो तीन शब्द पढ़े, चौथा शब्द यह भी है कि राज्यपाल से यह नहीं पूछा जा सकता कि वह कब दस्तखत करेंगे, करेंगे या नहीं करेंगे। वह अनिश्चित काल के लिये रोक के रख सकते हैं। संविधान में उनको यह भी अधिकार है परंतु राज्यपाल की भूमिका पर चर्चा नहीं हो

सकती। यदि राज्यपाल की भूमिका पर चर्चा करवायेंगे तो यह संविधान के विरूद्ध होगा। संविधान से विरूद्ध होगा।

श्री कवासी लखमा :- अध्यक्ष महोदय, यह लोग झूठ बोल रहे हैं।

अध्यक्ष महोदय :- न तो हम करवाना चाहते हैं और न ही माननीय मुख्यमंत्री जी करेंगे।

श्री नारायण चंदेल :- माननीय अध्यक्ष जी, मेरा आग्रह है कि विषयांतर न हो। यह डायवर्ट हो रहा है।

श्री भूपेश बघेल :- कोई विषयांतर नहीं हो रहा है।

श्री नारायण चंदेल :- विषय पर चर्चा हो।

श्री भूपेश बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, शुरूआत इन्होंने की कि मामला सब-ज्यूडिश है। तो सब-ज्यूडिश कौन-सा मामला है ? चूंकि संपत्ति विधान सभा की है और हमसे सवाल पूछे जा रहे हैं।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- अगर माननीय मुख्यमंत्री जी यही बात कहेंगे तो हम मुख्यमंत्री जी का भाषण नहीं सुनेंगे। हम सदन से बहिगर्मन कर देंगे। माननीय मुख्यमंत्री जी, हमने जो प्रश्न उठाये हैं अगर राज्यपाल की भूमिका पर चर्चा होगी...।

श्री भूपेश बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, जो हमको कहना है। (व्यवधान) वह तो मैं नहीं कर सकता क्योंकि प्रदेश के 3 करोड़ लोगों का, (व्यवधान) हजारों लाखों नौजवानों के भविष्य की...।

(व्यवधान)

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष जी, हाईकोर्ट कौन गया है? हाईकोर्ट विधान सभा थोड़ी गई है ? (व्यवधान) विधान सभा हाईकोर्ट नहीं गई है।

श्री भूपेश बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, जो परित किया है, यदि उसे बाधित किया जायेगा तो हम हर बार बोलेंगे। (व्यवधान) अगर आप लोग सवाल करेंगे तो क्या हम लोग उत्तर नहीं देंगे ?

श्री रामकुमार यादव :- आप लोग पिछड़ा वर्ग विरोधी हैं।

श्री नारायण चंदेल :- माननीय अध्यक्ष जी, राज्यपाल महोदय के अभिभाषण पर चर्चा हो। आप तो इधर-उधर जा रहे हैं।

श्री भूपेश बघेल :- (व्यवधान) आप लोग सवाल कर रहे हैं..।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- यह संविधान के विरूद्ध बात हो रही है (व्यवधान) क्योंकि संविधान के विरूद्ध बात हो रही है।

श्री नारायण चंदेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, इसलिये हम सदन से बहिगर्मन करते हैं।

समय

7.46 बजे

बहिर्गमन

भारतीय जनता पार्टी के सदस्यों द्वारा मुख्यमंत्री जी की चर्चा के दौरान माननीय राज्यपाल जी का उल्लेख होने के विरोध में

(नेता प्रतिपक्ष (श्री नारायण चंदेल) के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी के सदस्यों द्वारा मुख्यमंत्री जी की चर्चा के दौरान माननीय राज्यपाल जी का उल्लेख होने के विरोध में सदन से बहिर्गमन किया गया)

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- आप लोगों ने बहिगर्मन को आदत बना लिया है।

(भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस दल के सदस्यों द्वारा नारे लगाए गए.)

माननीय राज्यपाल के अभिभाषण पर प्रस्तुत कृतज्ञता ज्ञापन प्रस्ताव पर चर्चा (क्रमश:)

श्री रामकुमार यादव :- जावव तो तुमन ओ कोती आरक्षण वाला धरही तुमन ला।

श्री भूपेश बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, भारतीय जनता पार्टी के नेताओं को सच सुनने की शक्ति नहीं है। वह सच का सामना नहीं कर सकते। (मेजों की थपथपाहट) आप सब जानते हैं। पूरा सदन और पूरे देश ने देखा है कि माननीय राज्यपाल जी ने सार्वजनिक रूप से बयान दिया था कि मैं एक घण्टे के भीतर में बिल में हस्ताक्षर करूंगी और उस आधार पर हमारे आदिवासी समाज के लोग आएं। मैंने कहा कि अध्यादेश करवा देते हैं, उस चर्चा में बहुत सारे साथियों ने कहा। जब राज्यपाल जी कह रहे हैं क्योंकि आदिवासी समाज की भावनाएं जुड़ी हुई थीं और उन्होंने कहा कि आप विधान सभा में पारित करवाईये, आप शेड्यूल लाईन का भी प्रस्ताव पारित करवाईये। उस समय यह भाग गये। आरक्षण बिल में तो सर्वसम्मति से पास करवाएं, लेकिन जब शेड्यूल लाईन में शामिल करने की बात आई तो यह विपक्ष के लोग पलायन कर गये। जैसे अभी इन्होंने किया। यह इनका दोहरा चरित्र है और राज्यपाल जी हस्ताक्षर के लिए तैयार बैठी थीं, हमारे 5 सीनियर मंत्री रात में 9.00 बजे जाकर आपसे हस्ताक्षर हुआ, हम लोग हस्ताक्षर किये उसके बाद रात को 9.00 बजे राजभवन भेजे, वहां मंत्रियों के साथ में अधिकारी भी गये, लेकिन पता नहीं, एकात्म परिसर से क्या चुटका आया ? फिर बहानेबाजी हुई, फिर प्रवक्ता के रूप में यही लोग बोलते थे। राजभवन के प्रवक्ता बने हुए थे। हमें दु:ख तो इस बात का है इस पवित्र सदन ने प्रदेश के नौजवानों के हित के लिए फैसला किया। कोई गलत फैसला नहीं था। बाबा साहब अम्बेडकर ने संविधान में व्यवस्था की है कि अनुसूचित जाति, जनजाति को उसकी जनसंख्या के आधार पर उसका आरक्षण मिले, मण्डल आयोग ने पिछड़ा वर्ग के लिए सिफारिश की तो उसको 27 प्रतिशत आरक्षण मिले, भारत सरकार ने खुद 50 प्रतिशत की सीमा को लांघते हुए, 10 प्रतिशत ई.डब्ल्यू.एस. के

आरक्षण की व्यवस्था की। कुछ लोग सुप्रीम कोर्ट में विरोध में गये थे, उसको खारिज किया गया और उसको सही ठहराया गया। हमने हेड काउंट करवाया। हेड काउंट में साढ़े 42 प्रतिशत पिछड़े वर्ग का आया। 3.48 ई.डब्ल्यू.एस. का आया। हमने 4 प्रतिशत ई.डब्ल्यू.एस. के लिए, पिछड़े वर्ग के लिए 27 प्रतिशत की व्यवस्था की। अब यह राजनीति करने लगे। अभी भी वही राजनीति कर रहे हैं। यह करें तो सब ठीक है। माननीय राज्यपाल को जो संविधान में जो अधिकार मिला है, उसको कोई चुनौती नहीं दे रहा हूँ, लेकिन प्रदेश की जनता के हित में, विधान सभा से पारित बिल और उसके अतिरिक्त कोई, चिट्ठी पत्री आये तो उसके पास रास्ता क्या है ? यदि राज भवन से यह क्योरी की जाए कि इस मामले में जो विधान सभा की संपत्ति है उसके मामले में राज्य सरकार से प्रश्न पूछा जाए, हमने उत्तर भी दे दिया। फिर यह लोग प्रश्न करने लगे तो हमने यह भी कहा कि आपको इसका अधिकार नहीं है। हम सब विधान सभा के सदस्य हैं । पूरा आसंदी भी नियम परंपरा से बंधा हुआ है। हम लोग भी नियम, परंपरा, कानून से बंधे हुए हैं। हम उससे बाहर नहीं जा सकते। भारत का संविधान ही सर्वोच्च है और हिन्दुस्तान का कोई भी व्यक्ति इसके बाहर जाकर काम नहीं कर सकता। वह शक्तियां प्रदत्त हैं, वह शक्तियों का प्रयोग होना चाहिए। लेकिन उससे इतर यदि कोई शक्तियों का प्रयोग करेगा तो निश्चित रूप से फिर न्यायालय का दरवाजा खुला है। हम न्यायालय गये। इसी बात को कह रहे थे। मैं इसी का तो जवाब दे रहा हूं। मैं राज्यपाल के अधिकार को चुनौती दे रहा हूं। लेकिन यदि प्रदेश की जनता के हित की बात आये तो जिससे भी टकराना पड़े, जो सच है उसके लिए लड़ना है। "जिंदा हैं तो जिंदा नजर आना जरूरी है और बात उसूलों पर आ जाये जो टकराना जरूरी है।" (मेजों की थपथपाहट)

माननीय अध्यक्ष महोदय, यह लगातार जिस प्रकार से सेन्ट्रल एजेंसियों का दुरूपयोग कर रहे हैं। उसके बारे में अनेक बार चर्चा हुई। चाहे ई.डी. हो, डी.आर.आई. हो, आई.टी. हो, इनका लगातार दुरूपयोग कर रहे हैं। लेकिन हद हो गई। हमारे माननीय सदस्य विक्रम मंडावी जी ने मुझे पत्र लिखा, फोन में भी बात की, जानकारी दी। अब तो आई.बी. का भी दुरूपयोग होने लगा है। यह मामला सदन में उठाया। आई.बी. के अधिकारी फोन करके युवा कांग्रेस के साथी को फोन करते हैं कि आप गागड़ा जी के खिलाफ क्यों लगातार पोस्ट करते हैं? आप पोस्ट करना बंद करो। नक्सल प्रभावित क्षेत्र में यदि भारत सरकार का कोई अधिकारी इस प्रकार से फोन में बात करे तो अध्यक्ष महोदय, समझ लीजिए कि उस नौजवान लड़के के साथ क्या बीती होगी? सी.आर.पी.एफ. का दुरूपयोग होना शुरू हो गया। अब ये समझ गये हैं कि छत्तीसगढ़ में भारतीय जनता पार्टी की दाल गलने वाली नहीं है। किसान, आदिवासी, नौजवान, महिलायें, व्यापारी, उद्योगपति सरकार के साथ हैं। इनकी दाल गलने वाली नहीं है तो सेन्ट्रल एजेंसी का दुरूपयोग करना शुरू कर दिये। ये नई बात आई। कहां हम बस्तर में शांति की ओर लौट रहे हैं। इन 04 वर्षों में हमारी सरकार ने, हमारे जनप्रतिनिधियों ने, हमारे साथियों ने, हमारे वहां के रहने वाले वाले लोगों ने, चाहे वह परंपरागत आदिवासी हों, अनुसूचित जाति के लोग हों, व्यापारी हों, नौजवान हों, पत्रकार हों,

सब लोगों ने मिलकर जो हमने सबसे बात करके तय किया, उस रास्ते में लौटे। आज नक्सल घटनायें कम हो रही हैं। बस्तर में विकास की बयार बह रही है। वहां लोगों को सब से प्रकार से चाहे शिक्षा हो, स्वास्थ्य हो, रोजगार हो, वन अधिकार हो, वह सब देने का काम किया है। मेरे पास तो आंकड़ें हैं। इनके शासन में क्या हालत थी और हमारे शासन में क्या स्थिति है, इसके बारे में मैं चार्ट ही लाया हूं। इनको बता सकूं कि इनके शासनकाल में क्या-क्या हुआ? अध्यक्ष महोदय, ये कहते हैं कि 04 साल में क्या किये? मैं बताना चाहूंगा। हमारा भौगोलिक प्रदेश बहुत बड़ा है। हम 9वें बड़ें राज्य हैं। हमारी जनसंख्या बहुत कम है। हमारे यहां 44 प्रतिशत जंगल है और दूर-दूर हमारी प्रशासनिक इकाइयां हैं। इनके समय में तो केवल 27 जिले थे, हमारे समय में 33 जिले हो गये हैं। (मेजों की थपथपाहट) तहसीलों की संख्या 150 थी, अब वह बढ़कर 233 हो गई है। अनुविभाग 101 थे, अब वह बढ़कर 120 हो गये हैं। नगर निगम 12 थे, अब 14 नगर निगम हो गये हैं। माननीय अध्यक्ष महोदय, अभी नेता प्रतिपक्ष जी कह रहे थे कि आर्थिक स्थिति बहुत खराब है। मैं बताना चाहूंगा कि इनके समय जी.एस.डी.पी. 2 लाख 91 हजार 681 करोड़ थी, हमारे समय में बढ़कर 3 लाख 50 हजार 270 करोड़ हो गया है। (मेजों की थपथपाहट) यह मैं 2017-18 की आखिरी तुलना करना रहा हूं, उसके बाद आज की तुलना कर रहा हूं। प्रति व्यक्ति 92 हजार रुपये थी, हमारे समय में प्रति व्यक्ति आय 1 लाख 33 हजार रुपये हो गई है। इनके समय में 56 लाख 68 हजार मीट्रिक टन धान खरीदी होती थी, आज हमारे समय में हमने 107 लाख 53 हजार मीट्रिक टन धान खरीदा है। (मेजों की थपथपाहट) इनके समय में 12 लाख 60 हजार किसान थे, हमारे समय में 23.5 लाख हो गये हैं। यह लोग धान का पंजीकृत रकबा कम हो रहा है कह रहे हैं। यह लोग आरोप लगा रहे थे। मैं जवाब दे रहा हूं और जिम्मेदारी से कह रहा हूं कि इनके समय में धान का पंजीकृत रकबा 24.46 लाख था, आज बढ़कर 31.17 लाख हेक्टेयर हो गया है। इनके समय में कृषि ऋण 3500 करोड़ रूपये था, आज हमारे समय में 6610 करोड़ हो गया है। वृहद ऋण माफी इनके समय में तो नहीं हुआ था। ऋण माफी करके आये। इन्होंने कभी ऋण माफी किए नहीं, लेकिन हमारे यहां 18.82 लाख किसानों के 9 लाख 270 करोड़ रूपया का ऋण माफी हुआ है। के.सी.सी. इनके समय केवल 14 लाख थे, हमारे समय में 21 लाख हो गया है। इनके समय में धान खरीदी केन्द्र 1989 थे, हमारे समय में 2497 हो गये। प्राथमिक कृषि साख समिति 1333 थे, हमारे समय में बढ़कर 2058 हो गये हैं। इनके समय में मछली पालन 3.57 लाख मीट्रिक टन होता था, आज बढ़कर 5.91 लाख मीट्रिक टन हो गया है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, राजीव गांधी किसान न्याय योजना इनके समय में तो नहीं था। चुनाव के साल में बोनस और तीन साल कोनस। यह इनकी स्थिति रही है। हमने राजीव गांधी किसान न्याय योजना में हमने 16,416 करोड़ रूपये हमारे अन्नदाताओं को दिया है। भूमि श्रमिक न्याय योजना, पूरे देश में केवल छत्तीसगढ़ में हर साल 7 हजार देने का फैसला किया और 4 लाख 67 हजार हितग्राहियों

को अभी तक के 327 करोड़ रूपये का भुगतान हो चुका है। गोधन न्याय येजना, जिसकी यह लोग हंसी उड़ा रहे थे। हम गोबर भी खरीद रहे हैं, वर्मी कंपोस्ट भी बन रहा है और अभी तक के यह सब मिलाकर 500 करोड़ रूपये का भुगतान हो चुका है। सुराजी गांव के बारे में कह रहे थे कि हमने 30 हजार नालों में चिन्हांकन किया। हमने 2800 नालों का उपचार कर चुके हैं। हमने गौठान की बात की। माननीय अध्यक्ष महोदय, कोई भी बिजली उत्पादक राज्य है, यदि वह केवल उत्पादन करता है, खपत नहीं कर रहा है तो समझ लीजिये कि वह राज्य गरीब होगा, लेकिन जो राज्य बिजली खपत बढ़ायेगा तो समझ लीजिये कि वह राज्य समृद्धि की ओर बढ़ रहा है। प्रति व्यक्ति वार्षिक विद्युत खपत 1724 यूनिट था। हमारे समय में 2516 यूनिट हो गया। विद्युत का खपत मीलियन यूनिट में इनके समय में 19,162 था, हमारे समय में 25,161 हो गया। उर्जीकृत पंपों की संख्या 3 लाख 92 हजार था, हमारे समय में बढ़ कर 4 लाख 98 हजार हो गया है। घरेलू विद्युत उपभोक्ता इनके समय में 47 लाख 43 हजार था, आज बढ़कर 60 लाख 24 हजार हो गया है। एकल बत्ती कनेक्शन इनके समय में 15 लाख था, हमारे समय में 17 लाख हो गया। उच्च दाब विद्युत केन्द्र की स्थापना इनके समय में केवल 96 था, हमने तीन-चार सालों में 127 उच्च दाब विद्युत केन्द्रों की स्थापना की है। उच्च दाब विद्युत लाईन 11,538 किलोमीटर था और वह बढ़कर 13,446 सर्किट किलोमीटर हो गया है। 400 के.व्ही. लाईन 1619 सर्किट किलोमीटर था, अब बढ़कर 1918 हो गया है। 200 के.व्ही. के लाईन 3431 सर्किट किलोमीटर था, अब बढ़कर 432 हो गया है। बिजली बिल हाफ योजना से 42 लाख परिवार लाभांवित हो रहे हैं और 3237 करोड़ रूपये की राहत घरेलू उपभोक्ताओं को दी गई है। सार्वजनिक पी.डी.एस. सिस्टम इनके समय में 2 करोड़ 9 लाख लोगों को मिलता था, आज हमारे यहां 2 करोड़ 55 लाख व्यक्ति इसका लाभ उठा रहे हैं। राशन कार्डधारी इनके समय में 57 लाख 75 हजार थे, आज बढ़कर 72 लाख 71 हजार हो गये हैं। इनके समय में उचित मूल्य दुकान 12,298 थे, जोकि हमारे समय में बढ़कर 13,507 हो गया है। बैंक मित्रों की संख्या 18,322 थे, जो आज बढ़कर दोगुना होकर हमारे बैंक मित्रों की संख्या 35,000 हो गया है। इनके समय में मातृ मृत्यु दर प्रतिलाख में 173 था, जो आज घटकर केवल 137 प्रतिशत रह गया है। संस्थागत प्रसव जहां 73.8 प्रतिशत । हमारे यहां बढ़कर अब 86.7 प्रतिशत हो गया है । मलेरिया परजीवी सूचकांक 5.31 सर्वाधिक । अब घटकर केवल दशमलव 92 प्रतिशत (.92 प्रतिशत) रह गया है । कुष्ठ रोग प्रभाव 7.72 प्रतिशत प्रति 10,000 था आज घटकर 1.7 प्रति 10,000 हो गया है । इस प्रकार से डॉ. खूबचंद बघेल स्वास्थ्य योजना है । उसका 6 लाख से अधिक लोग लाभ उठा रहे हैं । मुख्यमंत्री विशेष सहायता योजना इसमें लोग लाभ उठा रहे हैं । मुख्यमंत्री हाट बाजार क्लीनिक योजना, अभी तक 1 लाख 45,000 शिविर में 82 लाख लोग लाभ इसका उठा चुके हैं ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, मुख्यमंत्री शहरी स्लम स्वास्थ्य योजना । 55 हजार 22 शिविर में 42 लाख लोग लाभांवित हुए हैं । दाई-दीदी क्लीनिक योजना इसमें 1 लाख 42,000 महिलायें इसका लाभ

उठा चुकी हैं । श्री धनवंतरी मेडिकल स्टोर इसमें अभी तक 44 करोड़ लोगों की बचत हुई है । सरस्वती साईकिल योजना, 1 लाख 11, 000 लोगों को इसका लाभ मिलता था अब यह बढ़कर 1 लाख 55,000 हो गया है । नि:शुल्क गणवेश 22 लाख 79,000 थे यह बढ़कर अब 29 लाख 26,000 हो गया है इसका मतलब अब स्कूलों में लोगों की दर्ज संख्या बढ़ी है । स्वामी आत्मानंद अंग्रेजी स्कूल, इन्होंने तो शुरू ही नहीं किया था । हम लोगों ने 279 शुरू किये । शासकीय महाविद्यालय केवल 221 थे, ये बढ़कर अब 285 हो गये हैं । शासकीय महाविद्यालयों में छात्रों की दर्ज संख्या 2 लाख 14,000 है अब बढ़कर 3 लाख 35,000 हो गया है । पॉलिटेक्निक कॉलेज केवल 60 थे अब बढ़कर 68 हो गया है । आई.टी.आई. 71 थे, अब बढ़कर 186 हो गये । तेंदूपत्ता संग्राहक को 2500 रूपये देते थे, हमारे समय में 4000 रूपये प्रति मानक बोरा की दर से दे रहे हैं । लघु वनोपज 7 प्रकार के खरीदते थे, हम 65 प्रकार के खरीद रहे हैं । अभी अजय चंद्राकर जी व्यक्तिगत वनअधिकार पत्र के बारे में बोल रहे थे, 4 लाख 1586 लोगों को 3 लाख 41,390 हेक्टेयर दिया गया था । हमारे समय में 4 लाख 56,000 लोगों को 3 लाख 71,604 हेक्टेयर दिया गया । सामुदायिक वन अधिकार पत्र 21,000 लोगों को दिया गया था जिसमें 8 लाख 25,000 हेक्टेयर दिया गया था । हमारे समय में 45,965 लोगों को 20 लाख 2000 हेक्टेयर दिया गया । सामुदायिक वन संसाधन अधिकार पत्र इनके समय में दिया ही नहीं गया था । 3856 लोगों को 16 लाख 66,716 हेक्टेयर का वन संसाधन अधिकार दिया गया है ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, मिलेट मिशन की बात करें । इन लोगों ने कोदो-कुटकी का समर्थन मूल्य घोषित नहीं किया था । हम लोगों ने 3000 रूपये प्रति क्विंटल के हिसाब से घोषित भी किया । पिछले साल 70,000 हेक्टेयर में कोदो-कुटकी का उत्पादन हुआ है, रागी का उत्पादन हुआ है और समर्थन मूल्य घोषित करने के बाद अब 1 लाख 65,000 हेक्टेयर में कोदो-कुटकी का रकबा बढ़ा है तो इनके समय में तो जमीन वापसी हुई नहीं लेकिन लोहाण्डीगुड़ा में राजमन बेंजाम के क्षेत्र में, वहां हमने 1700 किसानों की 4200 एकड़ जमीन वापस की है तो इस प्रकार से लगातार सरकार काम कर रही है लेकिन भारत सरकार ने अड़ंगा लगाने में कोई कमी नहीं रखी है । हम लोगों ने कहा कि जब आप रासायनिक खाद में सब्सिडी देते हैं तो वर्मी कम्पोस्ट भी हम उत्पादन कर रहे हैं उसमें सब्सिडी क्यों नहीं दे रहे हैं ? भारत सरकार को पत्र लिखा है, नीति आयोग में उठाया है लेकिन अभी तक कोई जवाब नहीं आया है । कोदो-कुटकी समर्थन मूल्य घोषित करने के लिये पत्र लिखा लेकिन अभी तक उसका कुछ हुआ नहीं है । लाख उत्पादन को हमने कृषि का दर्जा दिया है । किसानों का क्रेडिट कॉर्ड बनना चाहिए लेकिन भारत सरकार न तो क्रेडिट कॉर्ड और न ही फसल बीमा में चूंकि हमने शामिल करने का अनुरोध किया था लेकिन उसको भी स्वीकार नहीं किया । बॉयोफ्यूल के बारे में हमने कहा कि यदि हमारे पास इथेनॉल है, सरप्लस हमारे पास पेडी है तो इथेनॉल बनाने की अनुमति दे दें लेकिन भारत सरकार इसमें भी न-नुकुर कर रही है । उसमें भी अनुमति नहीं दे रही है । टूटा हुआ चावल है उसके बारे में भी हम लोगों ने मांग

की कि यह जो अधिकार है उसे आपने अपने पास रखा है एन.वी.सी.सी. की उसको हमको दे दें लेकिन भारत सरकार उसको मानने को तैयार नहीं है । हमने मंडी शुल्क के बारे में कितनी बार पत्र लिखा लेकिन उसमें भी कोई सुधार नहीं हो रहा है । माननीय अध्यक्ष महोदय, उसी प्रकार से कृषक कल्याण शुल्क है उसके बारे में हमने कहा लेकिन सुनने को तैयार नहीं है । माननीय अध्यक्ष महोदय, चूंकि 44 प्रतिशत जंगल है, 85 हमारे ब्लॉक हैं, वे अनुसूचित जाति के हैं, वहां अब निर्माण कार्य करना है तो पहले 5 हेक्टेयर तक अनुमति मिलती थी, लेकिन अब उस अधिकार को भी समाप्त कर दिया गया है। हमने फिर से पत्र लिखा है कि उसे जारी रखें। बल्कि इसे बढ़ाकर 15 हेक्टेयर तक कर दें ताकि उन क्षेत्रों में निर्माण कर सकें। कोण्डागांव जिले में जिला कार्यालय बनाना है। वहां जमीन ही नहीं है। तो उसके लिए हमने मांगा, लेकिन वे दे ही नहीं रहे हैं। वे नहीं चाहते कि छत्तीसगढ़ के लोग आगे बढ़ें। छत्तीसगढ़ के आदिवासी आगे बढ़ सकें। माननीय अध्यक्ष महोदय, प्रधानमंत्री सड़क योजना में भी हमने सुझाव दिये, लेकिन हमारी बात सुनी नहीं गई। माननीय अध्यक्ष महोदय, ग्रामीण विकास मंत्रालय में भी आर.सी.पी.एल.डब्ल्यू.ई. योजना के अंतर्गत हमने मांग की थी और इसे मार्च, 2023 तक पूर्ण करने के लिए समय बढ़ाने के लिए कहा, लेकिन अभी तक वह बढ़ा नहीं है। वर्ष 2024 तक बढ़ाने की मांग की, लेकिन अभी तक उनका कोई जवाब नहीं आया। एयरपोर्ट अथॉरिटी के बारे में भी हमारी बहन कह रही थीं कि बिलासपुर का वह जमीन वापस कर दें, लेकिन हो नहीं रहा है। हमने यहां जमीन उपलब्ध कराया और अंतर्राष्ट्रीय एयरपोर्ट घोषित करने की मांग की, लेकिन हो नहीं रहा है। यहां यदि इंटरनेशनल एयरपोर्ट बन जाये, कार्गो हब बन जाये तो यहां व्यापार-व्यवसाय बढ़ेगा। कनेक्टिविटी बढ़ेगी, इसका लाभ मिलेगा, लेकिन यह हो नहीं रहा है। बस्तर क्षेत्र में उस समय शौचालय बन नहीं पाया था, हमने कहा कि चूंकि वहां सामग्री परिवहन करना है, मिस्त्री है, मिलते नहीं, परिवहन करने में ज्यादा व्यय आता है। 12 हजार से बढ़ाकर 20 हजार कर दो, लेकिन अध्यक्ष महोदय, सुनने वाले नहीं है। पुलिस बल के आधुनिकीकरण, पूर्वोत्तर राज्य में तो आप 90 प्रतिशत राशि व्यय करते हैं, लेकिन हमारे यहां छूट नहीं दे रहे हैं। हमारे जो पैसा है, उसे काट लिये। कोई सुनवाई केन्द्र सरकार नहीं कर रही है। ये रहते तो सुनते, लेकिन अध्यक्ष महोदय, इसलिए कह रहा हूं कि यह रिकॉर्ड में रहेगा। उस दिन बैठे थे। उस समय तो कुछ नहीं बोल पाये, लेकिन दूसरे दिन मेरे भाषण का उल्लेख कर रहे थे, इसलिए मैं रिकॉर्ड में ला रहा हूं ताकि वे लोग इसे पढ़ सकें। माननीय अध्यक्ष महोदय, छत्तीसगढ़ में खनिज जो एडिशनल रॉयल्टी मिलनी है जो 4 हजार 169 करोड़ 86 लाख रूपये है, इसके बारे में कितनी बार हम लोगों ने विधान सभा में कहा, बाहर भी कहा, मंत्री से कहा, प्रधानमंत्री से कहा, वित्त मंत्री से कहा, लेकिन वह राशि मिल नहीं रही है। माननीय अध्यक्ष महोदय, यहां खनिज आधारित बहुत सारी खदानें हैं, लेकिन रॉयल्टी बढ़ नहीं रही। विदेश से कोयला लायेंगे, 12 हजार, 15 हजार प्रति टन का उपयोग करेंगे, लेकिन यहां कहते हैं तो बिजली का बिल बढ़ जायेगा। 12 हजार, 15 हजार की दर से ला रहे हैं तो बिजली नहीं

बढ़ रहा है। अभी जो एन.टी.पी.सी. ने बिजली बिल बढ़ाया, उसका खामियाजा हम भुगत रहे हैं न। यदि रॉयल्टी बढ़ाते तो हमारे राजस्व में वृद्धि होती, लेकिन सुनना नहीं है। माननीय अध्यक्ष महोदय, हमने कहा कि अलग-अलग ग्रेड का होता है। ग्रेड के हिसाब से चाहे लोहा का हो, चाहे कोयला का हो, उसके हिसाब से अलग-अलग ग्रेड के हिसाब से रॉयल्टी तय होना चाहिए, लेकिन सुनने को तैयार नहीं हैं। माननीय अध्यक्ष महोदय, स्थानीय उद्योगों को कोयला उपलब्ध कराना है। हम कोयला नहीं दे रहे हैं। ट्रेन बंद कर देंगे। यात्री ट्रेन बंद कर रहे हैं। दूसरे राज्यों में जा रहा है, लेकिन हमारे प्रदेश के उद्योगपतियों को कोयला नहीं मिल रहा है। इसके बारे में पत्र लिखा, लेकिन कोई सुनने को तैयार नहीं है। माननीय अध्यक्ष महोदय, बातें तो बहुत हैं। जी.एस.टी. क्षतिपूर्ति, पिछले साल तो 6 हजार 182 करोड़ मिला था, लेकिन अब बंद कर दिया गया है। 5 साल बढ़ाने के लिए हमने निवेदन किया। हम उत्पादक राज्य हैं। हमारा नुकसान हो रहा है। सुनने को तैयार नहीं हैं। अध्यक्ष महोदय, इस प्रकार से जितनी भी केन्द्रीय योजनाएं हैं, पहले कोई 90:10 का होता था, कहीं 100 परसेंट रहता था, कहीं 75:25 का रहता था, 60:40 का रहता था, लेकिन आज देखते हैं, सारी योजनाएं 50:50, भले प्रधानमंत्री आवास योजना कहें, चाहे कोई भी योजना कहें, जल-जीवन मिशन का कहें, वह सब प्रधानमंत्री के नाम से हैं, लेकिन राशि आधा राज्य सरकार दे रही है। तो इस प्रकार से केन्द्रीय योजनाओं में ये लोग हमारी मदद नहीं कर रहे हैं। तो ये सारी बातें थीं । एक महत्वपूर्ण विषय के बारे में मैं सदन के माध्यम से कहना चाहूंगा । जितने भी वनांचल क्षेत्र हैं, वहीं बिजली पहुंचाने में दिक्कत आती है । बिजली तार बिछाने में परेशानी होती है । हमने कहा कि बैरंग लैंड पड़ा हुआ है हालांकि वह जंगल में दर्ज है । यदि वहां 5 मेगावाट तक का सोलर पैनल लगाने की अनुमति मिल जाए, जिसमें पेड़ काटने की जरूरत नहीं है । चट्टान है यदि उसके ऊपर सोलर पैनल लगा दें तो हमारे आदिवासी क्षेत्र में बिजली पहुंच जाएगी, छोटे-छोटे उद्योग लगाने की व्यवस्था हो जाएगी, घरों में बिजली पहुंच जाएगी । लेकिन भारत सरकार है कि सुनने को तैयार नहीं, क्योंकि प्रस्ताव छत्तीसगढ़ से गया है । हमारे साथ केन्द्र सरकार का रवैया इस तरह का रहा ।

अध्यक्ष महोदय, मैं इन्हीं शब्दों के साथ कहना चाहूंगा कि बार-बार ग्रामीण आवास की बड़ी चर्चा करते हैं । इसके बारे में कहकर मैं अपनी बात समाप्त करूंगा । ग्रामीण आवास के बारे में इतनी चर्चा, विधायकों का घेराव, प्रदर्शन सब कर रहे हैं । लेकिन यह बात तो समझनी होगी कि ये आवास की संख्या अब 16 लाख बता रहे हैं, यह आंकड़ा कहां से आ गया । जब हमने जानकारी इकट्ठा की तो पूरे देश में 2 करोड़, 94 लाख ग्रामीण आवास बनाने का लक्ष्य रखा गया । इस लक्ष्य के विरूद्ध सभी राज्यों को मिलाकर 2 करोड़, 85 लाख आवासों के निर्माण हेतु स्वीकृति जारी की गई, जो कुल लक्ष्य का 96.94 प्रतिशत है । छत्तीसगढ़ राज्य को 11 लाख 76 हजार 150 आवासों के लक्ष्य के विरूद्ध 11 लाख 76 हजार, 67 आवासों की स्वीकृति दी जा चुकी है । जो लक्ष्य का 99.99 प्रतिशत है । स्पष्ट है

कि आवास के निर्माण के लक्ष्य के विरूद्ध हमारे राष्ट्रीय औसत से भी अधिक आवास स्वीकृत किये जा चुके हैं और हमारे आवास की स्थिति आसाम से, बिहार से, गुजरात से, हरियाणा से, झारखंड से, केरल से, महाराष्ट्र से, उड़ीसा, पंजाब, राजस्थान, तामिलनाडु, त्रिपुरा, उत्तरप्रदेश, उत्तराखंड, बंगाल, आंध्रप्रदेश तथा कर्नाटक राज्यों से बेहतर स्थिति है (मेजो की थपथपाहट) । अब 11 लाख आवास की स्वीकृति के विरूद्ध 8 लाख, 44 हजार पूर्ण किये जा चुके हैं । कुल लक्ष्य का 71.79 प्रतिशत है और इस हिसाब से यदि दूसरे राज्यों से तुलना करें तो हमसे पीछे आसाम है, गुजरात है, केरल, महाराष्ट्र, उड़ीसा, पंजाब, तमिलनाडु, त्रिपुरा, उत्तराखंड, आंध्रप्रदेश तथा कर्नाटक राज्य से बेहतर हमारी स्थिति है । ये राज्य हमसे पीछे हैं । और ये लोग यहां आंदोलन कर रहे हैं, क्योंकि इनके पास मुद्दा है ही नहीं, तो गरीबों को भड़काओ, आवास के लिए भड़काओ । अध्यक्ष महोदय, ये जो आंकड़े हैं वह 2011 की जनगणना के आधार पर हैं । उस समय जो जनगणना की गई थी वह 10 साल के लिए प्रभावी थी, आज तो 12 साल बीत गए और अभी तेरहवां साल चल रहा है । अब उसके बाद क्या लोगों की आर्थिक स्थिति में परिवर्तन नहीं आया होगा। क्या उसमें नए हितग्राही नहीं जुड़े होंगे । जनगणना क्यों नहीं होना चाहिए । ए.सी.सी.सी. डाटा क्यों नहीं आना चाहिए? अध्यक्ष महोदय, ये आंदोलन कर रहे हैं, मैं तो इनसे कहना चाहूंगा कि जनगणना के लिए प्रधानमंत्री के पास चलिए, गृहमंत्री के पास चलिए और निवेदन करें कि जनगणना हो, छत्तीसगढ़ ही नहीं, पूरे देश में जनगणना हो । नई ए.सी.सी.सी. लिस्ट जारी की जाए और जितने भी हितग्राही हैं उनको उसका लाभ मिले । लेकिन ये ऐसा नहीं करेंगे, ये तो केवल राजनीति करना है। कभी धर्मान्तरण पर, कभी गरीबों को भड़काने का काम । अध्यक्ष महोदय, मैं तो यह कहना चाहूंगा कि हमने किसानों के हित में, मजदूरों के हित में, गरीबों के हित में, आदिवासियों के हित में अभी तक 1 लाख, 50 हजार करोड़ रूपए उनके खाते में डाल दिया है । हम चाहते हैं कि गरीब लोगों की मदद करें लेकिन हमारे पास डाटा तो हो । 2011 का डाटा पुराना हो गया, नये डाटा के हिसाब से होना चाहिए । 12 वर्षों में केन्द्र एवं राज्य प्रवर्तित योजनाओं के क्रियान्वयन से आम नागरिकों के जीवन में क्या प्रभाव पड़ा । इसकी अद्यतन जानकारी प्राप्त करना आवश्यक है । हमारा प्रस्ताव एवं सुझाव यह है कि देश में विगत् 12 वर्षों में निम्न योजनाओं में हुए प्रभावों को सर्वप्रथम अद्यतन आंकलन किया जाए ? निर्मित पक्के आवास, कच्चे अथवा एक कमरे वाले आवास, स्वच्छ भारत मिशन के अंतर्गत निर्मित शौचालय, उज्जवला गैस योजना से कितना लाभ हुआ ? किसानों की आय दुगुनी हुई या नहीं हुई ? 100 प्रतिशत घरों का विद्युतीकरण हुआ या नहीं हुआ, कौशल विकास कार्यक्रम में लाभान्वित हितग्राहियों को रोजगार प्राप्ति की स्थिति क्या है ? अध्यक्ष महोदय, मैंने प्रधानमंत्री जी को पत्र लिखा है, मैं माननीय सदस्यों से भी कहना चाहूंगा कि भारत सरकार के पास चलें, उन गरीबों के हित में फैसला होगा, जनगणना होगी। हमारे आर्थिक सर्वेक्षण के डाटा आएंगे और यदि यह नहीं करते हैं, मैं उन गरीबों को आवास देना चाहता हूं, मैं इनकी तरह घड़ियाली आंसू नहीं बहाना चाहता। (मेजों की

थपथपाहट) उनको उसका अधिकार मिलना चाहिए। मैं यह घोषणा करता हूं कि यदि केन्द्र सरकार तत्काल आवास योजना के पात्र हितग्राहियों का सर्वे आरंभ नहीं कराते तो राज्य सरकार 1 अप्रैल से 30 जून तक के 2023 के बीच में स्वयं सर्वे कराएगी (मेजों की थपथपाहट) और विगत 12 वर्षों में ग्रामों में निर्मित पक्के मकान के प्राथमिक जानकारी प्राप्त कर आवासों की क्रमबद्ध स्वीकृति का कार्य करेगी । मैं विपक्ष के आदरणीय साथियों के साथ ही राज्य की पूरी जनता को आश्वस्त करना चाहता हूं कि राज्य के सभी पात्र हितग्राहियों को पक्के आवास मुहैया कराने के लिए हमारी सरकार पूर्णतः कटिबद्ध है। (मेजों की थपथपाहट) अध्यक्ष महोदय, यह नहीं कराते, हम करायेंगे और उनको क्रमबद्ध रूप से दिया जाएगा। इसमें कोई कमी नहीं आना चाहिए। यह सरकार गरीबों की है, यह सरकार मजदूरों की है, यह सरकार हमारे किसानों की है, यह सरकार हमारे आदिवासी अनुसूचित जाति की है, मेहनतकश लोगों की सरकार है और यह सरकार उनके हितों की रक्षा के लिए हर स्तर पर लड़ाई लड़ेगी और हर वह फैसला करेगी जो इनके हितों की रक्षा हो सके। अध्यक्ष महोदय, मैं राज्यपाल महोदय का भी आभार व्यक्त करता हूं, आपने मुझे बोलने का समय दिया, उसके लिए आपको धन्यवाद देता हूं। अध्यक्ष महोदय, बहुत-बहुत धन्यवाद। (मेजों की थपथपाहट)

अध्यक्ष महोदय :- बहुत-बहुत धन्यवाद।

अध्यक्ष महोदय :- मैं समझता हूं कि माननीय राज्यपाल महोदय के अभिभाषण पर प्रस्तुत कृतज्ञता ज्ञापन प्रस्ताव में जितने संशोधन प्रस्तुत किये गये हैं, उन पर एक साथ मत ले लिए जाये।

समस्त संशोधन अस्वीकृत हुए।

अध्यक्ष महोदय :- प्रश्न यह है कि - "माननीय राज्यपाल महोदय ने जो अभिभाषण दिया उसके लिए छत्तीसगढ़ विधान सभा के इस सत्र में समवेत् सदस्यगण अत्यंत कृतज्ञ हैं।"

प्रस्ताव स्वीकृत हुआ।

(मेजों की थपथपाहट)

सदन को सूचना

विधायक क्लब एवं संस्कृति विभाग के सौजन्य से "होली मिलन समारोह" का आयोजन

अध्यक्ष महोदय :- सोमवार, दिनांक 06 मार्च, 2023 को अपरान्ह 3.00 बजे से छत्तीसगढ़ विधान सभा सचिवालय परिसर स्थित सेंट्रल हॉल के समक्ष लॉन में विधायक क्लब एवं संस्कृति विभाग के सौजन्य से **"होली मिलन समारोह"** आयोजित है, जिसमें माननीय सदस्यों के साथ श्री डेविड निराला एवं साथियों द्वारा 'फाग गीत' तथा श्री हेमलाल पटेल व साथियों द्वारा 'हास्य व्यंग्य' का कार्यक्रम प्रस्तुत किया जायेगा।

आप सभी माननीय सदस्य, पत्रकारगण एवं शासन के वरिष्ठ अधिकारी उक्त **"होली मिलन समारोह"** में सादर आमंत्रित हैं।

अध्यक्ष महोदय :- सभा की कार्यवाही सोमवार दिनांक 06 मार्च, 2023 को 11.00 बजे दिन तक के लिए स्थगित।

(08 बजकर 19 मिनट पर विधान सभा सोमवार, दिनांक 06 मार्च, 2023 (फाल्गुन-15 शक सम्वत् 1944) के पूर्वाह्न 11.00 बजे तक के लिए स्थगित हुई।)

दिनेश शर्मा
सचिव
छत्तीसगढ़ विधान सभा

रायपुर (छ.ग.)
दिनांक 04 मार्च, 2023

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं